comicsmylife.blogspot.in
अनिल मोहन
बबूसा और खुंबरी
देवराज चौहान सीरीज
नया उपन्यास
BHAVNA
comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान सीरीज

बबूसा और खुंबरी

अनिल मोहन

बबूसा और खुंबरी

ISBN : 978-93-324-2106-6

लेखक से बातचीत के लिए ई-मेल
anilmohan012@yahoo.co.in
Now, Join me on Facebook:
facebook.com/anilmohan012
Join my page on Facebook:
facebook.com/anilmohanofficial

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कोई सम्बंध नहीं है। उपन्यास में स्थान आदि का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिए किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है।

•

प्रकाशक
राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611410, 27612036, 27612039

•

वितरक
राजा पॉकेट बुक्स
112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,
दिल्ली-110006
फोन : 23251092, 23251109

•

मुद्रक
राजा ऑफसेट
1/51, ललिता पार्क
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

BABOOSA AUR KHUMBRI : DEVRAJ CHOUHAN SERIES
ANIL MOHAN

मूल्य : साठ रुपए

दोलाम खुंबरी की चाहत की आड़ में ताकतों का मालिक बनना चाहता था और ये तभी हो सकता था, जब खुंबरी न रहे। सबसे बड़ी ताकत ठोरा ने स्पष्ट कह दिया था कि उसके और खुंबरी के बीच कोई ताकत दखल नहीं देगी, ये उसका और खुंबरी का व्यक्तिगत मामला है। ऐसे में हालात ये बन गए कि दोलाम, खुंबरी को खत्म कर देने की योजना बना रहा था और खुंबरी, दोलाम को मौत देने के लिए रास्ता तैयार कर रही थी।

बबूसा और खुंबरी

शृंखला–6

अनिल मोहन

देवराज चौहान सीरीज का नया उपन्यास

दो शब्द——लेखक की कलम से

पाठकों को,

अनिल मोहन का नमस्कार,

अब आपके हाथों में है बबूसा श्रृंखला की अंतिम कड़ी **'बबूसा और खुंबरी'** बबूसा श्रृंखला के पूर्व प्रकाशित पांच उपन्यास आपने पढ़े और पसंद किए। मुझे पूरा भरोसा है कि इस कड़ी का अंतिम उपन्यास **'बबूसा और खुंबरी'** भी आपको बहुत पसंद आएगा। बबूसा श्रृंखला छः उपन्यासों में पूर्ण कर दी गई है। इसके भाग ज्यादा भी हो सकते थे, परंतु छः भागों में इसे समाप्त करना ही मुझे बेहतर लगा। ज्यादा भागों वाले उपन्यासों में एक उपन्यास की भी कहानी ढीली रह जाय तो बाकी उपन्यासों का भी मजा खराब हो जाता है और मैं नहीं चाहता था कि ऐसा हो।

अब मैं पूरे विश्वास के साथ किसी को भी कह सकता हूं कि बबूसा श्रृंखला के सब उपन्यास पढ़िए, मजा आएगा। बात ये नहीं होती कि कहानी कितने भागों में समाप्त की गई है, अहम बात ये होती है कि कहानी के सारे भाग कैसे रहे। इस बबूसा श्रृंखला में आपकी दिलचस्पी का भी ढेर सारा सामान है, सब उपन्यास मजेदार तो हैं ही, पाठकों के लिए एक लाख की ईनामी प्रतियोगिता भी कहानी में मौजूद है। जैसा कि हर उपन्यास के अंत में प्रतियोगिता के बारे में बताया गया है कि इन उपन्यासों की सारी कहानी में से आपसे दस सवाल पूछे जाएंगे, जिनमें से छः सवालों का सही जवाब देना जरूरी है। छः सवालों का सही जवाब देने पर आप प्रतियोगिता के विजेता सदस्य बन जाएंगे। जाहिर है कि विजेता एक से ज्यादा होंगे, ऐसी स्थिति में विजेता पाठकों के नामों का लक्की ड्रॉ **राजा पॉकेट बुक्स** द्वारा निकाला जाएगा और उनमें से जो विजेता होंगे, उसके बारे में सूचित किया जाएगा। इस बारे में जो भी खबर होगी, वो प्रकाशक, राजा पॉकेट बुक्स द्वारा आपको मिलेगी। मैं तो चाहता हूं कि आप सब ही विजेता बनें सही जवाब देकर।

अब पाठकों के ई-मेल और फेसबुक पर आए विचारों और राय की बारी है। नागेश खिड़वाडकर, इंदौर से कहते हैं—**'बबूसा और राजा देव'** खरीदी, पढ़ी। **'बबूसा का चक्रव्यूह'** में मजा आया। उपन्यास जल्दी खत्म हो जाता है। मोटा उपन्यास लिखा करें। जवाब में मैं इतना ही कहूंगा कि उपन्यास का मैटर, मोटे उपन्यास जितना ही होता है। परंतु कागज की वजह से आपको उपन्यास पतला लगता है।

खुमेश शर्मा, छिंदवाड़ा से कहते हैं—**'अण्डरवर्ल्ड'** पढ़ा। अच्छा लगा परंतु अभी मैं बबूसा का चौथा पार्ट ढूंढ़ रहा हूं। मेरे खयाल में अब तक तो आपको चौथा भाग ही नहीं, पांचवां भी मिल गया होगा। इमरान खान, लखनऊ से कहते हैं—मैंने पहली बार आपका **'ज्वालामुखी'** उपन्यास पढ़ा, अच्छा लगा। उसके बाद बबूसा की तीन किताबें पढ़ चुका हूं। मजा आया, परंतु चौथी अभी नहीं मिली। मोना चौधरी काफी वक्त से नहीं आई और उपन्यासों में जिन्न की जगह आप मार्शल को ले रहे हैं। विवेक सिंह, वाराणसी से कहते हैं—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** पढ़ा। तीन बहनों की एंट्री वाला मामला ज्यादा अच्छा नहीं लगा। मुझे वाराणसी से मुगलसराय जाना पड़ता है आपके उपन्यास लेने। वाराणसी में आपकी किताबें नहीं मिलतीं।

संजय कुमार, जगह का नाम नहीं, बबूसा का चौथा भाग पढ़ा, अच्छा लगा परंतु तीन बहनों वाली कहानी अच्छी नहीं लगी। अभिषेक, अभिलाश मिश्रा, लखनऊ से कहते हैं—बबूसा के उपन्यास बढ़िया लग रहे हैं। **'बबूसा और सोमाथ'** का इंतजार है। महेंद्र कलबल, चंद्रपुर, महाराष्ट्र से कहते हैं—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** अच्छा रहा। तीन बहनों वाला हिस्सा जंचा नहीं। **'बबूसा और सोमाथ'** कब आ रहा है।

साहिल शिकारवार, नोएडा—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** अच्छा लगा। धरा बहुत मजेदार रही। मेरे खयाल में इसके दो-तीन भाग और होंगे अभी। राम मेहर सिंह डनोडा, नरवाना, हरियाणा—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** मजेदार रहा। तीन बहनों को इस कहानी में लेने का मतलब मैं नहीं समझ पाया। फिर भी उपन्यास इतने अच्छे हैं कि मैं सबको इकट्ठा कर रहा हूं। शैलेंद्र कुमार, जगह का नाम नहीं—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** अच्छा लगा। **'बबूसा और सोमाथ'** कब आ रहा है।

मनोज पांडे, आगरा, बबूसा का अगला उपन्यास कब आ रहा है। सनी शर्मा, लखीमपुर, उत्तर प्रदेश, कहते हैं—**'बबूसा और सोमाथ'** का इंतजार है। विकी बंसल, कोल्हापुर, महाराष्ट्र—बबूसा के सारे उपन्यास बढ़िया हैं, लेकिन तीन बहनों की स्टोरी इस कहानी में क्यों डाल दी। उसकी तो जरूरत नहीं थी। उमेश पटेल, वसई गुजरात—**'मिस्ड कॉल'** में मजा आ रहा है। इसके बाद मैं बबूसा पढ़ने वाला हूं। दीपक शर्मा, मुरादनगर—लिखते हैं, मैं आपका फैन हूं 2005 से आपके उपन्यास पढ़ रहा हूं। **'बबूसा और सोमाथ'** कब आ रहा है।

काशीराम चौधरी, जयपुर—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** अच्छा लगा, **सोमाथ** का इंतजार है। अक्षय राणा, फरीदकोट, पंजाब से कहते हैं—**'बबूसा का**

चक्रव्यूह' अभी पूरा किया है। अच्छा लगा। परंतु इस कहानी में बाकी पात्रों को आपने क्यों नहीं लिया। जालंधरी, जालंधर कैंट से कहते हैं—**'बबूसा और राजा देव'** मजेदार रहा।

मनोज मदन, गुड़गांव से कहते हैं—**बबूसा सीरीज** अच्छी है परंतु बहुत गैप से भागों के आने की वजह से मजा कम आने लगता है। चक्रव्यूह बहुत अच्छा है। अगला उपन्यास जल्दी मिलना चाहिए। मीनू रशीद, जयपुर से—**'बबूसा और सोमाथ'** मिल गया है, अभी पढ़ना है। **'महल'** जल्दी दें। नीतीश सिन्हा, बलागीर, उड़ीसा—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** पढ़ा, अच्छा रहा। संदीप सिंह, लुधियाना से कहते हैं—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** पढ़ा। धरा बढ़िया रही, बाकी मजा नहीं आया। विमल गुप्ता, आगरा—बबूसा अब तक की सब पढ़ी है। सब बढ़िया है परंतु कहानी को कहीं-कहीं खींचा-सा लगता है। तीन बहनों की तो जरूरत ही नहीं थी। मनोज सक्सैना, जयपुर से पूछते हैं—**'बबूसा का चक्रव्यूह'** बाजार में कब आएगा।

सैफ अली, आगरा, बबूसा के सब उपन्यास पढ़े हैं, **'बबूसा खतरे में'** नहीं मिल रहा। विक्रम दीप सागर, वालाघाट, मध्य प्रदेश से—**'बबूसा और राजा देव'** पढ़ा, कई बातें उसमें रिपीट की गई लगती हैं। सुनील अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान से कहते हैं—हाल ही मैंने **'डॉन जी'** और **'शिकारी'** पढ़े, जो कि मुझे बहुत अच्छे लगे। उपन्यास पढ़ने का वक्त कम ही मिल पाता है लेकिन जब भी आपका उपन्यास देखता हूं खरीद लेता हूं। आपको हैरानी होगी कि मेरे पास आपके कई उपन्यास बिना पढ़े रखे हैं और जब भी वक्त मिलता है, आपका उपन्यास शुरू करता हूं तो खत्म करके ही उठता हूं। घर में उपन्यास मौजूद रहने की वजह से मेरी पैंसठ वर्षीय माता जी ने भी आपके उपन्यास पढ़ने शुरू कर दिए हैं। हाल ही में माता जी ने **'गुर्गा'** पढ़ा और वो उन्हें इतना अच्छा लगा कि अब वे **'सावधान हिंदुस्तान'** पढ़ रही हैं। बबूसा श्रृंखला के उपन्यास मैं इकट्ठे कर रहा हूं और इन्हें एक साथ ही पढ़ूंगा। अजीत ढोलकिया, जयपुर से ही लिखते हैं—उन्होंने **'जुआघर'** पढ़ी जो कि उन्हें अच्छी लगी। उपन्यास में बंधु का पात्र बहुत मजा दे गया और नेपाल के मंदिरों का वर्णन भी बहुत अच्छी तरह से किया आपने।

अर्जुन बालसेर, अकोला, महाराष्ट्र से कहते हैं—मैं **बबूसा श्रृंखला** पढ़ रहा हूं परंतु **'महल'** के आने का बेसब्री से इंतजार है। रोहित पुरी, दिल्ली से कहते हैं—मेरी नौकरी लगने वाली है, अभी मेरे पास वक्त है, आप ज्यादा-से-ज्यादा उपन्यास बाजार में दें कि मैं पढ़ सकूं, क्या पता बाद

में वक्त ना मिले। राजन चौधरी, जबलपुर, मध्य प्रदेश से कहते हैं—मैं आपके **बबूसा** के सारे उपन्यास पढ़ रहा हूं। तीन बहनों वाला मामला आपने जो उपन्यास में डाला है, वो दिलचस्प है। खासतौर से संदीप और मोनी का अंत में डोबू जाति के योद्धाओं द्वारा मारा जाना। परंतु इस कहानी में अगर बहनों वाला हिस्सा ना होता तो, कहानी की रफ्तार और भी तेज हो जाती। जवाब में मैं इतना ही कहूंगा कि तीन बहनों वाला हिस्सा मैंने कहानी को बेहतर बनाने के लिए लिखा था। कभी-कभी कोई चीज कहानी को बेहतर बना देती है, पर कभी कोई बेहतर चीज भी कहानी में सैट नहीं बैठ पाती। ऐसा हो जाता है।

इस वक्त आपके हाथों में है **'बबूसा और खुंबरी'** इसमें आपको मजा आएगा। दोलाम, जगमोहन, खुंबरी, धरा, बबूसा, रानी ताशा, सोमाथ ये सब इस उपन्यास में आपको पसंद आने वाले हैं। मैंने पहले भी कहा है भागों वाली कहानी का एक उपन्यास भी खराब हो जाए तो सब उपन्यास खराब हो जाते हैं, परंतु बबूसा के सब उपन्यास अपनी जगह बढ़िया है। ये बात पाठकों की राय से जाहिर है। तो अब शुरू करें **बबूसा और खुंबरी**।

मेरा आगामी उपन्यास **'डकैती का अलार्म'** शीघ्र ही प्रकाशित होकर आपके हाथों में होगा।

—अनिल मोहन

बबूसा और खुंबरी

"उसने इंकार किया तो मैं खुंबरी की जान ले लूंगा। खुंबरी मेरी न बन सकी तो जगमोहन की भी नहीं हो पाएगी ठोरा।" दोलाम का चेहरा क्रोध से दहक रहा था। ये कहने के साथ दोलाम ने मंत्रों वाले पानी से अपना हाथ निकाला और सुलगते अंदाज में पलटा कि थम से खड़ा का खड़ा रह गया।

दरवाजे पर बबूसा खड़ा शांत निगाहों से उसे देख रहा था।

दोलाम की आंखें सिकुड़ीं, होंठ भिंच गए।

एकाएक बबूसा मुस्कराया। अजीब-सी मुस्कान।

दोनों कई पलों तक एक-दूसरे को देखते रहे।

"तुम तो मेरे दोस्त बनने के काबिल हो।" मुस्कराते हुए बबूसा ने कहा

दोलाम के होंठ और भी सख्ती से भिंच गए।

"तुम्हारे विचार मुझे बहुत पसंद आए। मुझे नहीं मालूम था कि तुम्हारे मन में ये सब चल रहा है।" बबूसा बोला।

दोलाम ने गहरी सांस ली। जैसे उसने तनाव भरे शरीर को ढीला छोड़ दिया हो।

"किसी बात की फिक्र मत करो दोलाम।" बबूसा ने दोस्ताना भाव में कहा—"मैं तुम्हारे साथ हूं।"

"क्या कह रहे हो।" दोलाम तीखे स्वर में बोला—"मैं समझा नहीं।"

"लेकिन मैं तो तुम्हें पूरी तरह समझ चुका हूं। सब सुना मैंने। फिक्र मत करो मैं ये बात किसी को बताने वाला नहीं।"

दोलाम, बबूसा को सख्त निगाहों से देखे जा रहा था।

"तुम जुबान बंद भी क्यों रखोगे?" दोलाम शब्दों को चबाकर कह उठा।

"क्योंकि मैं भी खुंबरी की मौत चाहता हूं।" बबूसा ने सामान्य स्वर में कहा।

दोलाम, बबूसा को देखता रहा। बबूसा बोला।

"पांच सौ साल बहुत लम्बे होते हैं दोलाम। इतनी देर किसी की सेवा करना, किसी के शरीर का ध्यान रखना, बहुत मेहनत का काम होता है तुमने ईमानदारी से मेहनत की। खुंबरी के शरीर की देखभाल की। ऐसे में खुंबरी को चाहिए कि तुझे प्यार करती। अपना बनाती। अपने शरीर का मालिक तुम्हें बनाती। तुम्हारी एहसानमंद होती। परंतु खुंबरी ने ऐसा

सोचा भी नहीं। क्योंकि उसकी निगाहों में तुम सेवक हो, तुम मात्र उसकी सेवा करने के लिए हो। बात यहीं तक रहती तो तब भी तुम सह लेते, परंतु खुंबरी ने हद तो ये कर दी कि तुम्हारी ही नजरों के सामने, पृथ्वी से आए पुरुष को अपना दिल दे दिया और उसे अपना शरीर सौंप दिया जबकि हकदार तुम थे। परंतु खुंबरी ने तुम्हारी परवाह जरा भी नहीं की।"

दोलाम ने बबूसा को घूरा।

"तुम्हें मेरी चिंता क्यों है?" दोलाम कह उठा।

"मुझे तुम्हारी चिंता नहीं है। मैं तो तुम्हें, तुम्हारी स्पष्ट स्थिति बता रहा हूं। मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं कि खुंबरी को तुमसे प्यार करना चाहिए था। तुम हकदार थे खुंबरी के शरीर के। तुम्हारे साथ गलत हुआ है। तुमने खुंबरी की जान ले लेने का मन बनाया है। उस पर भी मैं सहमत हूं कि तुम जरा भी गलत नहीं सोच रहे। मैं तुम्हारे दिल की हालत समझ रहा हूं। इधर तुम तो जानते ही हो कि मैं खुंबरी को पसंद नहीं करता। खुंबरी ने अपने स्वार्थ की खातिर, ताकतों का सहारा लेकर राजा देव और रानी ताशा को अलग कर दिया था। रानी ताशा के हाथों, राजा देव को सदूर से बाहर, अंतरिक्ष में फेंक दिया था, जबकि दोनों एक-दूसरे पर जान छिड़कते थे। ये अन्याय किया खुंबरी ने। ये ही वजह है कि मैं भी खुंबरी की जान लेना चाहता हूं। हम लोग खुंबरी की जान लेने ही यहां आए हैं और तुम भी ये ही चाहते हो। तो हम दोनों की बेहतरी इसी में है कि हम मिलकर खुंबरी की जान लें।"

दोलाम होंठ भींचकर रह गया।

"तुम खुंबरी को मारकर, खुंबरी की जगह ले सकते हो। ताकतों के मालिक बन सकते हो। हकदार भी हो इसके कि तुमने दिल से खुंबरी की सेवा की है। खुंबरी की जगह अब तुम्हारी ही होनी चाहिए।"

"ये बात तुम दिल से कह रहे हो?" दोलाम का स्वर शक से भरा था

"पूरी तरह दिल से।"

"तुम भी खुंबरी की मौत चाहते हो?"

"दिल से।" बबूसा ने दिल पर हाथ रखा—"हम दोनों की मंजिल एक है। एक ही जगह पहुंचना है हमें। तो क्यों न एक साथ ही रास्ता तय करें। दोनों को एक-दूसरे का सहारा रहेगा। हम जल्दी मंजिल पर पहुंच जाएंगे।"

"जगमोहन को तो तुम जानते ही होगे?" दोलाम बोला।

"अच्छी तरह।"

"वो खुंबरी पर आशिक है। अगर तुम खुंबरी की जान लोगे तो उ
बुरा लगेगा।"

"वो भटक चुका है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"खुंबरी के रूप का जादू उसके सिर चढ़कर बोल रहा है। खुंबरी बुरी ताकतों की मालिक है। ये बात भी वो भूल गया। मेरा पूरा ध्यान खुंबरी को खत्म कर देने पर है। ऐसा होने पर राजा देव और रानी ताशा बहुत खुश होंगे। मैं राजा देव का सेवक हूं और उनके पक्ष में ही काम करता हूं। मुझे जगमोहन की इतनी परवाह नहीं कि उसके लिए मैं खुंबरी की जान लेने का इरादा छोड़ दूं।"

दोलाम ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"तो हम दोस्त बन जाएं दोलाम?" बबूसा ने मुस्कराकर कहा।

"अभी नहीं।" दोलाम ने सोच भरे स्वर में कहा।

"मैं समझा नहीं कि तुम्हारे मन में क्या है।"

"ठोरा ने कहा कि मुझे खुंबरी से स्पष्ट बात करनी चाहिए। हो सकता है खुंबरी मेरी बात सुनकर स्वयं को मेरे हवाले कर दे और जगमोहन से दूर हो जाए।" दोलाम ने कहा।

"तुम्हारा मतलब कि खुंबरी अपना शरीर तुम्हें सौंप देगी?"

"सम्भव है।"

"ऐसा कभी नहीं होगा दोलाम।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा।

दोलाम की आंखें सिकुड़ीं। वो बबूसा को देखने लगा।

"क्यों?"

"खुंबरी को अगर तुम्हारी परवाह होती तो वो अपना शरीर कबका तुम्हें सौंप चुकी होती।"

"सम्भव है खुंबरी का ध्यान मुझ पर कभी गया ही न हो।"

"तुम उसके मात्र सेवक हो।"

"मात्र सेवक? मैंने खुंबरी के लिए आज तक जो किया, वो मात्र सेवक रहने वाले नहीं करते बबूसा।"

"ये तो तुम कहते हो, लेकिन खुंबरी ऐसा नहीं सोचती। उसके विचार तुम्हारे लिए 'मात्र सेवक' वाले ही हैं।"

"तुम इस बात को इतने विश्वास के साथ कैसे कह रहे हो?"

"मेरा दिल कहता है कि मेरा खयाल बिल्कुल ठीक है। खुंबरी की निगाहों में तुम सेवक से ज्यादा महत्त्व नहीं रखते।"

दोलाम के दांत भिंच गए।

बबूसा उसे देखता शांत-सा खड़ा था।

"मैं खुंबरी से स्पष्ट बात करूंगा।"

"खुंबरी तुमसे नाराज भी हो सकती है कि तुम उसके बारे में, प्यार वाले विचार रखते हो।"

"मैं खुंबरी से सच में प्यार करता हूं अगर वो मेरी चाहत की इज्जत करे तो...।"

"ये तुम्हारा बेकार का खयाल है।"

"तो तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ मिल जाऊं और हम खुंबरी को मार दें। तब तुम खुश हो।" दोलाम का स्वर कड़वा हो गया।

बबूसा ने दोलाम की आंखों में झांका। फिर सिर हिलाकर बोला।

"ठीक है। तुम खुंबरी के सामने अपनी कोशिश कर लो। मुझे ये जानकर दुख नहीं होगा, जब वो तुमसे प्यार करने को इंकार कर देगी। क्योंकि मुझे पता है कि ऐसा ही होने वाला है। जगमोहन के सामने तुम कुछ भी नहीं।"

"मैं खुंबरी से इस बारे में बात जरूर करूंगा।" दोलाम दृढ़ स्वर में बोला।

बबूसा मुस्कराया, जैसे कह रहा हो, करके देख लो।

"तुम ये बात किसी से नहीं कहोगे कि मेरे दिल में क्या चल रहा है।" दोलाम ने कहा।

"मैं ऐसा कुछ भी नहीं करने वाला। क्योंकि मैं तुम्हें दिल से अपना दोस्त मान चुका हूं और मुझे यकीन है कि तुम जल्द ही दोस्त के रूप में मेरा हाथ थामने आओगे।" बबूसा ने सिर हिलाया।

दोलाम दृढ़ता भरे अंदाज में दरवाजे की तरफ बढ़ा।

बबूसा तुरंत चौखट से हट गया।

दोलाम बाहर निकलकर दो कदम आगे गया फिर ठिठककर बोला।

"रात हो चुकी है अपने कमरे में चले जाओ। तुम्हें इस तरह घूमने की इजाजत नहीं है।" कहकर दोलाम आगे बढ़ गया।

बबूसा पलटा और दोलाम के पीछे चल पड़ा। चेहरे पर विश्वास के भाव दिखाई दे रहे थे।

▭ ▭

खुंबरी ने आंखें खोलीं और उठ बैठी। चेहरे पर मोहक मुस्कान थी। आंखों में अजीब-सा नशा तैर रहा था। उसका खूबसूरत चेहरा, अपनी खूबसूरती के साथ दहक रहा था। बाल खुले थे। बालों की मोटी-सी लट झूलती हुई ठोढ़ी तक आकर मुड़-सी रही थी। रसभरे होंठों में जीवन की झलक मिल रही थी। सीने तक ले रखी चादर बैठते ही नीचे जा सरकी थी और उसके उरोज जो दिखे, उससे उसकी सुंदरता में चार चांद लग गए थे। वो सच में बेपनाह खूबसूरत थी। जिधर से भी देखे तो देखता ही रह जाए देखने वाला। दुनिया के महंगे हीरे से भी ज्यादा चमक थी खुंबरी में।

खुंबरी ने सीना ढांपने की जरा भी चेष्टा नहीं की।

मुस्कराता चेहरा बगल में जगमोहन की तरफ घुमाया।

बेहद गहरी नींद में था जगमोहन।

खुंबरी उसके खूबसूरत, मासूम से दिखने वाले चेहरे को देखती रह गई। फिर नीचे झुकी और उसके गाल को चूम लिया। उसके बालों में हाथ फेरा।

"बस भी करो।" जगमोहन नींद में डूबा कह उठा—"सोने दो।"

खुंबरी हौले-से हंस पड़ी और प्यार से बोली।

"बहुत वक्त हो गया है मेरे राजा। बाहर दिन निकल चुका होगा।"

परंतु जगमोहन नींद में डूबा रहा।

खुंबरी बेड से उतरी और अपने कपड़े तलाश करके पहनने लगी। चेहरे पर मस्ती नाच रही थी। रात की यादें मस्तिष्क में दौड़ रही थीं और रह-रहकर चेहरे पर गहरी मुस्कान नाच उठती थी।

कपड़े पहनने के बाद पलटी तो जगमोहन को देखते ही ठिठक गई।

जगमोहन उसी प्रकार लेटा आंखें खोले उसे देख रहा था।

"तो तुम मुझे देख रहे हो।" खुंबरी ने शरारती स्वर में कहा।

"बहुत खूबसूरत हो तुम।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

खुंबरी वापस बेड पर आ बैठी।

जगमोहन ने उसका हाथ थाम लिया।

"हममें कितना प्यार हो गया जगमोहन।" खुंबरी प्यार से बोली।

"मैं भी ये ही सोचता हूं।"

"हमें मिलने में देर हो गई—है न?"

"हां। हम पृथ्वी पर भी मिल सकते थे।"

"पृथ्वी ग्रह पर कैसे मिलते। मेरा शरीर तो सदूर ग्रह पर था।" खुंबरी ने कहा।

"तुम्हारे रूप में धरा भी तो थी वहां।"

"धरा में और खुंबरी में बहुत फर्क है। मैं खुंबरी हूं और धरा मेरा दूसरा रूप है। उसकी मेरी सोचों में फर्क है।"

"धरा इतनी देर मेरे साथ रही, परंतु उसने कभी भी मुझ पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।"

"वो ऐसा कर भी नहीं सकती थी।" खुंबरी सिर हिलाकर धीमे स्वर में बोली—"तब धरा के ऊपर बहुत जिम्मेवारियां थीं। उसने सुरक्षित सदूर ग्रह पर पहुंचना था, जबकि वो जानती थी कि वहां डुमरा उसके आने के इंतजार में खड़ा है। फिर धरा ने यहां आना था। मुझमें जान डालने जैसा महत्त्वपूर्ण काम उसने करना था। मंत्रों वाले कटोरे को दोबारा चालू करना

था कि ताकतें अपने लिए ऊर्जा प्राप्त करके ताकतवर बन सकें। धरा ने अपने कामों को ठीक से पूरा किया। पांच सौ साल से सुरक्षित रखे मेरे शरीर में फिर से जान आ गई। फिर सब कुछ सुचारु रूप से चलने लगा। उसके बाद ही तुम मुझे मिले और मैं तुम्हें देखते ही तुमसे प्यार कर बैठी।" खुंबरी मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा-सा दिखने लगा।

"मैं भी। मैं भी तुम्हें देखते ही दिल दे बैठा।" जगमोहन भी मुस्कराया।

"प्यार कितना अच्छा होता है।"

"बहुत अच्छा।" जगमोहन ने खुंबरी का हाथ दबाया—"प्यार इंसान को सब कुछ भुला देता है।"

"प्यार में बहुत ताकत होती है।" खुंबरी ने मदहोश स्वर में कहा।

जगमोहन उठ बैठा और खुंबरी के खूबसूरत चेहरे को देखने लगा।

"प्यार में ताकत होती है न?" जगमोहन बोला।

"बहुत।"

"तो तुम्हें प्यार की ताकत के सहारे जीवन बिताना चाहिए। तुम बुरी ताकतों की मालकिन क्यों बनी बैठी हो?"

खुंबरी ने उसी पल जगमोहन के हाथ से अपना हाथ खींच लिया।

दोनों की नजरें मिलीं।

खुंबरी के चेहरे पर ठहरे प्यार के भाव अब कम हो गए थे।

"तुमने फिर वो ही बात शुरू कर दी।" खुंबरी शांत स्वर में बोली।

"तुमने ही तो कहा कि प्यार में ताकत होती है, तो मैंने क्या गलत कहा कि बुरी ताकतों का साथ छोड़ दो। हम प्यार से...।"

"इसका जवाब मैं तुम्हें दे चुकी हूं जगमोहन।" खुंबरी ने शांत स्वर में कहा—"ताकतें मेरे जीवन का अहम हिस्सा हैं। इनके बिना मैं जीवन बिताने की सोच भी नहीं सकती। ताकतें मेरा साथ न देतीं तो खुंबरी का अस्तित्व ही मिट चुका होता। ताकतों ने ही कभी मुझे सदूर की रानी बनाया था। मेरे दुश्मनों को खत्म किया था और अब फिर मेरी ताकतें मुझे सदूर की रानी बना देंगी। लेकिन उससे पहले मैं अपने दुश्मन डुमरा को खत्म करूंगी। डुमरा ने पांच सौ सालों का श्राप देकर मुझे सदूर से बाहर, पृथ्वी पर रहने को मजबूर कर दिया था। मैं डुमरा से बदला लूंगी। उसकी मौत के बाद ही अन्य कामों के देखूंगी।" खुंबरी के चेहरे पर सख्ती आ गई।

जगमोहन की निगाह खुंबरी के चेहरे पर थी।

"तुम मेरे लिए भी अपनी ताकतों को नहीं छोड़ सकतीं?"

"मेरे लिए जैसे ताकतें जरूरी थीं, वैसे ही अब तुम भी जरूरी हो गए हो जगमोहन। मैं तुमसे दिल हार बैठी हूं। पांच सौ सालों के पहले भी मैं

किसी मर्द के करीब नहीं गई। ये सब सोचने में भी मुझे अच्छा नहीं लगता था। इतने लम्बे जीवन में पहली बार मैंने तुम जैसे पुरुष से प्यार किया और मुझे पता चला कि प्यार कितना अच्छा होता है। क्यों लोग एक-दूसरे से प्यार करते है और जान भी दे देते हैं। ये सब कारू (शराब) पीने जैसा है। ताकतों के बिना खुंबरी नहीं, इसी तरह अब जगमोहन के बिना भी खुंबरी नहीं। ताकतें और तुम मेरी जरूरत बन गए हो।"

"मैंने पूछा था कि तुम मेरे लिए ताकतों को नहीं छोड़ सकती?" जगमोहन ने पुनः पूछा।

"नहीं।" खुंबरी ने सामान्य स्वर में कहा—"तुम्हारे लिए मैं ताकतें नहीं छोड़ सकती और ताकतों के लिए मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती। मेरे फैसले के बीच कोई भी नहीं आ सकता।"

"हमारा प्यार, तुम्हारे किसी फैसले पर नहीं टिका।" जगमोहन बोला।

खुंबरी ने जगमोहन को देखा।

"मुझे तुमसे प्यार हो गया है तो इसलिए तुमसे प्यार कर रहा हूं, इसलिए तुम्हारे करीब हूं।"

"स्पष्ट कहो।"

"मैं चाहता हूं मेरी खुंबरी बुरी ताकतों से दूर हो जाए।" जगमोहन मुस्कराया।

"बुरी ताकतें?"

"हां खुंबरी। वो बुरी तो हैं।"

"तुमने मुझमें कोई बुराई देखी अब तक?"

"जरा भी नहीं।"

"इसका मतलब मैं बुरी नहीं हूं।"

"मैंने तुम्हें बुरी नहीं कहा।"

"तो फिर मेरी ताकतें हमारे प्यार के बीच कहां से आ गईं। मुझे तुमसे प्यार है, तुम्हें मुझसे प्यार है। हम दोनों अच्छे हैं। एक-दूसरे पर विश्वास करते हैं। हमारे लिए इतना ही बहुत है जगमोहन।" खुंबरी ने कहा।

"मैं चाहता हूं तुम बुरी ताकतों का साथ छोड़ दो।"

"ये सम्भव नहीं। मैं तुम्हें जवाब दे चुकी हूं। मेरी ताकतों से तुम्हें कोई समस्या हो तो कहो।"

"तुम डुमरा की जान लेना चाहती हो।"

"जरूर लूंगी। उसने बिना वजह मुझे पांच सौ सालों का श्राप (ये जानने के लिए पढ़ें राजा **पॉकेट बुक्स** में प्रकाशित अनिल मोहन का बबूसा शृंखला का उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'**) दिया। मुझे सदूर से निकाल दिया।

कितनी तकलीफ दी उसने तुम्हारी खुंबरी को। मेरा शरीर यहां पड़ा रहा और मैं पृथ्वी पर नए शरीर में जन्म लेती रही। डुमरा अब भी मेरी ताक में है। वो मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा। इस वक्त भी बाहर जंगल में भटकता मेरी तलाश कर रहा है कि मुझ पर वार करके मुझे खत्म कर सके। तुम लोगों को भी उसने मेरी तलाश में लगा...।"

"डुमरा तुम्हारे खिलाफ नहीं है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा

"तो?"

"वो उन बुरी ताकतों के खिलाफ लड़ रहा है, जो तुम्हारे अधिकार में हैं। अगर तुम अपनी ताकतों को छोड़ दो तो डुमरा तुम्हें सदूर की रानी बना देगा। तुम बुरी नहीं...।"

खुंबरी हौले-से हंस पड़ी।

जगमोहन अपने शब्द अधूरे छोड़कर उसे देखने लगा।

"मेरे प्यारे जगमोहन।" मुस्कराती खुंबरी का निचला होंठ टेढ़ा हो गया—"सदूर की रानी तो मेरी ताकतें मुझे चुटकी में बना देंगी। इस काम के लिए मुझे डुमरा की जरूरत नहीं है। बल्कि डुमरा तो खुद ही बड़े खतरे में फंस चुका है।"

"वो कैसे?"

"डुमरा इस ठिकाने के बाहर जंगल में मुझे तलाशता घूम रहा है।" होंठों पर उभरी मुस्कान ने खुंबरी का निचला होंठ टेढ़ा कर रखा था—"परंतु वो किसी भी हाल में ये जगह तलाश नहीं कर सकता क्योंकि मेरी ताकतों ने इस जगह पर काले साये फैला रखे हैं। डुमरा इस जगह के पास से निकल जाएगा, लेकिन उसे दिखेगा कुछ भी नहीं, क्योंकि उसकी पवित्र शक्तियां उसके साथ हैं, जिसकी वजह से ताकतों के फैले सायों का उसे आभास नहीं होगा। साधारण मनुष्य अवश्य इस जगह को देख सकता है, तभी तो उसने तुम सबकी, देवराज चौहान, रानी ताशा, नगीना, सोमारा, मोना चौधरी बबूसा की सहायता ली कि इस जगह को ये लोग देखकर उसे बता देंगे। लेकिन वो सब मेरी कैद में आ गए और तुमसे तो मुझे प्यार हो गया जगमोहन।"

जगमोहन के चेहरे पर मुस्कान नहीं उभरी।

"तुम डुमरा के खतरे में फंसने की बात कर रही थीं।"

"हां। मेरी ताकतें डुमरा पर बड़ा वार करने जा रही हैं। कल ओहारा ने कहा था कि आज वो डुमरा पर वार करके उसे खत्म कर देगा। ओहारा डुमरा का ऐसा हाल कर देगा कि उसकी जान निकल जाएगी।"

"मैं नहीं चाहता कि डुमरा की जान जाए।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"इससे तुम्हें कोई भी मतलब नहीं होना चाहिए जगमोहन।"

"क्यों?"

"तुम्हारा वास्ता मेरे से है। मेरा वास्ता तुमसे है। हम दोनों का प्यार ठीक राह पर चल रहा है। डुमरा से तुम्हारा कोई मतलब नहीं है। वो मेरा दुश्मन है, शक्तियों का साथ पाकर वो मुझे कब से परेशान कर रहा है। अब उसे मरना ही होगा। मेरी शक्तियां उसे खत्म कर देंगी।" खुंबरी ने मुस्कराकर कहा।

"अगर मैं कहूं कि तुम डुमरा की जान मत लो, तो...।"

"ये गलत होगा। मेरे और मेरी ताकतों में ये दखलअंदाजी होगी। तुम बेकार की बातें क्यों सोचते हो। मेरे बारे में सोचो, जैसे कि मैं तुम्हारे बारे में सोचती हूं। मेरी ताकतें कहें कि मैं तुमसे अलग हो जाऊं तो क्या मैं उनकी बात मानूंगी। नहीं मानूंगी। हम दोनों ही तो...।"

"खुंबरी।" जगमोहन गम्भीर था—"मैं चाहता हूं तुम डुमरा की जान मत लो।"

खुंबरी के चेहरे पर से मुस्कान गायब हो गई।

"ये तुम क्या कर रहे हो जगमोहन?"

"मेरी बात मान लो खुंबरी?"

"कभी नहीं।" खुंबरी की आवाज में दृढ़ता भरने लगी—"तुम मेरे और डुमरा के बारे में सब कुछ जानते हो। तुम जानते हो कि डुमरा ने मुझे पांच सौ सालों का श्राप देकर सदूर से बाहर चले जाने को मजबूर कर दिया। जबकि मैंने उसे कभी परेशान नहीं किया था। अब जब वापस आई तो वो मेरे इंतजार में था और फिर मुझे ताकतों का साथ छोड़ देने को कहने लगा। लेकिन मैं तो सोचे बैठी थी कि श्राप का बदला लेकर रहूंगी। वो जानता है कि सदूर के पूर्व के जंगलों में कहीं मेरा ठिकाना है और शक्तियां मेरे ठिकानों को तलाश नहीं कर सकतीं। क्योंकि ताकतों के साए इस जगह पर फैले हैं। ऐसे में डुमरा ने तुम लोगों को, इस ठिकाने की तलाश में भेज दिया। उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया कि मैं उसके बारे में कुछ सोचूं। लेकिन तुम्हें डुमरा की चिंता क्यों है?"

"मैं उससे मिल चुका हूं। वो अच्छा इंसान है।"

"तो क्या मैं तुम्हें बुरी लगी?"

"कभी नहीं, जरा भी नहीं।" जगमोहन ने इंकार में सिर हिलाया।

"तो फिर डुमरा से कहते कि वो मेरे पीछे क्यों पड़ा है।" खुंबरी स्वर में सख्ती आ गई थी।

"ये तुम्हारी और डुमरा की लड़ाई नहीं है। ताकतों और शक्तियों की लड़ाई है अच्छाई और बुराई की लड़ाई...।"

"तुम ऐसा समझते हो तो फिर ये क्यों कहते हो कि मैं डुमरा की जान न लूं। डुमरा उन शक्तियों के दम पर अकड़ रहा है जो उसका साथ देती हैं, वरना डुमरा में है ही क्या जो मेरे सामने खड़ा होने की हिम्मत कर पाता।"

"तुम भी तो ताकतों के दम पर डुमरा का मुकाबला कर रही हो।"

खुंबरी ने जगमोहन को देखकर गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम मेरे और डुमरा के बीच में मत आओ। मैं नहीं चाहती कि हमारे प्यार पर इन बातों का कोई प्रभाव पड़े।"

"प्रभाव पड़ सकता है क्या?" जगमोहन मुस्कराया।

"मेरे खयाल में तो नहीं।" खुंबरी भी मुस्कराई।

"मैं चाहता हूं कि मेरी खुंबरी हर बंधन से आजाद हो जाए औ हम दोनों एक-दूसरे की बांहों में रहें।"

"ऐसा ही हो रहा है और आगे भी ऐसा ही होगा।" खुंबरी ने एकाएक प्यार से कहा।

"पर कभी-कभी सोचता हूं कि ताकतों और शक्तियों की लड़ाई हमारे प्यार पर असर न डाल दे।"

"ऐसा कभी नहीं होने वाला।" खुंबरी ने दृढ़ स्वर में कहा।

"मेरे सब साथी तुम्हारी कैद में हैं खुंबरी।"

"उनका कैद में रहना जरूरी है। वो सब मेरे से इस बात का बदला लेना चाहते हैं कि कभी ताकतों ने पृथ्वी से सदूर तक का, मेरे लिए रास्ता बनाने के लिए, रानी ताशा और राजा देव को अलग कर दिया था। परंतु उस वक्त ये काम करना जरूरी था। वरना मैं धरा के रूप में सशरीर सदूर पर कैसे लौट पाती। रानी ताशा तो पागल हुई पड़ी है, मेरी जान लेने के लिए। क्या तुम्हें अच्छा लगेगा कि रानी ताशा मेरी जान ले ले।"

"जरा भी अच्छा नहीं लगेगा।"

"अभी उन्हें कैद में रहने दो। तुमने किसी एक को कैद से निकाल को कल कहा था तो मैंने बबूसा को...।"

"सोमाथ को तुम भूल रही हो।" जगमोहन एकाएक बोला।

"वो मशीनी मानव। जिसे महापंडित ने बनाया है।"

"वो ही। उस पर तो ताकतें असर नहीं कर सकतीं। वो सामने पड़ गया तो उसका मुकाबला कैसे होगा?"

"वो जंगल में ही भटकता रहेगा।" खुंबरी ने कहा।

"भटककर इस तरफ भी तो आ सकता है, जैसे मैं आ गया था।"

"ऐसा हुआ तो उसका भी कोई इंतजाम हो जाएगा।"

"लगता नहीं कि तुम उसका मुकाबला कर पाओगी।" जगमोहन ने इंकार में सिर हिलाया।

"तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?"

"सोमाथ नाम का मशीनी मानव बहुत ताकत रखता है। महापंडित ने उसका दिमाग कमाल का बनाया है। वो हम इंसानों से बेहतर सोच लेता है। उस पर काबू नहीं पाया जा सकता। मैंने उसकी ताकत अपनी आंखों से देखी है।"

खुंबरी, जगमोहन को देखती रही।

"सोमाथ के बारे में तुम्हें गम्भीरता से विचार करना चाहिए खुंबरी।"

"क्या तुम इस मामले में मेरे साथ हो?"

"नहीं। मैं तुम्हें प्यार करने लगा हूं इसलिए तुम्हारे पास हूं। तुम अपनी ताकतों को कहां इस्तेमाल करती हो, मुझे मतलब नहीं।"

"तो क्या इस मामले में तुम अपने साथियों के साथ हो?" खुंबरी हौले से मुस्कराई।

"मैं...? मैं सिर्फ देवराज चौहान के साथ हूं, किसी अन्य से मेरा कोई मतलब नहीं।"

"देवराज चौहान यानी कि राजा देव?"

"हां, मेरा ये ही मतलब था।"

"देवराज चौहान तो मेरी जान लेना चाहता है।"

"इस काम में मैं देवराज चौहान के साथ नहीं हूं। वक्त आया तो उसे ऐसा करने से रोकने की चेष्टा करूंगा।"

"मतलब कि मेरे लिए तुम देवराज चौहान से भी झगड़ा कर सकते हो।"

"शायद, ये नौबत नहीं आएगी।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं समझी नहीं।"

"देवराज चौहान समझदार है। मेरे हालातों को वो जरूर समझेगा और तुम्हारी तरफ नहीं बढ़ेगा।"

"परंतु इस वक्त तो वो रानी ताशा के साथ है। रानी ताशा मेरी जान ले लेने की चाहत रखती है। उनके साथ नगीना है, देवराज चौहान की पत्नी। साथ में मोना चौधरी है, नगीना की बहन। सोमारा भी...।"

"खुंबरी।" जगमोहन सोच भरे स्वर में कह उठा।

"हां—कहो।"

"इन बातों को मत छेड़ो। ये नाजुक मसला है।"

खुंबरी जगमोहन को देखने लगी फिर बोली।

"तुम्हारे दिल में शंका है कि देवराज चौहान तुम्हारी बात को मानेगा या नहीं।"

"मैं इस बारे में देवराज चौहान से बात करूंगा।"

"जरूर करना।" खुंबरी ने सिर हिलाया—"पर तुम्हारा क्या खयाल है कि वक्त आने पर देवराज चौहान तुम्हारी बात मानेगा?"

"बहुत ज्यादा आशा है कि वो मेरा ही साथ देगा।"

"परंतु वो रानी ताशा का साथ देने को कह चुका है। तभी तो यहां आया है।"

जगमोहन ने होंठ सिकोड़कर खुंबरी को देखा।

खुंबरी मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा हो गया।

"मेरे प्यारे जगमोहन।" खुंबरी जगमोहन के सिर के बालों में हाथ की उंगलियां फेरती कह उठी—"तुमसे बेहतर मैं हालातों को समझ रही हूं। रानी ताशा देवराज चौहान की सदूर ग्रह की पुरानी पत्नी है। देवराज चौहान को सदूर के जन्म की याद आ चुकी है। रानी ताशा से अलग होने का उसे पूरा पता है। बेशक आज उसकी पत्नी नगीना है, परंतु रानी ताशा के लिए उसके मन में जगह जरूर होगी। तभी वो मेरी तलाश में यहां तक आ गया। अब वो रानी ताशा का पूरा साथ दे रहा है।"

"लेकिन देवराज चौहान रानी ताशा के साथ मेरा मुकाबला नहीं कर सकता।" जगमोहन कह उठा।

"खूब। समझ गई तुम्हारी बात।" खुंबरी मुस्कराई—"तुम्हारा मतलब कि देवराज चौहान के सामने जब रानी ताशा या तुममें से किसी को चुनने का मौका आया तो वो तुम्हें चुनेगा। ये ही कहना चाहते हो न?"

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

खुंबरी के चेहरे पर गम्भीर भाव आ गए।

"पर मुझे लगता है कि ऐसा नहीं होगा।" खुंबरी पुनः बोली—"देवराज चौहान कभी भी तुम्हारा साथ नहीं देगा। क्योंकि मैं ताकतों की मालिक हूं और तुम मुझसे प्यार कर बैठे हो। वो रानी ताशा का साथ देगा, क्योंकि रानी ताशा कभी सदूर पर उसकी रानी थी। दोनों एक-दूसरे से खूब प्यार करते थे और मेरी ताकतों ने उन्हें अलग कर दिया। ऐसे में देवराज चौहान का पुराना प्यार, बेशक चोरी-छिपे ही, उछाल जरूर मारेगा और वो रानी ताशा का साथ देगा। ऐसे वक्त में दोस्त के बारे में नहीं सोचा जाता, औरत दिमाग पर ज्यादा असर करती है।"

"बात इतनी भी नहीं है, जितना कि तुम कह रही हो खुंबरी।" सख्त-सा स्वर निकला जगमोहन के होंठों से।

"ठीक है।" खुंबरी उसके गालों पर हाथ फेरती मुस्कराकर बोली—"ये बात तुम देवराज चौहान से करना। अगर वो रानी ताशा का साथ छोड़कर तुम्हारा साथ देने को तैयार है तो वो सिर्फ हां कर दे, मैं उसी वक्त उसे आजाद कर दूंगी।"

जगमोहन ने खुंबरी को देखा।

खुंबरी ने प्यार से जगमोहन के गाल पर हाथ फेरा। बोली।

"इससे तुम्हें ये भी पता चल जाएगा कि देवराज चौहान की नजरों में तुम्हारा क्या महत्त्व है या है ही नहीं।"

"तुम देवराज चौहान के लिए मेरे मन में जहर भर रही हो।" जगमोहन तीखे स्वर में कह उठा।

"ऐसा मत कहो। मैं तुम्हें शानदार मौका दे रही हूं कि तुम देवराज चौहान को ठीक से जान सको।"

"देवराज चौहान को मुझसे ज्यादा कोई नहीं जानता।"

"तुम्हारी ये गलतफहमी भी बहुत जल्द दूर हो जाएगी।" खुंबरी ने कहा और बेड से उतरकर खड़ी हो गई।

जगमोहन की निगाह खुंबरी पर थी।

"तुम कथित इस गलतफहमी को दूर करने में दिलचस्पी क्यों दिखा रही हो?"

"ताकि तुम्हें पता चल सके कि एक सिर्फ मैं ही हूं जो अपने जगमोहन की चिंता करती हूं। मेरे से ज्यादा तुम्हें चाहने वाला, न तो पृथ्वी ग्रह पर है, न सदूर पर। मैं हमेशा तुम्हारे साथ ही रहना चाहती हूं। इसके लिए जरूरी है कि तुम्हें इस बात का एहसास हो जाए कि पृथ्वी पर तुम्हारी चिंता करने वाला कोई नहीं है। वहां पर जाने का खयाल भी मन में न लाओ और सदूर के राजा बनकर मेरे साथ जीवन व्यतीत कर दो।"

"हम जहां भी रहेंगे एक साथ ही रहेंगे खुंबरी।" जगमोहन के स्वर में प्यार उमड़ आया।

"हां, हम साथ ही रहेंगे। सदूर पर एक-दूसरे की बांहों में जिंदगी बिता देंगे। मैं तुम्हें अपनी पलकें बिछाकर उस पर तुम्हें बिठाकर रखूंगी कि तुम्हें कोई तकलीफ न हो। खुंबरी का प्यार मौसम के रंग की तरह कभी भी फीका नहीं पड़ेगा। ये मेरा पहला और आखिरी प्यार है तुम्हारे साथ। तुम मेरे जीवन हो, मैं तुम्हारा जीवन हूं।"

"हां खुंबरी हां।" जगमोहन का सवर कांपा—"ऐसा ही है।"

"जगमोहन।" खुंबरी की आवाज में भी कम्पन उभरा।

जगमोहन जल्दी-से बेड से उतरा और खुंबरी को बांहों के घेरे में लेकर अपने से सटा लिया। खुंबरी की बांहें भी जगमोहन के गिर्द लिपट चुकी थीं।
"मुझसे कभी दूर मत जाना जगमोहन।"
"तुममें तो अब मेरी जान बसने लगी है।" जगमोहन का स्वर भर्रा उठा।
"मैं तुम्हें सबसे ज्यादा प्यार करती हूं जगमोहन। देवराज चौहान से भी ज्यादा प्यार। स्त्री-पुरुष का प्यार। हम दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। हम दोनों ही कबसे एक-दूसरे को जन्मों से तलाश कर रहे थे।"
"खुंबरी।"
"जगमोहन।"
लम्बे पलों तक दोनों एक-दूसरे के लिपटे इसी तरह खड़े रहे।
फिर जगमोहन ही अलग हुआ।
खुंबरी की आंखें गीली थीं। वो प्यार भरी निगाहों से जगमोहन को निहार रही थी।
"सच में प्यार में बहुत ताकत होती है।" खुंबरी बोली—"मैं नादान, कभी जान ही नहीं पाई।" कहने के साथ ही उसने जगमोहन का हाथ पकड़ा—"हम दोनों एक साथ कुंड में स्नान करेंगे। बड़ा मजा आएगा।"
"पर वहां दोलाम खड़ा रहता है।" जगमोहन मुस्कराकर कह उठा।
"मैं उसे वहां आने को मना कर दूंगी। अब खुश?" खुंबरी ने दोनों आंखें नचाईं।
जवाब में जगमोहन हंस पड़ा।

▭ ▭

दोलाम खाने के कमरे में कमर पर हाथ बांधे क्रोध भरे अंदाज में टहल रहा था। चेहरे पर कठोरता नाच रही थी। होंठ भिंच हुए थे। आंखें सुलग-सी रही थीं। खुंबरी और जगमोहन पानी के कुंड में नहा रहे थे। धरा उनकी देख-रेख के लिए वहां मौजूद थी। परंतु खुंबरी ने उसे कुंड की तरफ न आने का आदेश दे दिया था। ये पहली बार हुआ था कि खुंबरी नहा रही हो और वो पास में मौजूद न हो। आज पहली बार दोलाम को अपमान जैसा महसूस हुआ था। उसे स्पष्ट महसूस हो रहा था कि जगमोहन के आने के बाद खुंबरी बदल-सी गई है। पहले उससे बातें किया करती थी। सलाह भी लेती थी लेकिन अब वो हर वक्त जगमोहन के साथ ही रहती है और उसे उसकी परवाह तक नहीं है।
खुंबरी जगमोहन के साथ क्यों है, उसके साथ क्यों नहीं?
ये बात उसे खाए जा रही थी।

खुंबरी पर उसका हक है। उसने पांच सौ सालों तक सच्चे मन से खुंबरी के शरीर की सेवा की। ऐसा नहीं कि खुंबरी का शरीर पाने के लिए सेवा की। अपने फर्ज समझ कर सेवा की। खुंबरी अगर किसी को प्यार न करती तो ये बात उसके मन में भी नहीं आनी थी कि खुंबरी से प्यार करने का, उसका हक बनता है। परंतु खुंबरी ने पृथ्वी से आए जगमोहन के हवाले अपना शरीर कर दिया। ये ही बात उसे परेशान कर रही थी कि खुंबरी को प्यार करना था तो उससे करती। उससे बेहतर इंसान खुंबरी के लिए दूसरा कोई था ही नहीं। उसने हमेशा ही खुंबरी की भरपूर सेवा की है।

चहलकदमी करते दोलाम ने चबूतरे पर मौजूद खाली बर्तनों को देखा। वो जानता था कि जब खुंबरी का खाने का मन होगा तो ये बर्तन खाने के व्यंजनों से भर जाएंगे। ताकतें खुंबरी का पूरा ध्यान रखती थीं।

दोलाम की सोचें पुनः खुंबरी और जगमोहन की तरफ चली गईं।

तभी कदमों की आहट उसके कानों में पड़ी तो उसने दरवाजे जैसे खाली स्थान की तरफ देखा। अगले ही पल वहां बबूसा दिखा।

"तुम यहां हो।" बबूसा भीतर आता कह उठा—"मैं तुम्हें ही ढूंढ़ रहा था।"

बबूसा भीतर आ गया।

दोलाम ने उखड़ी नजरों से उसे देखा।

"यहां कोई दिख नहीं रहा। धरा भी नहीं, जगमोहन और खुंबरी भी नहीं। हर तरफ शांति है।" बबूसा ने कहा।

"खुंबरी और जगमोहन कुंड में नहा रहे हैं।" दोलाम शब्दों को चबाकर बोला।

"कुंड कहां है मुझे तो नहीं दिखा।"

"वो दूसरे रास्ते पर है। अभी तुमने वो रास्ता देखा नहीं।"

"समझा। धरा भी वहीं है।"

"हां।" दोलाम ने बल खाकर कहा।

"तुम्हारा तो वहां जाना मना होगा।" बबूसा ने दोलाम को देखा—"खुंबरी के नहाते समय, तुम पास में क्यों रहोगे?"

"मैं हमेशा ही पास में होता हूं। आज पहली बार है कि नहीं हूं।"

"अच्छा।" बबूसा ने सिर हिलाया—"आज पहली बार ऐसा क्यों हो गया दोलाम?"

दोलाम ने होंठ भींचकर बबूसा को देखा।

"मैं तुम्हारा दोस्त है दोलाम। मुझे पराया न समझो। अपने मन की बात कह दो।"

"खुंबरी ने मना कर दिया।"

"तो ये बात है।" बबूसा ने सिर हिलाया—"खुंबरी कुंड में कपड़े उतारकर नहाती है।"

"हां।"

"और तुम हमेशा उसके पास रहते हो?"

"हां। अब भी और पांच सौ साल पहले भी, खुंबरी के नहाने के समय मैं उसकी सेवा में रहता था।"

"परंतु अब खुंबरी ने नहाते समय तुम्हारी सेवा लेने से इंकार कर दिया।" बबूसा ने सोच भरे स्वर में कहा—"ये खुंबरी का इंकार नहीं, जगमोहन का इंकार है। जगमोहन ने ही खुंबरी से कहा होगा कि नहाते समय दोलाम तुम्हारा शरीर देखता रहता है। इसलिए कुंड के पास दोलाम को मत रहने दिया करो।"

दोलाम के होंठों से गुर्राहट निकली।

"जगमोहन धीरे-धीरे तुम्हारे सारे रास्ते बंद कर देगा।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा।" दोलाम ने सख्त स्वर में कहा।

"नहीं होगा? होना शुरू हो गया है।" बबूसा ने गहरी सांस ली—"जो मैं देख रहा हूं वो तुम नहीं देख पा रहे।"

"मैं खुंबरी से स्पष्ट बात करूंगा।"

"वो ही प्यार वाली बात?"

"हां। खुंबरी को जगमोहन का साथ छोड़कर, मेरा हाथ थामना होगा। वो मेरी बात मानेगी।"

"बहुत भरोसा है अपने पर तुझे दोलाम।"

"भरोसा है। मैंने खुंबरी की सेवा की है तो खुंबरी पर मेरा हक बनता है। ठोरा ने भी ऐसा ही कहा था।"

"मुझे नहीं लगता कि खुंबरी, जगमोहन को छोड़कर तेरे पास आएगी।"

"वो जरूर ऐसा ही करेगी जब उसे पता चलेगा कि दोलाम उसे चाहता है।"

"मुझे तो ऐसा होता नहीं लगता। फिर भी तुम कोशिश जरूर करना।" बबूसा बोला—"मुझे भूख लग रही है। खाने को...।"

"अभी खाने को कुछ नहीं है।" दोलाम बोला—"खाने के बर्तन खाली हैं।"

"तुमने खाना बनाया नहीं?"

"मैं खाना कभी नहीं बनाता। ताकतें ही बर्तनों को खाने से भर देती हैं।" दोलाम बोला।

"ऐसा कब होगा?"

"जब खुंबरी को खाने का मन होगा।"

"ठीक है। जब खाना आ जाए तो मुझे बता देना।" बबूसा पलटते हुए बोला—"और तुम खुंबरी से बात करना मत भूलना। हो सकता है खुंबरी का मन बदल जाए और वो जगमोहन को छोड़कर, तुमसे प्यार करने लगे।" बबूसा बाहर निकला और आगे बढ़ गया। चेहरे पर मुस्कान फैल गई—"दोलाम बहुत बड़ी गलतफहमी में जी रहा है।" वो बड़बड़ा उठा।

▭ ▭

पानी के कुंड में खुंबरी और जगमोहन अठखेलियां कर रहे थे। पानी में डाली गई खुशबू से कुंड के आसपास का वातावरण भी महक रहा था। दोनों के कपड़े कुंड के किनारे पर रखे थे। रह-रहकर खुंबरी और जगमोहन की हंसी गूंज उठती थी। धरा कुछ हटकर फर्शपर बैठी थी। दोनों की आवाजें सुनकर रह-रहकर मुस्करा पड़ती।

तभी धरा के कानों में अमाली की मध्यम-सी आवाज पड़ी।

"कैसी है तू?"

"मजे में हूं।"

"खुंबरी के पास तो वक्त ही नहीं है मेरे से बात करने का। वो हमेशा जगमोहन के ही पास रहती है। इतना भी प्यार ठीक नहीं।"

"वाह।" धरा हंसकर बोली—"ये तू कह रही है।"

"तो क्या गलत कह दिया। खुंबरी मेरे से बात क्यों नहीं करती?"

"वो नहीं करती तो तू कर ले।"

"मैं तो बहुत बार आई बात करने पर हर बार मेरी ताकतों ने मुझे ये ही इशारा दिया कि खुंबरी प्यार करने में व्यस्त है।"

"तो वो प्यार भी न करे। पहली बार तो वो मर्द का सुख ले रही है।" धरा बराबर मुस्कराती रही थी—"तू जलती है।"

"मैं क्यों जलने लगी।" अमाली ने नाराजगी से कहा।

"तू मेरे से बात कर। मैं भी तो खुंबरी हूं।"

"वो तो ठीक है। पर मैं उसी खुंबरी से बात करना चाहती हूं।"

"आखिर बात क्या है?"

जवाब में अमाली की आवाज नहीं आई।

"अमाली।" धरा ने पुकारा।

"यहीं हूं तेरे पास।"

"बोलती क्यों नहीं। चुप क्यों हो गई?"

"तू खुंबरी से मेरी बात करा।"

"जाकर कर ले।"

"कैसे करूं। उसने बटाका उतारकर अपने कपड़ों के पास ही रख छोड़ा है।"

"वो नहा रही है। तुझे अभी बात करनी है।"

"खुंबरी के पास आज कल वक्त ही कहां होता है। तू अभी मेरी बात करा।"

"रुक तो जरा।" कहने के साथ ही धरा उठी और कुंड के किनारे पर जा पहुंची।

धरा के देखते ही देखते खुंबरी पानी में जगमोहन की तरफ लपकी और पास पहुंचकर जगमोहन को पानी की गहराइयों में लेती चली गई। दोनों दिखने बंद हो गए।

धरा मुस्कराई।

"देखा। क्या आग लगी है खुंबरी को मर्द की। उसे एक मिनट भी चैन से नहीं रहने देती।"

"तू क्यों सड़ रही है।" धरा हंसी।

"मैं सड़ नहीं रही, तेरे को बता रही हूं।"

"तूने भी तो कभी मर्द से प्यार किया होगा।"

"हाय।" अमाली गहरी सांस लेने की आवाज आई—"मैंने तो एक ही बार में दो-दो मर्दों से प्यार किया था।"

"एक साथ?"

"नहीं—नहीं। दोनों से अलग-अलग प्यार करती थी। एक मेरा पति था, दूसरा उसका भाई। कितना मजा आता था। जब पति काम पर चला जाता था तो फिर उसका भाई—आह—वो तो मेरा बुरा हाल कर देता था। पूरा मर्द था। पर वो सच में मुझे प्यार करता था। उसने शादी नहीं की थी और इसी तरह मेरे साथ जिंदगी बिता दी थी।"

तभी पानी में शोर उठा और खुंबरी और जगमोहन पानी की सतह पर आ गए।

"अब की बार छेड़ा तो छोड़ूंगी नहीं।" खुंबरी ने मस्त स्वर में जगमोहन से कहा।

जवाब में जगमोहन हंस पड़ा।

"तेरे से अमाली बात करना चाहती है।" धरा ने खुंबरी से कहा।

खुंबरी ने धरा को देखा।

"कह दे, वक्त नहीं है अभी।"

"वो परेशान है कि तेरे से बात नहीं हो पा रही। धरा बोली।

"कोई खास बात कहनी है उसे?"

"पता नहीं। तू बात कर ले।"

"बोल अमाली।" इस बार खुंबरी ने कुछ ऊंचे स्वर में कहा।

"तेरे पास तो वक्त ही नहीं होता अब मेरे से बात करने का।" अमाली की आवाज धरा के पास कुछ ऊंची आई।

"काम की बात कह।"

"हां—हां। अब तो तू ये ही कहेगी।"

"जल्दी बोल।"

"मैं तेरे से इजाजत लेने आई हूं कि तू मुझे, अपने और जगमोहन के प्यार का भविष्य देखने दे।"

"मैं पहले ही मना कर चुकी हूं।"

"पता है मुझे। पर मेरे से रहा नहीं जा रहा। मैं तेरे प्यार का भविष्य देखना चाहती हूं।"

"इस बात की मैं इजाजत नहीं दूंगी।" खुंबरी ने कहा।

"क्यों?"

"मुझे अपने जगमोहन पर पूरा भरोसा है। ये मुझे दिलोजान से चाहता है।"

"बेवकूफी न कर। प्यार में न मर्द का भरोसा होता है न औरत का। किसी पर भी भरोसा करना कठिन होता है। मैं ये नहीं कहती कि तेरा जगमोहन गलत है या बुरा है। पर तू मुझे मेरा काम करने से मत रोक।"

कुंड के पानी में मौजूद जगमोहन मुस्करा पड़ा।

"मैं तुझे सख्ती से कहती हूं कि तू मेरे प्यार का भविष्य जानने की कोशिश नहीं करेगी।"

"सोच ले खुंबरी। कहीं बाद में तुझे पछताना न पड़े।" अमाली का स्वर गम्भीर हो गया।

"तू मेरी इतनी ज्यादा भी चिंता न कर।"

तभी जगमोहन कह उठा।

"ये जो भी है इसे देखने दे कि हमारे प्यार का भविष्य क्या है।"

"मुझे तुम पर पूरा भरोसा है जगमोहन। अगर तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं तो मैं अमाली से हां कह देती हूं।"

"मुझे भी तुम पर भरोसा है।" जगमोहन ने प्यार भरे स्वर में कहा—"पूरा भरोसा है खुंबरी पर।"

खुंबरी मुस्करा पड़ी फिर ऊंचे स्वर में बोली।

"तू जा अमाली। अब ये बात मेरे से दोबारा नहीं करना।"

टेबल पर रखा खाना सब कुर्सियों पर बैठे खा रहे थे। खुंबरी, धरा, जगमोहन, बबूसा खाने में व्यस्त थे। जगमोहन और खुंबरी ने नहाने के बाद अपने शरीरों पर गाऊन लपेटा हुआ था। दोनों के सिर के बाल अभी भी गीले थे। दोलाम पांच कदमों की दूरी पर सपाट चेहरे के साथ खड़ा था। इस बीच कभी उसकी निगाह बबूसा से मिलती तो, बबूसा को मुस्कराते पाता, जैसे वो कह रहा हो कि तुम तो खुंबरी के साथ बैठकर खाना भी नहीं खा सकते। ऐसे में खुंबरी को पा लेने का ख्वाब छोड़ दो तो ठीक रहेगा।

दोलाम के शरीर में तनाव की लहरें उठ रही थीं। वो अपने चेहरे पर उभरने वाले भावों को दबाए हुए था। रह-रहकर जगमोहन पर उसकी तीखी निगाह पड़ जाती थी। इस दौरान दोलाम ने तीन बार खाली हो चुका पानी का बर्तन पुनः भरा था। परंतु दोलाम ये महसूस नहीं कर सकता था कि धरा कई बार नजरें उठाकर उसे देख चुकी है। शायद वो दोलाम के तनाव को महसूस कर चुकी थी। परंतु कहा उसने कुछ नहीं था।

खुंबरी और जगमोहन तो खाते हुए बार-बार एक-दूसरे को प्यार भरी निगाहों से देख रहे थे। वे दोनों जैसे आंखों-आंखों में बात कर रहे थे। तभी जगमोहन कह उठा।

"मैं अभी देवराज चौहान से मिलने जाऊंगा।"

"क्यों नहीं, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।" खुंबरी ने फौरन सिर हिलाया।

"मैं अकेला जाऊंगा खुंबरी।"

"अकेला?" खुंबरी खाना खाते-खाते रुक गई। उसे देखने लगी।

"जो बातें मैंने देवराज चौहान से करनी है, वो तुम्हारी मौजूदगी में नहीं कर सकता।"

"समझी।" खुंबरी पुनः खाना खाने लगी—"तुम उससे पूछना चाहते हो कि वो तुम्हारे साथ है या रानी ताशा के साथ।"

जगमोहन ने सिर हिलाया।

"अगर देवराज चौहान तुम्हारे साथ है तो मैं अभी उसे कैद से आजाद कर दूंगी।"

"मुझे यकीन है कि वो मेरे साथ है।"

"खाना खाकर तुम देवराज चौहान से मिलने चले जाना। साथ में दोलाम को...।"

"मैं अकेला जाऊंगा। कल जब गया था तो वहां का रास्ता मैंने देख लिया था।"

"जैसा तुम ठीक समझो जगमोहन।" खुंबरी मुस्करा पड़ी।

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूं?" उनकी बातें सुनता बबूसा कह उठा।
"नहीं।" जगमोहन ने बबूसा को देखा—"मैं अकेला जाऊंगा।"
बबूसा खामोश हो गया। तभी धरा ने खुंबरी से कहा।
"आज ओहारा ने डुमरा पर 'वार' करना है। हमें ओहारा से बात करनी चाहिए।"
"ओहारा अपना काम करना जानता है।" खुंबरी बोली।
"फिर भी उससे एक बार बात कर ली जाए तो ठीक होगा।"
"तुम कर लेना।"
खाना समाप्त हो गया।
दोलाम टेबल पर रखे खाली बर्तन ले जाने लगा।
धरा ने बटाका थामते हुए ओहारा को पुकारा।
"ओहारा।"
"हुक्म महान खुंबरी।" उसी पल धरा के कानों के पास ओहारा की आवाज उभरी।
"आज तुमने डुमरा की जान लेनी है। तुमने कहा था कि उस पर आज वार करोगे।" धरा बोली।
"मैंने अपनी तैयारी पूर्ण कर ली है। इस बार डुमरा मेरे वारों से नहीं बच सकता।"
"ये काम जल्दी पूरा करो। उसके बाद सदूर की रानी बनने की तैयारी करनी है। परंतु मैंने सोच रखा है कि डुमरा से पांच सौ सालों के श्राप का बदला लेने के बाद सुदूर की रानी बनने की तैयारी करूंगी।"
"आज डुमरा का आखिरी दिन होगा। शाम तक वो मर जाएगा। मैं उसे घेरने जा रहा हूं। उसके बाद तुम सदूर की रानी बनने की तैयारी शुरू कर देना। आज मेरे पास समय की कमी है। मैं जाता हूं।"
फिर ओहारा की आवाज नहीं आई।
"मैंने कहा था न कि ओहारा इसी काम में लगा होगा।" खुंबरी कुर्सी से उठते हुए धरा से बोली।
दोलाम सारे बर्तन टेबल से हटा चुका था। वो कुछ फासले पर खड़ा शांत स्वर में बोला।
"महान खुंबरी। मैं तुमसे अकेले में बात करना चाहता हूं।"
"कहो दोलाम।" खुंबरी ने मुस्कराकर उसे देखा।
"अकेले में बात करनी है।" दोलाम ने पुनः दोहराया।
खुंबरी ने होंठ सिकोड़कर सिर हिलाया फिर जगमोहन से बोली।
"तुम देवराज चौहान से अभी मिलने जाओगे?"

"हां, मैं सीधा उसी के पास जा रहा हूं।"

"जल्दी आना।" खुंबरी प्यार से कह उठी—"मैं कमरे में तुम्हारा इंतजार कर रही हूं।"

जगमोहन ने खुंबरी का हाथ थामा, चूमा और पलटकर चला गया।

धरा अभी भी बार-बार दोलाम को देख रही थी।

"बबूसा।" खुंबरी बोली—"तुम अपने कमरे में जाओ।"

"मेरे खयाल में दोलाम को मेरे यहां रहने से एतराज नहीं...।"

"एतराज है।" दोलाम सपाट स्वर में बोला।

बबूसा ने कुछ नहीं कहा और वहां से बाहर निकलता चला गया।

खुंबरी ने दोलाम को देखा कि धरा शांत स्वर में कह उठी।

"खाने के दौरान मैंने तुम्हें तनाव में महसूस किया था।"

"हां महान खुंबरी। मैं वास्तव में तनाव में हूं।"

"कह दो दोलाम। सब ठीक हो जाएगा। क्या बात है?" धरा मुस्कराई।

दोलाम ने धरा पर से निगाह हटाकर खुंबरी को देखा।

"कहो दोलाम।" खुंबरी भी मुस्कराई।

"महान खुंबरी।" दोलाम के स्वर में व्याकुलता, डर और हिम्मत का समावेश था—"मैंने तुम्हारी बहुत सेवा की।"

"ये सच है दोलाम। तुम हमेशा से ही मेरे सबसे पास रहे हो और तुमने सेवा करने में कोई कमी नहीं छोड़ी।"

"पांच सौ साल का श्राप जब डुमरा ने दिया तो उससे पहले भी मैं आपकी सेवा दिल से करता था।"

"हां। ये बातें मैं भूलती नहीं।" खुंबरी ने सिर हिलाया।

धरा की निगाह दोलाम पर टिकी थी।

"श्राप के समय में पांच सौ साल तक, दिन-रात मैं आपके शरीर की सेवा करता रहा।"

खुंबरी ने पुनः सिर हिलाया।

दोलाम ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर खुंबरी और धरा को देखा।

"तुम कोई खास बात कहने वाले हो दोलाम।" धरा कह उठी।

"तुम्हें कैसे पता?" दोलाम के होंठों से निकला।

"मेरे पास पृथ्वी ग्रह पर रहने का अनुभव है। ऐसी बातें मैं ज्यादा समझ सकती हूं।"

"हां महान खुंबरी। जो मैं कहने वाला हूं वो मेरे लिए बहुत महत्त्व रखता है।"

"अब कह भी दो दोलाम।" खुंबरी ने सामान्य स्वर में कहा।

"मैंने ताकतों की भी सेवा की, जब-जब मुझे ऐसा कुछ करने का मौका मिला। मैंने महान खुंबरी को कभी भी नाराज होने का मौका नहीं दिया। मुझे याद नहीं कभी ऐसा वक्त आया हो।"

खुंबरी मुस्कराई।

जबकि धरा की आंखें सिकुड़ गईं।

"बदले में मैंने महान खुंबरी से कभी कुछ नहीं मांगा।"

"तुम्हें किसी चीज की कमी भी तो नहीं।"

"इंसान को कितना भी मिल जाए, कमी हमेशा बनी रहती है। फिर भी मेरे दिल में इस बात की इच्छा हमेशा रही कि महान खुंबरी खुश होकर मुझे कुछ दें। परंतु तुमने मेरी तरफ कभी ध्यान ही नहीं दिया।"

"तो ये बात है।" खुंबरी कह उठी—"मैं तुम्हें बहुत सारी धातु दूंगी। मैं...।"

"मुझे धातु की जरूरत नहीं।" दोलाम कह उठा—"कीमती चीजों की मुझे कभी इच्छा नहीं रही।"

"तो क्या चाहिए तुम्हें दोलाम?"

"महान खुंबरी।" दोलाम की जीभ थोड़ी-सी कांपी—"मैंने अपना सारा जीवन आप पर लगा दिया। ऐसे में मैं भी आशा करता हूं कि आप मेरी सेवाओं को सामने रखते हुए, अपने शरीर का मालिक मुझे बना दें।"

दो पलों के लिए इनके बीच सन्नाटा आ ठहरा।

"दोलाम।" खुंबरी गुर्रा पड़ी—"तुम अपने होश खो चुके हो।"

"नहीं महान खुंबरी। क्या तुम्हें पाने की चाहत होश खोना है। अगर ऐसा है तो मैं होश खो चुका हूं। मैंने हमेशा महान खुंबरी का हुक्म माना है। मैंने तुम्हें हमेशा दिल से चाहा, तभी तो तुम्हारी सेवा कर सका। तुम ही सोचो, पांच सौ सालों तक क्या कोई किसी के शरीर को सलामत रख सकता है? परंतु मैंने रखा। ये मेरा प्यार नहीं तो और क्या है। अगर मेरी लापरवाही से तुम्हारा शरीर खराब हो गया होता तो आज तुममें जान कैसे आती? परंतु मैंने ऐसा नहीं होने दिया। सम्भव था कि मैं अपने प्यार को अपने मन में ही रखता, लेकिन तुमने अपना शरीर पृथ्वी से आए पुरुष के हवाले कर दिया। मेरी निगाह में ये बात सबसे गलत रही। क्या तुम्हें दोलाम का एक बार भी खयाल न आया। तुम्हारे लिए सबसे बेहतर पुरुष अगर कोई है तो वो दोलाम ही है। मेरी इच्छा है कि तुम जगमोहन को कैद में डाल दो और मेरे संग अपनी जिंदगी बिता दो। तुम सदूर की रानी बनना, मैं सदूर का राजा बनकर सारा राज्य संभालूंगा।"

खुंबरी के चेहरे पर कठोरता नाच रही थी।

"तुम्हारी ये हिम्मत दोलाम कि तुम मुझे हुक्म दो।"

"ये हुक्म नहीं महान खुंबरी, एक सेवक की इच्छा है।" दोलाम दबे स्वर में बोला।

"तुम—तुम मेरे साथ सोने की इच्छा रखते हो, तुम—तुम मेरे साथ, खुंबरी के साथ सम्बंध बनाना चाहते...।"

"महान खुंबरी मेरी बात मानेगी तो सेवक इसे अपना इनाम समझेगा।" दोलाम बोला।

"कभी नहीं।" खुंबरी गुर्रा उठी।

दोलाम ने सिर झुका लिया।

"तुम अपनी सीमाएं भूल गए दोलाम। खुंबरी के बारे में तुमने ऐसा सोचा भी क्यों—तुम सिर्फ मेरे...।"

"दोलाम की बात पर गौर करो।" धरा शांत स्वर में बोली।

"क्या मतलब?" खुंबरी ने धरा को देखा।

"दोलाम हमारी ताकत का हिस्सा नहीं है। वो इंसान है।" धरा ने कहा—"दिल रखता है। इच्छाएं रखता है। हम इस बात को नजरंदाज नहीं कर सकते कि दोलाम ने बिना कुछ मांगे सैकड़ों बरसों तक हमारी सेवा की है। आज अगर ये कुछ मांगता है तो गलत नहीं कर रहा। ये हमेशा ही हमारा सबसे खास सेवक रहा है।"

दोलाम ने नजरें उठाकर धरा को देखा।

खुंबरी के माथे पर बल पड़े।

"मुझे हैरानी है कि तुम ऐसी बात कह रही हो।" खुंबरी बोली।

"मैं सही कह रही हूं। शांत दिमाग से सोचो। दोलाम हमारे लिए हमेशा ही खास रहा है।"

"क्या कहना चाहती हो तुम?" खुंबरी का स्वर तीखा हो गया।

"दोलाम की इच्छा पूरी करो।"

"ये नहीं हो सकता। मैंने पहली और आखिरी बार जगमोहन से प्यार किया है। उसे ही अपना शरीर सौंपा है। अब ये शरीर किसी और को कैसे दे सकती हूं। ये सिर्फ जगमोहन का है।"

"पृथ्वी ग्रह पर ऐसा कोई नियम नहीं है। वहां एक औरत कइयों से सम्बंध बना लेती है। नहीं भी बनाती। ये सब अपनी मर्जी पर निर्भर होता है। तुम्हें ये सोचना है कि तुम्हारे लिए जगमोहन महत्त्वपूर्ण है या दोलाम?"

"दोनों।"

"तो फिर दोनों को अपना शरीर सौंपो।" धरा ने शांत स्वर में कहा।

"ये सम्भव ही नहीं।" खुंबरी दृढ़ स्वर में कह उठी।

धरा ने दोलाम को देखकर कहा।

"तुमने क्या सोचा कि अगर खुंबरी इंकार करे तो तुम क्या करोगे?"

"मैंने कुछ भी नहीं सोचा।" दोलाम शांत स्वर में कह उठा।

"बेहतर होगा कि खुंबरी को इस बारे में सोचने का मौका मिले।"

"मुझे कोई जल्दी नहीं है।" दोलाम बोला।

खुंबरी ने कठोर निगाहों से दोलाम को देखा फिर पलटकर वहां से चली गई, खुंबरी के कदमों की आवाजें कई पलों तक कानों में पड़ती रही। धरा और दोलाम की नजरें मिलीं।

"खुंबरी के लिए तुम्हारी मांग काफी सख्त है दोलाम।"

"महान खुंबरी ने पृथ्वी से आए पुरुष से सम्बंध न बनाए होते तो मैं ऐसी मांग नहीं रखता।" दोलाम बोला।

"तुम्हें ये बात उस पुरुष के आने से पहले कहनी चाहिए थी। मेरे खयाल में तुमने बात कहने में देर कर दी।"

"महान खुंबरी पर मेरा हक बनता है। मैंने पांच सौ सालों तक उसके शरीर की देखभाल की है।"

"अगर खुंबरी न मानी तो तुमने जरूर सोच रखा होगा कि क्या करोगे।" धरा मुस्कराई।

दोलाम ने धरा को देखा फिर कह उठा।

"इससे आगे मैंने कुछ भी नहीं सोचा महान खुंबरी।"

"इस मामले में मैं तुम्हारे साथ हूं।" धरा ने दोलाम के कंधे पर हाथ रखा—"खुंबरी को मैं मना लूंगी।"

दोलाम की आंखें चमक उठीं।

"सच?"

"मैं पूरी कोशिश करूंगी कि खुंबरी मान जाए।"

▭ ▭

खुंबरी अपने कमरे में पहुंची और पांव पटकने वाले अंदाज में टहलने लगी। चेहरे पर पूरे सदूर की सख्ती आ ठहरी थी। उसका हाल देखते ही बनता था। एकाएक वो शब्दों को चबाकर कह उठी।

"एक सेवक की ये हिम्मत कि वो मेरे साथ सोने के लिए मुझे कह दे। दोलाम की इतनी हिम्मत। सेवक सिर्फ सेवक ही होता है। उसका काम सिर झुकाकर सिर्फ हुक्म सुनना और उसे पूरा करना होता है। लेकिन दोलाम तो—दोलाम तो मेरे साथ शादी करके सदूर का राजा बनना चाहता है। मैं उसे उसकी गलती की सजा दूंगी, मैं...पागल धरा को अचानक क्या हो गया। उसने किस सहज स्वर में कह दिया कि दोलाम ठीक कहता है।

उसने ऐसा कहकर दोलाम की हिम्मत बढ़ा दी। धरा तो मेरा ही रूप है। वो भी तो मैं हूं, फिर धरा मेरे खिलाफ कैसे जा सकती है, परंतु उसने दोलाम का साथ दिया।" खुंबरी कई पलों तक चुप-सी टहलती रही। क्रोध चेहरे पर नाच रहा था—"धरा ने ऐसा क्यों किया?"

खुंबरी के पास अपने ही सवाल का कोई जवाब नहीं था।

कुछ वक्त बीता कि धरा ने कमरे में प्रवेश किया।

खुंबरी उसे देखकर ठिठकी और नाराजगी भरे स्वर में कह उठी।

"अब मैं तुझसे पूछूं कि तू क्या करती फिर रही है। क्या तू चाहती है कि मैं दोलाम के साथ सोना शुरू कर दूं।"

"मैंने ऐसा कभी नहीं चाहा।" धरा गम्भीर थी।

"तूने ऐसा ही कहा दोलाम से। मेरे सामने कहा कि...।"

"दोलाम से कहा, तेरे से तो नहीं कहा...।"

"पर तूने कहा।"

धरा ने गहरी सांस ली।

"क्या तेरे को पता नहीं कि मैं जगमोहन से सच्चा प्यार करती हूं।" खुंबरी तीखे स्वर में बोली।

"मेरे से ज्यादा, इस बारे में दूसरा कौन जानता होगा।"

"फिर तूने...।"

"क्रोध अपने सिर से हटा तो मैं कुछ कहूं।" धरा ने कहा।

खुंबरी होंठ भींचकर रह गई। सामने मौजूद कुर्सी पर बैठ गई।

"क्या कहना चाहती है?"

"दोलाम ने कभी तेरे को सिर उठाकर नहीं देखा। उसका सिर हमेशा झुका रहा। पांच सौ साल तेरे शरीर की देखभाल की लेकिन कभी भी तेरे शरीर से छेड़छाड़ नहीं की और अब अचानक ही वो तेरे साथ सोने को कहने लगा।"

"ये ही तो मैं जानना चाहती हूं क्यों वो...।"

"दोलाम कहता है कि उसने तेरी इतनी सेवा की है कि उसे ये इनाम मिलना चाहिए।"

"सेवक का काम सिर्फ सेवा करना होता...।"

"पर वो ऐसा नहीं सोचता। वो अपनी की सेवा की कीमत मांगता है तेरे शरीर से।"

"मैं उसकी जान ले लूंगी।"

"ऐसे वक्त में क्रोध से काम लेना ठीक नहीं।"

"तूने भी तो उसकी हां में हां मिलाई।"

"मैं ऐसा न करती तो बात बिगड़ जाती। तू क्रोध में दोलाम के साथ कुछ भी बुरा कर देती।"

खुंबरी ने गहरी निगाहों से धरा को देखा और आंखें सिकोड़े कह उठी।

"क्या है तेरे मन में?"

"दोलाम हमारे लिए नया नहीं है। वो बहुत पुरान सेवक है और अच्छी तरह जानता है कि खुंबरी के सामने क्या मांग रख रहा है। इस पर भी उसने हिम्मत से काम लिया और सब कुछ कह दिया। मुझे पूरा विश्वास है कि दोलाम के मन के भीतर कुछ चल रहा है।"

खुंबरी के चेहरे पर सोच के भाव दिखने लगे।

"मैंने अच्छा किया ये कहकर कि दोलाम ठीक कहता है, उसे मन चाहा इनाम मिलना चाहिए।" धरा बोली।

"तो दोलाम के मन में कुछ और भी है?"

"हां।"

"तेरा मतलब कि उसकी बात न मानी गई तो वो कोई बड़ी बात करेगा।"

"ये ही बात है।"

"और वो बड़ी बात क्या है?"

"ये ही तो जानना है कि दोलाम इरादा क्या रखता है।"

"कैसे जानेगी?" खुंबरी गम्भीर दिखने लगी।

"सबसे पहले तो ये बात मन में रख कि दोलाम मात्र सेवक नहीं रहा अब। वो हमारा राजदार बन चुका है। पुराना हो चुका है। ताकतें जानती हैं कि दोलाम वफादार है, उसने खुंबरी की सेवा में कोई कमी नहीं रखी। बेशक ताकतों की मालकिन तू है पर दोलाम भी ताकतों के लिए महत्त्व रखता है। ऐसा कोई काम मत करना कि ताकतों की तरफ से विद्रोह उठे।"

"ताकतें मेरी गुलाम हैं। वो विद्रोह नहीं कर सकतीं।" खुंबरी कह उठी।

"ऐसा मत कह। दोलाम भी ताकतों के लिए महत्त्व रखता है। मेरी बात समझ।"

"क्या समझूं? समझा मुझे।"

"दोलाम की मांग गलत नहीं है। धरा ने कहा—"उसने सच में तेरी बहुत सेवा की है।"

"तेरा मतलब है कि सेवा के बदले अपना शरीर उसके हवाले कर दूं। जबकि अब जगमोहन ही मेरा...।"

"मैं तेरे को ऐसा करने को नहीं कह रही।"

"तो?"

"पर दोलाम को समझना है कि आखिर तुम्हारे इंकार की स्थिति में वो क्या करने का इरादा रखता है। इतना सीधा भी नहीं है दोलाम कि तुम उसे इंकार करो और वो चुप बैठ जाए। पर मेरे दिमाग में एक रास्ता आया है।"

"कह...।"

"मैं सशरीर दोलाम की सेवा करने को तैयार हूं।"

"तू?"

"तेरे मेरे में फर्क ही क्या है। तेरा ही तो रूप हूं मैं। फिर तेरे को जगमोहन के साथ देखकर मेरे मन में भी मर्द को पाने की ख्वाहिश उठने लगी है। हालांकि दोलाम जैसे मर्द की मैंने कभी कल्पना नहीं की थी। परंतु कुछ वक्त के लिए दोलाम ही सही। उसके मन से निकालना है कि तुम्हारे इंकार पर वो क्या करेगा।"

"ये बात तू कैसे जानेगी?"

"मेरा शरीर पाने की चाहत में वो सब कुछ कह देगा।"

"लेकिन मेरा मन नहीं कि तू दोलाम से प्यार करे। मैं दोलाम की ये बात नहीं मानना चाहती। वो सिर्फ सेवक...।"

"मैंने तेरे से पहले ही कहा है कि उसे सेवक मत समझ। वो इतना पुराना हो गया है कि अब वो राजदार बन चुका है।"

"मेरे खयाल में हम दोलाम को ज्यादा महत्त्व दे रहे हैं।" खुंबरी ने कहा।

"क्या मतलब?"

"बेहतर होगा कि दोलाम को खत्म कर दिया जाए। वो...।"

"मैं ये राय नहीं दूंगी।" धरा गम्भीर हो गई।

"मुझे तेरी राय की जरूरत भी नहीं है।" कहते हुए खुंबरी ने गले में पड़ा बटाका छुआ—"ढोला।" उसने पुकारा।

अगले ही पल कानों के पास ढोला की आवाज उभरी।

"हुक्म महान खुंबरी?"

धरा की सिकुड़ी आंखें खुंबरी पर जा टिकी थीं।

"दोलाम ने अब मुझ पर अपना हक जताना शुरू कर दिया है। वो भूल गया कि वो सिर्फ मेरा सेवक है।" खुंबरी की आवाज में क्रोध भरा हुआ था—"मैं दोलाम को अब देखना नहीं चाहती।"

"स्पष्ट कह खुंबरी।"

"दोलाम को मार दो।"

"उसने क्या कसूर कर दिया है जो तुम ऐसा कह रही हो।" ढोला की मध्यम-सी आवाज उभरी।

"तू नहीं जानता क्या?"

"मैं उलझन में हूं तू ही बता।"
"वो जगमोहन की जगह लेना चाहता है। मुझसे प्यार करना चाहता है।"
"उसकी मांग गलत तो नहीं।"
"ढोला।" खुंबरी गुर्रा उठी।
"दोलाम ने तुम्हारी बहुत सेवा की है। वो ताकतों के काम भी आता रहा है। ऐसे में दोलाम की इच्छा पूरी करना तुम्हारा काम है। वो अगर तुम्हें पाना चाहता है तो इसमें कुछ भी बुरा नहीं।"
"मैं जगमोहन से प्यार करती हूं।"
"एक औरत एक वक्त में कइयों से प्यार कर सकती है। इसमें तो कोई समस्या नहीं।"
"मैंने पहली बार जगमोहन नाम के मर्द को चाहा है। कोई दूसरा मर्द मेरे शरीर को हाथ लगाए, ये मुझे पसंद नहीं।"
"ये तो तुम्हारी व्यक्तिगत समस्या है। इसमें हमारा क्या काम खुंबरी।"
"तो तुम दोलाम की जान लेने को इंकार कर रहे हो।" खुंबरी का चेहरा लाल होने लगा।
"मुझे दोलाम का कसूर नजर नहीं आता।"
"कसूर देखना मेरा काम है। तुम वो करो जो मैंने कहा है।" खुंबरी गुर्रा उठी।
"मैं दोलाम को मारना पसंद नहीं करूंगा। वो तुम्हारा वफादार रहा है हमेशा।"
"तुम मेरा हुक्म मानने से इंकार कर रहे हो ढोला।"
"मेरी राय है कि दोलाम की बात खुशी से मान लो। उसे भी जगमोहन जैसा...।"
"ढोला।" खुंबरी गुर्रा उठी।
"मेरे खयाल में तो दोलाम तुम्हें जगमोहन से ज्यादा प्यारा होना चाहिए।" ढोला की आवाज कानों में पड़ी।
खुंबरी कुछ कहने लगी कि गम्भीर-सी धरा कह उठी।
"तू जा ढोला।"
फिर ढोला की आवाज नहीं आई।
खुंबरी का खूबसूरत चेहरा गुस्से से तप रहा था।
"ढोला की ये हिम्मत कि मेरा हुक्म मानने से इंकार करे। इसकी सजा उसे भुगतनी होगी। मैं...।"
"मैंने तो तेरे को पहले ही कहा था कि दोलाम को सेवक मत समझ। वो पुराना हो गया है। राजदार बन गया है। ढोला भी जानता है कि

दोलाम तुम्हारा वफादार है। ऐसे में वो दोलाम की जान क्यों लेगा?" धरा बोली।

"मेरा हुक्म मानने से ढोला कैसे इंकार कर सकता है।" खुंबरी पागल हो रही थी।

"क्योंकि दोलाम भी ताकतों के लिए महत्त्व रखता है।"

"पर मेरा हुक्म...।"

तभी गोमात की आवाज कानों के पास उभरी।

"महान खुंबरी को परेशान देखकर मुझे आना पड़ा।"

"गोमात। खुंबरी गुस्से से कह उठी—"ढोला ने मेरा हुक्म मानने से इंकार कर दिया।"

"मैं जान चुका हूं कि ढोला से तुम्हारी क्या बात हुई है। इसमें ढोला का कोई कसूर नहीं है। मैं भी तुम्हारी बात नहीं मानूंगा। दोलाम हमारा वफादार है। तुम्हारी गैर मौजूदगी में उसने सबका ही बहुत ध्यान रखा। फिर उसने ऐसा कोई कसूर भी नहीं किया कि उसकी जान ली जाए। तुम बिना वजह परेशान हो रही हो। बात कुछ भी नहीं है। दोलाम तुमसे प्यार ही तो करना चाहता है। जैसे जगमोहन से प्यार करती हो वैसे ही उससे...।"

"ये नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"मुझे सिर्फ जगमोहन ही पसंद है।"

"ये मत भूलो कि दोलाम हम सबके लिए महत्त्वपूर्ण है। जगमोहन महत्त्वपूर्ण नहीं है। दोलाम को मारने के लिए तुम्हें बड़ी ताकत से बात करनी होगी।" गोमात की आवाज सुनाई दी।

"ठोरा से?" खुंबरी के होंठ भिंच गए।

"हां। दोलाम की जिंदगी या मौत का फैसला ठोरा ही करेगा। क्योंकि दोलाम ने कोई कसूर नहीं किया है।"

"चला जा यहां से।" खुंबरी गुस्से से कह उठी।

गोमात की आवाज दोबारा नहीं आई।

खुंबरी का चेहरा दहक रहा था।

धरा गम्भीर दिखी।

"अब ठोरा से बात करेगी?" धरा ने कहा।

"समझ में नहीं आता कि ये सब अचानक क्या होने लगा है।" खुंबरी होंठ भींचे कह उठी।

"मेरी मान लो। वो ही कर, जो मैंने कहा है।" धरा बोली।

खुंबरी ने सुलगती नजरों से धरा को देखा।

"मैं, दोलाम से प्यार करने को तैयार हूं और उसके दिल की बातें बाहर निकालूंगी। तूने देख ही लिया है कि ढोला के साथ-साथ गोमात भी दोलाम के हक में बोल रहा है। ताकतें दोलाम पर वार नहीं करेंगी। ढोला सही कहता है कि ये तेरा व्यक्तिगत मामला है। सब कुछ हमें ही संभालना है। हमें ही ठीक करना है।"

▭ ▭

दोलाम व्याकुल अंदाज में खाने वाले कमरे में टहल रहा था। टेबल से उठाकर लाए बर्तनों को वो साफ करके उन्हें पुनः उस छोटे-से चबूतरे पर रख चुका था। जाने क्यों दोलाम को लग रहा था कि उसने खुंबरी के सामने जरूरत से बड़ी पेशकश रख दी है जिसे कि खुंबरी नहीं मानेगी। अगले ही पल उसके मन में ये विचार आ जाता कि उसने अपना हक मांगा है। खुंबरी को पाने का हकदार है वो। सैकड़ों सालों से वो खुंबरी की देखरेख कर रहा है। ताकतों का भी ध्यान रखता आया है। जब-जब ताकतों को जरूरत पड़ी, वो आगे आया। ऐसे में खुंबरी पर उसका पूरा हक है। पृथ्वी से आए जगमोहन का हक खुंबरी पर जरा भी नहीं बनता। खुंबरी जाने क्यों उसे चाह रही है। दोलाम ने अपने चेहरे पर हाथ फेरकर सोचा बेशक उसकी उम्र सैकड़ों साल है, परंतु ताकतों ने उसे अभी भी जवान रखा हुआ है। वो किसी भी हाल में खुंबरी से कम नहीं।

अगर खुंबरी न मानी तो?

इस विचार के साथ ही दोलाम ठिठक गया। तो फिर वो ही करेगा जो सोचा है। खुंबरी को खत्म कर देगा। खुंबरी की जगह ले लेगा। उसके ऐसा करने पर ताकतें कुछ नाराज तो जरूर होंगी पर शांत हो जाएंगी। क्योंकि वो भी बिना मालिक के ज्यादा देर तक अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकतीं। उन्हें इंसानी मालिक भी तो चाहिए और उससे बेहतर ताकतों का मालिक दूसरा नहीं मिलेगा। ताकतें उसके साथ खुश रहेंगी। ताकतों को संभाले रखने वाले मंत्र ठोरा उसे जरूर बता देगा। वो ताकतों का मालिक बन जाएगा। सदूर का सबसे ज्यादा ताकतवर इंसान बन जाएगा।

क्या पता खुंबरी मान ही जाए?

दोलाम सोचने लगा कि उसे खुंबरी का सुख चाहिए या ताकतों का मालिक बनना चाहता है वो? देर तक वह इसी उधेड़-बुन में लगा रहा फिर इस नतीजे पर पहुंचा कि ताकतों का मालिक बन जाना ज्यादा अहम होगा। औरत तो सब एक-सी होती हैं। सदूर से खुंबरी से भी खूबसूरत स्त्री ढूंढ़ लेगा। खुंबरी उसके साथ सोने को रजामंद हो गई तो तब क्या होगा?

अपनी ही सोचों में उलझ गया दोलाम। परंतु मन में ताकतों का

मालिक बनने की इच्छा जोर मारने लगी कि ये विचार उसके मन में पहले क्यों न आया?

उसी पल आहटें सुनकर उसकी सोचें भंग हुईं। कोई इसी तरफ आ रहा था। दोलाम की निगाह भीतर आने वाले रास्ते पर जा टिकीं कि उसके देखते-ही-देखते बबूसा ने भीतर प्रवेश किया।

बबूसा को देखते ही दोलाम का मस्तिष्क तेजी से चलने लगा।

बबूसा जैसा ताकतवर इंसान उसका साथ देने को तैयार है। खुंबरी की जान लेने में बबूसा का भरपूर इस्तेमाल किया जा सकता है। बबूसा भी तो खुंबरी की जान ले लेना चाहता है। दोलाम को लगा सारे पत्ते उसके हक में चल रहे हैं। उसे हिम्मत से काम लेना होगा। कहीं भी चूकना नहीं है। वो ताकतों का मालिक बनके रहेगा। खुंबरी उसके साथ सोने को रजामंद हो गई तो उस स्थिति में खुंबरी की जान लेना और भी आसान हो जाएगा। जहां विश्वास कायम हो, वहां विश्वासघात करना और भी आसान हो जाता है। दोलाम की सोचों की उड़ान थम गई।

बबूसा करीब आ पहुंचा था और उसके चेहरे को देखता कह उठा।

"लगता है, बात बनी नहीं दोलाम।"

"तू तो ये ही चाहता है कि बात न बने।"

"मेरे चाहने से क्या होता है। मैंने तो तेरे से पहले ही कहा था कि सेवक के साथ खुंबरी कभी भी सोना पसंद नहीं करेगी।"

"अभी महान खुंबरी ने इंकार नहीं किया।" दोलाम ने चुभते स्वर में कहा।

"अच्छा।" बबूसा मुस्कराया—"उसने इंकार करने के लिए समय मांगा है।"

"वो मेरी बात का सोच कर जवाब देगी।"

"तुममें बहुत हिम्मत है जो खुंबरी से इतनी बड़ी बात कह दी।"

"इसमें हिम्मत की जरूरत नहीं। मैंने बहुत सेवा की है। खुंबरी को पाने का हक मेरा बनता है, जगमोहन का नहीं।"

"कोशिश करने में कोई बुराई नहीं है। पर मैंने तेरे को पहले ही कह दिया था कि तेरे को इंकार ही मिलेगा।"

दोलाम का चेहरा कठोर हो गया।

"किसी भी मौके पर हिम्मत मत हारना। मैं तुम्हारा दोस्त हूं। हमेशा तुम्हारे काम आऊंगा।"

"खुंबरी की जान लेने के काम?"

"हां, क्योंकि राजा देव भी खुंबरी की मौत चाहते हैं। मैं वो ही काम

करूंगा, जो राजा देव को पसंद हो। हम दोनों मिल जाएं तो सरलता से खुंबरी की जान ले सकते हैं।" बबूसा ने सामान्य स्वर में कहा।

"इतना आसान मत समझो इस काम को।"

"कठिन भी क्या है?"

"खुंबरी ताकतों की मालिक है। खुंबरी की जान ली तो ताकतें नाराज हो सकती हैं। वो हमारी जान ले लेंगी।"

"तुम तो ताकतों को जानते होंगे।"

"हां।"

"फिर तो ताकतों को तुम ही संभाल लोगे।"

"बोला तो, ये काम आसान नहीं है।" दोलाम होंठ भींचकर बोला—"ताकतों से लम्बी बातचीत करनी होगी।"

"तुम कर सकते हो?"

"मैं सिर्फ ठोरा से ही बात कर सकता हूं जो सबसे बड़ी ताकत है और उसे बार-बार बुलाया जाना पसंद नहीं। कल रात ठोरा से बात की तो तुमने बातचीत सुन ली थी। वो ही बड़ी ताकत है।"

"पर तुम तो उस बड़ी ताकत से बहुत सहज भाव से बात कर रहे थे।"

"मैं बहुत डर रहा था। तुमने तब मेरे भीतर का डर नहीं देखा। ठोरा से बात करना मामूली बात नहीं है।" दोलाम का स्वर सख्त ही था—"ठोरा ने कहा मेरी मांग जायज है।"

"खुंबरी के साथ प्यार करने की मांग।"

"हां।"

"ठोरा मान गया तो फिर क्या सोचना। खुंबरी न माने तो उसे...।"

"चुप रहो।" दोलाम कह उठा—"अभी इन बातों का समय नहीं आया। खुंबरी की जान लेने की बात को तुम मामूली न समझो बबूसा। आखिर वो बे-पनाह ताकतों की मालिक है। बटाका छूते ही उसके पास ताकतें हाजिर हो जाती हैं। बड़े-से-बड़ा काम भी वो चुटकियों में पूरा कर लेती है। ताकतों को खुंबरी की चिंता है। ऐसे में जो भी खुंबरी की जान लेगा, ताकतें उसी पल उस पर वार कर देंगी। वो जीवित नहीं रह पाएगा। वो तो...।"

तभी खुंबरी की आवाज उनके कानों में पड़ी।

"तुम कहां हो दोलाम?"

दोनों की नजरें मिलीं।

अगले ही पल दोलाम बाहर की तरफ बढ़ गया।

बबूसा वहीं रहा और बाहर होने वाली बातचीत पर कान लगा लिए।

“हुक्म महान खुंबरी।” दोलाम, धरा और खुंबरी के सामने जा पहुंचा। धरा शांत रही। परंतु खुंबरी चेहरे पर हल्की मुस्कान समेटे कह उठी। “हमने तुम्हारी बात पर सोचा। तुमने सच में बहुत सेवा की है मेरी।” दोलाम शांत खड़ा रहा।

“और तो और, पांच सौ सालों तक तुमने मेरे शरीर की भरपूर देखभाल की। शरीर को खराब नहीं होने दिया। अगर मेरा शरीर खराब हो जाता तो मुझे अपने ही रूप, धरा का शरीर इस्तेमाल करना पड़ता।” खुंबरी बोली।

“मैंने दिल से तुम्हारी सेवा की महान खुंबरी।” दोलाम बोला।

“बदले में कभी कुछ मांगा भी नहीं। धरा कहती है कि तुम इतने पुराने हो गए हो कि अब सेवक नहीं, राजदार बन गए हो। तुम्हारा ओहदा बड़ा हो चुका है। इस बात का एहसास मुझे पहले कभी नहीं हुआ।”

“मैं आज भी वही हूं जो हर पल तुम्हारा भला चाहता है।”

“मुझे तुम पर पूरा भरोसा है दोलाम। ठीक बात तो ये होती कि मैंने तुम्हें पसंद कर लिया होता। परंतु मैंने जगमोहन को पसंद किया। उस वक्त तक मैंने तुम्हारे बारे में सोचा तक नहीं था।

“इस बात को तुम अभी भी ठीक कर सकती हो।” दोलाम बोला।

“कैसे?”

“जगमोहन को छोड़कर और मुझे पसंद करके।”

“हां।” खुंबरी मुस्कराई—“मैं ऐसा ही सोच रही हूं। मैं तुम्हें खुश देखना चाहती हूं दोलाम।”

“तब तो मैं भाग्यशाली हूं।”

“तुम भाग्यशाली हो, तभी तो सैकड़ों सालों से मेरे साथ हो। मेरा रूप धरा तुम्हें पाने को बेताब है। तुम धरा के साथ अपना जोड़ा बना सकते हो। इस तरह तुम खुंबरी को पा लोगे।”

दोलाम ने धरा को देखा।

धरा चेहरे पर मधुर मुस्कान समेटे दोलाम को देख रही थी।

“मैं खुंबरी का साथ चाहता हूं।” दोलाम दृढ़ स्वर में कह उठा—“खुंबरी के रूप को नहीं चाहता।”

“तुम जानते हो दोलाम मेरे और धरा में कोई फर्क नहीं है।”

“बहुत बड़ा फर्क है महान खुंबरी।”

“समझाओ तो?”

“मैं उस शरीर को पाना चाहता हूं जिस शरीर की पांच सौ सालों तक मैंने देखरेख की है।”

"जिद न करो दोलाम। तुम्हें मेरी बात मान लेनी चाहिए।" खुंबरी के चेहरे की मुस्कान गायब हो गई।

"ये जिद नहीं, मेरा हक है।"

"दोलाम।"

"मुझे महान खुंबरी का ही शरीर चाहिए।"

"वो जगमोहन का हो चुका है।" खुंबरी का स्वर सख्त हुआ।

"सब कुछ तुम्हारे हाथ में है। तुम चाहो तो जगमोहन से आसानी से पीछा छुड़ा सकती हो।"

"तुम हद से ज्यादा आगे बढ़ रहे हो दोलाम।" खुंबरी के होंठ भिंच गए—"ये मत भूलो कि मेरे एक इशारे पर ताकतें तुम्हें मिट्टी में मिला देंगी। पर मैं ऐसा नहीं करना चाहती, क्योंकि तुमने दिल से मेरी सेवा की है। मैं भी तुम्हें खुश कर देना चाहती हूं। मेरा रूप तुम्हारी सेवा के लिए तैयार है।"

"मुझे अपनी जान देने में परहेज नहीं है। परंतु मुझे महान खुंबरी का ही शरीर चाहिए, पूरे जीवन के लिए। मैं तुम्हारे संग, तुम्हारा मर्द बनकर रहना चाहता हूं। इसका हक है मुझे।"

खुंबरी और धरा की नजरें मिलीं।

खुंबरी अपने गुस्से को दबाने का प्रयत्न कर रही थी।

तभी धरा आगे बढ़ी और उसने दोलाम का हाथ अपने दोनों हाथों में ले लिया।

"दोलाम।" धरा प्यार से बोली—"क्या मैं खुंबरी नहीं हूं?"

"हो।"

"फिर मुझे पाने को इंकार क्यों कर रहे हो?"

"तुम्हारी शरीर पृथ्वी ग्रह पर बना है। जबकि मैं खुंबरी का शरीर चाहता हूं। वो ही मेरे लिए...।"

"मैं खुंबरी हूं दोलाम। पहचानो मुझे। मेरे और खुंबरी के शरीर में कोई अंतर नहीं है। मैंने तो आज तक किसी मर्द का स्वाद भी नहीं चखा। तुम मेरे लिए पहले मर्द बनने जा रहे हो। मैं तुम्हें खुश रखूंगी।"

दोलाम ने धरा के हाथों से अपना हाथ पीछे खींच लिया।

धरा की आंखें सिकुड़ीं।

"तो तुम्हारा इंकार है?" धरा ने पूछा।

"पूरी तरह। मुझे सिर्फ खुंबरी का साथ चाहिए। तुम्हारा नहीं।"

खुंबरी ने सब्र का घूंट पीते हुए कहा।

"मुझे खुशी होती अगर तुम, धरा का हाथ थाम लेते। वो मैं ही हूं—मैं...।"

"महान खुंबरी मैंने तुम्हारे शरीर की सेवा की है, तुम्हारा ही शरीर पाऊंगा। नहीं तो नहीं।"

"अगर मैं कहूं कि तुम्हारे लिए इससे ज्यादा गुंजाइश नहीं निकल सकती तो तब तुम क्या करोगे?"

"जैसा तुम्हारी सेवा करता रहा हूं आगे भी उसी तरह तुम्हारी सेवा करूंगा।"

"ये बात तो मुझे समझ में नहीं आती कि मेरे इंकार के बाद भी तुम सेवा कर सकोगे।"

"दोलाम, तुम्हारा सेवक रहा है महान खुंबरी और आगे भी तुम्हारी सेवा में रहेगा।" दोलाम का स्वर शांत था।

"फिर तो मुझे अफसोस है कि मेरे रूप को पाने का मौका तुम खो रहे हो।"

दोलाम कुछ नहीं बोला।

"चल।" खुंबरी ने पलटते हुए धरा से कहा—"दोलाम नहीं मान रहा तो इसकी इच्छा।"

देखते-ही-देखते खुंबरी और धरा वहां से चली गईं।

दोलाम शांत-सा खड़ा रहा, परंतु उसका चेहरा कठोर हो चुका था।

कई पल बीत गए कि पीछे सरसराहट पाकर दोलाम तुरंत पलटा।

तीन कदमों पर बबूसा खड़ा मुस्कान के साथ उसे देख रहा था।

"ओह तुम—तुमने सारी बात सुन ली?" दोलाम के होंठों से निकला।

बबूसा सिर हिलाकर कह उठा।

"मैंने तो पहले ही कहा था कि खुंबरी नहीं मानेगी। वो ही हुआ।"

दोलाम ने कठोर नजरों से बबूसा को देखा।

"पर तुम भी तो जिद पर अड़े हो कि तुम्हें खुंबरी चाहिए। धरा, खुंबरी का ही तो रूप है। उस जैसी ही दिखती है।"

"मैं भीख नहीं मांग रहा, अपना हक मांग रहा हूं।"

"हक?"

"मैंने खुंबरी के शरीर की पांच सौ साल सेवा की है। खुंबरी पर मेरा हक बनता है। खुंबरी के रूप में...।"

"पर खुंबरी तो स्पष्ट मना कर गई।" बबूसा मुस्करा पड़ा।

दोलाम के होंठों से गुर्राहट निकली।

"हम दोस्ती का हाथ मिला लें।" बबूसा बोला—"एक ही मंजिल है हमारी और शिकार भी एक ही है।"

"बहुत जल्दी हो रही है तुम्हें शिकार करने की।" दोलाम ने तीखे स्वर में कहा।

"खाली बैठने की आदत नहीं है।"

"मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि ये राह आसान नहीं है।" दोलाम धीमे किंतु सख्त स्वर में कह उठा—"ताकतों की मालिक खुंबरी को हाथ भी लगाया तो ताकतें उसी पल हमारी जान ले लेंगी।"

"अब इसका रास्ता तो तुम ही निकालोगे दोलाम।"

दोलाम होंठ भींचे बबूसा को देखने लगा।

"मुझे तो इस पर भी हैरानी है कि खुंबरी ने अपने रूप को तुम्हारे सामने पेश करने की कोशिश की।"

"इसमें हैरानी क्यों?"

"मेरा तो विचार था कि खुंबरी तुम्हारी बात सुनकर बहुत भड़क जाएगी। पर एक बात तो उसने सही कही।"

"क्या?"

"खुंबरी के एक इशारे पर ताकतें तुम्हारी जान ले लेंगी। बल्कि अब तक तो खुंबरी को ऐसा कर देना चाहिए था।"

"तुम मेरी मौत के बारे में सोच रहे हो।"

"मैं तुम्हें सतर्क कर रहा हूं कि अगर तुमने फौरन कोई कदम न उठाया तो खुंबरी ऐसा कुछ कर देगी।"

दोलाम एकाएक मुस्कराया और कह उठा।

"बबूसा। मेरे दोस्त। मुझे तुम्हारा बहुत सहारा है। जब तक तुम मेरे साथ हो मेरी हिम्मत दुगनी रहेगी। परंतु इतनी जल्दी भी अच्छी नहीं होती। मुझे सोचने का वक्त दो। ये काम इतना भी आसान नहीं है।"

"खुंबरी के इशारे पर ताकतों ने तुम्हें खत्म कर दिया तो?"

"ये काम भी इतनी जल्दी नहीं हो सकेगा। ताकतें दोलाम को जानती हैं कि मैं खुंबरी का वफादार हूं। मेरी जान लेने से पहले ताकतों को भी दस बार सोचना पड़ेगा कि दोलाम का कसूर क्या है। सैकड़ों सालों की सेवा के बदले मैंने खुंबरी का साथ मांग लिया तो कुछ भी गलत नहीं किया। ये तो मेरा हक बनता है। ताकतें खुंबरी के अधीन अवश्य हैं परंतु वो अपने फैसले भी करती हैं। सबसे बड़ी ताकत ठोरा, मेरी बात से सहमत है कि मेरी मांग सही है।"

बबूसा कुछ पल खामोश रहने के बाद बोला।

"अब तुम क्या करोगे?"

"थोड़ा इंतजार करूंगा कि शायद खुंबरी के विचार बदल जाएं। वो मेरा हाथ थाम ले।"

"ऐसा नहीं होगा। खुंबरी जगमोहन के प्यार में पूरी तरह डूब चुकी है।"

"पर मैं अभी एक-दो दिन का इंतजार करूंगा।" दोलाम ने कहा—"उसके बाद ही कुछ करने की सोचूंगा। अगर खुंबरी जगमोहन को छोड़कर मेरा हाथ नहीं थामती तो समझ ले बबूसा, खुंबरी का बुरा वक्त शुरू हो गया है।"

"मैं तेरे साथ हूं दोलाम। हम दोस्त हैं।"

"मैं तो अकेला हूं। ऐसे में तेरा ही तो सहारा है बबूसा।" दोलाम मुस्कराकर कह उठा।

"अगर तुम राजा देव को कैद से आजाद करा दो तो सारी समस्या राजा देव हल कर देंगे।"

"ये मेरे 'बस' के बाहर की बात है। वो सब ताकतों के पहरे में हैं।"

▭ ▭

"मुझे तो पहले ही लग रहा था कि दोलाम कह कुछ रहा है और चाहता कुछ और है। अब तो मुझे इस बात का विश्वास हो गया है। वो तेरा साथ पाने को अड़ा हुआ है, जबकि वो भी जानता है कि खुंबरी और धरा दोनों एक ही हैं।" कमरे में पहुंचते ही धरा कह उठी थी—"दोलाम के मन में कुछ और ही चल रहा है।"

खुंबरी के चेहरे पर सख्ती थी।

"मुझे बहुत हैरानी हुई कि जब दोलाम ने तेरा हाथ थामने से मना कर दिया।"

"तेरे से ज्यादा हैरानी तो मुझे हुई थी।"

"मुझे लगता है दोलाम अब मुसीबत खड़ी करने वाला है।" खुंबरी ने दांत भींचकर कहा।

"मेरे खयाल में तो मुसीबत खड़ी कर चुका है। हमें परेशान कर दिया उसने अपनी हरकत से।"

"वो मुसीबतें और बढ़ाएगा...।"

"मैं तो इसलिए उसका हाथ थामने को तैयार हो गई थी कि उसके दिल की बात जान सकूं। परंतु बात नहीं बन पाई। जो भी हो दोलाम तेरे सामने बहुत हिम्मत से खड़ा है। उसने कुछ गहरा सोच रखा है, वरना दोलाम ऐसी हरकत कभी भी न करता। मुझे तो लगता है उसे किसी की शह हासिल है।"

"शह? किसकी?"
धरा कुछ न बोली।
"तेरा मतलब कि किसी ताकत का साथ हासिल है उसे?"
"सम्भव है।" धरा ने गम्भीरता से कहा।
"असम्भव।" खुंबरी दृढ़ स्वर में कह उठी—"ताकतें मेरे खिलाफ काम नहीं कर सकतीं, मैं उनकी मालकिन हूं।"
धरा ने कुछ नहीं कहा।
"मुझे दोलाम का कोई इंतजाम करना होगा। उस पर से मेरा भरोसा उठ गया है।" खुंबरी कह उठी।
"ढोला और गोमात तो तेरी बात मानने से इंकार कर चुके हैं।" धरा ने सोच भरे स्वर में कहा।
खुंबरी ने 'बटाका' छुआ और टोमाथ को पुकारा।
"हुक्म महान खुंबरी।" टोमाथ की आवाज फौरन कानों के पास उभरी।
"तुम्हें मेरा एक काम करना होगा।"
"मैं तैयार हूं।"
"दोलाम की जान लेनी है।"
"मुझे सब मालूम हो चुका है खुंबरी। गोमात ने बताया था। तुम क्यों उसकी जान लेना चाहती हो?"
"क्या तुम्हें मालूम नहीं?" खुंबरी का स्वर तीखा हो गया है।
"गोमात ने बताया कि वो अपनी सेवाओं के बदले तुम्हें पाना चाहता है। मेरे खयाल में तो इसमें कुछ भी बुरा नहीं है। दोलाम तो आपका पुराना सेवक है और अब वो सेवक से ज्यादा हो चुका है, क्योंकि वो अपनी हर परीक्षा में खरा उतरा है। उसने कभी किसी को शिकायत का मौका नहीं दिया। ताकतें उसकी इज्जत करती हैं। टोमाथ का स्वर उभरा।
"तुम सबकी मालकिन मैं हूं।"
"अवश्य खुंबरी।"
"मेरी बात को पूरा करना तुम लोगों का काम है।"
"मुझे मालूम है।"
"दोलाम की जान ले लो।"
"ये सम्भव नहीं हो पाएगा।"
"क्यों—नहीं ये...।"
"दोलाम हमारे परिवार का हिस्सा बन चुका है और उसने ऐसी कोई गलती नहीं की कि उसे खत्म कर दिया जाए।"
"टोमाथ।"

"क्रोध में न आओ खुंबरी।"

तभी धरा कह उठी।

"मैं दोलाम का हाथ थामने को तैयार हूं परंतु दोलाम जिद पर है कि उसे ये चाहिए।"

"मेरे खयाल में ये खुंबरी का व्यक्तिगत मामला है। इन बातों में हमारे आने की जरूरत नहीं है। इस समस्या का हल तुम्हें ही निकालना होगा। अगर चाहो तो मैं अपनी राय दे सकता हूं।"

"क्या?"

"जगमोहन हमारे किसी काम का नहीं है उसका साथ छोड़ दो, दोलाम हमारे परिवार का हिस्सा है। उसका हाथ थाम लेना ही ज्यादा बेहतर होगा। तुम्हें हर कदम पर दोलाम का सहारा रहेगा और दोलाम को तुम्हारा सहारा रहेगा।"

खुंबरी गुस्से से कांप उठी।

तभी धरा ने सख्त स्वर में कहा।

"तुम्हारी सलाह मुझे बहुत बुरी लगी टोमाथ। चले जाओ यहां से।"

फिर टोमाथ की आवाज नहीं आई।

"ये कितना अजीब है कि ताकतें मेरा हुक्म नहीं मान रहीं।" खुंबरी का स्वर गुस्से से कांप रहा था।

"ताकतें दोलाम को परिवार का हिस्सा मान रही हैं।" धरा ने सोच भरे स्वर में कहा—"उनका कहना है कि दोलाम ने आज तक पूरी तरह परिवार के हक में काम किया है। कभी शिकायत का मौका नहीं दिया। ताकतें दोलाम की जान लेने को तैयार नहीं।"

"दोलाम मुझे परेशान कर रहा है।"

"ताकतों का कहना है कि जगमोहन को छोड़कर, दोलाम का हाथ थामो और परेशानी से मुक्ति पा लो।"

"मैं जगमोहन को प्यार करती हूं और दोलाम की बात नहीं मान सकती।" खुंबरी ने दृढ़ स्वर में कहा।

"मुझे ताकतों से बात करनी पड़ेगी।" धरा बोली—"वो हमारी बात मानने से इंकार नहीं कर सकतीं।"

"ताकतें सही कहती हैं कि दोलाम अपनी ईमानदारी से काम करते हुए परिवार का हिस्सा बन गया है।" खुंबरी ने हाथ हिलाकर कहा—"तुमने भी ठीक कहा था कि दोलाम अब सेवक नहीं रहा, राजदार बन गया है। दोलाम के बारे में हमें गम्भीरता से सोचना होगा। अभी तक मैं उसे यूं ही ले रही थी।"

"कहीं तुम उसका हाथ थाम लेने की तो नहीं सोच रही?"

"कभी नहीं।" खुंबरी दृढ़ स्वर में कह उठी।

"हमें ठोरा से बात करनी होगी।"

"तुम क्या समझती हो कि क्या ठोरा नहीं जानता होगा कि यहां क्या हो रहा है। वो बड़ी ताकत है, सब जानता है। फिर भी उसने इन बातों में दखल देने की चेष्टा नहीं की।" खुंबरी बोली।

"वो क्यों दखल देगा। उसने पहले भी कभी इस तरह किसी बात में दखल दिया है?"

"नहीं।"

"तो अब क्यों देगा। तुमने ठोरा से कब बात की थी?"

"एक बार। जब नागेश्वर ने मुझे सारी ताकतें सौंपकर ताकतों की मालकिन बनाया था तो ठोरा खुद मेरे से मिलने आया था। परंतु उसके बाद ठोरा से बात करने का कभी मौका नहीं आया। मेरी जरूरत अन्य ताकतें ही पूरा कर देती रही हैं।"

"तो अब ठोरा से बात करने का वक्त आ गया है।" धरा बोली।

"इतनी जल्दी ठोरा से बात करना ठीक नहीं। हमें इस मामले में सोचना होगा। कुछ वक्त बीतने दो, सम्भव है दोलाम को अक्ल आ जाए और वो तेरा हाथ थामने को तैयार हो जाए।" खुंबरी ने सोच भरे स्वर में कहा।

"दोलाम को अक्ल नहीं आएगी। उसके मन में कुछ और बात है। तभी तो वो मेरा हाथ नहीं थाम रहा।"

खुंबरी लम्बी खामोशी के बाद कह उठी।

"तेरा खयाल ठीक लगता है। कोई ताकत अवश्य दोलाम का साथ दे रही है, वरना वो इतनी बड़ी बात कहने की हिम्मत नहीं करता। इधर ताकतें उसे परिवार का सदस्य मानते हुए उसकी जान लेने से इंकार कर रही है।"

"ये बात गम्भीर रुख लेती जा रही है।" धरा चिंता में दिखी।

"सोचने की बात तो ये है कि ताकतें मेरे खिलाफ कैसे दोलाम का साथ दे सकती हैं। मैं ताकतों की मालकिन हूं।"

धरा की निगाह खुंबरी के चेहरे पर जा टिकी।

"हमें इन बातों पर विचार करना होगा। जल्दी नहीं करनी है।" खुंबरी ने बेहद संयत स्वर में कहा।

"खोनम की जरूरत है?" धरा ने पूछा।

"हां, सच में खोनम की जरूरत है।"

धरा बाहर निकली और रास्ते पर आगे बढ़ गई। चेहरे पर सोचें नाच

रही थीं। रास्तों को पार करके वो उस जगह पर पहुंची जहां खाने का टेबल था। वहीं एक कुर्सी पर बबूसा को बैठे देखा।

आहटों को सुनकर बबूसा की निगाह भी धरा पर गई।

"ओह बबूसा।" धरा कह उठी—"कैसे हो तुम?"

बबूसा, धरा को देखकर मुस्कराया और कह उठा।

"तुम्हें देखता हूं तो पृथ्वी ग्रह का वो वक्त याद आ जाता है, जब तुम पहली बार मुझे मिली थीं। (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा'**) तब कितनी डरी हुई थी। जान बचाती भाग रही थी। मैंने तुम्हें सहारा दिया। डोबू जाति को योद्धाओं से तुम्हें बचाता रहा।"

"हां। तुम ये ही सोचते रहे।" धरा के चेहरे की मुस्कान गहरी हो गई—"परंतु ऐसा कुछ नहीं था। मैं डरी हुई नहीं थी। मेरी ताकतों ने मुझे पहले ही एहसास करा दिया था ये सब करके ही मेरे लिए सदूर ग्रह पर पहुंचने का रास्ता बनेगा और ऐसा ही हुआ। कोई मुझ पर शक भी नहीं कर सका और मैं सदूर ग्रह पर आ गई।"

"पोपा में तुम मेरे हाथों से बच गईं।"

"तुमने तो बहुत कोशिश की थी मुझे मारने की। पर मेरी ताकतों ने तुम्हें रोके रखा।" धरा मुस्कराती रही थी।

बबूसा गहरी सांस लेकर रह गया।

"यहां पर तुम्हें कैसा लग रहा है?" धरा ने पूछा।

"ठीक है। कम-से-कम दूसरे लोगों की तरह कैद में तो नहीं हूं।" बबूसा ने कहा।

"तुम्हारे दिमाग की तारीफ करनी होगी। तुमने किस खूबसूरती से सोमाथ को पोपा (अंतरिक्ष यान) से बाहर धकेल दिया। तुमने जो सोचा था कर दिखाया।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **'बबूसा और सोमाथ'**)

"तुम बच गईं।" कहते हुए बबूसा मुस्कराया।

"मैंने बचना ही था। ताकतें हर कदम पर मेरी सहायता कर रही थीं।"

"तुम सदूर ग्रह पर न पहुंचती तो खुंबरी जीवित न हो पाती।"

"हां। पर मैं क्यों न पहुंचती। ताकतें ढाई सौ सालों से मेरे लिए रास्ता बनाने में लगी थीं कि सदूर पर पहुंचकर सब कुछ पहले की तरह ठीक कर सकूं। मैंने सब ठीक भी कर दिया।"

"राजा देव और बाकी सब लोग कब तक कैद में रहेंगे?" बबूसा ने पूछा।

"वो आजाद नहीं हो सकते। तुम लोगों ने डुमरा की बातों में आकर गलती की जो इधर आ गए।"

"डुमरा कहां है?" बबूसा ने एकाएक पूछा।

"बाहर जंगल में।" धरा बोली—"लेकिन आज वो बचेगा नहीं। ओहारा उस पर जबर्दस्त वार करने वाला है।"

"ओहारा?"

"वो बड़ी ताकत माना जाता है।"

बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता आ ठहरी।

"जगमोहन कहां है?"

"वो देवराज चौहान से मिलने गया है।"

"मैं जगमोहन से बात करना चाहता हूं।"

"जब वो आएगा तो उसे बता दूंगी। यहां पर कोई शरारत मत करना, वरना बुरा अंजाम भुगतना पड़ेगा।"

"मैं तो पछता रहा हूं कि डुमरा की बातों में क्यों आ गया...।"

"तुम्हें अच्छी तरह जानती हूं बबूसा कि तुम कितने भोले हो। दोलाम कहां है?"

"दोलाम? वो खाने वाले कमरे में है। उसे क्या हुआ है, वो कुछ परेशान-सा लग रहा है।" बबूसा बोला।

धरा आगे बढ़ी और दरवाजे जैसी खाली जगह से भीतर झांका।

दोलाम को कमरे में टहलते पाया।

"दोलाम हमें खोनम नहीं पिलाओगे?" धरा ने दोस्ताना अंदाज में कहा।

"दोलाम तुम्हारी पूरी सेवा करेगा महान खुंबरी।" दोलाम ने फौरन ठिठककर कहा।

धरा कुछ पल दोलाम को देखने के बाद बोली।

"तुम्हें मेरा हाथ थाम लेना चाहिए था। हम दोनों में अच्छी जमती।"

दोलाम ने कुछ नहीं कहा।

"सोच लो। मैं अभी भी तैयार हूं। मैं खुंबरी ही हूं। तुम तो सब जानते ही हो।"

"मैं उसी महान खुंबरी से प्यार करना चाहता हूं जिस शरीर की मैंने देखभाल की थी पांच सौ बरस तक।"

"मुझे यकीन है कि तुम मेरा हाथ थामने के लिए मान जाओगे।" कहने के साथ धरा वापस पलटी और बबूसा के पास से निकलते हुए कहा—"जगमोहन से कह दूंगी कि तुमसे बात कर ले।"

जगमोहन, जमीन के भीतर-ही-भीतर दस-बारह मिनट का रास्ता तय करके वहां पहुंचा जहां देवराज चौहान, नगीना, मोना चौधरी, सोमारा और रानी ताशा कैद थे। वहां तक पहुंचने में उसे कोई भी रुकावट नहीं आई। उस जगह के भीतर प्रवेश करके जगमोहन ने ठिठककर सबको देखा।

वो सब नीचे जमीन पर बैठे हुए थे।

"तुम बहुत गलत कर रहे हो जगमोहन।" रानी ताशा उसे देखते ही गुस्से से भरे स्वर में कह उठी।

"क्या गलत किया है मैंने?" जगमोहन कुछ आगे बढ़ा। शांत स्वर में बोला।

"खुंबरी हमारी दुश्मन है। हम उसकी जान लेने आए हैं। उसने हमें कैद कर लिया और तुम उससे प्यार कर बैठे।"

"रानी ताशा ठीक कह रही है।" मोना चौधरी ने कहा—"तुम्हें खुंबरी से प्यार नहीं करना चाहिए था। बात तो तब बनती जब तुम पहला मौका मिलते ही खुंबरी को मार देते।"

"खुंबरी की जान लेने के बारे में मैंने सपने में भी नहीं सोचा।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम्हें सोचना चाहिए जगमोहन।" नगीना कह उठी।

जगमोहन ने नगीना को देखा।

सबकी निगाह उस पर थी। तभी सोमारा बोली।

"बबूसा कैसा है?"

"ठीक है।" जगमोहन ने कहा—"हमने कुछ देर पहले एक साथ खाना खाया था।"

"वो मुझसे मिलने नहीं आया?"

"पता नहीं। कह दूंगा उससे।"

"क्या तुम हमारे साथ नहीं हो?" रानी ताशा ने चुभते स्वर में पूछा।

"खुंबरी में मैंने कोई बुराई नहीं देखी अब तक। वो अच्छी है। हम सबकी तरह।"

"ये तुम नहीं, उसके प्यार का नशा बोल रहा है।" मोना चौधरी ने कहा।

"वो सच में बहुत अच्छी है। साफ दिल से उससे मिलो तो ये बात खुद...।"

"खुंबरी ने मुझे और राजा देव को, अपने मतलब की खातिर, ढाई सौ साल पहले अलग कर दिया था। मैं सिर्फ इसी बात का बदला लेना चाहती हूं उससे और वो बचने वाली नहीं।" रानी ताशा ने बेहद कठोर स्वर में कहा।

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"तो अब तुम खुंबरी की तरफ हो।" मोना चौधरी तीखी नजरों से जगमोहन को देख रही थी।

"मेरा भरोसा करो, खुंबरी वास्तव में बहुत अच्छी बहुत मासूम है—वो...।"

"वो बुरी ताकतों की मालिक है।" नगीना कह उठी।

"सब खुंबरी के खिलाफ हैं तो मेरी बात किसी की समझ में नहीं आने वाली।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा फिर देवराज चौहान को देखकर कहा—"मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूं।"

"कहो।" देवराज चौहान बोला।

"अकेले में।"

देवराज चौहान खामोशी से उठा और सबसे हटकर जा खड़ा हुआ।

जगमोहन उसके पास पहुंचा।

दोनों की नजरें मिलीं।

"मैं खुंबरी से सच्चा प्यार करने लगा हूं।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं समझ रहा हूं।" देवराज चौहान बोला।

"खुंबरी तुम्हें आजाद करने को तैयार है।"

देवराज चौहान जगमोहन को देखता रहा।

"खुंबरी कहती है कि अगर देवराज चौहान उसे मारने का इरादा नहीं रखता तो उसे आजाद कर देगी। सिर्फ तुम्हारी हां पर वो तुम्हें आजाद करने को तैयार है। अगर तुम्हें खुंबरी से मेरे प्यार करने पर एतराज नहीं तो खुंबरी को तुम नहीं मारने वाले।"

देवराज चौहान खामोश रहा।

"जवाब दो, क्या तुम मेरे साथ हो?" जगमोहन के चेहरे पर बेचैनी उभरी।

"मैं ताशा के साथ हूं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"क्या?" दो पल के लिए जगमोहन हक्का-बक्का रह गया।

देवराज चौहान मुस्कराया।

"इसका मतलब?" जगमोहन गहरी सांस लेकर बोला—"तुम खुश नहीं हो कि खुंबरी से मुझे प्यार हो गया है।"

"मैं खुश हूं। तुम्हारी बात पर मुझे जरा भी एतराज नहीं।"

"तो फिर मेरा साथ क्यों नहीं दे...।"

"मुझे वो जन्म अच्छी तरह याद है, जब मैं ताशा के साथ इस ग्रह

पर रहा करता था। हम दोनों बहुत प्यार से अपना जीवन बिता रहे थे। खुंबरी ने हमें अलग करके बहुत गलत किया। ऐसे में ताशा का अब साथ देना मेरा पहला फर्ज बनता है। उसकी चाहत गलत नहीं है खुंबरी से बदला लेने की।"

"वो पुरानी बात है। ढाई सौ साल पुरानी बात। मेरा और खुंबरी का प्यार तो नया...।"

"तुम्हारे लिए पुरानी बात हो सकती है। मेरे लिए तो जैसे कल ही की बातें हैं...।"

"तुम—तुम रानी ताशा की खातिर, मेरा साथ देने से पीछे हट रहे हो।" जगमोहन कह उठा।

"तुम भी तो खुंबरी की खातिर, मेरा साथ नहीं दे रहे जबकि खुंबरी की जान लेने का तुम्हारे पास मौका है।"

जगमोहन और देवराज चौहान एक-दूसरे को देखते रहे।

"तुम ठीक कहते हो।" जगमोहन गहरी सांस लेकर कह उठा।

"इस वक्त हम दोनों की अपनी-अपनी समस्याएं हैं। मुझे रानी ताशा का साथ देना है और तुम्हें खुंबरी से प्यार हो गया है। हो सकता है कि हमें खुंबरी को मारने का मौका मिले और उसे बचाने के लिए तुम हमारे सामने आ जाओ।"

जगमोहन ने चौंककर देवराज चौहान को देखा।

"ऐसा हुआ तो तुम क्या करोगे?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"कम-से-कम तुम पर तो वार नहीं करूंगा।" देवराज चौहान मुस्कराया।

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"हम दोनों अपनी-अपनी स्थिति में फंसे पड़े हैं।" देवराज चौहान ने कहा—"मैं तुम्हें ये नहीं कह रहा कि तुम हमारा साथ दो। ऐसे में तुम भी मत सोचो कि मैं तुम्हारा साथ दूंगा। मुझे ताशा से ज्यादा तुमसे लगाव है परंतु खुंबरी ने कभी जो हमारे साथ किया था, वो मैं नहीं भूल सकता।"

"तुम्हारा फैसला गलत है।" जगमोहन ने परेशान स्वर में कहा।

"क्या मतलब?"

"खुंबरी के पास बेपनाह ताकतें हैं। देख ही रहे हो कि तुम लोग यहां कैद हो और न दिखाई देने वाली ताकतें पहरे पर हैं, सामने रास्ता खुला है, परंतु ताकतें तुम्हें बाहर नहीं निकलने दे रहीं। कैद में इसी तरह बैठे रह जाओगे। कभी भी आजाद नहीं हो सकोगे या फिर—कहीं खुंबरी तुम सबकी जान न ले ले। कब तक वो रखेगी तुम सबको कैद में, एक दिन तो...।"

"तुम्हें इस बात की चिंता है।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"चिंता क्यों न होगी।"

"तो खुंबरी को मार दो।"

"ये क्या कह रहे हो?" जगमोहन चौंका।

"मैं तो तुम्हारी चिंता खत्म करने की चेष्टा कर रहा हूं।" देवराज चौहान का स्वर शांत था—"मैं खुंबरी से बदला लेकर रहूंगा, जो कभी उसने मुझे और ताशा को अलग किया था। तुम तो हर बात से वाकिफ हो।"

"मैंने तो सोचा था कि तुम मेरा साथ दोगे।"

"और तुम मेरा साथ देते-देते खुंबरी से प्यार कर बैठे।" देवराज चौहान मुस्कराया—"तुम्हें खुंबरी से प्यार करने से पहले ये सोच लेना चाहिए था कि हम किस इरादे से यहां आए हैं।"

"मैं—मैं—खुंबरी को देखते ही, मुझे जाने क्या हो गया जो खुंबरी से प्यार कर...।"

"तुम अपनी मनमानी करने को आजाद हो और हम भी...।"

"बात को समझो, तुम लोग खुंबरी का मुकाबला नहीं कर सकते।" जगमोहन व्याकुल स्वर में कह उठा।

देवराज चौहान पलटा और वापस सबकी तरफ बढ़ गया।

जगमोहन आहत भाव से उसे जाते देखता रहा। उसने देवराज चौहान को नगीना के पास बैठते देखा। जगमोहन ने गहरी सांस ली और होंठ भींचकर, परेशानी भरे अंदाज में पलटकर बाहर निकलता गया।

▭ ▭

सोचों में डूबा जगमोहन वापस पहुंचा। मन खराब होने के कारण, कमरे में जाने की अपेक्षा वो उस जगह पर आ पहुंचा, जहां खाना खाया था। वहां कोई भी नहीं था। वह एक कुर्सी पर बैठ गया। वह देवराज चौहान के बारे में ही सोच रहा था कि इन हालातों में वो कितना सही है और स्वयं वो कितना सही है?

जाने कब तक वो इसी प्रकार गुमसुम-सा बैठा रहा कि आवाज सुनकर वो सोचों से बाहर निकला।

पास ही बबूसा खड़ा था।

"कैसे हो जगमोहन?" बबूसा कुर्सी पर बैठता कह उठा—"मैंने धरा से कहा था कि मैं तुमसे बात करना चाहता हूं।"

जगमोहन कुछ नहीं बोला।

बबूसा ने गहरी निगाहों से उसे देखा।

"कुछ उलझन में लग रहे हो। खुंबरी से कोई बात हो गई क्या?" बबूसा ने पूछा।

"नहीं।"

"तुम तो राजा देव से मिलने गए थे।"

"हां।"

"क्या बात हुई राजा देव से?"

"तुम्हें बताने के लिए कुछ भी नहीं है।" जगमोहन ने कहा।

"राजा देव ठीक हैं न?"

जगमोहन ने सहमति से सिर हिला दिया।

"और सोमारा, वो कुछ कह रही थी?"

"तुमसे मिलने की बात कर रही थी।"

"जाऊंगा।" बबूसा ने सिर हिलाया—"मैं तुमसे बात करना चाहता था।"

"कहो।"

"खुंबरी से प्यार-व्यार बहुत हो गया अब अपना काम कब करोगे?" बबूसा ने धीमे स्वर में कहा।

"कैसा काम?"

"खुंबरी को मार देने का काम।"

"मैंने कब कहा कि खुंबरी की जान लूंगा मैं।" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"क्या मतलब? हम खुंबरी को मारने के लिए ही तो यहां आए हैं। भूल गए क्या?"

जगमोहन बबूसा को देखने लगा।

"ये तो अच्छा है कि तुम खुंबरी के करीब पहुंच गए। तुम्हारे पास तो मौका है खुंबरी को मारने का।"

"बबूसा।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला।"

"क्या?" बबूसा ने अजीब-सी नजरों से जगमोहन को देखा—"मतलब कि तुम खुंबरी को नहीं मारने वाले?"

"सही समझे तुम। मैं खुंबरी से प्यार करने लगा।"

"दिमाग तो खराब नहीं हो गया तुम्हारा। वो बुरी ताकतों की मालिक...।"

"बेशक वो बुरी ताकतों की मालकिन है लेकिन व्यक्तिगत तौर पर वो अच्छी है। वो मुझे पसंद आई।"

"तुम्हारे दिमाग में उसकी खूबसूरती का भूत घुस गया है जो ऐसा कह रहे हो।"

"खुंबरी भी मुझसे प्यार करती है। वो...।"

"मन में वहम मत पालो। खुंबरी जैसी शय किसी से प्यार नहीं कर सकती। वो बुरी बन चुकी है। उसने राजा देव और रानी ताशा को कभी अपने मतलब की खातिर जुदा कर दिया था। राजा देव को सदूर ग्रह से बाहर फिंकवा दिया था। वो बुरी है और बुरी ही रहेगी।"

"तुम खुंबरी को दुनिया की निगाहों से देख रहे हो बबूसा।" जगमोहन मुस्कराया।

"तो?"

"उसे मेरी निगाहों से देखो तो उसका असली रूप देख सकोगे।"

बबूसा जगमोहन को देखता रह गया।

"वो चेहरे और शरीर की ही नहीं, मन की भी सुंदर है। वो सच में बहुत अच्छी है।"

"तो तुम्हें सच में खुंबरी से प्यार हो गया है।" बबूसा गम्भीर हो गया।

"हां। हम दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहते हैं।"

"मैं तो सोचता था कि तुम खुंबरी को मार देने के लिए मौका तलाश कर रहे होगे।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"राजा देव से कही ये बात?" बबूसा ने कहा।

"हां।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"तो उन्होंने क्या कहा?"

जगमोहन उठ खड़ा हुआ।

बबूसा ने गम्भीर निगाहों से उसे देखा और पुनः कहा।

"राजा देव ने क्या कहा तुम्हारी बात सुनकर?"

जगमोहन पलटा और वहां से आगे बढ़ता चला गया।

बबूसा का गम्भीर चेहरा सोचों में डूबा, वो बड़बड़ाया।

"इसका मतलब राजा देव और जगमोहन में अच्छी बात नहीं हुई। राजा देव अपनी जगह ठीक तो हैं। सब मिलकर खुंबरी से इस बात का बदला लेने आए थे कि उसने कभी राजा देव और रानी ताशा को अलग कर दिया था। परंतु जगमोहन तो खुंबरी से प्यार करने लगा। बाकी सब कैद में डाल दिए गए। इसमें तो जगमोहन की ही गलती है। उसे खुंबरी से प्यार नहीं करना चाहिए था। जिस काम के लिए आए हैं, वो पूरा करने की जरूरत थी।"

"अपने से क्या बातें कर रहे हो बबूसा।" दोलाम की आवाज कानों में पड़ी।

बबूसा ने चौंककर गर्दन घुमाई तो पास में दोलाम को खड़े देखा।

दोलाम आगे बढ़ा और कुर्सी पर आ बैठा।

"तुम्हें खुद से बात करने की आदत है?"

"मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा था दोलाम।" बबूसा ने कहा—"मेरे पास तुम्हारे अलावा सोचने को कुछ है ही नहीं। मुझे इस बात की चिंता हो रही है कि खुंबरी ने तुम्हारा दिल तोड़ दिया।"

"दिल?"

"और नहीं तो क्या? तुम खुंबरी की चाहत रखते हो और वो जगमोहन से प्यार करती है।"

"कुछ पहले तुम जगमोहन से बात कर रहे थे।" दोलाम ने तीखे स्वर में कहा।

"हां। उसे टटोल रहा था कि वो खुंबरी को सच में चाहता है या उसकी जान लेने के इरादे से उसके पास है।"

"तो क्या जाना?"

"वो बेवकूफ सच में खुंबरी से प्यार करता है।"

"ये उसने कहा?"

"हां। मैंने तो उसे याद दिलाया कि हम खुंबरी की जान लेने आए थे और तुम उसे मार नहीं रहे। वो खुंबरी से प्यार करने के दावे करने लगा। दोलाम मुझे तो लगता है खुंबरी तुम्हें नहीं मिल सकेगी।"

दोलाम के होंठ भिंच गए।

"खुंबरी भी जगमोहन से भरपूर प्यार करती है, ये एहसास मुझे जगमोहन की बातों से हुआ। मुझे नहीं लगता कि वो जगमोहन को छोड़कर तुम्हारा हाथ थामेगी। तुम्हें भ्रम हो रहा है कि वो तुम्हारा हाथ थाम लेगी।"

दोलाम के चेहरे पर कठोरता नाचती रही।

"तुम वक्त खराब कर रहे हो। जल्दी से मेरे दोस्त क्यों नहीं बन जाते। हम खुंबरी को मारने के बारे में विचार करेंगे।"

"मैं खुंबरी को वक्त दे रहा हूं कि वो सोच-समझकर फैसला कर ले।" दोलाम शब्दों को चबाकर बोला।

"वो अपना फैसला तुम्हें सुना चुकी है।"

"फिर भी मुझे इंतजार है कि वो अपना फैसला बदल ले।"

"तुम्हें गलती लग रही है कि खुंबरी तुम्हारे बारे में कुछ सोचेगी।" दोलाम ने बबूसा को देखकर कहा।

"तुम्हें इतनी जल्दी क्यों है?"

"मैं वक्त खराब नहीं करना चाहता। मैं...।"

"मैं तुम्हें पहले भी समझा चुका हूं कि ये काम आसान नहीं है। ताकतों की मालकिन है खुंबरी। उसकी जान लेना बहुत बड़ी बात है। ऐसा न हो कि हम खुंबरी की जान लें और ताकतें हमारी जान ले लें। ये गम्भीर मसला है। तुम इन ताकतों के बारे में कुछ भी नहीं जानते। इस मामले में हमें बहुत सब्र के साथ चलना है। परंतु अभी मुझे खुंबरी के जवाब का इंतजार है।"

"मान लो खुंबरी ने तुम्हारा हाथ थाम लिया तो तब क्या होगा?" एकाएक बबूसा बोला।

"तब?" दोलाम ने करीबी निगाहों से बबूसा को देखा—"तब सबसे पहले मैं तुम्हें खत्म करूंगा, फिर...।"

"मुझे?" बबूसा के माथे पर बल पड़े।

"हां। क्योंकि तुम खुंबरी की जान लेने का इरादा रखते हो। उसके बाद अन्य कैदियों को मार दूंगा।"

"बेवकूफ हो तुम।" बबूसा बोला—"खुंबरी को मारकर तुम अकेले ही ताकतों के मालिक क्यों नहीं बनते?"

"मैं खुंबरी के साथ रहकर भी ताकतों का मालिक बना रहूंगा। खुंबरी सदूर की रानी बनेगी तो दोलाम राजा बन जाएगा। फिर सब कुछ मुझे ही तो संभालना है। मेरा हुक्म ही चलेगा हर तरफ।"

"और खुंबरी?"

"उसे बच्चे पैदा करने से फुर्सत ही नहीं मिलेगी।" दोलाम कहर-भरे स्वर में कह उठा।

बबूसा ने दोलाम की जहर भरी आंखों में देखकर शांत स्वर में कहा।

"तुम सपने बुन रहे हो। ऐसा कुछ नहीं होने वाला। खुंबरी तुम्हें सिर्फ सेवक मानती है। वो जगमोहन से प्यार करती है और ये बात भूलो कि तुम्हारे मन की बात जानकर, खुंबरी भी तुम्हारी जान लेने का प्रयत्न कर सकती है।"

"ये खतरा तो है।" दोलाम ने मुस्कराकर कहा—"इतना खतरा तो उठाना ही पड़ेगा। पर मेरी जान लेने से पहले ताकतें भी मुझे तौलेंगी कि दोलाम ने ऐसा क्या कसूर कर दिया कि उसकी जान लें। मैंने खुंबरी की और ताकतों की हमेशा दिल से सेवा की है। मुझमें कमी निकालना ताकतों के लिए भी आसान नहीं होगा।"

"तुम भ्रम में रहे और ताकतों ने तुम्हारी जान ले ली तो?"

"मुझे विश्वास है कि ताकतें मेरे साथ ऐसा नहीं करेंगी।"

"खुंबरी ताकतों की मालकिन है। उसके इशारे को ताकतें इंकार कैसे कर सकती हैं?"

"ताकतें अपना निर्णय भी तो ले सकती हैं। ठोरा कभी भी गलत फैसला नहीं लेगा। वो बड़ी ताकत है।"

"तुम ठोरा की इस बात पर यकीन करते हो कि तुम्हारा हक बनता है खुंबरी पर?"

"हां। ठोरा का इतना कह देना ही बहुत बड़ी बात है।"

"तुम्हारा मतलब कि ठोरा चाहे तो खुंबरी के हुक्म को इंकार कर सकता है।"

"बेशक कर सकता है अगर ठोरा के पास मुनासिब वजह हो तो। ताकतें खुंबरी की गुलाम अवश्य हैं परंतु मजबूर नहीं हैं। वो ऐसे किसी इंसान की जान नहीं लेंगी जो उनके हक में बेहतर काम कर रहा हो। जैसे कि मैं...।"

"मुझे तो लगता है तुम्हें गलतफहमी हो रही है।"

"ताकतों के नियम मैं जानता हूं तुम नहीं। यूं तो ताकतों के नियम होते ही नहीं, फिर भी मुझे मारने से पहले ताकतों को सोचना पड़ेगा। दोलाम ने हमेशा सच्चे मन से उनकी सेवा की है।" दोलाम ने दृढ़ स्वर में कहा।

"मेरी मानो तो फौरन खुंबरी का गला काट दो।"

"तुम बेवकूफ हो, जो इतनी जल्दी करने को मुझे कह रहे हो।" दोलाम मुस्कराकर कह उठा—"ऐसा करके मैं बेवकूफी नहीं करना चाहता। अभी मुझे खुंबरी के जवाब का इंतजार है।"

▭ ▭

जगमोहन ने कमरे में प्रवेश किया तो खुंबरी को कुर्सी पर बैठे देखा। कुछ देर पहले ही उसने धरा के साथ खोनम पिया था और धरा खोनम के दोनों बर्तन ले गई थी।

"आ गए जगमोहन।" खुंबरी एकाएक मुस्कराकर कह उठी—"देवराज चौहान से मिल आए?"

जगमोहन बेड पर जा बैठा।

"क्या हुआ?" खुंबरी उसके गम्भीर चेहरे को देखकर बोली—"क्या बात हुई देवराज चौहान से?"

"अच्छी बात नहीं हुई।"

"बोलो तो।"

"देवराज चौहान कहता है कि हम यहां खुंबरी की जान लेने आए थे और तुम खुंबरी से प्यार कर बैठे।"

खुंबरी के चेहरे की मुस्कान गहरी हो गई।

"तुमने क्या कहा?"

"मुझे खुंबरी से प्यार हुआ है तो हुआ है।" जगमोहन गम्भीर था—"ये बात टल नहीं सकती।"

"तो देवराज चौहान तुम्हारे साथ नहीं, रानी ताशा के साथ है।" खुंबरी बोली।

"वो कहता है कि सदूर के जन्म की उसे याद आ चुकी है। खुंबरी ने उन्हें अलग करके गलत किया।"

"फिर तो तुम और देवराज चौहान अब अलग हो गए।"

"हम कभी भी अलग नहीं हो सकते।" जगमोहन ने गम्भीर नजरों से खुंबरी को देखा—"तुम मेरी हो। मैं तुमसे प्यार करूंगा और देवराज चौहान, रानी ताशा का साथ देते हुए तुम्हारी जान लेने की कोशिश करेगा।"

"वो लोग कुछ भी नहीं कर सकते। ताकतों ने उन्हें कैद में रखा हुआ है, वे उन्हें वहां से बाहर भी नहीं आने देंगी। मुझ तक आ पहुंचना तो बहुत बड़ी बात है। हमारी जिंदगी मजे से कटेगी।"

जगमोहन ने खुंबरी को देखकर कहा।

"मैं ये नहीं चाहता कि वो सब लम्बे समय तक कैद में रहें।"

"वो लम्बे समय तक कैद में नहीं रहेंगे।" खुंबरी बोली—"जल्दी ही ताकतें उनका जीवन समाप्त कर देंगी।"

"नहीं।" जगमोहन के होंठों से निकला—"ऐसा सोचना भी मत।"

खुंबरी ने हैरानी से जगमोहन को देखा।

जगमोहन के चेहरे पर व्याकुलता थी।

"मैं उनमें से किसी की भी मौत नहीं चाहता।"

"क्यों?"

"मुझे उनसे लगाव है। देवराज चौहान मेरा सब कुछ है। नगीना भाभी, मोना चौधरी, रानी ताशा, सोमारा...।"

"देवराज चौहान को तो तुमसे लगाव नहीं है। वो रानी ताशा का साथ दे रहा...।"

"इसमें देवराज चौहान की नहीं, मेरी ही गलती है।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"तुम्हारी गलती? वो कैसे जगमोहन?"

"हम सब तुम्हें मारने, तुमसे बदला लेने आए थे और मैं तुमसे प्यार कर बैठा।"

"ये तो गलत बात नहीं हुई। तुम्हारी-मेरी दुश्मनी ही कहां थी। हम तो एक-दूसरे को जानते भी नहीं थे। ऐसे में हममें प्यार हो जाना साधारण

बात है। देवराज चौहान और रानी ताशा अपने मन में मेरे लिए बैर रखे हुए...।"

"उनका बैर गलत भी तो नहीं है।"

खुंबरी ने गहरी नजरों से जगमोहन को देखा।

"तुमने भी तो उन दोनों को अलग कर दिया...।"

"मैंने नहीं, मेरी ताकतों ने...।"

"बात तो एक ही है खुंबरी।" जगमोहन गम्भीर दिख रहा था—"ताकतें तुम्हारी ही तो हिस्सा हैं। अब वो उस बात का बदला लेना चाहते हैं तुमसे। उन्हें गलत भी नहीं कहा जा सकता।"

"तब उन दोनों को जुदा करना पड़ा, तभी तो आज मैं वापस सदूर पर पहुंच सकी। ये करना मेरी मजबूरी थी।"

"और आज देवराज चौहान और रानी ताशा की मजबूरी है तुमसे बदला लेना।"

"तुम कुछ बदले से दिख रहे हो मुझे।"

"मुझे गलत मत समझो। मैं इस वक्त जो भी बात कर रहा हूं साफ दिल से कर रहा हूं।"

"मुझे गलत मत कहो कि राजा देव और रानी ताशा को जुदा करके मैंने गलत काम किया है। वो मेरी तब की मजबूरी थी।"

"मुझे यकीन है जरूर मजबूरी होगी, तभी तुमने ऐसा किया। मैं तुम्हें भी गलत नहीं कह रहा। बिना वजह तुम उन दोनों को क्यों अलग करने लगी। हम सब ही अपनी-अपनी जगह ठीक हैं।"

"देवराज चौहान अगर तुम्हारा सच्चा साथी होता तो मेरे प्रति अपने क्रोध को भूल जाता। भूल जाता कि खुंबरी ने कभी उनके साथ गलत किया था। ये ही याद रखता कि अब जगमोहन और खुंबरी में प्यार हो चुका है।"

"देवराज चौहान मेरा सच्चा साथी है खुंबरी। वो गलत नहीं है। हम सब अपने-अपने हालातों में जकड़े पड़े हैं। हर कोई अपनी जगह पर ठीक है। हमें अपना प्यार जरूरी लगता है तो उन्हें अपना बदला।"

"वो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" खुंबरी ने दृढ़ स्वर में कहा—"उनकी ही जान मेरे हाथों में है।"

"मेरी खातिर उन्हें कुछ मत कहना।"

"मैं उन्हें ज्यादा देर कैद में भी नहीं रख सकती। पांच सौ सालों से, जब तक मैं पृथ्वी पर जीवन जीती रही, ताकतों को खून बहते देखना नहीं मिला, जिसकी कि वो शौकीन हैं। जल्दी ही वो खून बहते देखना चाहेंगी।

खून को देखकर उन्हें खुशी मिलती है। ताकतों की इच्छा को पूरा करना मेरा फर्ज है।"

"नहीं खुंबरी नहीं। उन्हें मारना नहीं।" जगमोहन तड़प उठा।

खुंबरी गम्भीर दिखी।

"मुझे समझ में नहीं आ रहा कि तुम्हारी दुनिया मेरे साथ है। तुम उनके लिए चिंतित क्यों हो?"

"तुम्हारी दुनिया भी तो मेरे साथ है फिर तुम ताकतों को खून दिखाने के बारे में क्यों सोचती हो?" जगमोहन कह उठा।

"वो ताकतें मेरे अधीन हैं। उनकी जरूरत पूरी करना मेरा ही काम है।"

"इसी तरह देवराज चौहान और बाकी लोग मेरे साथी हैं। उनका ध्यान रखना भी मेरा ही काम है।"

"वो तुम्हारी खुंबरी की जान लेने आए हैं।"

"परंतु ले नहीं सकते। वो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" जगमोहन परेशान-सा कह उठा।

खुंबरी ने हौले-से सिर हिलाया फिर बोली।

"मैं कोशिश करूंगी कि उन सबको कुछ न हो।"

"तुम जो चाहोगी, वो ही होगा। यहा तुम्हारे इशारे के बिना कुछ नहीं होता।"

"बहुत कुछ हो जाता है।" खुंबरी एकाएक मुस्कराई—"जानना चाहोगे?"

जगमोहन ने खुंबरी को देखा।

"दोलाम मेरा बहुत पुराना सेवक है। डुमरा ने पांच सौ सालों का श्राप दिया। वो पांच सौ साल मैंने पूरे कर लिए। उससे भी पुराना है दोलाम। उसने मेरी और ताकतों की बहुत सेवा की। मन से सेवा की। कभी कुछ नहीं मांगा। लेकिन अब मांगता है।"

"तो उसे दे दो।" जगमोहन ने सहज भाव में कहा।

"क्या दे दूं?"

"जो भी वो चाहता है।"

"वो अपनी सेवा के बदले मुझे मांगता है।"

"क्या?" जगमोहन के चेहरे पर हैरानी उभरी—"उसकी इतनी हिम्मत।"

"और तुम कहते हो कि यहां मेरे इशारे के बिना कुछ नहीं होता। लगता है अब खुंबरी का इशारा भी काम का नहीं रहा।"

"क्या मतलब?"

"दोलाम की मांग पर मैं क्रोधित हो उठी। मैंने ताकतों से कहा कि दोलाम की जान ले ली जाए।"

"ठीक किया।"

"परंतु ताकतों ने मेरी बात नहीं मानी। दोलाम सेवा करते-करते कब राजदार बन गया, इसका पता ही नहीं चला। परिवार का हिस्सा बन गया दोलाम। ताकतों ने जवाब दिया कि ये मेरा और दोलाम का व्यक्तिगत मामला है।"

"तुम्हारा हुक्म नहीं माना ताकतों ने?"

"ताकतों ने कहा कि दोलाम ने कोई गलती नहीं की कि उसकी जान ली जाए।"

"ताकतें तुम्हारी बात से इंकार कैसे कर सकती हैं?"

"कर सकती हैं, अगर मेरी कोई बात पूरे तौर पर उन्हें गलत लगे और दोलाम की जान लेना उन्हें गलत लग रहा है। एक मामूली सेवक के लिए ताकतों ने मेरी बात नहीं मानी।"

"तुम ताकतों को छोड़ दो।"

"नहीं। ऐसा तो मैं सोच भी नहीं सकती। ताकतों की मेहरबानी से मेरा जीवन बहुत आसानी से बीत रहा है। मेरे बिना ताकतें नहीं और ताकतों के बिना खुंबरी नहीं।" खुंबरी ने मुस्कराकर कहा—"ताकतों को मेरी जरूरत है तो मुझे भी ताकतों की जरूरत है। ताकतों ने हमेशा मेरा भला चाहा, नहीं तो आज खुंबरी मिट चुकी होती।"

"लेकिन दोलाम...?"

"मैंने दोलाम के साथ नर्मी इस्तेमाल की। उससे कहा कि वो धरा का हाथ थाम ले।"

"फिर?"

"दोलाम ने इंकार कर दिया। कहता है उसे वो ही शरीर चाहिए, जिसकी देखभाल उसने पांच सौ सालों तक की है। मेरे कंधों पर पांव रखकर वो सदूर के राजा बनने तक का सफर तय करना चाहता है। मेरा भी मालिक बनने की इच्छा रखता है।"

जगमोहन के चेहरे पर कठोरता नाच उठी—"दोलाम को यहां से निकाल दो।"

"क्या?"

"दोलाम को बाहर निकाल दो कि दोबारा वो यहां न आए।" जगमोहन के स्वर में क्रोध था।

"ये सम्भव नहीं। ताकतों के साथ जो जुड़ जाता है फिर वो अलग

नहीं हो सकता। ताकतें पसंद नहीं करतीं कि उनके राज बाहर जाएं। मैं तो ताकतों से अलग हो सकती हूं परंतु दोलाम को ऐसी इजाजत नहीं है।" खुंबरी ने कहा।

"तुमने दोलाम को क्या जवाब दिया?"

"यही कि मैं जगमोहन को नहीं छोड़ सकती। जगमोहन से मुझे प्यार हो चुका है। लेकिन अभी भी वो आशा रखता है कि मैं तुम्हें छोड़कर उससे प्यार करने लगूंगी। दोलाम बेवकूफ है। उसने बहुत भारी मेहनताना मांग लिया है। खुंबरी को मांगा। अक्ल खराब हो गई उसकी परंतु धरा का खयाल है कि इस आड़ में दोलाम कुछ और चाहता है।"

"कुछ और—मैं समझा नहीं?"

"मतलब कि दोलाम जानता है कि उसकी ये बात पूरी नहीं होगी, फिर भी उसने मुझे पाने की ये मांग रखी। धरा का खयाल है कि मेरे इंकार के बाद, दोलाम अपनी नाराजगी की आड़ में कुछ और करने की इच्छा रखता है।"

"कुछ और क्या?"

"ये ही तो पता नहीं।"

"ताकतें तुम्हें बता सकती हैं कि दोलाम की असल इच्छा क्या है।" जगमोहन बोला।

"जो परिवार का सदस्य बन जाता है, ताकतें उस पर नजर नहीं रखतीं और उसकी बात दूसरे को नहीं बताती। इसलिए इस मामले में ताकतें दखल नहीं देंगी। दोलाम का मामला मुझे ही देखना पड़ेगा।"

"ये गलत है। तुम ताकतों की मालकिन हो और दोलाम मामूली-सा सेवक...।"

"अब वो मामूली नहीं रहा। ये एहसास मुझे तब हुआ जब ताकतों ने दोलाम की जान लेने से मना कर दिया।" खुंबरी का चहरा सख्त हो गया—"मजबूरन मुझे इस बारे में ठोरा से बात करनी होगी।"

"ठोरा?"

"सबसे बड़ी ताकत।" खुंबरी ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसका फैसला ही अंतिम होता है। वो ताकतों को कंट्रोल में रखता है और उन्हें समूह में रखता है। ठोरा ताकतों के बीच राजा जैसा है।"

"क्या बात करोगी ठोरा से?"

खुंबरी ने सोच भरी निगाहों से जगमोहन को देखा।

जगमोहन की निगाह खुंबरी पर थी।

कुछ लम्बी खामोशी के बाद खुंबरी ने कहा।

"ठोरा से कभी भी मुझे बात करने की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि मेरी जरूरतें अन्य ताकतें ही पूरा कर देती हैं। लेकिन अब ठोरा से बात होगी कि उसके लिए मैं महत्त्वपूर्ण हूं या दोलाम?"

"वो तुम्हारी बात गम्भीरता से सुनेगा?"

"जरूरी है उसके लिए मेरी बात को गम्भीरता से लेना। मैं ताकतों की मालिक हूं।"

"वो न माना दोलाम को मारने के लिए तो?"

"उसे ठोस वजह बतानी होगी इंकार की।" खुंबरी के स्वर में तीखापन आ गया।

"वो न माना तो तुम क्या करोगी?"

"चुप तो बैठने से रही।"

तभी धरा ने भीतर प्रवेश किया और उनकी बातें सुनने लगी।

"तुम्हें ये पहले से तय कर लेना चाहिए कि ठोरा के इंकार पर तुम क्या करोगी?" जगमोहन बोला।

जवाब में खुंबरी सिर हिलाकर रह गई।

जगमोहन के चेहरे को देखकर स्पष्ट लग रहा था कि उसका दिमाग तेजी से दौड़ रहा है।

"ताकतें दोलाम की जान लेने को तैयार नहीं तो ये समस्या वाली बात नहीं है।" जगमोहन ने कहा।

"क्या मतलब?" खुंबरी के होंठों से निकला।

"दोलाम की मांग बहुत गलत है। मैं उसकी जान ले सकता हूं।"

"तुम?" खुंबरी की आंखें सिकुड़ीं।

"आसानी से।"

"नहीं। तुम्हारे द्वारा ऐसा करना ठीक नहीं होगा। ताकतों को बुरा लगेगा। वो तुम पर वार कर देंगी।"

"तुम मुझे प्यार करती हो। ऐसे में ताकतें मेरी जान कैसे ले सकती हैं।"

"ले लेंगी। ताकतें परिवार के बाहर के लोगों को पसंद नहीं करती। वो इस बात को भी अच्छा नहीं समझ रही होंगी कि मैं तुमसे प्यार करने लगी हूं। तुमने दोलाम को मारा तो ताकतें तुम्हें नहीं छोड़ेंगी।"

"पर ताकतें तो तुम्हें कहती हैं कि ये तुम्हारा और दोलाम का व्यक्तिगत मामला है।"

"हां। मेरा और दोलाम का व्यक्तिगत मामला। इसमें तुम्हारे दखल देने की गुंजाइश नहीं है।"

जगमोहन होंठ भींचकर रह गया।

"दोलाम मुझे पाने की इच्छा रखता है। ऐसे में अब वो ठीक से मेरी सेवा नहीं कर सकता। मेरे मन में उसके लिए फर्क आ चुका है। अब वो मुझे अच्छा नहीं लगता। परंतु ताकतें उसके खिलाफ नहीं हैं।"

"तुम दोलाम की जान ले सकती हो। ऐसे में ताकतें तुम्हें कुछ नहीं कह सकेंगी।"

"मैं मन-ही-मन इसी बात पर विचार कर रही हूं। शायद दोलाम की जान मुझे ही लेनी पड़े।"

खामोशी खड़ी धरा कह उठी।

"ऐसा करने की जरूरत नहीं है। दोलाम की जान लेने का आसान रास्ता हमारे पास है।"

खुंबरी और जगमोहन ने धरा को देखा।

"कैसा रास्ता?"

"बबूसा।" धरा के चेहरे पर मुस्कान उभरी—"बबूसा ये काम करेगा।"

"बबूसा?"

"जरूर करेगा।" धरा ने उसी अंदाज में कहा।

"मतलब कि तुम बबूसा को इस काम के लिए तैयार कर लोगी।" खुंबरी ने सोच भरे स्वर में कहा।

धरा ने सहमति से सिर हिला दिया।

"लेकिन इसमें बबूसा को खतरा है।" जगमोहन बोला—"उसने दोलाम को मारा तो ताकतें उसे मार देंगी।"

"हमारा काम तो हो जाएगा।" खुंबरी ने कहा।

"बबूसा की जान खतरे में डाल कर।"

"क्या फर्क पड़ता...।"

"मुझे फर्क पड़ता है।" जगमोहन ने तेज स्वर में कहा—"मैं बबूसा की मौत नहीं चाहता।"

"बबूसा को कुछ नहीं होगा। उसे बचा लिया जाएगा।" धरा के सामान्य स्वर में कहा।

"कैसे?"

"ये जानना तुम्हारा काम नहीं है। मुझ पर भरोसा रखो।" धरा बोली—"बबूसा सुरक्षित रहेगा।"

"इस तरह मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकता। ये बबूसा के जीवन का सवाल है।"

"जगमोहन।" धरा ने शांत स्वर में कहा—"बबूसा बिना वजह दोलाम को नहीं मारेगा। इसकी वजह होगी बबूसा के पास। दोलाम और बबूसा में मैं

झगड़ा खड़ा कर दूंगी। तब दोनों एक-दूसरे को मार देना चाहेंगे। ताकतें सब कुछ देख रही होंगी। ऐसे में बबूसा, दोलाम की जान ले लेता है तो ताकतें इसे दोलाम और बबूसा का व्यक्तिगत मामला मानेंगी। बीच में नहीं आएगी।"

"तब भी ताकतों ने बबूसा की जान ले ली तो...?"

"ऐसा नहीं होगा। मुझ पर भरोसा रखो।"

"दोलाम के साथ मैं भी झगड़ा खड़ा कर सकता...।"

"तुम्हारे लिए ये ठीक नहीं होगा। तुम खुंबरी के प्रेमी हो। तुम्हारा दोलाम से झगड़ना ठीक नहीं। बबूसा दोलाम से झगड़ेगा तो ताकतों को सब कुछ सामान्य लगेगा।" धरा ने कहा।

"ये बातें बाद में देखेंगे।" खुंबरी बोली—"पहले मैं ठोरा से बात करूंगी। शायद बात यूं ही बन जाए।"

▭ ▭

खुंबरी तेज-तेज कदम उठाती आगे चल रही थी, जैसे जल्दी से पहुंच जाना चाहती हो जहां जाना है उसे। उसके पीछे धरा कदम बढ़ाती आ रही थी। खुंबरी के चेहरे पर दृढ़ता थी और धरा के चेहरे पर सोचें नाच रही थीं। दोनों में कोई बात नहीं हो रही थी। उनके कदमों की मध्यम-सी आवाजें उठ रही थीं। उस जगह के भीतर के कई रास्तों को दोनों पार कर रही थीं कि धरा कह उठी।

"बटाका द्वारा भी तो तू ठोरा से बात कर सकती थी।"

"मैं ठोरा को तकलीफ नहीं देना चाहती। बटाका छूकर ठोरा को बुलाती तो ठोरा को उठकर आना पड़ता।"

"बहुत चिंता है तुझे ठोरा की।"

"वो बड़ी ताकत है। उसे ज्यादा इज्जत देनी चाहिए।"

दोनों ने उस कमरे में प्रवेश किया जहां मंत्रों वाले पानी का कटोरा रखा था।"

खुंबरी बिना रुके आगे बढ़ी और मंत्रों वाले कटोरे के पानी में हाथ डाल दिया।

"किसने मेरे सिर पर हाथ मारा।" उसी पल ठोरा को गुर्राती आवाज वहां गूंजी।

"मैं हूं ठोरा। खुंबरी।" खुंबरी ने शांत स्वर में कहा।

"ओह, महान खुंबरी।" ठोरा का स्वर एकाएक नर्म पड़ गया—"तुमने क्यों तकलीफ की। मुझे पुकार लेती।"

"मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है।"

"महान खुंबरी की सेवा के लिए ठोरा हमेशा हाजिर है। हुक्म करो।"

"दोलाम ने मेरे लिए समस्या खड़ी कर दी है।" खुंबरी के स्वर में गुस्सा आ गया।

ठोरा की आवाज नहीं आई।

"वो मेरे साथ सम्बंध बनाना चाहता है। जबकि उसे याद रखना चाहिए कि वो सिर्फ सेवक है महान खुंबरी का। वो...।"

"दोलाम मामूली-सा सेवक जरूर था परंतु उसने इतने तन-मन से तुम्हारी और हम ताकतों की सेवा की कि खुश होकर हमने उसे अपने परिवार में शामिल कर लिया है। दो सौ साल से वो परिवार का सदस्य है।"

"मेरी नजरों में वो सिर्फ सेवक है।" खुंबरी गुस्से से कह उठी।

"दोलाम हमारे परिवार का सदस्य बन चुका है महान खुंबरी। उसने खुद को हम सबकी सेवा में समर्पित कर दिया है। हमने कभी भी उसके कर्मों में कोताही नहीं देखी। वो बहुत ईमानदार...।"

"वो मेरे साथ सोना चाहता है ठोरा।" खुंबरी गुस्से से चीख उठी।

"महान खुंबरी।" ठोरा की शांत आवाज कमरे में उभरी—"इसमें तो कोई परेशान होने वाली बात नहीं है। दोलाम का हक बनता है ये। उसने पांच सौ सालों तक तुम्हारे शरीर की देखभाल...।"

"ठोरा।" खुंबरी गुर्रा उठी—"मैं जगमोहन से प्यार करती हूं।"

"तो दोलाम से भी प्यार कर लो।"

"ये सम्भव नहीं। जगमोहन से मुझे प्यार है, दोलाम से नहीं।" खुंबरी के चेहरे पर गुस्सा चमक रहा था।

"तुम्हें सोचना है कि तुम्हारे लिए महत्त्वपूर्ण कौन है पृथ्वी से आया वो इंसान या दोलाम?"

"जगमोहन मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है।"

"मैं तुमसे सहमत नहीं हूं। वो इंसान हमारे लिए अंजान है और सदूर से दूर पृथ्वी का है। तुम्हारे व्यक्तिगत मामले में दखल देने का हक नहीं है ताकतों को, परंतु अब बात चली है तो कह देना बेहतर होगा कि उस इंसान के साथ तुम्हारा सम्बंध कायम रहे, ये बात ताकतों को पसंद नहीं। परंतु हम तुम्हारे काम में दखल भी नहीं देंगे। दोलाम हमारे परिवार का सदस्य है। अगर तुम उससे प्यार करो तो ताकतें खुश होंगी।"

"ये मेरे बस में नहीं है। मैं जगमोहन को प्यार...।"

"शरीर की भूख का ये दूसरा नाम है प्यार। हम ताकतें तुमसे बेहतर जानती हैं कि प्यार कुछ नहीं होता। दिमाग पर पर्दा छा जाता है जिसे कि

इंसान प्यार का नाम दे देता है। ऐसा ही पर्दा इस वक्त तुम्हारे दिमाग पर बिछ चुका है। उस इंसान को अभी कुछ हो जाए, उसके हाथ कट जाएं, टांग कट जाएं। मुंह टेढ़ा हो जाए। किसी वजह से वो चलने के काबिल न रहे तो तुम्हारा प्यार अचानक ही खत्म हो जाएगा और तुम उससे पीछा छुड़ाने की सोचोगी।"

"वो स्वस्थ इंसान है, वो...।"

"जब वो अचानक अस्वथ हो जाएगा तो तबकी बात बता रहा हूं।"

"मैं जगमोहन से प्यार करती हूं—मैं...।"

"दोलाम से प्यार कर लो। ये मेरी राय है महान खुंबरी।" ठोरा की आवाज आई।

तभी चुप खड़ी धरा कह उठी।

"ठोरा। हम तेरी राय सुनने नहीं आईं। तेरे पास अपनी समस्या लेकर आए हैं।"

"समस्या बताओ।"

"दोलाम से पीछा कैसे छूट सकता है?"

"ये विचार ही गलत है। वो परिवार का सदस्य है।" ठोरा का स्वर सुनाई दिया।

"मुझे दोलाम से पीछा छुड़ाना है।" धरा ने शांत स्वर में कहा।

"अगर ऐसा कुछ किया गया तो ताकतों को पसंद नहीं आएगा।"

"दोलाम के मन में ईमानदारी होती तो वो मेरा हाथ थाम लेता। मैं भी तो खुंबरी हूं।"

"ये दोलाम की मर्जी पर है।"

"दोलाम की जगह बहुत छोटी है ठोरा। बेशक वो परिवार का सदस्य बन गया है, पर खुंबरी का मुकाबला नहीं कर सकता। वो इतना बड़ा नहीं हुआ कि खुंबरी का शरीर पा ले। खुंबरी तुम सबकी मालिक है।"

"हां। महान खुंबरी हमारी मालकिन है।" ठोरा के शब्द कानों में पड़े।

"दोलाम की वजह से खुंबरी परेशान हो रही है।"

"दोलाम की वजह से नहीं। उस इंसान की वजह से जो पृथ्वी से आया है। दोलाम हमारे परिवार का सदस्य है। तुम्हारे दिमाग पर बिछे प्यार के पर्दे ने दोलाम को पीछे धकेल दिया है। तुम...।"

"तुम दोलाम के हक में बोल रहे हो।" धरा की आंखें सिकुड़ीं।

"क्योंकि वो सही है। उसके पास हक है तुम्हें पाने का।"

"मुझे दोलाम की मांग पसंद नहीं।" धरा ने सख्त स्वर में कहा।

ठोरा की जवाब में आवाज नहीं आई।

"जवाब दे ठोरा। मुझे दोलाम से प्यार करना पसंद नहीं।" धरा पुनः बोली।

"अब मैं क्या कह सकता हूं ये महान खुंबरी का व्यक्तिगत मामला है। मैं तो सिर्फ राय ही दे सकता हूं।"

"मेरे इंकार पर दोलाम क्या करेगा?" धरा ने पूछा।

"मैं नहीं बता सकता।"

"क्यों?"

"तुम तो जानती हो कि परिवार के सदस्यों की बातें एक-दूसरे को नहीं बताई जातीं।"

"ये कहकर तू दोलाम की बातों को छिपा रहा है।"

"तुम बेहतर जानती हो कि ताकतें किस नियम से काम करती हैं।" ठोरा की आवाज आई।

"मेरा विश्वास है कि मेरे इंकार पर दोलाम जरूर कोई कदम उठाएगा।"

ठोरा की आवाज नहीं आई।

उसी पल खुंबरी कठोर स्वर में कह उठी।

"ठोरा। मैं तुझे हुक्म देती हूं कि दोलाम की जान ले ले।"

"मैं हुक्म मानने से इंकार करता हूं।"

"क्यों?"

"परिवार के सदस्य की जान हम बिना वजह नहीं ले सकते। ताकतों की नजरों में दोलाम की मांग सही है।"

खुंबरी दांत पीसकर रह गई। जबकि धरा मुस्कराकर बोली।

"फिर तो तेरे पास आना बेकार रहा ठोरा।"

ठोरा की आवाज नहीं आई।

"तेरे को इस बात का डर नहीं कि इस इंकार पर खुंबरी ताकतों को अकेला भी छोड़ सकती है।" खुंबरी बोली।

"हमें विश्वास है कि खुंबरी कभी भी ऐसा नहीं करेगी।" ठोरा की आवाज वहां उभरी।

खुंबरी ने उसी पल मंत्रों वाले पानी के कटोरे से हाथ बाहर निकाल लिया।

धरा ने खुंबरी को देखा।

"जो करना है अब हमें ही करना होगा।" खुंबरी सख्त स्वर में कह उठी।

▭ ▭

दोलाम अपने सोने वाले कमरे में कुर्सी पर बैठा था। आंखें बंद थीं। चेहरे से स्पष्ट लग रहा था कि वो गहरी सोचों में है। ये साधारण-सा कमरा था जहां तख्त जैसा बेड था। उस पर बिस्तरा बिछा था। अंदर-बाहर कहीं से भी कोई आवाज नहीं उठ रही थी। वहां शांति का माहौल था। सांस लेने की रफ्तार से, मध्यम अंदाज में दोलाम का सीना उठ-बैठ रहा था। कभी उसका चेहरा सामान्य हो जाता तो कभी तनाव से भरा दिखने लगता।

इसी प्रकार कुछ लम्बा वक्त गुजरा कि दोलाम के कानों ने कदमों की आहटें महसूस कीं। आहटें हर पल समीप आतीं जा रही थीं। दोलाम को आहटों की, कदमों की पहचान हो चुकी थी। वो धरा के कदमों की आवाजें थीं। परंतु दोलाम ने आंखें न खोलीं। मन में विद्रोह की लहर उठी।

तभी कदमों की आहटें कमरे के भीतर प्रवेश कर आईं और थम गईं।

कई पलों तक शांति बनी रही।

फिर आहटें आगे बढ़ीं और उसके समीप आ ठिठक गईं। अगले ही पल उसने सिर के बालों में उंगलियां फिरती महसूस हुईं। साथ ही धरा का मध्यम-सा स्वर कानों में पड़ा।

"मेरे प्यारे दोलाम। आंखें खोलो। मैं आ गई हूं।"

दोलाम ने आंखें खोल दी और कुर्सी से उठकर धरा की तरफ पलटा।

धरा मुस्कराती-सी उसे ही देख रही थी। वो आगे बढ़ी और दोलाम का हाथ थाम लिया।

"ये तुम क्या कर रही हो।" दोलाम ने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

"मैं तुम्हारे पास आ गई हूं दोलाम। अपने को तुम्हारे हवाले करना चाहती...।"

"मैंने तुम्हारे बारे में ऐसी इच्छा कभी नहीं रखी।"

"मैं तुम्हें बहुत खुश रखूंगी।" धरा ने मदमस्त स्वर में कहा।

"मैं बता चुका हूं कि मुझे सिर्फ महान खुंबरी चाहिए।" दोलाम ने आंखें सिकोड़कर कहा।

"मैं महान खुंबरी ही तो हूं।"

"मुझे दूसरे शरीर वाली महान खुंबरी चाहिए।"

"नादान मत बनो दोलाम। मेरा शरीर ज्यादा अच्छा है। आज तक किसी मर्द ने इसे छुआ तक नहीं। मेरा यकीन करो मैं तुम्हें बहुत आराम दूंगी। एक बार मुझे आजमा कर तो देखो।" धरा ने प्यार से कहा।

"तुम मुझसे ऐसी बातें न करो।"

"मुझमें ऐसी क्या बुराई तुम्हें दिखती है?"

"तुम अच्छी हो। परंतु मैं दूसरे शरीर वाली महान खुंबरी को चाहता हूं।" दोलाम ने गम्भीर स्वर में कहा।

"वो खुंबरी तुम्हें नहीं मिल सकती।" धरा गम्भीर हो उठी—"वो जगमोहन को नहीं छोड़ सकती।"

दोलाम के दांत भिंच गए।

"मुझे बांहों में ले लो दोलाम।"

"तुम मेरे पास से चली जाओ।"

"अपने मन में भ्रम मत रखो।" धरा ने कहा—"उस खुंबरी ने तुम्हारे लिए इंकार भेजा है।"

दोलाम की नजरें उसी पल धरा के चेहरे पर जा टिकीं।

"इंकार भेजा है।" दोलाम ने शब्द दोहराए।

"हां। तभी तो कह रही हूं कि मेरे संग जोड़ी बना लो। हम दोनों बहुत खुश रहेंगे।" धरा मुस्कराई।

"तो महान खुंबरी को दोलाम से ज्यादा जगमोहन पसंद है।" दोलाम एकाएक शांत-सा दिखने लगा।

"जगमोहन से पहले तुम उसकी जिंदगी में आ जाते तो जुदा बात थी। अब वो तुम्हारी बात नहीं मान सकती।"

"ठीक है।" दोलाम ने सिर हिलाया—"मैं समझ गया।"

"मैं हूं न तुम्हारी सेवा के...।"

"मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं।" दोलाम ने कठोर स्वर में स्पष्ट कहा।

धरा दोलाम के चेहरे को कुछ पल देखती फिर बोली।

"उस खुंबरी ने तुम्हें मना कर दिया। मुझे तुम इंकार कर रहे हो। अब तुम क्या करोगे?"

दोलाम ने धरा को शांत-कठोर नजरों से देखा।

"मैं समझा नहीं?" एकाएक दोलाम मुस्करा पड़ा।

"खुंबरी ने तुमसे प्यार करने को इंकार कर दिया है।" धरा पुनः बोली—"अब तुम क्या करोगे?"

"कुछ भी नहीं।" दोलाम के होंठों पर मुस्कान छाई थी—"जैसे मैं रह रहा था, वैसे ही रहूंगा।"

"तुम्हारी बात गले से नीचे नहीं उतर रही।" धरा बेहद शांत थी।

दोलाम, धरा को मुस्कराते हुए देखता रहा।

"तुमने अचानक ही खुंबरी के सामने इतनी बड़ी मांग रख दी। खुंबरी ने स्पष्ट इंकार कर दिया है तुम्हें। इस पर तुम कहते हो कि पहले की तरह सेवा करते रहोगे। ये बात मानने लायक तो है नहीं।"

"तुम्हारे खयाल से मैं कुछ करूंगा।"

"बेशक।" धरा का शांत स्वर दृढ़ता से भर गया।

"क्या?"

"ये तो तुम ही जानते हो कि तुम्हारे मन में क्या चल रहा है।"

"तुम गलत सोच रही हो। मैं ऐसा कोई इरादा नहीं रखता। ताकतों के खिलाफ तो मैं कुछ भी नहीं कर...।"

"ताकतों के खिलाफ तो तुम कुछ भी नहीं कर सकते। परंतु खुंबरी के खिलाफ तो कर सकते हो।"

दोलाम के चेहरे की मुस्कान गायब हो गई। वो धरा को देखने लगा।

"खुंबरी के खिलाफ कुछ न भी करो, जगमोहन के खिलाफ तो कर सकते हो।" धरा ने पुनः कहा।

"तो तुम ऐसा सोचती हो।"

"अब तो तुम्हारे द्वारा आगे के ये ही हालात बनते हैं। मुझे लगता है कि तुम ऐसा कुछ जरूर करोगे।"

"मैंने ऐसा कुछ भी नहीं सोचा।"

धरा ने होंठ सिकोड़े।

"परंतु इतना जरूर कहूंगा कि महान खुंबरी का पहला हक मेरा बनता था। अगर उसे प्यार करना ही था तो मेरे से करती। मैंने पांच सौ बरस तक खुंबरी के शरीर का ध्यान रखा। शरीर को खराब नहीं होने दिया। मैं शरीर का ध्यान नहीं रखता और वो खराब हो जाता तो आज जगमोहन खुंबरी के खराब शरीर से प्यार न करता। दूर भागता। खुंबरी आज सुंदर है तो मेरी वजह से। मेरी ईमानदारी की वजह से। उसे चाहिए था कि ईनाम में वो खुद को मेरे सामने पेश करती। ऐसा नहीं किया तो कोई बा नहीं। वो मेरी न बनती तो तब भी चल जाता। खराब बात तो ये हुई कि उसने अपना शरीर जगमोहन को सौंप दिया। महान खुंबरी को अगर प्यार की जरूरत थी तो मुझे इशारा कर सकती थी। मैं इतना बुरा तो नहीं।"

"तुमने ईमानदारी से खुंबरी की सेवा की। तभी तो इतना लम्बा जीवन पाया है तुमने। ताकतों ने तुम्हें स्वस्थ रखा और तुम्हारी उम्र भी बढ़ाती जा रही हैं। तुम्हें मरने नहीं दिया...।"

"क्योंकि मैंने दिल से हर तरह की सेवा की है। मेरी सेवा में कमी रहती तो ताकतें मुझमें दिलचस्पी नहीं लेतीं।"

"सच में तुमने ताकतों का दिल जीत लिया है।" धरा ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"ये बात कैसे पता चली?"

धरा चुप रही।
"महान खुंबरी ने मेरे बारे में ताकतों से जरूर बात की होगी।" दोलाम अर्थपूर्ण स्वर में कह उठा—"कहा होगा कि दोलाम ऐसा कहता है, वैसा कहता है। तो तब ताकतों ने क्या कहा?"
धरा, दोलाम को देखती रही।
दोलाम के चेहरे पर छोटी-सी मुस्कान उभरी और लुप्त हो गई
"मैं तो तुमसे बात बनाने आई थी दोलाम।" धरा ने बेहद शांत स्वर में कहा।
"मुझे महान खुंबरी के रूप का साथ नहीं, महान खुंबरी का साथ चाहिए। इसलिए बात नहीं बन सकती।"
"खुंबरी का स्पष्ट इंकार मैंने तुम्हारे पास पहुंचा दिया है।" धरा ने सामान्य स्वर में कहा और बाहर निकल गई।
दोलाम के चेहरे पर ढेर सारी कठोरता बिछती चली गई।
'अब तुम्हें दोलाम की सेवा बहुत महंगी पड़ेगी महान खुंबरी।' दोलाम बड़बड़ा उठा। फिर एक गिलास कारू (शराब) का भरा और उसे थामे कुर्सी पर बैठा क्रोध भरे अंदाज में घूंट भरने लगा। उसके अंग-अंग में गुस्सा भरा दिख रहा था।
गिलास अभी आधा ही खाली हुआ था कि बबूसा ने भीतर प्रवेश किया।
दोलाम की कठोर निगाह बबूसा की तरफ उठी।
बबूसा मुस्कराकर कह उठा।
"बहुत गुस्से में लग रहे हो।"
दोलाम ने बिना कुछ कहे कारू का घूंट भरा।
"धरा अभी तुम्हारे पास से गई है। मैं बातें न सुन सका। लगता है वो कोई बुरी बात कह गई है।"
दोलाम के चेहरे पर सख्ती उभरी रही।
"कहीं वो तुम्हें स्पष्ट इंकार तो नहीं कर गई?" बबूसा के चेहरे मुस्कान थी।
"ऐसा ही समझो।" दोलाम गुर्राया।
"क्या कहा धरा ने?"
"महान खुंबरी को मेरे से ज्यादा जगमोहन प्यारा है।"
"वो तो मैंने पहले ही कहा था कि खुंबरी तेरा हाथ नहीं थामने वाली। उसकी नजरों में तू मामूली-सा सेवक है।"
"मैं मामूली नहीं हूं।"
"तेरे सोचने से क्या होता है दोलाम।"

"मैं अगर मामूली होता तो खुंबरी ने ताकतों के द्वारा मेरी जान ले ली होती।"

"क्या मतलब?"

"मेरा खयाल है कि ताकतों ने मेरी जान लेने से खुंबरी को मना कर दिया है।"

"ऐसा धरा ने कहा?"

"कहा तो नहीं, पर उसकी बातों से मुझे ही आभास हुआ।"

"अगर ये बात सच है तो तेरे हक में अच्छा ही हुआ। परंतु मुझे जरा भी दुख नहीं कि खुंबरी ने तेरा हाथ थामने से इंकार कर दिया। मैं तो पहले ही जानता था कि ऐसा ही होगा। पर तू मन में भ्रम पाले हुए था कि खुंबरी तेरा हाथ थामने को तैयार हो जाएगी। अब बोल मेरा दोस्त बनता है दोलाम?" बबूसा गम्भीर था।

दोलाम की निगाह बबूसा की तरफ उठी।

"हम दोनों मिलकर खुंबरी को खत्म कर देंगे। तब तू ताक़तों मालिक बन जाना।"

दोलाम ने कारू का गिलास एक ही सांस में खाली किया और उसे नीचे रखकर बोला।

"मैं खुद ही चाहता था कि खुंबरी मेरी बात न माने।" दोलाम ने दांत भींचकर कहा।

"ताकि तू ताकतों का मालिक बन सके। ये ही बात है न?"

"ठीक कहा तूने बबूसा। ये ही मेरे मन में था।"

"तो अब से हम दोस्त हुए।" बबूसा मुस्कराया।

दोलाम ने हौले-से सिर हिलाया।

"हां। हम दोनों मिलकर महान खुंबरी की जान लेंगे। पर ये काम इतना आसान नहीं है जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूं। खुंबरी साधारण युवती नहीं है, ताकतों की मालिक है। उसे नुकसान हुआ तो ताकतें नाराज हो सकती हैं। इसलिए ताकतों को भरोसे में लेना होगा। उन्हें हालातों को समझना होगा।" दोलाम ने सोच भरे स्वर में कहा।

"ताकतों ने अगर तुझे समझा दिया तो?"

"क्या?"

"ये ही कि खुंबरी को किसी तरह से नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए, तो तब तू क्या करेगा। सब कुछ रुक जाएगा। हम खुंबरी को नहीं मार सकते।" बबूसा बोला—"मेरे खयाल में तो हमें सीधे-सीधे खुंबरी की जान ले लेनी चाहिए।"

दोलाम कुर्सी से उठा और बबूसा को देखने के बाद टहलते हुए कह उठा।

"तेरी बात में कोई दम नहीं।"

"क्यों?"

"ताकतों को अपना मालिक भी चाहिए जो उनकी जरूरतें पूरी करता रहे। बिना मालिक के वो अंधेरे में खो जाएंगी। वो खत्म हो जाएंगी। पांच सौ सालों का श्राप पाकर खुंबरी सदूर ग्रह से पृथ्वी पर चली गई। इन पांच सौ सालों में अगर मैं ताकतों का ध्यान न रखता तो आज वो अंधेरे में खो चुकी होतीं। बिना मालिक के ताकतों का जीवन समाप्त हो जाता है। ताकतों का रख-रखाव इंसान ही कर सकता है।"

"तुमने किस प्रकार ताकतों का ध्यान रखा?" बबूसा ने पूछा।

"ये बातें तुम्हें नहीं बता सकता। ये रहस्य की बात है।"

बबूसा ने अपना गम्भीर चेहरा हिलाकर पूछा।

"अब क्या करोगे?"

"ठोरा से बात करूंगा। उसे अपने मन की बात बतानी होगी। फैसला तो उसी ने करना है।" दोलाम सख्त स्वर में बोला।

▭ ▭

दोलाम के कदम तेजी से उठ रहे थे। चेहरे पर दृढ़ता नजर आ रही थी। अपने ही कदमों की आवाजें उसके कानों में पड़ रही थी। उसके हाव-भाव में क्रोध और तनाव स्पष्ट झलक रहा था। कई रास्तों को पार करने के बाद वो कमरे में प्रवेश कर गया। ये वो ही कमरा था जहां मंत्रों वाले पानी का कटोरा रखा था।

दोलाम की निगाह उस कटोरे पर पड़ी।

पास पहुंचकर वो ठिठक गया और भरे कटोरे के पानी को देखने लगा।

लम्बे पलों तक वो खामोशी से खड़ा रहा फिर दायां हाथ उठाया और उंगलियां पूरी खोल लीं। अपने हाथ को देखा फिर हाथ को कटोरे में डाल दिया।

शांति छाई रही।

कुछ भी नहीं हुआ।

चंद पल ऐसे ही बीत जाने पर दोलाम के शरीर में बेचैनी की लहर दौड़ी।

"ठोरा।" दोलाम के होंठों से निकला।

"कह।" ठोरा का शांत स्वर उभरा—"मैं तेरे को ही देख रहा हूं।"

दोलाम ने चैन की सांस ली और बोला।

"मैं तेरे पास अपनी समस्या लेकर आया हूं।"

"बोल।"

"महान खुंबरी ने ताकतों से ये जरूर कहा होगा कि वे दोलाम को खत्म कर दें।"

"तू क्या ये जानने आया है कि खुंबरी ताकतों से क्या बात करती है।" ठोरा की आवाज आई।

"नहीं।"

"तो सिर्फ अपनी बात कह। तेरे को हम कबका अपने परिवार में शामिल कर चुके हैं और परिवार के लोगों की बात एक-दूसरे को नहीं बताई जाती। तेरी बात तेरे से और खुंबरी की बात खुंबरी से।" ठोरा का स्वर शांत था।

"ये बात आज मुझे पहली बार पता चली कि मुझे परिवार में शामिल कर लिया गया है।" दोलाम एकाएक मुस्कराया।

"तू परिवार का सदस्य बन चुका है दोलाम।"

"मेहरबानी ठोरा। इससे तो मेरा ओहदा बहुत ज्यादा बढ़ गया। मैं बहुत खुश हो गया।"

"अपनी समस्या बता।"

"खुंबरी ने मेरा बहुत दिल दुखाया है ठोरा।"

"तू खुंबरी की शिकायत करने आया है?"

"मैं अपनी बात कहने आया हूं। खुंबरी ने मेरा हक मुझे नहीं दिया। वो मेरा हाथ थामने को तैयार नहीं है। उसे दोलाम से ज्यादा जगमोहन प्यारा है। मुझे वो अपना शरीर नहीं सौंपना चाहती। मैं इतना बुरा हूं कि खुंबरी मुझे छोड़कर जगमोहन का हाथ थाम ले? अभी तुमने बताया कि मुझे परिवार में शामिल कर लिया गया है। तो परिवार के सदस्य के साथ कोई ऐसा व्यवहार करता है। ये तो गलत बात है। पिछली बार जब तुमसे बात की थी तो तुमने भी कहा था कि खुंबरी के शरीर पर मेरा हक बनता है। इस बारे में मैं खुंबरी से बात करूं। पर बात करने का कोई फायदा नहीं हुआ।"

"ये तो तुम्हारे लिए तकलीफदेह बात है।" ठोरा की आवाज आई।

"तभी तो मैं तुम्हारे पास आया कि मुझे मेरा हक नहीं मिल रहा।"

"ये खुंबरी का व्यक्तिगत मामला है। ताकतें इन बातों में दखल नहीं दे सकतीं।"

"तो मुझे न्याय नहीं मिलेगा।"

"इसमें मैं कुछ नहीं कर सकता।"

"मैंने आज तक निःस्वार्थ सेवा की है ठोरा और मुझे खुंबरी ने ये इनाम दिया।"

"इसका जवाब तो तुम्हें खुंबरी ही दे सकती है।" ठोरा की आवाज सुनाई दी।

दोलाम के चेहरे पर गुस्सा नाच उठा।

"खुंबरी को मेरी जरा भी परवाह नहीं है।" दोलाम ने कहा।

"तू खुंबरी के रूप को अपना बना सकता है।"

"मैंने जिस शरीर की पांच सौ सालों तक देखरेख की, मुझे वो ही शरीर चाहिए। मैंने तो सोचा था कि खुंबरी, पृथ्वी के उस इंसान को त्यागकर मेरा हाथ थाम लेगी। हम दोनों एक होकर रहेंगे। आने वाले वक्त में खुंबरी सदूर की रानी बनेगी और मैं राजा बनूंगा। खुंबरी बच्चे पैदा करेगी मेरे और मैं सदूर चलाऊंगा। कितना खुश होगा हमारा जीवन, परंतु खुंबरी ने मेरे सपनों पर अपने जहर की चादर बिछा दी। मेरा दिल तोड़ दिया।" दोलाम के चेहरे पर गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था—"इतनी सेवा के बाद मैं अपनी इतनी बेइज्जती नहीं करा सकता। पृथ्वी के इंसान की खातिर खुंबरी ने परिवार के सदस्य का खयाल नहीं रखा। ये कद्र की खुंबरी ने मेरी सेवा की।"

"इन व्यक्तिगत बातों से ताकतों को कोई मतलब नहीं है।"

"ठोरा। मैं खुंबरी को भी शरीर के मजे नहीं लेने दूंगा।" दोलाम गुर्रा उठा।

"स्पष्ट कहो।"

"मैं परिवार का सदस्य बन चुका हूं न?"

"हां।"

"तो मेरे हक अब और भी बढ़ गए हैं। मात्र सेवक नहीं रहा मैं। खुंबरी ने मेरी परवाह नहीं की तो मैं भी उसकी परवाह नहीं करूंगा। मैं खुंबरी की जान ले लूंगा।"

"ये गलत होगा। खुंबरी हम ताकतों की मालिक है। वो हमारा ध्यान...।"

"मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि खुंबरी की मौत के बाद मैं ताकतों का मालिक बनूंगा और खुंबरी से अच्छा काम करूंगा। क्या कभी मेरी सेवा में कोई कमी रही ठोरा?"

"नहीं।"

"मैं तुम ताकतों का मालिक बनूंगा तो बहुत अच्छा रहेगा सबके लिए—मैं...।"

"तू खुंबरी की जान ले। ये बात मुझे पसंद नहीं।"

"तुमने अभी कहा कि ये मेरा और खुंबरी का व्यक्तिगत मामला है। ताकतें बीच में नहीं आएंगी।"

"इसका ये मतलब भी नहीं कि तू खुंबरी की जान ले ले।"

"तो फिर मुझे मेरा हक दिला। खुंबरी दिला। मैं उसका शरीर पाना चाहता हूं।"

"ताकतें खुंबरी को ऐसा हुक्म नहीं दे सकतीं।"

"दोलाम को हुक्म दे सकती हैं कि वो खुंबरी को न मारे।"

"खुंबरी हमारी मालिक है।"

"आने वाले वक्त में मैं मालिक बनने जा रहा हूं ताकतों का।"

"तुम्हारी बातें मुझे अच्छी नहीं लग रहीं।"

"एक बात बता ठोरा। अगर मैं खुंबरी की जान ले लेता हूं। तो ताकतें मेरे साथ क्या करेंगी?"

ठोरा की आवाज नहीं आई।

"जवाब दे ठोरा?"

"मैं नहीं जानता कि तब क्या स्थिति होगी।"

"परंतु मैं जानता हूं।" दोलाम का चेहरा सुर्ख हो रहा था—"खुंबरी की जान चली गई तो उस स्थिति में ताकतों को कोई मालिक तो चाहिए और मेरे से अच्छा ताकतों का मालिक कौन हो सकता है। दोलाम तो खुंबरी से भी बढ़िया ताकतों की सेवा करता है। दोलाम ही तो सब काम संभालता है। खुंबरी तो कहने भर को ताकतों की मालिक है।"

"जो भी हो, मैं तुम्हारी बात से सहमत नहीं हूं कि तुम खुंबरी की जान लो।"

"ये मेरा फैसला है।"

"तुम क्रोध में गलत फैसला ले रहे हो। खुंबरी के रूप धरा का हाथ थाम लो।"

"मुझे असली खुंबरी का शरीर चाहिए।"

"ये तुम्हारी जिद है।"

"खुंबरी की भी तो जिद है कि उसे जगमोहन से प्यार है, मेरे से नहीं। वो परिवार के सदस्य को इस तरह नकार दे, ये बात तो और भी गलत है। जितना मैं खुंबरी को प्यार करता, उतना कोई भी नहीं कर सकता। मैं चाहता हूं कि तुम खुंबरी को समझाकर राह पर लाओ कि वो सिर्फ मेरे बच्चे पैदा करे।"

"इस बारे में ताकतें खुंबरी से बात करने का हक नहीं रखतीं।"

"ठीक है, ठोरा। अब मैं बहुत जल्दी ताकतों का मालिक बन जाऊंगा।" दोलाम ने भरपूर क्रोध में कहा और कटोरे से हाथ बाहर निकालकर पलटा और बाहर निकलता चला गया।

□ □

दोलाम ने ठोरा से बात करने जाते वक्त, बबूसा से कह दिया था कि वो पहले की तरह उसके पीछे न आए। बबूसा ने भी शराफत दिखाई और दोलाम के पीछे नहीं गया। वहीं खाने की टेबल की कुर्सी पर बैठकर सारे हालातों के बारे में गौर करने लगा कि तभी धरा वहां आ पहुंची।

बबूसा ने गर्दन घुमाकर उसे देखा और मुस्कराया।

धरा भी मुस्कराई और वहीं कुर्सी पर बैठ गई।

"तुम बहुत अच्छे हो बबूसा।" धरा ने दोस्ताना स्वर में कहा।

"जानता हूं।"

"क्या?"

"यही कि मैं बहुत अच्छा हूं।" बबूसा ने दांत दिखाए।

"तुमने पृथ्वी ग्रह पर मेरी बहुत सहायता की थी।" धरा बोली।

"अगर मुझे तुम्हारी असलियत पता होती तो मैं कभी भी तुम्हारी सहायता नहीं करता।"

"वो वक्त तो निकल गया।" धरा ने कहा।

बबूसा सिर हिलाकर रह गया।

"दोलाम कहां है?" धरा ने पूछा।

"दोलाम?" बबूसा ने यूं ही इधर-उधर गर्दन घुमाकर कहा—"पता नहीं, मैंने तो देखा नहीं। अपने कमरे में होगा।"

"तुम कैद से निकल आए। पर तुम्हारे साथी अभी भी कैद में हैं।" धरा ने कहा।

"वो भी आजाद हो जाएंगे।"

"जरूर आजाद हो जाते, अगर वो इंसानों के पहरे में होते। पर वो ताकतों के पहरे में हैं। आजाद नहीं हो सकते।"

"उन्हें कैद में क्यों रखा हुआ है?"

"खुंबरी विचार कर रही है कि उन्हें मार दिया जाए। ताकतें खून देखकर खुश होती हैं।"

"मार दिया जाए?" बबूसा की आंखें सिकुड़ीं।

"हां।"

"जगमोहन को पता है ये बात?"

"जगमोहन का इन बातों से कोई मतलब नहीं। वो तो खुंबरी के साथ बहुत खुश है।"

बबूसा के चेहरे पर कठोरता नाच उठी।

"तुम्हें ऐसा कुछ करना चाहिए कि उन लोगों की जान बच जाए।"

"मैं क्या कर सकता हूं जिससे उनकी जान बचे।" बबूसा ने धरा को देखा।

"तुम्हारी सोमारा भी मारी जाएगी।"

"मैं सोमारा को कुछ नहीं होने दूंगा।"

"डुमरा की बातों में आकर तुमने सबने गलती की। अब कोई नहीं बचेगा।"

"डुमरा कहां है?"

"जंगल में भटक रहा है, खुंबरी का ठिकाना तलाश कर रहा है। बेवकूफ। वो भी मारा जाएगा। आज ओहारा उस पर घातक वार करने वाला है। उस वार को वो सह नहीं पाएगा।"

"डुमरा के पास शक्तियां हैं, वो...।"

"ओहारा के वार से शक्तियां भी भाग खड़ी होंगी। डुमरा ने जंगल में अपने आस-पास शक्तियों की सुरक्षित जगह चादर फैला रखी है कि उस पर वार हो तो, उसे नुकसान न पहुंचे। लेकिन ओहारा ने सब देख-समझकर ही अपने वार की तैयारी की है। डुमरा के मरने के बाद खुंबरी तुम सबकी भी जान ले लेगी।"

"क्या कोई रास्ता है कि मैं अपने को और अन्यों को बचा सकूं?" बबूसा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

धरा ने बबूसा के चेहरे पर निगाह मार कर कहा।

"एक रास्ता तो है, पर सोचती हूं कि तुम्हें बताऊं या न बताऊं? तुमने पृथ्वी पर मेरी सहायता की थी। इसलिए मैं तुम्हारे काम आना चाहती हूं ताकि तुम्हारा एहसान उतर जाए।"

"बताओ क्या रास्ता है कि...।"

"मेरी बात मानोगे तो अपने साथ-साथ दूसरों की जान भी बचा लोगे।"

"जल्दी बताओ कि मैं क्या करूं?" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"जानते हो दोलाम ने क्या किया।" धरा ने सहज स्वर में कहा—"मामूली-सा सेवक है वो और खुंबरी के बारे में सोचता है कि वो उसे प्यार करेगी। उसने खुंबरी के सामने पेश रखी कि जगमोहन को छोड़कर, उसके साथ जीवन बिताए।"

"अच्छा।" बबूसा ने कहा जबकि मन में सवाल उठा कि धरा ये सब उसे क्यों बता रही है।

"वो खुंबरी के साथ जीवन बिताने को कहता है।"

"दोलाम ऐसा कैसे कह सकता है।" बबूसा बोला।

"उसने खुंबरी से आज ही कहा। कहता है कि उसने पांच सौ सालों

तक खुंबरी के शरीर की देखभाल की। शरीर को खराब नहीं होने दिया। इसका इनाम उसे, खुंबरी का शरीर मिलना चाहिए।"

"बहुत हिम्मत दिखाई दोलाम ने।"

"मामूली-सा सेवक, खुंबरी को पाने के सपने देखता है।" धरा का स्वर तीखा हो गया—"इस बात को लेकर खुंबरी का मन दोलाम से बहुत खराब हो गया है। वो दोलाम को अब देखना भी नहीं चाहती।"

"तो दोलाम को यहां से जाने को कह दो।"

"ऐसा नहीं किया जा सकता। जो ताकतों के साथ जुड़ जाता है, वो मरकर ही अलग हो सकता है।"

"तो ये बात है। तब भी क्या चिंता।" बबूसा ने सामान्य स्वर में कहा—"ताकतों से कह दो। वो दोलाम को मार देंगी।"

"ये भी सम्भव नहीं। दोलाम ने लम्बे समय तक ताकतों की सेवा की है। वो उसकी जान नहीं लेंगी।"

"फिर तो समस्या हो गई। परंतु इन बातों से मेरा तो कोई वास्ता नहीं। तुम मुझे बता रही...।"

"वो ही बात कर रही हूं बबूसा। इस तरह मैं तुम्हारे काम आ सकती हूं और तुम अपने साथियों को छुड़ाकर यहां से जा सकते हो।"

"मैं समझा नहीं।"

"तुम बहुत ताकतवर हो। युद्ध कला में तुम्हारा जवाब नहीं। मैंने अपनी आंखों से तुम्हारी युद्ध कला देखी है। (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें '**बबूसा**') तुम्हारे लिए मामूली-सा काम है दोलाम को पलक झपकते ही खत्म कर देना।"

"मैं?" बबूसा थोड़ा हैरान हुआ—"मैं दोलाम की जान लूं।"

"यूं तो ये काम तुम खुंबरी के लिए करोगे। परंतु इस तरह मैं तुम्हारी सहायता करना चाहती हूं। खुंबरी का वादा है कि अगर तुमने दोलाम की जान ले ली तो वो तुम्हारे साथ, तुम्हारे सब साथियों को आजाद कर देगी। वैसे खुंबरी सोचे बैठी है कि वो देवराज चौहान, रानी ताशा, नगीना, मोना चौधरी, सोमारा को मार देगी। लेकिन तुम चाहो तो उन्हें बचाकर यहां से ले जा सकते हो। तुम तो पलक झपकते ही दोलाम की गर्दन तोड़ सकते हो।"

बबूसा की निगाह धरा पर थी। चेहरे पर सोचें दौड़ रही थीं।

धरा सामान्य भाव से बबूसा को देख रही थी।

"मैं तुम्हें बहुत अच्छा मौका दे रही हूं कि तुम सबको बचाकर यहां से ले जा सको।" धरा बोली।

"तुम्हारी बात ने मुझे घोर उलझन में डाल दिया है।" बबूसा बोला।

"उलझन कैसी? सीधी-सी तो बात है दोलाम की जान लो और अपने साथियों को ले जाओ।"

"तुम ये काम मुझे क्यों कह...।"

"मैं तुम्हारी सहायता...।"

"खुंबरी खुद जबर्दस्त योद्धा है। ये काम तो वो खुद भी कर सकती है।"

"खुंबरी कहती है कि उसकी शान के लिए, ये छोटी बात है कि वो दोलाम के खून से अपने हाथ लाल करे। तब मैंने ही कहा कि दोलाम को तो बबूसा मार देगा। तब खुंबरी ने कहा कि बबूसा ऐसा करता है तो वो उसके साथियों को आजाद कर देगी। ये बात होते ही मैं सीधा तुम्हारे पास आ गई।" धरा ने कहा।

बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता थी। वो बोला।

"मुझे तुम्हारी बात जंच नहीं रही।"

"क्यों?"

"जगमोहन भी तो दोलाम की जान ले सकता है। वो क्यों नहीं करता ये काम?"

"जगमोहन तो कर ही देगा ये काम। तब तुम अपने साथियों को कैसे बचाओगे। मैं तुम्हें शानदार मौका दिलवा रही हूं। तुम समझ नहीं रहे और उल्टी-सीधी बातें कर रहे हो।" धरा ने नाराजगी वाले अंदाज में कहा।

"मुझे सोचने का वक्त दो।"

"इसमें सोचना कैसा...।"

"सोचने दो मुझे। कुछ वक्त के बाद मेरे पास आना।" बबूसा ने कहा—"मैंने सोचना है कि क्या दोलाम को मारना मेरे लिए ठीक होगा। ये काम मुझे करना चाहिए कि नहीं।"

"सोच लो कि अपने साथियों को बचाने का एकमात्र ये ही रास्ता तुम्हारे पास है।" धरा उठी और कहकर चली गई।

बबूसा के चेहरे पर शांत मुस्कान उभर आई।

▭ ▭

दोलाम वहां से सीधा वहां पहुंचा जहां देवराज चौहान, रानी ताशा, नगीना, मोना चौधरी और सोमारा कैद थे। दोलाम के चेहरे पर कठोरता नाच रही थी। आंखें जैसे सुलग रही हों। कदम जैसे जमीन को धंसा देने का इरादा रखते हों। उसे इस बात का कोई अफसोस नहीं था कि खुंबरी ने उसका हाथ नहीं थामा। वो सोच रहा था अच्छा ही हुआ जो खुंबरी ने हां नहीं की। अब वो इसी बात की आड़ लेकर खुंबरी की जान ले सकता था और ताकतों का मालिक वो स्वयं बन सकता था। ये ही उसकी इच्छा

थी। ये ही वो चाहता था। खुंबरी की जान लेने पर ताकतें उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगी। क्योंकि ताकतों को अपना मालिक चाहिए, तभी तो उनका अस्तित्व सलामत रह पाएगा। ताकतें उसे अपना मालिक स्वीकार कर लेंगी। ऐसा होने से कोई नहीं रोक सकता। दोलाम इस बारे में निश्चिंत था।

उस कमरे में प्रवेश करते ही दोलाम ठिठका। नजरें घूमने लगीं।

कमरे में वे सब मौजूद थे और लगभग करीब-करीब ही बैठे हुए थे। उनकी निगाह दोलाम पर जा टिकी थी। दोलाम एकाएक मुस्कराया और आगे बढ़ता कह उठा।

"रानी ताशा। मैं तुमसे बात करने आया हूं।"

रानी ताशा फौरन उठ खड़ी हुई।

"क्या बात है?" रानी ताशा संदिग्ध लहजे में कह उठी।

"मैंने कहा था न कि मैं तुमसे मिलने फिर आऊंगा।" दोलाम के होंठों पर मुस्कान थी।

रानी ताशा ने गहरी निगाहों से दोलाम को देखा।

"जगमोहन कैसा है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"बहुत अच्छा है। खुंबरी के साथ खुश है।" दोलाम ने देवराज चौहान को देखा।

"और बबूसा?" सोमारा ने पूछा।

"मजे में है।" कहने के बाद दोलाम ने रानी ताशा को देखा—"मैं तुमसे एकांत में बात करना चाहता हूं।"

"ऐसी क्या बात है जो...।"

"उस तरफ आओ।" दोलाम ने कहा और पलटकर कई कदम दूर, कमरे के कोने में चला गया।

रानी ताशा उठी और दोलाम के पास जा पहुंची।

"तुम खुंबरी की मौत चाहती हो?" दोलाम शांत स्वर में बोला।

"हां।"

"मैं तुम्हें खुश करने जा रहा हूं। क्योंकि मैं खुंबरी को बहुत जल्दी मारने वाला हूं।"

रानी ताशा ने आंखें सिकोड़कर दोलाम को देखा।

"यकीन नहीं आ रहा?" दोलाम बोला।

"सच में। तुम खुंबरी की जान लोगे। ये बात यकीन करने वाली नहीं है।"

"मैं ऐसा करने का इरादा बना चुका हूं।"

"तुम्हारा खुंबरी ने क्या बिगाड़ा है?"

"खुंबरी, जगमोहन से प्यार करने लगी है, जबकि उसके शरीर का हकदार मैं था। मैंने खुंबरी से अपना हक मांगा परंतु उसे मेरी परवाह नहीं है। जगमोहन का भूत उस पर छाया हुआ है। वो मेरी परवाह नहीं करती।"

रानी ताशा के चेहरे पर कठोरता दिखने लगी।

"मैंने तुमसे पहले भी कहा था कि मैं खुंबरी को मार दूंगा। (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'**) खुंबरी ने मेरा दिल दुखाया है, जगमोहन का हाथ थामकर। मैं सेवक ही सही, पर मेरे अहम को चोट पहुंचाई है उसने जगमोहन को पसंद करके। तुम भी तो उसकी मौत चाहती हो।"

"मैं अपने हाथों से खुंबरी को मारना चाहती हूं।" रानी ताशा गुर्रा उठी।

"मैं खुंबरी को मार दूंगा। खुंबरी को तुम दुश्मन मानती हो और अब वो मेरी भी दुश्मन है। इस काम में बबूसा मेरा साथ दे रहा है। पता है तुम्हें, खुंबरी को मारने के बाद, मैं ताकतों का मालिक बन जाऊंगा...।"

"उससे मुझे कोई मतलब नहीं।"

"पर मुझे मतलब है। मैं ताकतों का मालिक बन जाऊंगा।" दोलाम ने गम्भीर और सख्त स्वर में कहा—"खुंबरी मर चुकी होगी। उसके बाद में मेरा लक्ष्य सदूर का राजा बनना होगा।"

"सदूर का राजा?"

"ताकतें मुझे आसानी से सदूर का राजा बना देंगी। डुमरा को मार देने के बाद खुंबरी ने भी सदूर की रानी बनने का लक्ष्य रखा हुआ है, परंतु अब वो सफर मैं तय करूंगा। मैं तुम्हारे लिए खुंबरी को मारने जा रहा हूं तो तुमसे भी अपने लिए कुछ चाहता हूं। वैसे तुम बचने वाले नहीं। खुंबरी तुम सबको खत्म करने का इरादा रखती है।"

"तुम चाहते क्या हो?"

"मैंने सदूर का राजा बनना है। तुम स्वयं अपने किले को मेरे हवाले करोगी।"

"मतलब कि मैं तुम्हें राजा बना दूं और खुद पीछे हट जाऊं।" रानी ताशा का स्वर सख्त हो गया।

"मैं खुंबरी को मार रहा हूं। तुम सब लोगों को बचा रहा हूं। इस बात का फायदा मैं चाहता हूं।"

"मैं तुम्हें राजा बना दूं।" रानी ताशा की निगाह दोलाम के चमकते चेहरे पर थी।

"बदले में मैं खुंबरी की जान लूंगा और तुम सबको आजाद कर दूंगा।" दोलाम मुस्कराया।

"तुम्हारी ताकतें तुम्हें राजा बना सकती हैं तो फिर मेरी सहमति की क्या जरूरत है।"

"ताकतों के काम करने का तरीका अलग होता है। वो बहुत लोगों की जानें लेंगी। शायद तुम्हें भी मार दें। मैं बिना वजह का खून-खराबा नहीं चाहता, क्योंकि मैं सदूर पर लम्बे वक्त तक राज्य करना चाहता हूं। अच्छा राजा बनना चाहता हूं और सदूर के लोगों का दिल जीतना चाहता हूं। मैं ऐसा कोई काम नहीं करना चाहता कि डुमरा मेरा दुश्मन बने।"

"तो डुमरा से डरते हो?"

"नहीं। ताकतें मेरे साथ होंगी तो डुमरा से डरना कैसा। मैं तो बस झगड़ा नहीं चाहता। आराम से जीवन बिताना चाहता हूं। अगर तुम मेरा साथ देती हो तो मैं तुम्हारा किला भी तुम्हें ही रहने को दे दूंगा। खुद नया किला बनवा लूंगा।"

"ये जरूर है कि तुम सदूर का राजा बनोगे?" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये तो होकर ही रहेगा।"

रानी ताशा की निगाह दोलाम के चेहरे पर टिकी रही।

दोलाम इस वक्त बेहद शांत लग रहा था।

"तो तुम खुंबरी को मार दोगे?"

"पक्का। उसके बाद तुम सबको भी आजाद कर दूंगा।"

"खुंबरी की जान लोगे तो जगमोहन तुम्हारा दुश्मन बन जाएगा।" रानी ताशा बोली।

"मैं उसे भी मार दूंगा।"

"उसे नहीं मारना है।"

"क्यों?"

"जगमोहन राजा देव का खास है। जगमोहन की मौत पर राजा देव को दुख होगा।"

"जगमोहन खास है तो वो क्यों नहीं खुंबरी की जान ले लेता?" दोलाम ने चुभते स्वर में कहा।

"वो खुंबरी के प्यार में पड़ चुका है।"

जवाब में दोलाम मुस्कराकर रह गया।

"एक शर्त पर मैं तुम्हें खुशी से सदूर का राज्य दे सकती हूं।" रानी ताशा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"वो क्या?"

"खुंबरी की जान मैं लूंगी।"

"तुम?" दोलाम चौंका।

"हां।" रानी ताशा के दांत भिंच गए—"खुंबरी मेरी दुश्मन है। उसने मुझे राजा देव से अलग किया था। खुंबरी को मैं मार सकी तो अपनी सारी तकलीफें भूल जाऊंगी। खुंबरी को मारने का मौका मुझे दो तो मैं सदूर का राज्य तुम्हें सौंप दूंगी।"

"ये सम्भव नहीं है रानी ताशा।" दोलाम बेचैन हुआ—"तुम भला कैसे खुंबरी की जान ले सकोगी?"

"तुम मेरे लिए मौका तैयार करोगे।"

"ये असम्भव-सा कार्य है।" दोलाम परेशान हो उठा—"तुम्हें खुंबरी की मौत से मतलब होना चाहिए। मैं उसे मार दूंगा। इन बातों में क्यों आती हो कि तुम खुंबरी की जान लो।"

"मुझे शांति मिलेगी।" रानी ताशा ने कठोर स्वर में कहा—"खुंबरी को मारने का मौका मुझे दो और सदूर का राज्य ले लो।"

"ये कठिन से भी कठिन काम...।"

"तुम सदूर का राजा, बिना झगड़े के बनना चाहते हो?"

"हां।"

"तो इसका एक ही रास्ता है, जो मैंने तुम्हें बताया है।" रानी ताशा ने दो टूक स्वर में कहा।

दोलाम के माथे पर बल नजर आ रहे थे।

उनके बीच छाई खामोशी लम्बी होने लगी कि दोलाम बोला।

"इसमें तुम्हारी जान को भी खतरा हो सकता है। खुंबरी जबर्दस्त योद्धा है।"

"मेरी परवाह मत करो। मुझे अपनी जान प्यारी नहीं। खुंबरी की अपने हाथों, मौत प्यारी है।"

"ठीक है।" दोलाम ने फैसला ले लिया—"तुम खुंबरी को मार सको, इसके लिए मैं कोई मौका तैयार करूंगा।"

"वादा करते हो।"

"दोलाम के शब्द वादे से ज्यादा हैं।" दोलाम दृढ़ स्वर में बोला।

"यहां पर ताकतों का पहरा है, मैं यहां से बाहर नहीं निकल सकती।" रानी ताशा ने कहा।

"किसी को यहां से बाहर ले जाना मेरे लिए मामूली बात है।"

"कैसे?"

"मैं किसी का हाथ पकड़कर उसे बाहर ले जाऊं तो ताकतें नहीं रोकेंगी।" दोलाम बोला।

"ओह।" रानी ताशा सिर हिला उठी।

"अब ये बात हममें तय हो गई कि मैं तुम्हें मौका दूंगा कि तुम खुंबरी को खत्म कर सको और तुम सबको मैं आजाद कर दूंगा। बदले में तुम सदूर का राज्य खुशी से मेरे हवाले कर दोगी।" दोलाम गम्भीर था।

"ये मेरा वादा है।"

दोलाम मुस्कराया।

"अब मैं चलता हूं।" वो बोला।

"मौका तैयार करने में कितना वक्त लगाआगे?"

"मेरी कोशिश होगी कि मैं जल्दी ही मौका तैयार करके तुम्हारे सामने पेश करूं।"

रानी ताशा ने तनाव भरे अंदाज में गहरी सांस ली।

दोलाम दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

तभी देवराज चौहान ने पूछा।

"डुमरा कहां है?"

"बाहर जंगल में।" दोलाम ने जवाब दिया।

"और सोमाथ?"

"वो भी जंगल में ही है।" कहने के साथ ही दोलाम बाहर निकलता चला गया।

रानी ताशा वापस अपनी जगह पर जा बैठी।

"वो तुमसे क्या कह रहा था?" मोना चौधरी ने पूछा।

रानी ताशा ने सब कुछ बता दिया।

"तुम खुंबरी को मारोगी?" नगीना के माथे पर बल दिखने लगे।

"मैं उसे मार दूंगी।" रानी ताशा गुर्रा उठी।

"ऐसा करके तुम खुद को खतरे में डाल रही हो।" देवराज चौहान ने कहा—"ये काम दोलाम को ही करने दो।"

"नहीं। मैं ही खुंबरी की जान लूंगी। इससे मुझे चैन मिलेगा।" रानी ताशा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"खुंबरी को कम मत समझना।" सोमारा बोली—"वो बहुत खतरनाक है।"

"मैं खुंबरी को जीत लूंगी। उसे मार दूंगी।"

नगीना ने देवराज चौहान से कहा।

"रानी ताशा का फैसला मुझे ठीक नहीं लग रहा।"

"तुम।" मोना चौधरी ने रानी ताशा से कहा—"ये काम मत करो। मुझे मौका दो। मैं खुंबरी की जान ले लूंगी।"

"तुम मेरा मुकाबला नहीं कर सकतीं तो खुंबरी का मुकाबला क्या कर पाओगी। (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **अनिल मोहन** का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा खतरे में'**) एक बार खुंबरी मेरे सामने पड़ जाए तो वो जिंदा नहीं बचेगी।" कहते हुए रानी ताशा का चेहरा दहक उठा था। आंखों में नफरत के भाव दिखने लगे थे।

▭ ▭

दोलाम वापस आ पहुंचा। चेहरा शांत दिख रहा था। आंखों में कठोरता थी। उसने खाने के कमरे में टेबल की कुर्सी पर बबूसा को बैठे देखा तो वहीं रुक गया।

बबूसा ने उसे देखा और कह उठा।

"बहुत देर लगा दी। तुम तो ठोरा से बात करने गए थे। लगता है बातें लम्बी हो गईं।"

दोलाम जैसे बहुत कुछ कहना चाहता हो, पर होंठ नहीं खुले।

बबूसा उठा और दोलाम के पास आ पहुंचा।

"मुझे तुमसे बात करनी है।" बबूसा ने धीमे स्वर में कहा।

"करो।"

"यहां नहीं। इधर खुंबरी और धरा कभी भी आ सकती हैं।"

"बात क्या है?" दोलाम की आंखें सिकुड़ीं।

"खास बात है।"

"मेरे साथ आओ।" कहकर दोलाम मुड़ा और एक रास्ते पर बढ़ गया।

बबूसा उसके पीछे हो गया।

कई रास्तों को पार करने के बाद दोनों एक खाली कमरे में पहुंचे। कमरा खाली था और ऐसा लगता था जैसे वहां की साफ-सफाई न होती हो। दोलाम ने बबूसा को देखा।

बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

"धरा कुछ देर पहले मेरे पास आई थी।" बबूसा ने कहा—"वो चाहती है कि मैं तुम्हें मार दूं।"

"ओह।" दोलाम के चेहरे पर कड़वे भाव उभरे—"धरा ने तुम्हें कहा कि मुझे मार दो।"

"हां।"

"इसका मतलब ताकतों ने मेरी जान लेने से स्पष्ट मना कर दिया है। तभी वो तुम्हारे पास आई।"

"तुम्हें सतर्क रहना होगा।"

"तुमने क्या जवाब दिया?"

"मैंने हां नहीं की, जबकि धरा का कहना था कि खुंबरी सब कैदियों को मारने की सोच रही है। अगर मैं तुम्हें मार देता हूं तो सबको आजाद कर दिया जाएगा। जान नहीं ली जाएगी। मुझे अपने साथियों की जान प्यारी है, परंतु मैं तुम्हें कैसे मार सकता हूं। तुम भी तो मेरे दोस्त हो। हम मिलकर खुंबरी की जान लेने वाले हैं। मैं यहां पर खुंबरी की जान लेने आया हूं, उसका साथ देने नहीं।" बबूसा गम्भीर दिख रहा था—"मैंने धरा की बात सुनी, पर चुप रहा।"

दोलाम मुस्करा पड़ा।

"मेरे साथ चाल मत खेलना बबूसा।"

"क्या मतलब?"

"कहीं सच में तुम मेरी जान न ले लो।"

"नहीं दोलाम। ऐसा तो मैं सोच भी नहीं सकता। मैंने तुम्हें दोस्त कहा है। हम मिलकर खुंबरी को मारने वाले हैं।"

दोलाम के चेहरे पर सोच के भार उभरे।

"तुम्हें मुझ पर भरोसा है न?" बबूसा बोला—"नहीं भरोसा तो हम अलग भी हो सकते हैं।"

"तुम पर भरोसा है और हमें अलग होने की जरूरत नहीं हे। सब ठीक चल रहा है।"

"मैं कभी भी तुम्हारा बुरा नहीं सोच सकता। मेरा मकसद सिर्फ खुंबरी की जान लेना है। ठोरा से तुम्हारी बात हुई?"

"हां। पर ठोरा ने स्पष्ट कहा कि ये मेरा और खुंबरी का व्यक्तिगत मामला है। इसमें ताकतों के दखल देने की गुंजाइश नहीं है। ताकतों ने खुंबरी को इंकार किया मेरी जान लेने को, तो वो मेरा साथ भी नहीं दे सकतीं।"

"ओह।"

"मैंने ठोरा से कह दिया कि मैं खुंबरी को मार दूंगा और ताकतों का मालिक बनूंगा। ठोरा मेरी बात से सहमत नहीं हुआ पर मुझे रोक भी नहीं सकता। शायद उसे ज्यादा परवाह इसलिए नहीं है कि खुंबरी के बाद ताकतों का मालिक मैं बन जाऊंगा। ताकतों को उनका मालिक चाहिए और मेरे से अच्छा मालिक तो खुंबरी भी नहीं रही होगी।" दोलाम का स्वर कठोर था।

"क्या इतना आसान होगा खुंबरी की जान लेना?" बबूसा ने दोलाम को देखा।

दोलाम की निगाह भी बबूसा की तरफ उठी।

"मैं।" दोलाम ने सिर हिलाकर कहा—"रानी ताशा से भी मिलकर आ रहा हूं।"

"रानी ताशा से?" बबूसा के होंठों से निकला—"तुम वहां गए थे?"

"मैं बहुत कुछ सोच रहा हूं। रानी ताशा से बात करना जरूरी था। मैं बिना खून-खराबे के सदूर का राजा बनना चाहता हूं। वो ही बात की रानी ताशा से। रानी ताशा सदूर मेरे हवाले करने को तैयार है अगर मैं खुंबरी को मारने का मौका उसे देता हूं। मैंने रानी ताशा की बात मान ली।" दोलाम ने शांत स्वर में कहा।

"क्या?" बबूसा के होंठों से निकला—"रानी ताशा, खुंबरी की जान लेगी। ऐसा कैसे हो सकता है।"

"इसके लिए मैं मौका तैयार करके रानी ताशा को दूंगा क्योंकि रानी ताशा ने सदूर मेरे हवाले करने का वादा किया है।"

"दोलाम। ये काम इतना आसान नहीं रहेगा।"

"जानता हूं, परंतु रानी ताशा मेरी इच्छा पूरी कर रही है तो मुझे भी उसकी इच्छा पूरी करनी है।"

"तुमने कहा नहीं कि बबूसा के साथ मिलकर तुम खुंबरी को मार दोगे।"

"कहा। परंतु खुंबरी को मारने की ख्वाहिश वो खुद रखती है।"

"इससे रानी ताशा को भी खतरा हो सकता है।"

"मेरे खयाल में, मैं रानी ताशा को जो मौका दूंगा, वो उस मौके का फायदा उठाकर, खुंबरी की जान ले लेगी।"

"ये तो खतरनाक है रानी ताशा के लिए। खुंबरी स्वयं बेहतरीन योद्धा है।"

"रानी ताशा भी कम नहीं।" दोलाम गम्भीर था।

"मैं रानी ताशा से इस बारे में बात करूंगा कि वो ऐसा खयाल छोड़ दे। खुंबरी को हम ही मार देंगे।"

"कोई फायदा नहीं होगा। रानी ताशा इस बारे में दृढ़ इरादा कर चुकी है।"

"राजा देव से इस बारे में बात हुई?"

"मैंने रानी ताशा से अलग से बात की थी।"

"इस तरह तो तुम रानी ताशा को खतरे में डाल रहे हो।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।

"मैं नहीं डाल रहा। ये रानी ताशा की इच्छा है।"

"पर रानी ताशा तो वहां ताकतों के पहरे में है। वो वहां से बाहर कैसे निकल सकती है।"

"ये मेरे लिए कोई समस्या नहीं। मैं जिसे चाहूं वहां से बाहर निकाल सकता हूं।" दोलाम बोला।

बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

"और कुछ कहना है तुम्हें?" दोलाम बोला।

"तुमने तो रानी ताशा का इरादा बताकर मुझे परेशान कर दिया।"

"पर मैं ये सुनकर परेशान नहीं हुआ कि धरा ने तुम्हें कहा कि तुम मुझे मार दो।" दोलाम मुस्कराया।

"धरा अपनी कोशिश जारी रखते हुए वो मुझे फिर ऐसा करने को कहेगी।"

"बेशक। तब तुमने ये ही कहना है कि अच्छा मौका मिलते ही तुम दोलाम को खत्म कर दोगे।"

"मेरे खयाल में इंकार कर देना ही ठीक होगा...।"

"तुम इंकार कर दोगे तो फिर इस काम के लिए खुंबरी स्वयं या जगमोहन के द्वारा मुझे मार देने की कोशिश करेगी। इसलिए बेहतर ये ही है कि तुम धरा को उलझाकर थोड़ा समय बिता लो। तब तक मैं खुंबरी को मारने के लिए, रानी ताशा के लिए कोई मौका तैयार कर लूंगा। हम जल्दी ही सफल हो जाएंगे।"

बबूसा बेचैनी भरे अंदाज में सिर हिलाकर बोला।

"तुम रानी ताशा को मौका दोगे खुंबरी को मारने का। क्या ये बात ताकतों को पसंद आएगी?"

"ताकतों को अपने मालिक से मतलब है। खुंबरी अब है, बाद में ताकतों का मालिक मैं बनूंगा।"

"तुम ताकतों के दम पर भी तो सदूर का राजा बन सकते हो फिर...।"

"उस स्थिति में सदूर में खून-खराबा होगा। डुमरा मेरी जान के पीछे पड़ जाएगा। नई लड़ाई छिड़ जाएगी। जबकि मैं चैन से जीवन बिताना चाहता हूं और डुमरा से कोई दुश्मनी नहीं लेना चाहता। ये तभी हो सकता है कि मैं आम लोगों पर ताकतों का इस्तेमाल न करूं। मैं खुंबरी की तरह झगड़े वाला जीवन नहीं बिताना चाहता, इसलिए रानी ताशा से मुझे स्पष्ट बात करनी पड़ी।"

"जो भी हो। तुम सावधान रहना। खुंबरी की तरफ से तुम्हें खतरा बढ़ गया है।" बबूसा ने सोच भरे स्वर में कहा।

▭ ▭

जगमोहन बेड पर लेटा था। धरा कुर्सी पर बैठी थी और खुंबरी पीठ पर दोनों हाथ बांधे मध्यम-से अंदाज में चहलकदमी कर रही थी। कमरे में चुप्पी से भरा माहौल था।

"तेरा क्या खयाल है कि बबूसा, दोलाम की जान लेने को मानेगा?" खुंबरी ने ठिठककर धरा को देखा।

"कह नहीं सकती। उसने कुछ भी स्पष्ट-सा जवाब नहीं दिया।" धरा बोली।

"उसने दिलचस्पी ली तुम्हारी बात में?"

"हां। बहुत ध्यान से मेरी बात सुनी। अब जरूर मेरी बात पर सोच रहा होगा।"

"अगर बबूसा, दोलाम की जान ले ले तो सारी समस्याएं ही समाप्त हो जाएंगी।"

"मैं दोबारा बात करूंगी, बबूसा से।"

"मुझे नहीं लगता कि बबूसा इस बात को मानेगा।" जगमोहन क उठा।

"क्यों?" धरा ने पूछा।

"मैं जितना बबूसा को जान पाया हूं वो किसी की बात नहीं सुनता। अपने मन की करता है। फिर दोलाम से उसे शिकायत भी तो नहीं। उसे तो खुंबरी से शिकायत है कि इसने राजा देव और रानी ताशा को अलग क्यों किया था।"

"तो तुम्हारा खयाल है कि बबूसा मेरी बात नहीं मानेगा।"

"हो सकता है मान भी जाए। पर मेरा दिल इंकार करता है कि वो मानेगा।"

"बबूसा से फिर बात करूंगी। हम उसके साथियों को आजाद कर देंगे अगर वो दोलाम को मार देता है तो।"

"जगमोहन, तुम क्यों नहीं बबूसा से इस बारे में बात करते?" खुंबरी कह उठी।

"मैं?" जगमोहन ने खुंबरी को देखा।

"हां, तुम बात करो तो ठीक होगा। तुम बबूसा को बेहतर समझा सकते हो। तुम भी चाहते हो कि तुम्हारे सब साथी आजाद हो जाएं। बबूसा की भी ये ही इच्छा होगी।" खुंबरी ने सोच भरे स्वर में कहा—"अगर जल्दी ही कुछ न किया गया तो दोलाम आने वाले वक्त में हमारे लिए ज्यादा बड़ी परेशानियां खड़ी कर देगा।"

"ठीक है। मैं दोलाम से बात करूंगा।" जगमोहन बोला—"मुझे हैरानी है कि इस मामले में तुम्हारी ताकतें खामोश हैं।"

"वो इस बात को मेरा और दोलाम का व्यक्तिगत मामला बताती हैं वो बीच में नहीं आएंगी। दोलाम को ताकतों ने अपने परिवार में शामिल कर लिया है। मुझे भी इस बात की खबर न लगी। अगर दोलाम अब तक मात्र सेवक ही रहा होता तो ताकतों ने उसे तभी मार देना था जब पहली बार मैंने ताकतों से दोलाम की शिकायत की थी।"

"जैसे भी हो हम दोलाम को रास्ते से हटा देंगे।" धरा दृढ़ स्वर में कह उठी।

"अभी तक ओहारा की तरफ से कोई खबर नहीं आई। उसने डुमरा पर वार करना था।" खुंबरी ने कहा।

"वार कर दिया होता तो हमें खबर मिल गई होती।"

"ओहारा इतनी देर क्यों लगा रहा है?" कहने के साथ ही खुंबरी 'बटाका' थामकर ओहारा को पुकारा—"ओहारा।"

"हुक्म महान खुंबरी।" अगले ही पल ओहारा की आवाज कानों में पड़ी।

"डुमरा मारा गया?"

"अभी नहीं। इस वक्त मैं डुमरा को जंगल में घेर रहा हूं। उसने अपने आसपास सुरक्षा के रूप में शक्तियों की चादर फैला रखी है। मैं उस चादर के हटने का इंतजार कर रहा...।"

"क्या पता वो शक्तियों की चादर हटाए ही नहीं?" खुंबरी कह उठी।

"वो जरूर हटाएगा। क्योंकि मेरी ताकतों ने मुझे बता दिया है कि जल्दी डुमरा को सोमाथ मिलने वाला है। सोमाथ के मिलने पर वो अपने आस-पास फैली सुरक्षात्मक शक्तियों का घेरा हटा देगा।"

"सोमाथ वो ही है जो नकली इंसान है।"

"मैं उसी की बात कर रहा हूं।"

"उससे सतर्क रहना। उस पर ताकतों का प्रभाव नहीं पड़ता।"

"मैं जानता हूं महान खुंबरी।"

खुंबरी ने 'बटाका' छोड़ा और धरा से बोली।

"चल आ, बाहर खुली हवा में घूमने चलते हैं। यहां मन उदास हो रहा है।"

धरा सिर हिलाकर कुर्सी से उठ खड़ी हुई।

"तुम भी साथ चलो जगमोहन।" खुंबरी ने कहा।

"मेरा मन नहीं है बाहर जाने को।" जगमोहन ने बेड पर लेटे-लेटे कहा।

"देवराज चौहान के बारे में सोच रहे हो।" खुंबरी के स्वर में प्यार था।

"मैं सब कुछ सोच रहा हूं, जिस तरफ विचार चले जाते हैं, उधर के ही बारे में सोचने लगता हूं। तुम दोनों जाओ बाहर, अगर मेरा मन हुआ तो मैं बाद में आ जाऊंगा।" जगमोहन बोला।

"चल, हम चलें।" खुंबरी धरा से कह उठी—"पेड़ों की छांव औ ठंडी हवा मुझे बहुत भली लगती है।"

▭ ▭

सूर्य सदूर ग्रह के कोने में ही हरदम नजर आता था। सदूर बेहद मध्यम रफ्तार से घूमता रहता और सूर्य सदूर के कोने में ही दिन भर स्थापित रहता। सोलह घंटे का दिन बिताकर प्लेट की तरह फैले सदूर का एंगल कुछ इस तरह हो जाता कि सूर्य की रोशनी सदूर के नीचे वाले हिस्से में पड़ने लगती, जहां मात्र जमीन और पत्थरों का हिस्सा था। इस दौरान सदूर घूमता रहता और सोलह घंटे की रात बिताकर सदूर ग्रह जब सूर्य के एंगल में सामने आता तो दिन निकल आता था। ऐसे में सूर्य अगले सोलह घंटे तक सदूर के किनारे-किनारे ही दिखता और पुनः वैसे ही डूब जाता था। रात हो जाती। इसी प्रकार सदूर ग्रह पर सदियों से दिन-रात होते चले आ रहे थे।

इस वक्त दोपहर जैसा वक्त हो रहा था। सूर्य की तीखी धूप फैली थी और गर्मी का ज्यादा एहसास हो रहा था। सामान्य जगहों पर तो हवा महसूस नहीं हो रही थी परंतु जंगल में मध्यम-सी बहती हवा साफ तौर पर महसूस हो रही थी। पेड़ों के पत्ते हिल रहे थे। हवा का रुख तेज होता तो पत्ते आपस में टकराकर आवाज करने लगते। अन्य जगहों की अपेक्षा जंगल में गर्मी कम थी। राहत थी। परंतु गर्मी से राहत उसे ही थी जो पेड़ों की छाया में बैठकर आराम से हवा का मजा ले। डुमरा के लिए तो ये गर्मी काफी ज्यादा थी।

डुमरा के कंधे पर सामान का थैला लटका हुआ था। वो जंगल में तेजी से आगे बढ़ा जा रहा था। नजरें हर तरफ जा रही थीं। शरीर पसीने से भरा हुआ था। चेहरे पर पसीने की लकीरें बहती नजर आ रही थीं। कभी रास्ते में पेड़ों की छाया आ जाती तो कभी धूप। हालांकि जंगल घना था। परंतु खाली जगह भी थी। अभी तक डुमरा को ऐसी कोई जगह न दिखाई दी थी, जो कि खुंबरी का ठिकाना लगे। थकान डुमरा पर हावी थी परंतु वो रुकना नहीं चाहता था। उसे देवराज चौहान, रानी ताशा, नगीना, मोना चौधरी, बबूसा और सोमारा की भी चिंता थी जो कि खुंबरी की कैद में

पहुंच चुके थे। उसके करीब मौजूद शक्ति (तोखा) उसे हर सम्भव खबर दे रही थी। डुमरा को इस बात का पूरा एहसास था कि खुंबरी उस पर घातक हमला करवा सकती है। पहले भी खुंबरी की भेजी ताकतों ने उस पर हमले करवाए थे (पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'**) परंतु उसके पास मौजूद शक्तियों ने उन हमलों को विफल कर दिया था। सम्भव है इस बार खुंबरी की तरफ से होने वाला हमला बड़ा हो। ये ही वजह थी कि उसने अपने आसपास शक्तियों का घेरा बिछा लिया था कि धोखे से होने वाले हमले से बच सके। डुमरा ने मन-ही-मन सोच लिया था कि खुंबरी से निबटे बिना इस जंगल से वापस नहीं जाएगा। बेशक कितना भी वक्त लग जाए।

"डुमरा।" तोखा की मध्यम-सी आवाज कानों में पड़ी—"तू थक गया है। आराम कर ले।"

"आराम करके क्या करूंगा।" डुमरा कदम उठाते कह उठा—"खुंबरी की तलाश करनी है।"

"थकान के वक्त में खुंबरी सामने पड़ गई तो तू क्या कर पाएगा?"

"तब मेरी थकान खत्म हो जाएगी। पर क्या खुंबरी मुझे मिलेगी?" डुमरा ने पूछा।

"ये मैं नहीं बता सकता।"

"काम की बात तू कभी भी नहीं बता पाता।"

"ऐसा मत कह। मैंने तेरे को बहुत काम की बातें बताई हैं। एक और बताता हूं।"

"क्या?"

"बबूसा, खुंबरी के ठिकाने में मजे से रह रहा है। वो कैद में नहीं है।"

"क्या मतलब?"

"जगमोहन ने उसे कैद से आजाद करा लिया है खुंबरी से कहकर। बबूसा खुंबरी के ठिकाने पर आजादी से घूम रहा है।"

"ओह।" डुमरा एकाएक ठिठक गया—"फिर तो मेरा काम आसान हो जाएगा।"

"कैसे?"

"बबूसा खुंबरी के ठिकाने पर आजाद है तो वो आसानी से खुंबरी की जान ले सकता है।"

"ऐसा कर पाएगा बबूसा?"

"वो बहुत ताकतवर और हिम्मती है। वो आसानी से खुंबरी की जान ले सकता है।"

अचानक मुझ पर हमला नहीं कर सकतीं।" तोखा से बातें करते वक्त भी डुमरा की निगाह उसी तरफ थीं, जिधर कोई नजर आया था।

वो दो बार पेड़ों के पीछे और भी नजर आ चुका था। वो अन्य दिशा में बढ़ा जा रहा था।

डुमरा के कदम तेजी से उठ रहे थे। दौड़ने के अंदाज में।

जल्दी ही डुमरा उस दिशा के काफी करीब पहुंच गया। अन्य दिशा में बढ़ते उस इंसान के चेहरे को पहचाना तो कुछ चौंका। चेहरे पर हल्की-सी उलझन सिमट आई थी।

वो सोमाथ था।

"तोखा। वो सोमाथ लग रहा है।" डुमरा ने कहा।

"मैंने देख लिया है उसे। अभी पता करता हूं कि वो सच में सोमाथ या ताकतों की कोई चाल है।"

डुमरा के कदम पहले की ही तरह उठ रहे थे।

लम्बे पलों के बाद तोखा की मध्यम-सी आवाज डुमरा के कानों में पड़ी।

"वो सोमाथ ही है। नकली इंसान है। मैंने उसके शरीर की भीतर लगी मशीन को देख लिया है।"

"सोमाथ...।" अगले ही पल डुमरा ने ऊंची आवाज में पुकारा।

तीसरी पुकार पर सोमाथ को ठिठकते और इधर-उधर देखते देखा।

तभी डुमरा ने सोमाथ को, पेड़ों के बीच में से अपनी तरफ देखते देखा।

डुमरा ने हाथ उठाकर इशारा किया तो सोमाथ इसी तरफ आना शुरू हो गया। डुमरा ने कंधे से बैग उतारकर पेड़ की छाया में रखा और खुद भी बैठ गया। उस दिशा में देखा तो सोमाथ आता दिखा।

फिर सोमाथ पास आ पहुंचा।

डुमरा सोमाथ को देखकर मुस्कराया।

"ओह डुमरा। तुम्हें देखकर बहुत खुशी हुई।" सोमाथ मुस्कराकर कह उठा—"यहां तो कोई दिख ही नहीं रहा था।" कहने के साथ ही सोमाथ और आगे बढ़ा कि उसके पैर कहीं अटककर रुक गए।

सोमाथ ने नीचे देखा तो वहां कुछ भी नहीं था।

सोमाथ ने पुनः कदम बढ़ाने चाहे परंतु सफल नहीं हो सका। उसने डुमरा को देखकर कहा।

"ये क्या?"

"पवित्र शक्तियों का सुरक्षा कवच फैला है। कुछ भी मेरे करीब नहीं आ सकता।"

"तो क्या मुझे तुमसे दूर ही बैठना पड़ेगा।"

डुमरा ने गले में लटक रहा पवित्र शक्तियों वाला लॉकेट पकड़ा और होंठों-ही-होंठों में कुछ बुदबुदाया।

उसी पल सोमाथ को लगा जैसे पांवों में आने वाली रुकावट समाप्त हो गई हो। वो आगे बढ़ा और डुमरा के पास पहुंचकर नीचे बैठ गया फिर आसपास देखता कह उठा।

"यहां खुंबरी की ताकतें बहुत चालाकी से खेल, खेल रही हैं।"

"सोमारा तुम्हारे साथ थी परंतु तुम उसे नहीं बचा सके।" डुमरा ने कहा।

"क्या करता। मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आया कि क्या होने जा रहा है।"

"तुम खुंबरी का ठिकाना भी नहीं ढूंढ़ सके।"

"दिखा ही नहीं। मैं तो तब से ही जंगल में भटकता फिर रहा हूं। तु भी वो जगह नहीं ढूंढ़ सके।"

"नहीं। मुझे ऐसा कुछ नहीं दिखा कि मैं सोचूं वो जगह खुंबरी का ठिकाना होगी।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"सबके सब खुंबरी की कैद में पहुंच गए हैं। हम दोनों इसलिए बचे रह गए कि मेरे साथ पवित्र शक्तियां होने की वजह से अभी तक वो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सके और तुम पर ताकतों की ताकत नहीं चल सकती। तुम मशीनी इंसान हो।"

"उन सबको खुंबरी ने मार तो नहीं दिया?"

"वो जिंदा हैं।"

"कैसे पता?"

"शक्तियों ने मुझे खबर दी है कि खुंबरी ने सबको कैद कर रखा है। ये भी पता चला है कि जगमोहन और खुंबरी में प्यार हो गया है। जगमोहन खुंबरी के साथ मजे में रह रहा है।" डुमरा ने बताया।

"ओह। तो जगमोहन और खुंबरी में प्यार हो गया है। ये प्यार क्या होता है डुमरा?"

डुमरा ने सोमाथ को देखकर कहा।

"ये इंसानों में हो जाता है। परंतु तुम्हें इस बात की समझ नहीं आएगी।"

"मैं भी तो इंसान हूं।"

"देखने में। तुम्हारे भीतर मशीनरी है। जो कि तुम्हें जिंदा रखे हुए है।"

"हां। मैं तो बैटरी से चलता हूं और इंसानों से बेहतर भी हूं कि मुझे भूख नहीं लगती। प्यास नहीं लगती। मैं थकता नहीं। परंतु मेरी अपनी

समस्या है। मेरे भीतर लगी बैटरी जब खत्म हो जाएगी तो मैं बे-जान हो जाऊंगा।"

"तुम्हारी बैटरी कब खत्म होगी?"

"अभी तो चलेगी। यहां आते समय मैं नई बैटरी लगाकर आया था। अब हमें खुंबरी की जगह तलाश...।"

"बबूसा भी खुंबरी के ठिकाने पर आजाद घूम रहा है। जगमोहन के कहने पर उसे कैद से निकाला गया होगा।"

सोमाथ, डुमरा को देखने लगा।

"बबूसा खुंबरी के ठिकाने पर आजाद है?" सोमाथ कह उठा—भी तुम्हें पता है।"

"शक्तियों ने मुझे इस बात की जानकारी दी है। डुमरा ने कहा।

सोमाथ के चेहरे पर सोच के भाव दिखने लगे। बोला...।

"फिर तो कोई समस्या नहीं आनी चाहिए। बबूसा, खुंबरी को मार देगा।"

"वो शायद ऐसा न करे। बबूसा ने ऐसा किया तो खुंबरी के साथी उन सबकी ही जान ले लेंगे।"

"पर बबूसा खामोश नहीं बैठेगा। उसने तो मुझे भी पोपा (अंतरिक्ष यान) से आकाशगंगा में फेंक दिया था। वो बहादुर है।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'**)।

"बबूसा के लिए ये इतना आसान नहीं होगा कि...।"

"जगमोहन, खुंबरी से प्यार करने लगा है। वो तो खुंबरी की जान नहीं लेगा।"

"ऐसा होना ही था। शक्तियों ने पहले ही इशारा दे दिया था कि पृथ्वी ग्रह से आए किसी इंसान को खुंबरी से प्यार होने वाला है। लेकिन इन हालातों में जगमोहन भी चैन से नहीं रहेगा, क्योंकि उसके साथी कैद में...।"

"डुमरा।" तभी तोखा की मध्यम-सी आवाज, डुमरा के कानों में पड़ी।

"हां।"

"होकाक नई खबर लाया है। सीधे उससे बात करेगा या मैं ही तुझे कह दूं?"

"होकाक से ही बात करा।" डुमरा कह उठा।

"मैं अभी उसे अपनी जगह देता हूं।" तोखा के शब्द कानों में पड़े।

सोमाथ के माथे पर बल दिखने लगे। उसने पूछा।

"तुम किससे बात कर रहे हो?"

"शक्तियों से।"

"वो तुम्हारे पास हैं?"

"मेरे पास हमेशा शक्तियां रहती हैं।"

"फिर तो तुम अपने को अकेले महसूस नहीं करते...।"

उसी पल डुमरा के कानों में मध्यम-सी एक नई आवाज पड़ी।

"डुमरा।"

"होकाक हो तुम?"

"हां। मैं तीन बार खुंबरी के ठिकाने पर हो आया हूं। खुंबरी को पास से देखा है।" होकाक की आवाज पुनः कानों में पड़ी।

"तुम्हें इस काम पर किसने लगाया है?"

"वजू ने।"

"वजू तो कहता था कि इस मामले में मेरी सहायता नहीं करेगा।" डुमरा ने कहा।

"वजू ये भी कहता है कि डुमरा का खयाल हम नहीं रखेंगे तो कौ रखेगा।"

"बता, क्या बताने आया है?"

"खुंबरी के ठिकाने की स्थिति बहुत ही विचित्र हो गई है। खुंबरी बहुत परेशान हो रही है। पृथ्वी से आई उसकी छाया (धरा) भी इन हालातों में घिर चुकी है। जगमोहन और बबूसा भी इस स्थिति में उलझ गए हैं।"

"क्या हो रहा है वहां?"

"खुंबरी का पुराना सेवक है दोलाम...।"

"देखा हुआ है मैंने उसे।" डुमरा ने कहा।

"दोलाम को ये बात अच्छी नहीं लगी कि खुंबरी, जगमोहन का हाथ थाम ले। ऐसे में उसने खुंबरी से, उसका शरीर मांग लिया कि वो जगमोहन को छोड़कर उसका हाथ थाम ले।"

"दिलचस्प।" डुमरा मुस्कराया—"फिर क्या हुआ?"

"खुंबरी दोलाम की हिम्मत पर हैरान रह गई। ऐसे में खुंबरी ने ताकतों को हुक्म दिया कि वो दोलाम को खत्म कर दें। परंतु ताकतों ने कहा कि दोलाम को बहुत पहले से ही परिवार में शामिल कर लिया गया है। वे उसे नहीं मार सकतीं। मतलब कि खुंबरी का हुक्म मानने से इंकार कर दिया। खुंबरी ने स्पष्ट तौर पर दोलाम से कह दिया कि जगमोहन को नहीं छोड़ सकती।"

"तुम तो मजेदार बातें बता रहे हो होकाक।"

"दोलाम भी कम नहीं है। खुंबरी का व्यवहार देखकर उसने ताकतों

का मालिक बनने का फैसला कर लिया। बबूसा, दोलाम का साथ दे रहा है, जबकि धरा इस बात की कोशिश में है कि बबूसा, दोलाम को मार दे। परंतु बबूसा चाहता है कि खुंबरी की जान ली जाए, क्योंकि उसने कभी रानी ताशा और राजा देव को जुदा किया था। जगमोहन भी खुंबरी और धरा की बातों में हिस्सा लेने लगा है और चाहता है, दोलाम मारा जाए।"

"ये सब हालात तो वास्तव में विचित्र हैं।" डुमरा ने सिर हिलाकर कहा—"तो वहां पर कोई नियम काम नहीं कर रहा।"

"नहीं, कोई नियम नहीं। खामोश-सी लड़ाई जारी है। दोलाम, खुंबरी को मारना चाहता है और खुंबरी दोलाम की जान ले लेना चाहती है। इस बारे में ताकतें दखल नहीं दे रहीं। ताकतों को पता है कि दोनों में से जो भी बचेगा, वो ताकतों का मालिक बनेगा और उन्हें नुकसान नहीं होगा।"

"इसका मतलब सम्भव है खुंबरी, दोलाम के हाथों मारी जाए।"

"कुछ भी हो सकता है डुमरा।"

"जो लोग कैद हैं, उनकी क्या स्थिति है?"

"वो कैद में हैं। लेकिन उन्हें खतरा कम है। दोलाम उन्हें आजाद करने का खयाल रखता है। वो रानी ताशा से इस बात का सौदा कर आया है कि वो रानी ताशा को मौका देगा कि वो स्वयं खुंबरी को मार सके और रानी ताशा बदले में डुमरा को सदूर का राज्य दे देगी।" होकाक के शब्द कान में पड़ रहे थे।

"खुंबरी के ठिकाने पर जो भी हो रहा है, अच्छा हो रहा है हमारे ह में।" डुमरा ने कहा।

"बुरा भी हो सकता है। वहां के हालात अनिश्चित से हैं। पता नहीं, वहां कब क्या हो जाए।"

"क्या तुम्हें अंदाजा है कि खुंबरी का ठिकाना जंगल में किस दिशा में है?"

"ये बात मुझे नहीं पता। घने जंगल में मुझे एक छिद्र-सा दिखता है, जब मैं उसमें प्रवेश करके आगे जाता हूं तो खुंबरी के ठिकाने के भीतर पहुंच जाता हूं। उस जगह पर ताकतों ने अपने साए फैला रखे हैं। इसलिए ये मालूम करना सम्भव नहीं कि वो जगह जंगल में कहां पर है।"

"खुंबरी के कितने साथी हैं वहां?"

"दोलाम के अलावा तीसरा कोई नहीं है।"

"अन्य सब को कहां कैद कर रखा है?"

"एक खुले कमरे में। वो कमरे से बाहर नहीं निकल सकते। वहां ताकतों का पहरा है।"

"मुझे वहां पहुंचना हो तो, कैसे मैं...।"

"इस बारे में मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता।"

"इसका मतलब खुंबरी के साथ-साथ अब दोलाम की भी जान लेनी होगी। खुंबरी को मारकर वो ताकतों का मालिक बनने की ख्वाहिश रखता है। जो भी ताकतों का मालिक बनेगा, वो साधारण लोगों को कष्ट देगा। ताकतें अपना जो भी काम करेंगी, बुरे रास्ते पर चलकर ही करेंगी। मैं चाहता हूं ताकतों का मालिक कोई भी न रहे।"

"मुझे तो लगता है दोलाम या खुंबरी में से अब एक ही जिंदा रहेगा।"

"तेरी बातें काम की हैं परंतु मुझे कोई रास्ता नहीं मिला खुंबरी तक पहुंचने का।"

"आने वाले वक्त में रास्ते के बारे में कुछ पता चला तो जरूर बताऊंगा।" होकाक के शब्द कानों में पड़े—"एक बात और बता दूं कि खुंबरी और उसका रूप, दोनों ठिकाने से बाहर, खुले जंगल में घूमने निकली हैं।"

"ये बताने का क्या फायदा। इतने बड़े जंगल में वो जगह जाने कहां होगी। घने जंगल हैं। दूर तक दिखता भी नहीं है। कुछ और पता चले तो बता जाना। अब तू जा।"

होकाक की आवाज नहीं आई।

पास बैठा। सोमाथ डुमरा को देख रहा था।

तभी डुमरा के कानों में तोखा की आवाज पड़ी।

"होकाक खुंबरी के ठिकाने का हाल बता गया है।"

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि वहां पर कैसा वक्त आने वाला है।" डुमरा ने कहा।

"खुंबरी या दोलाम में से एक मरेगा।"

"अगर दोलाम खुंबरी को मार दे तो हालात बेहतर हो सकते हैं।" डुमरा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"वो कैसे?"

"दोलाम खुंबरी को मारता है तो जगमोहन दोलाम की जान ले लेगा, क्योंकि वो खुंबरी से प्यार करने लगा है।"

"शायद ऐसा ही हो जाए। अगर खुंबरी दोलाम की जान लेने में सफल हो जाती है तो?"

"तब हमारे लिए हालात बेहतर नहीं होंगे। स्थिति वैसी की वैसी ही रहेगी। दोलाम और खुंबरी में फूट पड़ जाने से हमें तभी फायदा हो सकता है कि दोलाम, खुंबरी को मारे।" डुमरा के चेहरे पर सोच के भाव दिखने

लगे—"रानी ताशा ने दोलाम के साथ सौदा करके ठीक नहीं किया। अगर रानी ताशा, खुंबरी को मारने में सफल हो जाती है तो ताकतें क्रोध में अन्यों की जान ले सकती हैं।"

"ऐसा नहीं होगा डुमरा। दोलाम है न, उन्हें बचाने वाला।" तोखा का स्वर कानों में पड़ा।

"होकाक ही बताएगा कि वहां पर अब क्या हालात बनते हैं।" डुमरा ने तोखा से बात करने के बाद सोमाथ को खुंबरी के ठिकाने के ताजा हालात बताए तो सोमाथ बोला।

"मेरे खयाल में हमें इंतजार करके ये देखना चाहिए कि आगे क्या होता है।"

"इंतजार नहीं, हमें खुंबरी की तलाश अपने तौर पर जारी रखनी है।" डुमरा ने कहा और थैले से खाना निकालकर बाहर रखा। उसे खोलने लगा तो सोमाथ मुस्कराकर कह उठा।

"इंसान की सबसे बड़ी कमजोरी है कि उसे हर थोड़ी देर बाद कुछ खाना पड़ता है।"

"इससे इंसान व्यस्त रहता है कि उसे खाने का इंतजाम करना है। अगर ऐसा न होता तो इंसान के पास करने को कुछ भी नहीं होता और व्यर्थ में लड़ाई-झगड़े खड़े होते। इंसान शैतान बन जाता।"

"तुम इस बात को बेहतर जानते होगे।"

डुमरा खाना खाने लगा।

"डुमरा।" तभी तो तोखा की आवाज कानों में पड़ी—"मुझे महक आने लगी है।"

"किस बात की?" डुमरा ने फौरन आसपास देखा।

"पास में कोई आ रहा...।"

तोखा की आवाज एकाएक बंद हो गई।

डुमरा को एकाएक सामने चोली-घाघरा में दोती खड़ी दिखने लगी।

शायद तोखा इसी तरफ इशारा करने जा रहा था।

डुमरा ने दोती को देखकर गहरी सांस ली और खाना खाने लगा।

सोमाथ ने भी दोती को देखा तो तुरंत उठकर दोती की तरफ बढ़ा।

"कोई फायदा नहीं।" डुमरा बोला—"ये छाया भर है। शरीर साथ नहीं लाई।"

पास पहुंचकर सोमाथ ने दोती को पकड़ना चाहा कि उसका हाथ दोती को पार करता चला गया।

दोती खिलखिला उठी।

"तुम जैसा कृत्रिम इंसान मैंने पहले कभी नहीं देखा।" दोती बोली।

"तुम बहुत चालबाज हो।" सोमाथ तीखे स्वर में बोला—"तुमने सोमारा को...।"

"याद है तुझे। मैंने तो सोचा था तेरा मशीनी दिमाग भूल गया होगा।"

डुमरा की निगाह खाना खाते हुए भी दोती पर ही थी।

"तू अपने शरीर के साथ क्यों नहीं सामने आती?"

"ताकि तू मुझे पकड़ ले।"

"डरती हो।"

"औरतजात हूं, डर तो लगता ही है। वैसे भी बिना शरीर के मैं पलक झपकते ही कहीं भी चली जाती हूं। शरीर लेकर चलूं तो उसे संभालने का काम भी बहुत होता है। कहीं जाने में बहुत देर लग जाती है।" दोती मुस्कराई।

"मुझे तेरे मुंह लगना पसंद नहीं।" सोमाथ ने कहा और वापस जा बैठा—"हमारे पास क्यों आई है?"

"मैं तो तुम लोगों की राह आसान करना चाहती हूं। खुंबरी के बारे में बताना चाहती हूं कि वो कहां पर है। पर तुम लोग तो मेरी बात मानते नहीं। यकीन करो खुंबरी ने मुझे भी बहुत परेशान कर रखा...।"

"खुंबरी को बुला ला।" सोमाथ मुस्कराया—"तुम्हारा फैसला करा देते हैं।"

"तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो।" दोती मुंह लटकाकर बोली।

"मैं गम्भीर हूं।"

"मुझे समझ नहीं आता कि कृत्रिम इंसान इतने अच्छे ढंग से कैसे बात कर लेता है।"

"महापंडित ने बनाया है मुझे।"

"जानती हूं। वो डुमरा का ही तो बेटा है।"

डुमरा आराम से खाना खा रहा था।

"जब तक तुम लोग मुझे सच्चा नहीं मानोगे, तब तक मेरी समस्या का समाधान नहीं होगा।" दोती ने कहा।

"मैंने तुझे कभी भी झूठा नहीं माना।" सोमाथ ने कहा—"सोमारा कहां पर है?"

"तुम जानते नहीं, अगर मैं सोमारा को न ले जाती तो खुंबरी मुझे मार देती। वो बहुत क्रूर है।"

"मुझे भी वहां ले चल।" सोमाथ बोला।

"तुझे लाने को तो खुंबरी ने कहा नहीं फिर कैसे ले जाऊं तुझे। मैं तो खुंबरी से बहुत तंग आ गई हूं। उससे पीछा भी तो नहीं छुड़ा सकती। एक बार जो उसके चंगुल में फंस गया तो निकल नहीं सकता।"

तभी तोखा की आवाज डुमरा के कानों में पड़ी।

"यहां कोई और भी है। मुझे गंध आ रही है।"

डुमरा ने नजरें घुमाकर जंगल में हर तरफ देखा।

"कोई भी नहीं दिखा।"

"कोई नहीं है तोखा।" डुमरा ने कहा।

"मुझे स्पष्ट तौर पर गंध मिल रही है।"

सोमाथ ने दोती से कहा।

"तू तो मुझे फंसी नजर नहीं आती। खुश दिख रही है।"

"क्या बताऊं तेरे को। तू कृत्रिम इंसान है। समझ नहीं सकता।"

"मैं सब समझ रहा हूं। तू कहती जा।"

तोखा की आवाज पुनः डुमरा के कानों में पड़ी।

"यहां कोई और भी मौजूद है। मुझे गंध यूं ही नहीं आ रही।"

"होता तो नजर जरूर आता।" खाना खाते, नजरें घुमाता डुमरा सतर्क अंदाज में कह उठा।

डुमरा को धीमे स्वर में बातें करते देखकर दोती बोली।

"अपनी शक्तियों से बातें कर रहा है डुमरा।"

"तेरे साथ कौन है?"

"कोई भी तो नहीं।"

"मेरी शक्ति ने मुझे बताया है कि यहां तेरे अलावा भी कोई है।"

"मैं तो अकेली आई...।"

तभी चंद कदमों के फासले पर मोरगा दिखने लगी। (मोरगा को आप पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'** में पढ़ चुके हैं) सबकी नजरें मोरगा की तरफ उठीं।

मोरगा चमकीले चोली-घाघरा में थी।

"मोरगा तू?" दोती कह उठी।

"तू ठीक कह रही है कि खुंबरी के चंगुल से बचने का कोई रास्ता नहीं।" मोरगा ने गहरी सांस लेकर कहा।

"तू भी मोरगा?"

"हां दोती। मैं भी खुंबरी से बहुत तंग आ चुकी हूं पर ये लोग हमारी सहायता करने वाले नहीं। इन्हें लगता है कि हम खुंबरी के हक में काम करते हैं। क्या करें, करना पड़ता है। नहीं तो वो हमें मिटा देगी।" मोरगा ने

मुंह लटकाए अंदाज में कहा—"डुमरा चाहे तो हमें खुंबरी से बचा सकता है, लेकिन ये क्यों बचाएगा।"

डुमरा खाना खाते मुस्करा पड़ा।

"हम मुसीबत में हैं और ये देख कैसे मुस्करा रहा है।" मोरगा ने मुंह बनाकर कहा।

"अपने का भला इंसान कहता है।" दोती बोली।

"ओहारा नहीं आया दोबारा?" डुमरा बोला।

"तेरे को ओहारा की याद है।"

"जब उसने मुझ पर हमला किया था तो तू भी साथ थी।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **'बबूसा और सोमाथ'**)।

"तूने तो डुमरा तब खूब मुकाबला किया ओहारा का। भगा दिया उसे।" दोती मुस्कराई।

"मेरा मजाक उड़ा रही है या शाबाशी दे रही है?"

"तेरी बहादुरी की तारीफ कर रही हूं। ओहारा को परेशान होकर भागना पड़ा था।" दोती ने हंसकर कहा—"लेकिन हर बार भी तो ऐसा नहीं होता। ओहारा तेरे को कहकर गया था कि अबकी बार तुझे नहीं छोड़ूंगा।"

"वो आया नहीं?"

"मुझे क्या पता।" दोती ने मोरगा से कहा—"तेरे को खबर है ओहारा की?"

"बड़ी ताकतें अपने बारे में खबर ही नहीं देती। मैंने तो कई दिन ओहारा को नहीं देखा।"

"वो तो डुमरा के डर से कहीं छिपकर बैठ गया होगा।"

सोमाथ ने डुमरा से कहा।

"ये दोनों कैसी अजीब बातें कर रही हैं।"

"सामने वाले को उलझाने में उस्ताद हैं ये।" डुमरा बोला—"ये कोई मतलब निकालने आई हैं।"

"कैसा मतलब?"

"ये बताएंगी नहीं।"

तभी तोखा का बेचैन स्वर डुमरा के कानों में पड़ा।

"डुमरा। मैं बहुत तीव्र गंध का एहसास पा रहा हूं। ऐसी तीव्र गंध कम ही महसूस होती है।"

"तो क्या कोई बड़ी ताकत आ गई है। हमें घेर रही है।" डुमरा ने खाना खाना छोड़ दिया।

"ये मुझे नहीं पता। पर इस बार गंध बहुत तीव्र है। कुछ होने वाला है।" तोखा के स्वर में परेशानी थी।

डुमरा ने दोती और मोरगा को देखा।

दोती मुस्कराकर डुमरा को देखने लगी थी।

मोरगा दोनों हाथ कमर पर रखे खड़ी थी।

"सोमाथ।" डुमरा बोला—"कुछ बुरा होने वाला है। मेरे खयाल ताकतें हमला करने वाली हैं।"

सोमाथ तुरंत उठ खड़ा हुआ।

डुमरा भी खड़ा हो गया।

"ओहारा हमला करने आ रहा है।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में दोती और मोरगा को देखा।

जवाब में दोती खिलखिला उठी।

"पिछली बार ओहारा को भागना पड़ा था।" मोरगा ने सख्त स्वर में कहा—"लेकिन इस बार तो तेरे को भागने का भी मौका नहीं मिलेगा। ओहारा ने कभी हारना नहीं सीखा।"

"ओहारा हमला करने आ रहा है सोमाथ। पर तुझे चिंता करने की जरूरत नहीं। ताकतों या शक्तियों का असर तुझ जैसे कृत्रिम इंसान पर नहीं होता। तू चाहे तो उन्हें नुकसान पहुंचा सकता...।"

सोमाथ फुर्ती से चंद कदमों पर खड़ी मोरगा पर झपट पड़ा।

लेकिन मोरगा को न पकड़ सका। वो मोरगा की मानवीय आकृति को पार करता रुककर पलटा।

डुमरा ने गले में पड़ा लॉकेट थाम लिया था। नजरें हर तरफ जा रही थीं।

"गंध और भी तेज हो गई है।" तोखा की बेचैन आवाज कानों में पड़ी।

"कुछ होने वाला है।" डुमरा के माथे पर बल नजर आने लगे।

मोरगा खिलखिलाकर हंस पड़ी।

दोती के चेहरे पर जहरीली मुस्कान ठहरी हुई थी।

"ओहारा हमला करने आ रहा है न?" डुमरा ने मोरगा और दोती को देखा। माथे पर बल नजर आने लगे थे।

"वो आ गया है।" दोती हंसकर बोली।

डुमरा के होंठ भिंचे। नजरें आसपास घूमीं।

"ये झूठ बोल रही है।" सोमाथ कह उठा—"यहां कोई भी नजर नहीं आ...।"

तभी ओहारा दिखने लगा। उसके दिखने से पहले बिजली की तरह

चमकती काली लकीर दिखी थी, फिर वहीं खड़ा ओहारा दिखाने लगा। वो चमकीले कपड़े पहने था, चेहरा शांत दिख रहा था। हाथ में काले रंग के मोतियों का गुच्छा जैसा थाम रखा था। एक पल के लिए वक्त ठहर गया।

डुमरा ने ओहारा को देखा।

मोरगा और दोती एकाएक ज्यादा खुश नजर आने लगी थीं।

"ये कौन है?" सोमाथ ने डुमरा से पूछा।

"ओहारा। खुंबरी का सिपाही। इसने मुझ पर पहले भी घातक हमला किया था। (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'**) अब ये फिर मुझ पर हमला करने आया है।"

"ये मेरे सामने कमजोर है।" सोमाथ कहते हुए ओहारा की तरफ बढ़ा—"इसे मैं अभी खत्म कर देता हूं।"

"कोई फायदा नहीं होगा।" पीछे से डुमरा का स्वर कानों में पड़ा

सोमाथ, ओहारा के पास पहुंचता जा रहा था।

ओहारा के चेहरे पर मुस्कान दिखाई देने लगी।

"वहीं ठहर जा कृत्रिम इंसान।" ओहारा दबंग स्वर में कह उठा।

"तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" सोमाथ ने कहा और पास पहुंचते ही ओहारा का गला पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया।

परंतु सोमाथ का हाथ, ओहारा के गले से पार हो गया।

चंद पल के लिए ओहारा का गला खंडित-सा हुआ कि फिर पहले जैसा हो गया।

सोमाथ ने गुस्से से उसके सिर पर घूंसा मारा।

सिर का हिस्सा दो पलों के लिए खंडित-सा होता दिखा, फिर सामान्य हो गया।

ओहारा मुस्कराता हुआ सोमाथ को देख रहा था।

"तो तुम अपना अक्स लाए हो। शरीर के साथ नहीं आए।" सोमाथ ने सिर हिलाकर कहा।

"दुश्मनों के बीच शरीर लाने की जरूरत ही क्या थी।" ओहारा ने मुस्कराते स्वर में कहा—"मतलब तो काम होने से है। जो काम मैं करने आया हूं वो शरीर लाए बिना भी पूर्ण हो जाएगा।"

"तुम डरपोक हो जो बिना शरीर के यहां आ गए।"

"डरपोक नहीं। व्यस्त हूं। बहुत काम हैं मेरे पास करने को। अप छाया-रूप के साथ मैं पलों में कहीं भी पहुंच सकता हूं। जैसे यहां आ पहुंचा। लेकिन एक बात मैं जरूर कहूंगा कि महापंडित ने तुम्हारा निर्माण बहुत ही बढ़िया ढंग से किया है। तुम कहीं से भी कृत्रिम नहीं लगते।"

"पर मैं तुम्हारे लिए समस्या हूं।" सोमाथ मुस्कराकर बोला।
"कैसे?"
"तुम्हारी ताकतें मुझ पर असर नहीं करेंगी।"
"ये बात ठीक है, परंतु तुम हमारे लिए समस्या नहीं हो। तुम हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"
"मौका मिला तो मैं ही ताकतों के लिए मुसीबत खड़ी करूंगा।"
"ऐसा मौका तुम्हारे सामने नहीं आएगा कृत्रिम इंसान।"
सोमाथ पलटकर डुमरा के पास पहुंचा।
"ये अपने शरीर के साथ आया होता तो मैं इसे सलामत नहीं छोड़ता सोमाथ ने कहा।
देर से डुमरा की निगाह, ओहारा पर थी।
दोती और मोरगा मुस्कान भरे चेहरे के साथ खड़ी थीं।
"क्या करेगा ओहारा अब?" डुमरा बोला—"मुझ पर वार करेगा?"
"तुम पर वार कर चुका हूं डुमरा।"
"पर मैं तो सलामत खड़ा हूं।"
"अभी सब कुछ सामने आ जाने वाला है।" ओहारा ने गहरी मुस्कान के साथ कहा—"पिछली बार तूने खुद को मेरे वारों से बचा लिया था। पर वो कोई बहादुरी नहीं थी। इस बार मैं सोच-समझकर तुझ पर वार कर रहा हूं। तेरा अंतिम समय आ गया है। आज तू अपने को बचा नहीं सकेगा। ओहारा हमेशा सफल रहता है।"
डुमरा ने गले में पड़ा शक्तियों वाला लॉकेट थाम रखा था। उसकी निगाह फिर आस-पास गई। परंतु कुछ भी नहीं दिखा तो नजरें पुनः ओहारा पर जा ठहरीं।
"तू मुझ पर वार कर चुका है।" डुमरा बोला।
"बेशक।"
"ऐसा कैसा वार है कि तू वार से पहले सामने आ गया और वार मुझ तक नहीं पहुंचा।"
"वो पहुंच रहा है।" ओहारा ने मुस्कराकर विश्वास भरे स्वर में कहा।
डुमरा कुछ बेचैन दिखा।
"ये ऐसे ही बोल रहा है।" सोमाथ कह उठा।
"ये ऐसे नहीं बोल रहा।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मुझे पूरा विश्वास है कि ये सच कह रहा है।"
"तो इसका वार कहां है?"
"मेरे खयाल में कभी भी कुछ भी हो सकता है। तू मेरे पास से दूर जा।"

"क्या मतलब डुमरा?"

"ओहारा का वार मेरे पास पहुंचने ही वाला होगा, न जाने वो कैसा वार है। कहीं तुझे नुकसान न हो जाए।"

"मैं किसी भी बात से नहीं डरता। महापंडित ने मेरा निर्माण करते समय,ये बात मुझमें डाल दी थी कि...।"

"मेरे पास से दूर चला जा सोमाथ।"

"क्यों?"

"तू सलामत रहेगा तो मेरी सहायता कर सकेगा।"

"तुमने ही तो कहा था कि ताकतों के वार मुझ पर नहीं चल सकते। फिर मुझे क्या डर?"

"फिर भी, तेरा मेरे पास से दूर हट जाना ही...।"

तभी तूफान से उभरने की आवाज छन-छन करती कानों में पड़ी।

सिर के ऊपर से पेड़ों के पत्तों की जोरदार आवाजें आई थीं जैसे कोई चीज आ टकराई हो।

डुमरा और सोमाथ ने तुरंत ऊपर देखा।

कप के आकार का पिंजरा दिखा।

जैसे उल्टा हुआ पड़ा कप नीचे गिर रहा हो। वो पंद्रह फुट के व्यास के घेरे में तेजी से नीचे आया। उसके नीचे वाले हिस्से में एक-एक मीटर लम्बे सरियों जैसी चीज लगी थी। वो पिंजरा पेड़ों के पत्तों और छोटी-मोटी टहनियों को काटता हुआ ठीक उनके सिरों के ऊपर आया और उन्हें अपने घेरे में लेता, सीधा जमीन में जा फंसा। किनारे पर नजर आते लम्बे सरियों जैसे टुकड़े पूरे के पूरे जमीन में धंस गए थे।

डुमरा और सोमाथ उस पिंजरे के भीतर फंस गए थे।

पिंजरा जमीन में जैसे फिक्स हो गया था।

पिंजरा नीचे से फैलावट लिए था और उसकी शेप ऊपर से ऊनी टोपी की तरह थी।

दोनों आराम से उसके भीतर खड़े हो सकते थे। लेट सकते थे इतनी-सी ही जगह थी वहां।

दोती खिलाखिलाकर हंस पड़ी।

"अब तो फंस गए डुमरा।"

"यहां से बचो तो जाने।" मोरगा भी हंसी।

ओहारा के चेहरे पर शांत मुस्कान थी।

सोमाथ ने फौरन पिंजरे की सलाखें पकड़कर उसे हिलाने की चेष्टा की।

परंतु वो टस से मस न हुआ।

सोमाथ ने पुनः जोर लगाया। कई तरह से जोर लगाया। कुछ भी फायदा होता न दिखा।

डुमरा शांत खड़ा पिंजरे पर नजरें घुमा रहा था।

"डुमरा। पिंजरे से बचने के लिए तुम्हारी शक्तियां क्या कर सकती हैं मेरे से तो ये हिल नहीं रहा।" सोमाथ बोला।

"शक्तियां सब कुछ देख रही हैं। वो जरूर कुछ करेंगी।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"वो इस पिंजरे से हमें निकाल लेंगी?" सोमाथ अभी भी पिंजरे पर अपनी ताकत लगा रहा था।

तभी तोखा की आवाज डुमरा के कानों में पड़ी।

"एक बात समझ में नहीं आई डुमरा।"

"क्या?"

"ओहारा तुम्हें इस पिंजरे में कैद करके क्या करना चाहता है। ये तो कोई वार न हुआ।"

"मैं भी ये ही सोच रहा हूं कि ये कैसा वार है। मुझे कैद में रखकर ओहारा का क्या मतलब निकलता है।"

"मुझे तो लगता है, बात कुछ और है।"

"क्या बात?"

"ये ही तो पता नहीं। पर ओहारा की कोई चाल छिपी है इस वार के पीछे।" तोखा का स्वर कानों में पड़ा।

"मैं ओहारा से बात करता हूं।" डुमरा ने कहा।

सोमाथ सलाखों को झटके देता बोला।

"महापंडित ने मुझमें बहुत ताकत डाली थी जन्म के समय। लगता है इस पिंजरे के सामने मेरी ताकत कम है।"

डुमरा ने पिंजरे में से, कुछ दूर नजर आते ओहारा को देखा।

"कैद में कैसा लग रहा है डुमरा।" ओहारा हंसकर बोला।

"ताकतों को ऐसा घटिया वार शोभा नहीं देता। मेरे से ताकतें इतना डर गईं कि मुझे कैद कर लिया।"

"अभी पूरा वार हुआ ही कहां है डुमरा।" ओहारा ने हंसकर कहा

डुमरा की आंखें सिकुड़ीं।

"वार तो अभी अधूरा है। आगे देख क्या होता है।"

"मेरा भी ये ही खयाल था कि ये पूर्ण वार नहीं हो सकता।"

"खुंबरी का हुक्म है कि तुम्हारी जान ले ली जाए। अब तुम मरने वाले हो डुमरा।"

"मैं तुम्हारा पूर्ण वार देखना चाहता हूं।" डुमरा बोला।

"लो देखो।" कहने के साथ ही ओहारा ने हाथ में दबे काले रंग के मोतियों के गुच्छे को हवा में उछाला और नीचे आने पर पुनः थाम लिया—"मेरे वार का दूसरा और अंतिम चरण पूरा होना शुरू हो गया है डुमरा।"

उसी पल पिंजरे में जोरदार कम्पन हुआ।

सोमाथ ने पिजरे की सलाखें पकड़कर पिंजरे को उखाड़ फेंकना चाहा पूरा जोर लगाया। परंतु कोई फायदा न हुआ। पिंजरे में कम्पन जारी रहा और अगले ही पल पिंजरे का सिकुड़ना शुरू हो गया। इस तरह जैसे कोई उसे मुट्ठी में लेकर दबाता जा रहा हो। जमीन में धंसा पिंजरा एकाएक टाइट होने लगा। मोटी सलाखों वाला पिंजरा जैसे जादू के जोर पर सिकुड़ता जा रहा हो। बेहद धीमी रफ्तार से। इसके साथ ही पिंजरे में जोरदार कम्पन जारी हो चुका था। पहली बार सोमाथ के माथे पर बल उभरे।

डुमरा गम्भीर हो उठा।

"डुमरा।" तोखा की आवाज डुमरा के कानों में पड़ी—"इस तरह सिकुड़ता रहा पिंजरा तो इसमें पिसकर तुम्हारी जान चली जाएगी। अभी तक बड़ी शक्तियों ने कुछ किया क्यों नहीं?"

"शक्तियों से कुछ हो सका तो वो जरूर करेंगी।" डुमरा ने शांत स्वर में कहा—"वो मेरे को इतनी आसानी से मरने नहीं देंगी। ताकतें मेरी जान लेने में कभी सफल नहीं हो सकेंगी। ऐसा हुआ तो ये शक्तियों की हार होगी।"

"बड़ी शक्तियां वजू और सलूरा तो तुम्हारी सहायता करने से पीछे हट चुकी हैं।"

"ये उनका मात्र दिखावा है। होकाक को किसने भेजा खुंबरी का ठिकाना तलाश करने को?"

"वजू ने।"

"इसका मतलब बड़ी शक्तियां मुझ पर नजर रख रही हैं। वो मेरे हालातों से अंजान नहीं हैं।"

"तुम्हारी मौत की सोचकर मुझे डर लग रहा है। मैं तुम्हारी इज्जत करता हूं। तुमसे प्यार है मुझे।"

"अभी मैं जिंदा हूं तोखा।"

"पर मौत तेरी तरफ बढ़ रही है।"

उसी पल सोमाथ ने डुमरा से कहा।

"इस मुसीबत से बचने का मुझे कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा।"

"हिम्मत मत छोड़ना।"
"मैंने डरना नहीं सीखा। डर जैसा मेरे भीतर कुछ है ही नहीं।" सोमाथ ने मुस्कराकर कहा—"अगर मुझे कभी मौका मिला तो मैं इस ओहारा को बुरी मौत दूंगा।"
पिंजरे का घेरा हर पल के साथ सिकुड़ता जा रहा था।
"डुमरा। कैसा लगा मेरा वार? कुछ दूर खड़े ओहारा ने हंसकर कहा।
"बहुत अच्छा।" डुमरा मुस्कराया—"क्या इस वार से मैं मर जाऊंगा?"
"तेरी मौत का नजारा मैं देखकर ही जाऊंगा।"
"ये अब बचने वाला नहीं ओहारा।" दोती ने विश्वास भरे स्वर कहा।
"रात हम इसकी मौत का जश्न कारू (शराब) के साथ मनाएंगे।" ओहारा ने हंसकर कहा।
"ओहारा कभी मुझे भी तो मौका दो कि कारू तुम्हें पिला सकूं। तुम तो हमेशा दोती हाथ से ही कारू पीते हो।"
"आज तुम दोनों मुझे कारू पिलाना।" ओहारा ने कहा।
"ओहारा। ये मुझे पसंद नहीं कि मोरगा तुम्हें कारू पिलाए। कारू तुम्हें मैं ही पिलाऊंगी।"
"ओहारा ने कहा है तो रात में मैं भी इसे कारू पिलाऊंगी।" मोरगा ने तुरंत कहा।
"बात कारू पिलाने की नहीं है। ओहारा उसी के हाथ से कारू पीता है, जिसके साथ रात को सोना चाहता है। बात तो ये है कि ओहारा के साथ रात को कौन सोएगा।" दोती ने नाराजगी से कहा।
"आज तक तो तू ही सोती आई है अब मुझे भी मौका मिलना...।"
"मैं ओहारा की बेहतरीन सेविका हूं तभी ओहारा मुझे प्यार करता है। रात तो मेरी ही होगी मोरगा।"
"ये बात तू ओहारा से क्यों नहीं पूछ लेती?"
"मुझे क्या जरूरत है पूछने की। ओहारा मुझे ही पसंद करता है।" दोती ने मुंह बनाकर कहा।
"इसका फैसला तो रात को ही होगा।"
पिंजरा काफी सिकुड़ आया था।
सोमाथ बेचैन दिख रहा था कि वो कुछ कर नहीं पा रहा।
"डुमरा। तोखा की व्याकुल आवाज कानों में पड़ी—"मुझे तो तेरी मौत का खतरा दिख रहा है।"
डुमरा चुप रहा।

"तू अपनी सहायक शक्तियों से बात क्यों नहीं करता?" तोखा ने पुनः कहा।

"शक्तियां यकीनन सब देख रही हैं। वो मेरे बचाव के लिए जरूर कुछ करेंगी।" डुमरा बोला।

"ये तेरा वहम भी हो सकता है। तू सहायक शक्तियों से बात कर।"

पर डुमरा खामोश रहा। उसने किसी से बात नहीं की।

पिंजरे का सिकुड़ना जारी था।

अब तक पिंजरा आधा सिकुड़ चुका था। ज्यादा वक्त नहीं बचा था। फासले पर खड़े ओहारा, दोती और मोरगा की चमक भरी निगाह सिकुड़ते पिंजरे पर थी।

"सहायक शक्तियों से बात कर डुमरा।" तोखा ने पुनः कहा।

"वो स्वयं ही मेरे लिए कुछ करेंगी।"

"ये भ्रम है तेरा। जब तक तू उनसे सहायता के लिए नहीं कहेगा, आगे क्यों आएंगी?"

"वो नर्मदिल हैं। वो जरूर सामने आएंगी। पहले भी कई बार शक्तियां आ चुकी हैं सहायता करने को।"

"परंतु तू क्यों नहीं, उन्हें सहायता के लिए पुकारता?"

"शक्तियां सब देख रही हैं। वो सब कुछ जानती हैं।" डुमरा ने कहा।

"इस बार बात दूसरी है वजू और सलूरा तेरा साथ देने से इंकार कर चुके हैं।"

"वो दिखावा कर रहे हैं। जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है।"

"डुमरा—तुम...।"

"तू परेशान क्यों होता है तोखा?"

"तेरी मौत मेरे को बहुत दुख देगी। ज्यादा वक्त नहीं बचा। पिंजरे की सलाखें तेरे को पीसकर तेरी जान ले लेंगी।"

डुमरा की नजरें पिंजरे की सलाखों पर गईं जो कांपती-थरथराती सिकुड़ती जा रही थीं।

"हम बच नहीं सकते डुमरा।" सोमाथ ने पूछा।

"तेरे को भी मौत का डर सताने लगा।" डुमरा ने मुस्कराकर सोमाथ को देखा।

"मेरी मौत तो हो ही नहीं सकती। मैं तो मशीनी हूं। मशीन खराब हो गई तो महापंडित फिर से मेरा निर्माण कर देगा। मैं तो आजाद होने के बारे में सोच रहा हूं। इन सलाखों पर मेरा जोर नहीं चल रहा।"

"चलेगा भी नहीं।"

"क्या मतलब?"

"ये सब ताकतों का खेल है। ताकतों की तरफ से वार है ये मेरे लिए। ताकतों ने इस पिंजरे का निर्माण किया है। इस पर जोर नहीं चल सकता। ताकतों का मुकाबला सिर्फ शक्तियां ही कर सकती हैं।"

"तेरे पास तो शक्तियां हैं डुमरा। उन्हें आजमा।"

"शक्तियां अपना काम जरूर करेंगी।"

"पर तूने तो अपनी शक्तियों को बुलाया भी नहीं।"

"ये जिद है मेरी।"

"मैं समझा नहीं।"

"बड़ी शक्तियां वजू और सलूरा मेरे से इस बात को लेकर नाराज हैं कि पांच सौ साल पहले मैंने जब खुंबरी को श्राप दिया तो तब उनसे राय क्यों नहीं ली? (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **'बबूसा का चक्रव्यूह'**) अपनी मर्जी क्यों की। अब खुंबरी पांच सौ सालों के बाद श्राप पूर्ण करके वापस सदूर पर लौटी तो वजू और सलूरा ने खुंबरी से टकराव की स्थिति में मेरा साथ देने से इंकार कर दिया। परंतु उन्हें पल-पल की खबर है। मैं भी देखता हूं कि वो मुझे बचाती हैं कि नहीं।"

"देखने-देखने में तुम्हारी जान चली जाएगी।"

"शक्तियां डुमरा को खोना पसंद नहीं करेंगी।" डुमरा ने कहा।

"तुम्हारा मतलब कि वो तुम्हें जरूर बचाने आएंगी।"

"हां।"

"मेरा तो कहना है कि जो शक्तियां तुम्हारे पास हैं उन्हें इस्तेमाल करो।" सोमाथ ने कहा।

तभी ओहारा की आवाज कानों में पड़ी। वो कह रहा था।

"मैंने तो सोचा था कि तुम खुद को बचाने की कोशिश में शक्तियों की लाईन लगा दोगे यहां।"

"ये तुम्हारा मामूली वार है।" डुमरा ने कहा—"इससे बचने के लिए मुझे शक्तियों की जरूरत नहीं।"

"ये मामूली वार नहीं है। तुम्हारी शक्तियां भी तुम्हें नहीं बचा सकतीं इस वार से।"

जवाब में डुमरा ने मुस्कराकर ओहारा को देखा।

उसी पल तोखा की आवाज कानों में पड़ी।

"डुमरा। कोई संदेश आया है। मैं कुछ ही देर में वापस लौटता हूं।"

अगले ही क्षण डुमरा को अपने कंधे पर से भार हल्का होता महसूस हुआ।

"मैंने बहुत सोच-समझकर इस वार को तैयार किया है। अब तुम मरने जा रहे हो। सिकुड़ता हुआ पिंजरा तुम्हे अपने बीच भींच लेगा और तड़प-तड़पकर तुम अपनी जान गंवा दोगे।" ओहारा ने हंसते हुए कहा।

"तुम ये क्यों सोचते हो कि शक्तियां मेरी जान जाने देंगी।"

"तुम्हारी कोई भी शक्ति मेरे इस वार का मुकाबला नहीं कर सकती।"

डुमरा ने सिर हिलाया। कहा कुछ नहीं।

"ओहारा।" मोरगा कह उठी—"रात को डुमरा की मौत का जश्न पक्का होगा न?"

"जरूर होगा मोरगा।"

"जश्न में कारू तुम्हें मैं ही पिलाऊंगी।"

"जरूर पिलाना मोरगा। आज मैं डुमरा की मौत की खुशी में जी भर कर पीऊंगा।"

"तुम्हें कारू मैं पिलाऊंगी ओहारा। मैं तुम्हारी सबसे अच्छी सेविका हूं।" दोती कह उठी।

"मैं भी तो सेवा करती हूं।" मोरगा बोली।

"तुम दोनों मुझे कारू पिलाना।" ओहारा डुमरा पर नजरें टिकाए था।

"और रात को तुम्हारे साथ सोएगा कौन?" बोली दोती।

"इसका फैसला डुमरा की मौत के बाद कर लेना।" ओहारा ने कहा।

पिंजरा अब और भी तंग हो चुका था। अब बांहें सीधा करने पर हाथ सलाखों से टकराने लगे थे।

सोमाथ ने सलाखों को थामकर भरपूर जोर पुनः लगाया।

लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

"डुमरा।" सोमाथ बोला—"मुझे अब तुम्हारी चिंता होने लगी है।"

"पर मुझे कोई चिंता नहीं है।" डुमरा का स्वर शांत था।

पिंजरे के नीचे के सरिए जो जमीन में धंसे पड़े थे। पिंजरे के तंग होने की वजह से वहां से जमीन कट रही थी और गहरी लकीरें जमीन पर दिख रही थीं।

"वक्त कम रह गया है।" सोमाथ बोला।

"इतना वक्त शक्तियों के लिए बहुत ज्यादा है।"

"पर तुम तो खामोश खड़े हो। शक्तियां तो मुझे नजर ही नहीं आ रहीं।"

डुमरा ने सोमाथ को देखा और मुस्कराकर रह गया।

"तुम बिना वजह मुस्करा रहे हो।"

तभी डुमरा को अपने कंधे पर किसी के आ बैठने का एहसास हुआ।

जाना मुमकिन नहीं।" ओहारा ने हंसकर कहा—"मेरे वारों से बचकर दिखा।"

"ये इसी तरह बचता रहा तो शाम को इसकी मौत का जश्न कैसे होगा?" मोरगा कह उठी।

"बेशक ये मर जाए। पर जश्न न ही हो तो अच्छा है।" दोती ने गहरी सांस ली।

"क्यों?" मोरगा ने तीखी निगाहों से उसे देखा।

"कम-से-कम तू तो ओहारा को कारू नहीं पिला सकेगी और रात ओहारा के साथ सोने का तेरा सपना भी पूरा नहीं होगा।"

"देखना।" मोरगा ने तीखे स्वर में कहा—"जश्न तो आज होगा ही।"

"पर तू ओहारा को कारू नहीं पिला सकेगी। मैं ओहारा के कान भर दूंगी।" दोती ने गर्दन हिलाकर कहा।

"बहुत नीच विचार हैं तेरे।"

"नीच विचार तो तेरे हैं जो मुझे पीछे करके तू ओहारा को कारू पिलाने की सोच रही है।"

"ओहारा से पूछ, वो मेरे को पसंद करने लगा है।"

"ऐसा तो ओहारा ने कुछ भी नहीं कहा।"

"तेरे को समझ नहीं आएगी। पर मैंने ओहारा के चेहरे से ये बात पहचान ली है।" मोरगा ने कहा।

दोती अजीब-से अंदाज में मुस्कराकर बोली।

"दोती नाम है मेरा। मेरे रास्ते में आएगी तो तेरा पत्ता साफ कर दूंगी। संभल जा।"

डुमरा की निगाह ओहारा पर टिकी थी।

ओहारा व्यंग भरी निगाहों से उसे देख रहा था।

डुमरा ने आसपास देखा। सब ठीक नजर आया।

"सोमाथ।" डुमरा गम्भीर स्वर में कह उठा—"तू मेरे पास से दूर खड़ा हो जा।"

"क्यों?"

"ओहारा का अगला वार कभी भी हो सकता है। तेरा, मेरे पास रहना ठीक नहीं।"

"मैं किसी बात से डरता नहीं।"

"बात डरने की नहीं, समझदारी की है। तू मुसीबत से दूर रहेगा तो मेरी सहायता कर सकेगा।"

"तेरे को मेरी सहायता की जरूरत पड़ेगी?"

"पड़ भी सकती है।"

सोमाथ के चेहरे पर क्षणिक सोच के भाव उभरे फिर कह उठा।

"अच्छी बात है, मैं तुमसे दूर जाकर खड़ा हो जाता हूं।" कहकर सोमाथ, डुमरा से पीछे हट गया।

डुमरा की निगाह पुनः हर तरफ गई।

सब ठीक नजर आया उसे।

"ओहारा के अगले वार के लिए तैयार रह डुमरा।" तोखा की आवाज कानों में पड़ी।

"मैं तैयार हूं।" डुमरा ने शक्तियों वाले लॉकेट को पकड़ रखा था।

"मामूली वार नहीं होगा ओहारा की तरफ से। ओहारा शैतान है। इस बार तैयारी से सामने आया है।"

"वजू और सलूरा ओहारा को मुंहतोड़ जवाब देंगे।"

"मुझे लगता है बड़ी शक्तियों को तुम्हारी चिंता है। तभी तो सलूरा तेरी सहायता को आगे आ गया।"

"बड़ी शक्तियां नर्मदिल हैं। दिखावे को वो नाराज जरूर हो जाती हैं, परंतु वो जानती हैं कि डुमरा लोगों को भला करता है, ऐसे में वो मुझे मुसीबत से जरूर बचाती रहेंगी। मुझे उन पर पूरा भरोसा है।"

"अब मुझे भी है।"

"होकाक ने कोई नई खबर दी?"

"उसके बाद वो वापस नहीं लौटा। खुंबरी के ठिकाने का हाल देख रहा होगा। वहां की घटनाएं भी तो दिलचस्पी से कम नहीं हैं। दोलाम, खुंबरी को पाना चाहता है, जबकि खुंबरी, जगमोहन से प्यार करने लगी है। क्रोध में दोलाम खुंबरी का दुश्मन बन गया है, उधर खुंबरी दोलाम को जान से मार देना चाहती है। वो बबूसा से भी कह चुकी है कि दोलाम को मार दे तो उसके सब साथियों को आजाद कर दिया जाएगा। खुंबरी के ठिकाने का माहौल तनाव से भर चुका है। कभी भी कुछ भी हो सकता है। हो सकता है दोलाम, खुंबरी की जान ले ले।"

"दोलाम ऐसा नहीं करेगा। दोलाम और रानी ताशा में एक सौदा हुआ है। भूल गए।"

"याद है।"

"दोलाम रानी ताशा को मौका देगा कि वो अपने हाथों से खुंबरी को मार सके। ऐसा हो जाने पर रानी ताशा अपनी खुशी से सदूर के राजा की कुर्सी दोलाम के हवाले कर देगी।" डुमरा ने कहा।

"दोलाम सब कुछ बिना झगड़े के निबटाना चाहता है। राजा बनने की

कोशिश में लोगों पर जुल्म ढा कर वो तुमसे दुश्मनी नहीं लेना चाहता। वो जानता है कि जनता को तंग किया तो तुम उसका जीना मुहाल कर दोगे। ताकतों का मालिक बनकर भी वो ताकतों का इस्तेमाल नहीं करना चाहता।"

"पर मैं उसे तब भी चैन से नहीं रहने दूंगा।"

"क्या मतलब?"

"मैं उसे तब तक सदूर का राजा नहीं बनने दूंगा, जब तक वो ताकतों को आजाद नहीं कर देता। ताकतें साथ होने पर ताकतें चुप नहीं बैठने वालीं। वो दोलाम को मजबूर करेंगी कि उनका इस्तेमाल करे और दोलाम को ऐसा करना पड़ेगा। इसलिए मैं दोलाम को सदूर का राजा तब बनने दूंगा जब वो ताकतों को आजाद कर देगा।"

"हो सकता है दोलाम तुम्हारी ये बात न माने।"

"वो नहीं मानेगा तो राजा नहीं बन पाएगा। मैं उसके लिए समस्या खड़ी करता रहूंगा। पर अभी इस मुद्दे पर बातें करना बेकार है क्योंकि ये भी सम्भव है कि खुंबरी ही रानी ताशा या दोलाम को मार दे। इस वक्त खुंबरी के ठिकाने पर हालात बुरे हैं।" डुमरा बोला।

"बबूसा भी वहां है। वो भी कुछ कर सकता है। चुप नहीं बैठने वाला वो।"

तभी डुमरा सतर्क हुआ।

उसने ओहारा को काले मोतियों के गुच्छे को हवा में उछालते और थामता देखा।

डुमरा जानता था कि उसका ऐसा करना, ताकतों को कुछ इशारा करना है।

"कुछ होने जा रहा है तोखा।" डुमरा के होंठों से निकला।

"कैसे पता...?"

"ओहारा ने हाथों में पकड़े मोतियों की माला को हवा में...।" डुमरा के शब्द अधूरे रह गए।

उसी पल डुमरा के पांवों के नीचे जमीन कांपती-सी महसूस हुई।

डुमरा चौंका। नीचे देखा तो जमीन को भुरभुरी होकर नीचे धंसते देखा। वो जमीन का थोड़ा-सा हिस्सा था जो भुरभुरा कर नीचे को धंस रहा था। आठ-दस फुट फौड़ा इतना ही लम्बा।

जमीन धीमे-धीमे धंस रही थी।

डुमरा लड़खड़ा उठा।

"डुमरा। सलूरा ने ये ही कहा था कि ऐसा होगा। उसने गड्ढे में बैठ जाने को कहा था।" तोखा की आवाज कानों में पड़ी।

धंसती जमीन के साथ डुमरा नीचे होता जा रहा था।

"कैसा वार करेगा ओहारा जो मुझे ऐसी सुरक्षा दी जा रही है।" डुमरा ने कहा।

"क्या मालूम। परंतु बड़ी शक्तियों को खतरे की आहट पहले ही मिल जाती है। परंतु वो किसी को कुछ बताती नहीं।"

डुमरा को गड्ढे में धंसते पाकर सोमाथ की आंखें सिकुड़ीं।

"ये क्या हो रहा है डुमरा?" सोमाथ ऊंचे स्वर में बोला।

"सब ठीक है। तुम फिक्र मत करो।"

ओहारा होंठ भिंचे ये सब देख रहा था।

दोती फौरन ओहारा के पास पहुंचकर बोली।

"डुमरा जमीन में धंस रहा है। उसकी शक्तियां उसकी सहायता कर रही हैं। वो मरेगा नहीं।"

"डुमरा बच नहीं सकता।" ओहारा होंठ भींचकर बोला।

"वो जमीन में धंस गया तो बच जाएगा।"

"डुमरा अब नहीं बचने वाला दोती। क्या तेरे को मेरी ताकत पर शक है।"

"कैसी बातें कर रहा है ओहारा। तेरी ताकतों को मुझसे ज्यादा और कौन जानता है, परंतु डुमरा...।"

उसी पल मोरगा पास आती बोली।

"तुम डुमरा पर कैसा वार करने जा रहे हो ओहारा।"

"अभी देख लेना। वार हो चुका है।" ओहारा के चेहरे पर जहरीली मुस्कान उभरी।

"डुमरा जमीन में क्यों धंस रहा है?"

"वार से बचने के लिए।" दोती बोली।

"तू जानती है कैसा वार होने वाला है?"

"सब जानती हूं। मैंने ही तो ओहारा के साथ मिलकर वारों की कड़ी तैयार की है।" दोती ने कहा।

"तो मुझे वार के बारे में बता?"

"तू तो रात ओहारा को कारू पिलाने की सोच रही है। मैं तुझे वार के बारे में क्यों बताऊं?"

"जलती है तू मुझसे।"

"मैं तेरी परवाह नहीं करती मोरगा। देखना मैं रात को जश्न ही नहीं होने दूंगी।"

"तू ओहारा को नहीं रोक सकती...।"

"रोक दूंगी। ओहारा मेरी बात जरूर मानता है।"

"पर अब ओहारा मुझे पसंद करने लगा है। तभी तो मेरे हाथ से रात के जश्न में कारू पीएगा। उसके बाद मेरे साथ ही सोएगा।" मोरगा ने मुंह बनाकर कहा—"मैं तेरे से ज्यादा सुंदर और जवान हूं।"

"सुंदर और जवान होने से कुछ नहीं होता। औरत में औरत पन भी होना चाहिए और मुझे पता है सोते हुए ओहारा को क्या-क्या चाहिए।"

"वो तो एक-दो बार में मुझे भी पता चल जाएगा।"

"सपने मत देख। ओहारा सिर्फ मुझे पसंद करता...।"

गड्ढा पांच फुट नीचे जाकर थम गया।

डुमरा आधा गड्ढे में और आधा बाहर नजर आ रहा था। गड्ढा करीब दस फुट लम्बा चौड़ा था।

"इसमें बैठ जा डुमरा।" तोखा की आवाज कानों में पड़ी।

"लेकिन ये सब क्या हो...।"

तभी तड़-तड़ की अजीब-सी आवाज उभरी।

"नीचे बैठ डुमरा। सिर पर कुछ है।" तोखा कानों के पास चिल्लाया।

तोखा के शब्द पूरे होने से पहले ही डुमरा ने खुद को नीचे गिरा लिया था और उस गड्ढे में लेटता चला गया। उसके बाद उसे ये देखने का भी मौका नहीं मिला कि कैसा वार उस पर हुआ है। धप्प की आवाज उभरी। जमीन जैसे जोरों से कांप उठी और उसके बाद अंधकार छा गया। कुछ भी नहीं दिखा उसे।

▭ ▭

समतल आकार का वो बड़ा-सा पत्थर था। उसका जो हिस्सा धरती से टकराया था, वो एकदम सपाट और पंद्रह-बीस फुट के घेरे में था किनारों की तरफ से टूटा-फूटा था। ऊपर से जैसे पत्थर का कूबड़ निकला हुआ था। वो किसी पहाड़ी चट्टान से अलग हुआ पत्थर का टुकड़ा लगता था जो कि आसमान की तरफ से आया था। यकीनन ओहारा का इरादा डुमरा को इस पत्थर से कुचल देने का था। ये ओहारा जैसी बड़ी ताकत का वार था डुमरा पर।

अगर डुमरा उस गड्ढे जैसी जगह में न समा जाता तो उसी पल कुचला गया होता। अब भी डुमरा की खैर नहीं थी। पता नहीं गड्ढे में वो जिंदा रहा था या मर गया था। जहां डुमरा था, वहां बड़ा-सा पत्थर पड़ा हुआ था।

एकएक ओहारा ठहाका लगाकर हंस पड़ा था।

एक तरफ खड़े सोमाथ के चेहरे पर व्याकुलता के भाव आ गए थे।

दोती और मोरगा के चेहरों पर प्रसन्नता से भरी चमक आ गई थी।

"अब तक तो मर गया होगा डुमरा।" ओहारा हंसते हुए कह उठा—"मेरे वार से बचना मुश्किल नहीं।"

"पर वो तो गड्ढे में था।" मोरगा कह उठी।

"उससे क्या फर्क पड़ता है।" ओहारा कड़वे स्वर में बोला—"इतना भारी पत्थर वो हटा नहीं सकता। गड्ढे में ही जान गंवा देगा। जो ओहारा से टक्कर लेगा, उसका ये ही हाल होगा।"

"तो क्या अब शक्तियां उसे बचा नहीं सकतीं।" मोरगा ने पूछा।

"किसी भी हाल में नहीं। इतना भारी पत्थर शक्तियां नहीं हटा सकतीं। वैसे भी कुछ ही देर का वक्त बचा है, अगर डुमरा नहीं मरा तो दम घुटने से अभी मर जाएगा। दम घुट रहा होगा उसका। तड़प रहा होगा।" ओहारा की आंखों में तीव्र चमक थी।

"तो डुमरा की मौत का जश्न आज रात जरूर होगा।" मोरगा खुशी से बोली।

"जरूर होगा।"

मोरगा ने दोती को इस तरह देखा, जैसे कह रही हो, आज रात तो कारू पिलाऊंगी ओहारा को।

"ओहारा हमेशा की तरह आज रात भी मेरे हाथों ही कारू पीएगा।" दोती कह उठी—"मैंने ठीक कहा न ओहारा? डुमरा पर इन वारों की कड़ी तैयार करने में मैंने तुम्हारे साथ कितनी मेहनत की थी।"

"तुम तो मेरी सबसे खास हो।"

"मैं कुछ भी नहीं?" मोरगा जल्दी से कह उठी।

"तुम भी बढ़िया काम करती हो।"

"तो कारू आज मैं पिलाऊंगी तुम्हें।"

"दोती से बात करो। उसे एतराज नहीं तो तुम ही रात मुझे कारू पिलाना।"

"इसे क्यों न एतराज होगा।" मोरगा ने कटाक्ष किया—"तुम क्या दोती से डरते हो जो...।"

"दोती मेरी ताकतों में भरपूर हिस्सा लेती है। ये बहुत आगे तक जा चुकी है और तुम काफी पीछे हो मोरगा। अगर मुझे हक से पाना है तो तुम्हें अपने काम में बहुत मेहनत करके आगे जाना होगा।"

मोरगा का चेहरा उतरा गया।

"हिम्मत मत हारो।" दोती ने कहा—"खूब मेहनत करो। एक दिन तुम मेरे से भी आगे निकल जाओगी।"

"ठीक है। डुमरा तो मारा गया।" मोरगा ने कहा—"अब यहां से चलें?"

"चलना चाहिए।" दोती ने ओहारा को देखा।

ओहारा ने उसी पल दायां हाथ हवा में लहराया और कुछ बड़बड़ा उठा।

अगले ही पल ठीक सामने हवा में ही एक तस्वीर उभर आई। अस्पष्ट-सी अंधेरे में डूबी तस्वीर जोकि कुछ हिलती-सी लग रही थी। ओहारा आंखें सिकोड़े कई पलों तक उस हिलती तस्वीर को देखता रहा फिर बोला।

"अभी जिंदा है।"

"ये किसकी तस्वीर है?" मोरगा कह उठी।

"पत्थर के नीचे गड्ढे में पड़े डुमरा की तस्वीर है।" दोती बोली।

"ओह।" मोरगा ने गहरी सांस ली—"अभी तो जिंदा है ये।"

"मर जाएगा।" ओहारा ने कठोर स्वर में कहा—"आज डुमरा की मौत का जश्न जरूर होगा।"

तभी तस्वीर रोशन हो उठी।

अंधेरे की वजह से डुमरा अस्पष्ट नजर आ रहा था, अब वो रोशनी में पूरी तरह स्पष्ट दिखा।

"डुमरा ने रोशनी का इंतजाम कर लिया है।" मोरगा बोली।

"डुमरा की शक्तियां अभी भी काम कर रही हैं।" दोती ने कहा।

"ये कब मरेगा।" व्याकुल-सी मोरगा कह उठी।

"बहुत जल्द।" ओहारा का स्वर कठोर हो गया—"ज्यादा देर जिंदा नहीं रहेगा।"

"तो हम चलें ओहारा।" दोती ने ओहारा को देखा।

"डुमरा की मौत के बाद ही यहां से जाएंगे। खुंबरी को पक्की खबर देनी है कि डुमरा की जान चली गई है।" इसके साथ ही ओहारा ने हाथ को हवा में लहराया तो हवा में लटकती नजर आती तस्वीर गायब हो गई।

सोमाथ पत्थर के पास पहुंचा और झुककर उसे धकेलने की चेष्टा की।

परंतु सोमाथ के लिए ये मजाक-सा हो गया। पत्थर हिला तक भी नहीं। सोमाथ की आंखों में चिंता झलक उठी। नजरें पत्थर पर ही थीं कि दोती की हंसी आवाज कानों में पड़ी।

"तुम कृत्रिम इंसान, इतने बहादुर नहीं हो कि इस पत्थर को हटा दो। सौ आदमी भी इसे नहीं हटा सकते।"

सोमाथ सीधा खड़ा हुआ और दोती को देखते मुस्कराकर बोला।

"मैं जानना चाहता था कि पत्थर कितना भारी है।"

"अच्छा।" दोती व्यंग से बोली—"मैं समझी तुम पत्थर को हटा रहे हो।"

"क्या लगता है कि डुमरा मर गया होगा।" सोमाथ ने शांत स्वर में पूछा।

"तुम क्या सोचते हो कि वो बच जाएगा।" दोती ने गर्व भरे स्वर में कहा—"इतने भारी पत्थर को हटाकर वो गड्ढे के भीतर से नहीं निकल सकता। कुछ ही देर में दम तोड़ देगा। बेवकूफ खुंबरी से दुश्मनी लेता था। बच कैसे सकता है।"

सोमाथ ने ऊपर पेड़ों और आसमान की तरफ देखा फिर दोती से कहा।

"इतना बड़ा और भारी पत्थर आसमान से कैसे गिरा?"

"ये ताकतों का खेल है। उनके लिए मामूली बात है ये।" मोरगा ने जवाब दिया—"ओहारा ने ताकतों को हुक्म दिया कि ऐसा पत्थर डुमरा पर फेंकना है कि वो कुचलकर मर जाए। ताकतों ने ऐसा ही किया।"

"तो ताकतें ये पत्थर हटा भी सकती हैं?" सोमाथ ने पूछा।

"बेशक।"

"डुमरा मर जाएगा। ताकतों से कहकर पत्थर हटा दो।"

मोरगा हंस पड़ी।

ओहारा मुस्कराया।

"डुमरा यहां खुंबरी को मारने आया था। साथ में तुम सबको भी लाया था। डुमरा ने खुंबरी को श्राप देकर पांच सौ सालों के लिए सदूर से बाहर निकाल दिया था और तुम कहते हो कि डुमरा को बचा लें।" दोती तीखे स्वर में बोली—"डुमरा को मौत देना ही तो हमारा लक्ष्य है। खुंबरी बहुत खुश होगी, डुमरा की मौत के बारे में सुन कर।"

सोमाथ ने झुककर पुनः पत्थर को हिलाना चाहा।

लेकिन टनों भारी पत्थर कहां हिलता।

"कृत्रिम इंसान तू क्यों परेशान हो रहा है डुमरा के लिए?"

"मुझे डुमरा का मरना पसंद नहीं।"

"तेरे में भावनाएं हैं?"

"मेरे में हर वो चीज है जो इंसानों में होती है। मैं हर चीज समझ और महसूस कर सकता हूं।" सोमाथ बोला।

"फिर तो तेरे को डुमरा की मौत का दुख होगा। वे अब पत्थर के नीचे दबकर मरने ही वाला होगा।"

सोमाथ असहाय-सा खामोश खड़ा रहा।

दोती ने ओहारा से कहा।

"देखो तो। अब तक तो डुमरा तड़प कर मर गया होगा।"

ओहारा ने अपनी हाथ हवा में लहराया तो एकाएक सामने तस्वीर उभर आई।

तेज रोशनी में डुमरा दिखा। उसके होंठ हिल रहे थे। जैसे किसी से बातें कर रहा हो।

ओहारा कड़वी मुस्कान लिए हवा में लटकी तस्वीर पर नजरें टिकाए था।

"ये तो अभी तक जिंदा है।" मोरगा कह उठी।

"मर जाएगा।" ओहारा की मुस्कान गहरी हो गई।

"लगता तो नहीं।" दोती के माथे पर बल नजर आने लगे थे।

ओहारा ने हाथ घुमाया तो तस्वीर गायब हो गई।

"कुछ देर में मर जाएगा। वो अपनी शक्तियों से बातें कर रहा है। लेकिन कोई भी शक्ति उसे बचा नहीं सकती। डुमरा को मरना ही होगा। ओहारा के हाथों ही डुमरा का मरना लिखा था।" ओहारा विश्वास भरे स्वर में कह उठा।

▭ ▭

डुमरा के लिए वो एक मिनट का वक्त भूचाल जैसा था। गड्ढे में गिरते ही ऊपर, सतह पर भारी पत्थर जबर्दस्त धमाके के साथ बिछ गया और जमीन कांपने के साथ ही वो अंधेरे में गुम हो गया था। अंधेरा भी ऐसा कि हाथ को हाथ दिखाई देना सम्भव नहीं था। कई लम्बे पलों तक वो जमीन में कम्पन महसूस करता रहा था।

कई क्षण गहरी खामोशी में बीत गए।

डुमरा गड्ढे में पड़ा सोचने लगा कि अगर ठीक वक्त पर गड्ढा उसे न मिला होता तो इस पत्थर ने उसे पीस देना था। जान चली जाती। किस कदर खामोशी के साथ इतना बड़ा पत्थर आसमान से आया था कि उसे आभास भी नहीं हो सका था। ओहारा ने बहुत ही जबर्दस्त वार किया था उस पर। पहले पिंजरे से जकड़कर उसकी जान ले लेना चाहता था, जब वो वार रोक दिया गया तो दूसरे वार के रूप में बहुत बड़े पत्थर से उसकी जान लेने की कोशिश की, परंतु शक्तियों ने ठीक समय पर उसके लिए गड्ढा तैयार करके उसे बचा लिया। बड़ी शक्तियां पहले ही जान गईं थीं कि अब कौन-सा वार होने वाला है।

डुमरा ने सोमाथ के बारे में सोचा?

क्या वो बच गया होगा?

हां। उसे तो उसने पहले ही सतर्कतावश दूर कर दिया था। वो बच गया होगा।

एकाएक डुमरा को दम घुटता महसूस हुआ। उसने अपने गले में पड़ा पवित्र शक्तियों वाला लॉकेट टिटोला। फौरन ही लॉकेट हाथ में आया तो उसे मुट्ठी में दबा लिया। ऐसा करते ही घुटते दम को राहत मिलने लगी। गहरे अंधेरे में कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। वो जानता था कि वो कप जैसे गड्ढे में है, जिसके ऊपर समतल जैसा भारी पत्थर बिछ चुका है जिसे कि हटा पाना सम्भव ही नहीं है।

तो क्या वो यहीं फंसा रहेगा। पवित्र शक्तियों वाले लॉकेट के माध्यम से, दम घुटने से वो नहीं मरेगा। शक्तियां उसकी सांसों को संभाले रखेंगी। परंतु यहां से निकलेगा कैसे? वो तो...।

"डुमरा।" तभी उसके कानों में तोखा की आवाज पड़ी।

तोखा? ओह, तोखा को तो वो भूल ही गया था। बातें करने के लिए उसके पास तोखा है।

"तू ठीक है तोखा?" डुमरा बोला।

"मुझे क्या होना है। मैं तो तुम्हारे कंधे पर सवार हूं।" तोखा के स्वर में चिंता थी—"पर अब हम क्या करेंगे। बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। मैं भी कहीं नहीं जा सकता।"

"मैं भी ये ही सोच रहा हूं।"

"हम यहां से निकलने का कोई प्रयास नहीं कर सकते?" तोखा का स्वर कानों में पड़ा।

"रोशनी तो कर।"

"ओह, मै भूल ही गया।" कहने के साथ ही डुमरा ने हाथ में पकड़े लॉकेट में पड़े एक मोती को दबाया। जो कि दबाते ही थोड़ा भीतर धंसा और एकाएक लॉकेट से तीव्र प्रकाश निकलने लगा।

वो सारी जगह एकाएक रोशन हो गई।

डुमरा ने देखा, वो कुछ खुला गड्ढा था। उसमें लेटने-बैठने की सुविधा थी। परंतु हर तरफ मिट्टी की दीवार ही नजर आ रही थी। निकलने का कोई रास्ता होना सम्भव ही नहीं था।

"ये तो फंस गए डुमरा।" तोखा ने कहा।

"बड़ी शक्तियां ही कुछ करेंगी।" डुमरा रोशनी में नजरें दौड़ाता कह उठा।

"क्या वो ये पत्थर को हटा देंगी?"

"जो उन्हें ठीक लगेगा। वो ही करेंगी।"

"बड़ी शक्तियों को ये तो पता ही होगा कि तुम्हारे साथ क्या हो रहा है।"

"पूरी खबर होगी उन्हें।"

"क्या पता वो ऊपर पड़ा पत्थर न हटा सकें।"

"ताकतें अगर पत्थर गिरा सकती हैं तो शक्तियां पत्थर हटा भी सकती हैं।"

"इतनी ताकत है बड़ी शक्तियों में?"

"इससे भी ज्यादा। तुम उनके बारे में जानते ही क्या हो।" डुमरा ने विश्वास के साथ कहा।

"अब तक शक्तियों को कुछ कर देना चाहिए था। तुम्हें सांसें मिल रही हैं?"

"पूरी तरह। मैंने पवित्र शक्तियों वाला लॉकेट थाम रखा है। मुझे कुछ नहीं होगा।"

"ओहारा तो खुश हो रहा होगा कि तुम मर गए।"

"ओहारा काफी ताकत रखता है जो उसने इतना बड़ा वार कर दिया।" डुमरा बोला।

"उसे खुश हो लेने दो। अब हम क्या करें?"

"इंतजार करो और देखो कि पवित्र शक्तियां हमें कैसे बचाती हैं।" डुमरा ने कहा और गड्ढे की दीवार से टेक लगाकर लेट गया।

"मुझे तो समझ में नहीं आता कि शक्तियां तुम्हें यहां से कैसे बाहर निकाल सकती हैं। मुमकिन नहीं दिखता मुझे।"

▭ ▭

उस जगह से डेढ़ सौ कदम दूर जंगल में शांति छाई हुई थी। धूप पेड़ों से छनकर जमीन पर कहीं-कहीं पड़ रही थी। हवा न के बराबर थी। गर्मी का एहसास हो रहा था। एक पेड़ की टहनी नीचे को झुकी, जमीन के करीब पहुंची हुई थी। उस पर दस-बारह चौड़े-चौड़े पत्ते थे। टहनी के किनारे का पत्ता जैसे जमीन को छूता-सा लग रहा था। अचानक ही उस पत्ते का आकार बढ़ने लगा। लम्बाई-चौड़ाई फैलती चली गई। देखते-ही-देखते वो छः फुट लम्बा और दो फुट चौड़ा हो गया और टहनी से अलग होकर जमीन पर गिर पड़ा।

दो पल भी नहीं बीते कि उस लम्बे-चौड़े पत्ते का रूप बदला

देखते-ही-देखते वो अजीब-से जानवर में परिवर्तित होता गया

वो सच में अजीब-सा जानवर था। छः फुट लम्बा। सेहतमंद। तगड़ा उसकी पूंछ नहीं थी। उसकी चारों टांगों के पंजों के नाखून छुरियों की तरह थे एक पंजा भी किसी को मारे तो उसका सीना फाड़ दे। तीन-तीन इंच लम्बे दांत उसके मुंह से झांक रहे थे। जो कि बेहद नुकीले थे। नाक की जगह दो छेद नजर आ रहे थे। चार आंखें थीं उसकी। दो तो सामान्य ढंग

से सामने की तरफ थीं, अन्य दो कानों वाले हिस्से पर दाएं-बाएं दिखाई दे रही थीं। कान नजर नहीं आ रहे थे। कानों की जगह कहीं छेद हो तो वो नहीं दिख रहे थे। कभी वो शेर की तरह लगता तो कभी चीते की तरह। कभी लोमड़ी की तरह तो कभी सियार की तरह।

उसका रूप किसी से भी नहीं मिल रहा था। रंग उसका पीला, मटमैला था।

उस जानवर ने आगे-पीछे के पंजों को फैलाकर अंगड़ाई ली और उस तरफ देखा जहां डुमरा पत्थर के नीचे दबा था। कई पलों तक वो इसी स्थिति में रहा फिर आराम से एक तरफ बढ़ा। इस प्रकार चलते हुए उसकी मांसपेशियों की हरकत स्पष्ट झलक रही थी। उसका रंग-रूप और आकार खौफ पैदा कर रहा था।

एक जगह वो ठिठका और पंजों के छुरियों जैसे नाखूनों से जमीन खोदने लगा। वो नाखून किसी औजार की तरह काम कर रहे थे और गड्ढा तैयार होता जा रहा था। उसके आगे के दोनों पंजे बेहद तेज रफ्तार से चल रहे थे। उस जानवर के शरीर का हर हिस्सा बेहद तेजी से हरकत कर रहा था।

▭ ▭

ओहारा ने अपना हाथ हवा में लहराया तो हवा में डुमरा की स्थिति की तस्वीर नजर आने लगी। ये देखकर ओहारा के माथे पर बल पड़ गए कि डुमरा निश्चिंत-सा गड्ढे में टेक लगाए बैठा है। उसने गले में पड़ा लॉकेट थाम रखा है। गड्ढे में पर्याप्त रोशनी हुई पड़ी है।

"ये क्या ओहारा। ये तो अभी तक जिंदा है।" दोती कह उठी।

"डुमरा शक्तियों का सहारा ले रहा है।" ओहारा शब्दों को चबाकर कह उठा।

"वो कैसे?"

"अब तक। इसका दम घुट जाना चाहिए था। ये जिंदा न रहता। परंतु इसे शक्तियों का साथ मिल गया है। ये पर्याप्त ढंग से सांसें ले रहा है। तभी तो निश्चिंत बैठा है।" ओहारा का स्वर सख्त था।

"डुमरा के पास शक्तियां हैं।" मोरगा बोली—"ये बात हमें ध्यान रखनी चाहिए थीं।"

"लेकिन शक्तियां गड्ढे में उसका साथ कैसे दे सकती हैं?" दोती कहा।

"शक्तियां उसके पास पहुंच गई होंगी।"

"नहीं मोरगा।" ओहारा ने दृढ़ स्वर में कहा—"इस स्थिति में डुमरा

के पास शक्तियां नहीं पहुंच सकतीं। डुमरा बुरी तरह फंसा पड़ा है। उसके पास जो शक्तियां मौजूद हैं, उन्हीं को वो इस वक्त काम में ला सकता है।"

"कितनी शक्तियां होंगी डुमरा के पास?" दोती ने पूछा।

"काफी होंगी। वो खुंबरी को मारने के इरादे से जंगल में आया ।" ओहारा की निगाह तस्वीर पर थी।

"इस स्थिति में ओहारा को खाना मिल सकता है।"

"नहीं मिल सकता। ये काम तो बाहरी शक्तियां कर सकती हैं और वो डुमरा तक पहुंच नहीं सकतीं। बाहरी शक्तियों के पास इतना दम है कि वो पहाड़ के इस पत्थर को हटा सकें। परंतु ऐसा कर नहीं पाएंगी वो।"

"क्यों?"

"क्योंकि मेरी छोड़ी ताकतें उस पत्थर पर बैठी हैं। जब तक वो पत्थर को छोड़ती नहीं, तब तक शक्तियां पत्थर को हिला भी नहीं सकतीं। इस तरह ताकतों की मौजूदगी में, शक्तियां आगे नहीं बढ़ सकतीं। उन्होंने ऐसा किया तो ताकतों और शक्तियों में लड़ाई शुरू हो जाएगी और शक्तियां ऐसे वक्त में लड़ाई करना नहीं चाहेंगी।"

"शक्तियों को डुमरा की चिंता है?" मोरगा ने पूछा।

"शक्तियां डुमरा की चिंता जरूर करेंगी।" दोती बोली—"शक्तियां डुमरा के सहारे ही तो लोगों का भला करती हैं। कब से डुमरा शक्तियों से जुड़ा हुआ है। वो उसे आसानी से नहीं मरने देंगी।"

ओहारा ने हाथ हिलाया तो तस्वीर गायब हो गई।

"परंतु इस बार डुमरा को बचाना शक्तियों के लिए सम्भव नहीं लगता।" ओहारा ने कहा—"मेरे इस वार की काट नहीं होगी शक्तियों के पास। वो जरूर परेशान होंगी कि डुमरा को कैसे बचाया जाए।"

"तुमने कहा था कि डुमरा को बाहरी सहायता नहीं मिल सकती।" दोती बोली।

"हां।"

"तो डुमरा को खाने को कुछ नहीं मिलेगा और वो मर जाएगा।"

"शक्तियों को कम मत आंको।" ओहारा गम्भीर स्वर में कह उठा।

"तुम्हारा मतलब कि शक्तियां अभी भी डुमरा को बचाकर ले जा सकती हैं।"

"ऐसा सम्भव नहीं लगता, परंतु शंका मन में खड़ी हो ही गई है।"

"इस स्थिति में डुमरा पर ऐसा वार नहीं हो सकता कि वो मर जाए।" मोरगा ने कहा।

"अभी उस पर कोई वार नहीं हो सकता। मेरे खयाल में वो जान गंवा बैठेगा।"

"तो क्यों न हम यहां से चलें। डुमरा भूखा रहकर मर जाएगा।"

ओहारा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"मैं डुमरा की मौत देखकर ही जाऊंगा।" ओहारा बोला।

"डुमरा की शक्तियां उसे सांसें दे रही हैं। वरना अब तक तो मर ही गया होता।"

▭ ▭

"डुमरा। बहुत देर हो रही है।" तोखा की आवाज कानों पड़ी—"अभी तक कुछ हुआ नहीं।"

डुमरा ने कुछ नहीं कहा।

"क्या पता शक्तियां कुछ कर भी रही हैं या नहीं। तुम ऐसे ही मर गए तो?"

"शक्तियां अपना काम जरूर कर रही होंगी।"

"फिर इतनी देर क्यों हो रही है?"

"तुम इतने व्याकुल क्यों हो?"

"मैं तुम्हारे कंधे पर बैठा हूं। मुझे भी तो अपनी चिंता है। मैं भी बाहर नहीं निकल सकता।"

डुमरा मुस्करा उठा।

"अगर तुम मरे तो कैसे मरोगे? सांसें तो तुम्हें मिल रही हैं?"

"भूखे पेट रहने की वजह से मेरी मौत होगी।"

"ये तो बहुत बुरा होगा।"

"परंतु ऐसा कुछ भी नहीं होगा। शक्तियां मुझे मरने नहीं देंगी।"

"कहीं तुम्हारा भरोसा टूट न जाए।"

"ओहारा ने जबर्दस्त वार किया है मुझ पर। उसे बहुत ज्ञान है ताकतों का इस्तेमाल करने का।"

"मैं ठोरा के बारे में सोच रहा हूं जो कि खुंबरी की सबसे बड़ी ताकत है। मान लो ठोरा मैदान में आ जाता है तो तुम उसका मुकाबला नहीं कर सकोगे। ओहारा के पास इतनी ताकत है तो ठोरा तुम्हें कंपाकर रख देगा।"

"ठोरा सामने पड़ा तो बड़ी शक्तियां सामने आ खड़ी होंगी।" डुमरा बोला।

"पहले यहां से तो बचें।"

जानवर कहीं नजर नहीं आ रहा था। परंतु जहां से उसने पंजों नाखूनों जैसे चाकुओं से जमीन को खोदना शुरू किया था। वहां तीन फुट लम्बी-चौड़ी सुरंग का मुहाना नजर आ रहा था। स्पष्ट था कि जानवर सुरंग के भीतर था और जमीन को खोदते हुए, रास्ता बनाते आगे बढ़ा जा रहा था कि एकाएक जानवर उसी सुरंग जैसे रास्ते से बाहर निकला। वो मिट्टी में लिपटा हुआ था। अब उसने अगले पंजों से मिट्टी को भीतर से बाहर फेंकना शुरू कर दिया था। इस काम में वो पीछे वाले पंजों की भी सहायता ले रहा था। बहुत रफ्तार से वो जानवर ये काम कर रहा था।

काफी देर बीत जाने पर ओहारा ने अपना हाथ हवा में लहराया तो उसी पल डुमरा की तस्वीर सामने दिखने लगी। वो तेज रोशनी वाले गड्ढे में बैठा हुआ था।

ओहारा के चेहरे पर उखड़ेपन के भाव उभरे।

"ये तो वैसे का वैसा ही है।" मोरगा बोली—"इसे तो कुछ हुआ ही नहीं।"

"ओहारा।" दोती ने कहा—"इसके मरने के इंतजार में तो सारा दिन बीत जाएगा, फिर भी इसकी जान जल्दी जाने वाली नहीं। सांसें इसे मिल रही हैं। भूख से तो ये कई दिन लड़ सकता है।"

"जब तक ये मरेगा नहीं, मैं यहीं रहूंगा। इसकी मौत देखकर ही जाऊंगा।" ओहारा कह उठा।

"फिर रात के जश्न का क्या होगा?" मोरगा कह उठी।

"चुप कर। तुझे जश्न की पड़ी है।"

"क्यों न पड़े मुझे। आज मैंने ओहारा को कारू पिलानी है।" मोरगा ने मुंह बनाकर कहा।

एकाएक ओहारा गहरी-गहरी सांसें लेता इधर-उधर देखने लगा

ओहारा की बेचैनी देखकर दोती बोली।

"क्या बात है?"

"यहां कोई और भी है।"

"कोई और?"

"मैंने हवा के संग आती गंध को महसूस किया है। वो गंध ताकतों की नहीं है।" ओहारा सतर्क हो गया था।

"ताकतों की नहीं है, से तुम्हारा क्या मतलब?"

"मैंने जो गंध महसूस की हैं वैसी गंध शक्तियों की होती हैं।"

"ओह, तो ओहारा को बचाने शक्तियां आ गई हैं।" दोती चौंकी।

"शक्तियां पत्थर तो हटा नहीं सकतीं। उस पर ताकतें बैठी हैं।" मोरगा बोली।

"पर शक्तियां जरूर कुछ करेंगी।" ओहारा बोला—"सबके पास अपने रास्ते होते हैं।" कहने के साथ ही ओहारा ने हवा में मौजूद डुमरा की तस्वीर को देखा—"ओहारा बहुत निश्चिंत दिख रहा है। जरा भी बेचैन नहीं है।"

"इसका मतलब उसे पता होगा कि शक्तियां उसे बचाने आ गई हैं।" मोरगा की निगाह भी तस्वीर पर थी।

दोती की नजरें जंगल में हर तरफ घूम रही थीं। उसे कोई दिखाई नहीं दिया।

"अगर शक्तियां आस-पास हैं तो नजर क्यों नहीं आ रहीं। उन्हें पत्थर के पास आना चाहिए।" दोती बोली।

"वो जरूर अपनी चाल चल रही होंगी, डुमरा को आजाद कराने के लिए।" मोरगा ने कहा।

"उनकी कोई चाल कामयाब नहीं होगी। डुमरा किसी भी हाल में बच नहीं सकता।"

ओहारा पुनः हवा में मुंह उठाकर सूंघने लगा।

"इससे क्या पता चलेगा ओहारा?"

"मैं जानने की चेष्टा कर रहा हूं कि गंध किस दिशा की तरफ से आ रही है।"

"हमें सतर्क हो जाना चाहिए। शक्तियां हम पर भी हमला कर सकती हैं।" दोती ने कहा।

"हम तो छाया के रूप में यहां मौजूद...।"

"बड़ी शक्तियां छाया को बंधक बना लेती हैं। तब हमें शरीर के साथ ही काम करने पड़ेंगे।"

"हैरानी है कि शक्तियां छाया को बंधक बना लेती हैं।"

"अभी तुझे बहुत कुछ जानना है मोरगा। ओहारा का साथ पाने के लिए तुझे बहुत कठिन काम करने होंगे।" कहते-कहते एकाएक दोती चौंकी। नजरें तस्वीर पर थीं—"तस्वीर देखो ओहारा।" दोती चीख ही पड़ी।

ओहारा और मोरगा की निगाह तस्वीर पर जा टिकी।

जो दृश्य नजर आया वो चौंकाने के लिए काफी था।

जिस गड्ढे में डुमरा फंसा बैठा था, उसके एक तरफ की दीवार भुरभुराकर ढह रही थी। तस्वीर में डुमरा स्वयं उलझन भरी निगाहों से उस दीवार को देख रहा था।

"ये क्या?" मोरगा के होंठों से निकला।

"शक्तियों का काम है ये। वो डुमरा को बचाने जा रही हैं।" ओहारा दांत किटकिटाकर कह उठा—"जमीन के भीतर से रास्ता बनाकर शक्तियां डुमरा तक पहुंची हैं और उसी रास्ते से उसे बाहर ले जाएंगी।"

"लेकिन शक्तियों ने रास्ता बनाया कहां से? हम उस रास्ते को बंद कर सकती हैं।" दोती बोली।

"ये बढ़िया बात कही तूने।" मोरगा तुरंत कह उठी।

"चल आ।"

दोनों जाने लगीं तो ओहारा बोला।

"शक्तियों के सामने मत पड़ जाना। वो तुम्हें कैद कर लेंगी।"

दोनों तुरंत आसपास की जगह को देखती आगे बढ़ने लगीं।

▭ ▭

डुमरा आंखें सिकोड़े मिट्टी की उस दीवार को टूटते देख रहा था। इतना तो वो जान चुका था कि दीवार के उस पार कोई है जो गड्ढे में पहुंचना चाहता है।

"डुमरा।" तोखा की गम्भीर आवाज कानों में पड़ी—"मेरे खयाल में ये ताकतों का अगला वार है।"

"नहीं।" डुमरा के होंठों से निकला—"शक्तियां हमें बचाने आ पहुंची हैं।"

"मुझे तो खतरा लग रहा है। ये ताकतों का अगला वार है।"

डुमरा ने कुछ नहीं कहा। नजरें मिट्टी की दीवार पर थीं।

एकाएक मिट्टी की दीवार भरभरा कर गिर गई। वहां बड़ा-सा छेद दिखा फिर खतरनाक पंजे दिखे जो कि मिट्टी को हटा-हटाकर नीचे बिछा रहे थे। उसके बाद जानवर का चेहरा दिखा।

डुमरा ने ऐसा जानवर पहले कभी नहीं देखा था।

जानवर की आंखों से आंखें मिलीं।

ऐसा लगा जैसे जानवर मुस्कराया हो। पर डुमरा को वहम लगा ये।

"बाहर आ जा डुमरा।" जानवर के होंठों से जो आवाज निकली उसे सुनकर डुमरा चौंका।

"सलूरा।" डुमरा के होंठों से निकला—"तुम?"

"क्या करूं, तुम्हें मरने के लिए छोड़ भी नहीं सकता।" जानवर पुनः बोला—"मेरे पीछे-पीछे इसी रास्ते से बाहर आ-जा। खतरा टला नहीं है। ओहारा बाहर ही मौजूद है। उसने जो वारों की कड़ी तैयार की है, उसमें दो वार अभी बाकी हैं। तू यहां से निकलेगा तो वो वार तुझ पर

होंगे।" कहने के साथ ही जानवर पलटा और उस रास्ते में आगे बढ़ गया।

डुमरा ने देर नहीं की और उस रास्ते में प्रवेश कर गया। खोदी मिट्टी नीचे ही बिछी होने के कारण रास्ता तंग हो गया था। उस कच्ची सुरंग से डुमरा रेंगता हुआ आगे बढ़ने लगा।

"सलूरा ने तो कमाल कर दिया डुमरा।" तोखा की आवाज कानों पड़ी—"तुम्हें बचाने आ ही गया।"

"सलूरा न आता तो वजू आता। शक्तियां इतनी जल्दी मुझे मरने नहीं देतीं।"

"मैं तो सोच रहा था कि मिट्टी के रास्ते ओहारा ने अगला कोई वार कर दिया है।"

"मैंने तो ऐसी बात सोची भी नहीं।"

"सलूरा का कहना है कि बाहर ओहारा मौजूद है। उसके वारों की कड़ी में अभी दो वार बचे हुए हैं। तुम्हें ओहारा के अगले वारों से बचना होगा। ओहारा ने तो तुम्हें परेशान कर दिया है डुमरा।"

"सलूरा के होते तो मुझे जरा भी चिंता नहीं है।" पेट के बल मिट्टी की सुरंग में सरकते डुमरा ने कहा।

"सलूरा तुम्हारा साथ देगा अभी?"

"वो आया है तो इस तरह वापस जाने वाला नहीं। मुझे सुरक्षित करके ही जाएगा। सलूरा और वजू मेरे पिता की तरह हैं। वो मेरा अहित नहीं देख सकते। इस बात से नाराज जरूर हैं कि उनसे पूछे बिना मैंने खुंबरी को श्राप दे दिया था।"

"मुझे तो नहीं लगता कि तुमने बुरा किया श्राप देकर।"

"अगर खुंबरी पांच सौ सालों बाद सदूर पर वापस न लौटती, लौटती तो ताकतों से जुदा हो चुकी होती, तब मेरे श्राप को सब सही मानते। परंतु खुंबरी तो पांच सौ सालों के बाद मन में बदले की भावना लिए लौटी। ऐसे में खुंबरी से झगड़ा होने का मतलब है शक्तियों का समय व्यर्थ में खर्च होना।"

"पर तुम, तुमने तो लोगों के भले के लिए ही खुंबरी को श्राप देकर, सदूर से बाहर जाने को कहा था।

"मैंने तो खुंबरी को मौका भी दिया था कि वो ताकतों का साथ छोड़ दे और सदूर की रानी बनकर रहे। लेकिन खुंबरी ताकतों के नशे में चूर थी और मेरी बात नहीं मानी। उसे ताकतों की मालकिन बने रहना पसंद है। पर मैं उसे छोड़ने वाला नहीं। वो ताकतों से, मासूम लोगों पर जुल्म ढाती है।"

"दोलाम अगर खुंबरी की जान ले ले तो अच्छा रहे।"

"तब दोलाम ताकतों का मालिक बनेगा और उससे झगड़ा...।" डुमरा ने कहना चाहा।

"मेरे खयाल में दोलाम समझदार है। होकाक ने बताया तो था कि उसने रानी ताशा से तय कर लिया है कि वो खुंबरी को मारने का मौका उसे देगा और बदले में वो सदूर का राज्य दोलाम के हवाले कर देगी। दोलाम ने रानी ताशा से ये सौदा इसलिए किया कि ताकतों के इस्तेमाल के बिना, सदूर का राजा बन जाए और तुमसे दुश्मनी न हो।"

"पहले इन हालातों से निबट लूं। उसके बाद होकाक से पता करूंगा कि खुंबरी के ठिकाने पर क्या हो रहा है।" डुमरा ने शांत स्वर में कहा और कच्ची मिट्टी में रेंगता आगे बढ़ा जा रहा था।

▭ ▭

दोती और मोरगा को सुरंग जैसी जगह ढूंढ़ने में देर नहीं लगी। उस जगह के आसपास ताजी मिट्टी का ढेर लगा हुआ था। फौरन ही वो जगह नजर में आ गई थी।

"तो यहां से रास्ता बनाकर कोई भीतर, डुमरा तक जा पहुंचा है।" मोरगा बोली।

"ये किसी बड़ी शक्ति का काम है। छोटी शक्तियां इस तरह रास्ता नहीं बना सकतीं।" दोती ने कहा—"हमें ये रास्ता बंद कर देना चाहिए मिट्टी से गड्ढे को भर देते हैं कि कोई बाहर न निकल सके।"

मोरगा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"ये बात जंची नहीं।" मोरगा ने दोती को देखा।

"क्यों?"

"वो बड़ी शक्ति भीतर ही है। उसने जमीन में से रास्ता बनाया है। हमारी डाली मिट्टी को तो वो आसानी से हटा देगा।"

"क्या पता न हटा सके। हमारा मतलब तो डुमरा से है कि वो मर जाए। हमें मिट्टी जरूर गड्ढे में डाल देनी चाहिए।"

"पर कैसे? इस वक्त तो हम अपनी छाया के रूप में हैं।" मोरगा ने गहरी सांस ली।

"ये काम तो मैं अभी कर देती हूं।" कहने के साथ ही दोती ने दाएं हाथ की उंगली गड्ढे की तरफ की और होंठों ही होंठों में कुछ बुदबुदाई। हाथ की उंगली गड्ढे की तरफ ही रही।

एकाएक गड्ढे के आसपास ढेर लगी मिट्टी सरक-सरककर गड्ढे में भरने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई तूफान आया हो और हवा का रुख गड्ढे की तरफ हो हवा सब कुछ गड्ढे में डाल रही हो।

चंद पल बीते कि गड्ढा मिट्टी से ऊपर तक भर गया।

दोती ने हाथ नीचे कर लिया। बोली।

"अब डुमरा बाहर नहीं निकल सकता।"

"और वो बड़ी शक्ति?"

"पता नहीं मेरी इस हरकत का उस पर क्या प्रभाव पड़ता है।" दोती ने सोच भरे स्वर में कहा।

"इंतजार करते हैं और देखते हैं कि कोई बाहर निकल पाता है कि नहीं।" मोरगा ने सिर हिलाया—"तूने कौन-सी ताकत का इस्तेमाल किया मिट्टी गड्ढे में भरने के लिए। मुझे भी बता दे।"

"मेहनत कर। सब पता चल जाएगा।"

"तू नहीं बताएगी?" मोरगा ने मुंह बनाया।

"मैं क्यों बताऊं। ये तो मेरी मेहनत का नतीजा है। तू भी मेहनत काम करेगी तो तेरे को पता चल जाएगा।"

"मैं समझ गई। तू मुझे कुछ नहीं बताने वाली।" मोरगा ने मुंह बनाकर कहा—"देखना अब मैं बहुत मेहनत करूंगी और तेरे से बहुत आगे निकल जाऊंगी। तब ओहारा सिर्फ मुझे ही पसंद करेगा। तुझे नहीं।"

"बहुत मेहनत करनी होगी। तेरे तो पसीने छूट जाएंगे।"

"मैं...।" मोरगा कहते-कहते ठिठकी फिर सतर्क स्वर में बोली—"देख तो गड्ढे से कोई बाहर आ रहा है।"

दोती की कठोर निगाह गड्ढे पर जा टिकी।

गड्ढे में पड़ी मिट्टी हटती जा रही थी फिर मिट्टी में से जानवर का चेहरा बाहर निकला। साथ ही उसकी आगे की दोनों टांगें बाहर आ गईं। वो गले तक बाहर निकल आया था। उसने सामने खड़ी दोती और मोरगा को देखा।

दोनों उस जानवर को देखकर हैरान हो गई थीं।

"ये कैसा जानवर है।" मोरगा के होंठों से निकला—"ऐसा जानवर मैंने पहले कभी नहीं देखा।"

"ये जानवर नहीं, शक्तियों की चाल है।" दोती बोली—"किसी बड़ी शक्ति ने अपना रूप बदल रखा है। इसके पंजों के नाखूनों को तो देख, ये किसी औजार से कम नहीं लगते। इसी से इसने जमीन में रास्ता बनाया और...।"

तभी जानवर की दोनों टांगें रबड़ की तरह लम्बी हुईं और दोती-मोर की तरफ लपकी।

दोनों को संभलने का मौका ही नहीं मिला और लम्बी होती बांहों ने

दोनों को अपने घेरे में लिया और अगले ही पल दोनों हवा में उछलीं और कई कदम दूर जा गिरीं।

जानवर बाहर निकल आया। वो मिट्टी से भरा हुआ था कि एकाएक जानवर का रूप बदलना शुरू हो गया। वो जानवर से इंसान में परिवर्तित होने लगा। देखते-ही-देखते वो सलूरा के रूप में सामने खड़ा था। उसके हाथ में पेड़ का पत्ता दबा था, जिसका सहारा लेकर, उसने अपना रूप बदला था।

सलूरा की शांत निगाह दोती और मोरगा की तरफ थीं।

गिरते ही दोनों जमीन पर लुढ़कती चली गईं फिर संभलते ही मोरगा कह उठी।

"ये क्या। हम तो पारदर्शी रूप में हैं। फिर हमें इसने कैसे उठाकर फेंक दिया।"

"वो कोई बड़ी शक्ति है।"

"तो हमारे पारदर्शी रूप पर कैसे वार कर सकती है।"

"कर सकती है मोरगा। बड़ी शक्तियां बहुत पहुंची हुई होती हैं।"

"वो देख।" मोरगा बोली।

दोती और मोरगा की निगाह सलूरा पर जा टिकीं।

"तो ये है बड़ी शक्ति का असली रूप।" दोती के होंठों से निकला।

"तू पहचानती है इसे?"

"नहीं। मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा।"

उनके देखते-ही-देखते सलूरा ने नीचे झुककर गड्ढे में पड़ी मिट्टी को चुटकी में थामा और कुछ बड़बड़ाकर, मिट्टी को वापस फेंका तो उसी पल गड्ढे में पड़ी, मिट्टी बाहर को निकलने लगी।

"उसने मिट्टी हटाकर फिर रास्ता तैयार कर लिया।" दोती बोली

"मैं अभी इसे चक्कर में लेती हूं।" मोरगा ने कहा।

"बड़ी शक्तियां पारदर्शी शरीर को कैद भी कर लेती हैं।" दोती ने बताया।

"पारदर्शी शरीर को कैद?" मोरगा ने दोती को देखा।

"हां। बड़ी शक्तियां ऐसा कर सकती हैं। हमारे पारदर्शी शरीर को कैद कर लिया तो फिर हम पारदर्शी शरीर नहीं तैयार कर सकतीं। तब हमें जहां जाना होगा, शरीर के साथ ही जाना होगा।" दोती गम्भीर दिख रही थी।

"तू डर रही है। मैं अभी इसे चक्कर में लेती हूं।" कहकर मोरगा आगे बढ़ गई।

दोती भी साथ चल पड़ी और धीमे-से बोली।

"सतर्क रहना।"

पास पहुंचते मोरगा कह उठी।

"तू तो बहुत स्वस्थ मर्द है।" मोरगा दस कदम पहले ही रुक गई—"मैं तुम जैसा मर्द ही ढूंढ़ रही थी।"

सलूरा शांत भाव से मुस्कराया।

"तेरे में कितनी ताकत है कि तूने जमीन में गड्ढा खोद लिया। मैं तो हैरान रह गई।"

सलूरा उसी प्रकार मुस्करा रहा था।

"डुमरा को बचाने आया है।"

सलूरा ने कुछ नहीं कहा।

"अच्छा हुआ जो तू आ गया। मैं भी चाहती थी कि डुमरा को कुछ हो। अब वो बाहर आ रहा है न?"

"हां।" सलूरा ने बेहद प्यार से कहा।

"मैं तुझ जैसे मर्द से ही ब्याह करना चाहती थी। बोल, मुझसे ब्याह करेगा। सब ही मुझे पसंद कर लेते हैं, क्योंकि मैं खूबसूरत हूं। तूने भी मुझे देखते ही पसंद कर लिया होगा। मैंने भी तुझे पसंद किया। नाम क्या है तेरा?"

"सलूरा।"

"सलूरा। तेरा नाम भी मुझे अच्छा लगा। अब ब्याह कर...।"

"चली जाओ यहां से। वरना मैं तुम दोनों के पारदर्शी शरीर को कैद कर लूंगा।" सलूरा ने कहा।

"तो तू मेरे से ब्याह करने का इरादा नहीं रखता।" मोरगा नाराजगी से बोली—"मैं तुझे बहुत खुश रखूंगी।"

"मैं फिर कहता हूं। चले जाओ तुम दोनों और दोबारा मेरे सामने मत...।"

कहते-कहते सलूरा ठिठक गया। फौरन दाईं तरफ गर्दन घुमाई।

वहां अभी-अभी ओहारा आ खड़ा हुआ था और सलूरा को घूर रहा था।

सलूरा बेहद शांत भाव से ओहारा की तरफ पलटा।

उसी पल गड्ढे में से रेंगता हुआ, डुमरा बाहर निकला और खड़ा हो गया। उसके कपड़े मिट्टी में सन चुके थे। सिर के बालों और चेहरे पर भी मिट्टी लगी थी। डुमरा सलूरा को देखते ही चौंका।

"सलूरा तुम?"

सलूरा, डुमरा को देखकर मुस्कराया।

"हैरानी है।" तोखा की आवाज डुमरा के कानों में पड़ी—"सलूरा स्वयं तुझे बचाने आया है।"

तभी डुमरा ने ओहारा को और दोती-मोरगा को देखा।

"ओहारा भी यहां है।" तोखा ने कहा—"इसका सलूरा से झगड़ा हो सकता है।"

डुमरा गम्भीर दिखने लगा।

"तो सलूरा तुम हो।" ओहारा बोला—"मैं नहीं जानता था कि सलूरा जैसी बड़ी शक्ति डुमरा को बचाने आएगी।"

"तुमने गलत सोचा कि डुमरा की जान लेने में कामयाब हो जाओगे।" सलूरा ने कहा।

"जान तो मैं अब भी ले लूंगा सलूरा।"

"क्योंकि तेरे वारों की कड़ी में अभी दो वार होने बाकी हैं।"

"मुझे मालूम है तू सब जानता है।"

"मुझे ये भी पता है कि तेरे वार किस रूप में होने वाले हैं।"

ओहारा का चेहरा कठोर हो गया।

तभी मोरगा ऊंचे स्वर में कह उठी।

"इसे कुछ मत कहना ओहारा। सलूरा मुझसे ब्याह करने जा रहा है।"

"चुप कर। सलूरा को तू अपनी बातों के चक्कर में नहीं ले सकती।" दोती बोली।

"कोशिश तो करने दे। क्या पता उसे मेरी कौन-सी अदा भा जाए।" मोरगा ने गहरी सांस ली।

"बेवकूफ है तू। वो बड़ी शक्ति है।"

ओहारा बेहद सख्त स्वर में बोला।

"तेरे को मेरे रास्ते में नहीं आना चाहिए था। मैं बड़ी ताकत हूं।"

"तू कुछ नहीं कर सकता। डुमरा जिंदा रहेगा। ठोरा को भेज। वो मेरे से टक्कर लेगा।"

"मेरे होते ठोरा की क्या जरूरत है।" ओहारा ने दांत भींचकर कहा और काले मोतियों की माला हवा में उछाली और लपक ली।

सलूरा मुस्कराया।

तभी जमीन में से लम्बे कीलों की नोंकें निकलने लगीं।

कीलों की चुभन होते ही डुमरा बचने के लिए उछला कि जमीन से कीलों की नोंक उठती जा रही थीं। बाहर आती जा रही थीं। उसी पल सलूरा की बांह लम्बी हुई और डुमरा के करीब पहुंच गई।

डुमरा फौरन उसकी बांह थामे लटक गया।

सलूरा ने बांह ऊपर कर ली। जमीन पर, हर तरफ लम्बे-लम्बे, नोंक उठाए कील खड़े दिख रहे थे। कीलों से बचने की कोशिश में डुमरा उछलता और अंत में उसने कील पर गिर जाना था। लम्बे कील जिस्म में जगह-जगह घुस जाते थे। परंतु सलूरा ने डुमरा को बांह का सहारा देकर ओहारा के वार को विफल कर दिया।

ओहारा क्रोध में नजर आने लगा।

"मेरे रास्ते में आकर तूने बहुत गलत किया सलूरा।" ओहारा गुर्रा उठा।

सलूरा मुस्कराता, ओहारा को देखता रहा।

"तू डुमरा को बचा नहीं सकता।"

"इस वक्त तेरे वारों की कड़ी में आखिरी वार बचा है ओहारा। वो भी करके देख ले।" सलूरा बोला।

"तेरे को बहुत घमंड है अपने पर।"

"शक्तियां घमंड करें तो हमारी शक्तियां कमजोर हो जाती हैं। हम कभी भी घमंड नहीं करते।"

"ले अब बच के दिखा।" कहने के साथ ही काले मोतियों की माला ओहारा ने हवा में उछालकर लपक लीं।

तभी आग का तूफान उठ खड़ा हुआ।

देखते-ही-देखते सलूरा और डुमरा उस आग के तूफान में घिर गए।

डुमरा की चीख सुनाई दी।

फिर एकाएक सब कुछ शांत पड़ गया।

ओहारा की आंखें सिकुड़ीं।

दोती और मोरगा चौंकी, क्योंकि सलूरा-डुमरा वहां थे ही नहीं। आग का तूफान अपनी जगह खड़ा हुआ था। भभक रहा था। तभी दोती के होंठों से निकला।

"ओहारा। तुम्हारे पीछे।"

ओहारा फुर्ती से पलटा।

बीस कदमों की दूरी पर सलूरा और डुमरा को खड़े पाया। डुमर अपना हाथ मसल रहा था। वहां आग का भभका टकराया था। ओहारा के चेहरे पर क्रोध नाच उठा। उसने आग के बीच हाथ में दबी काले मोतियों की माला उछाल दी। जिसके आग में प्रवेश होते ही आग का वो तूफान गायब हो गया।

"तेरे वारों की कड़ी खत्म हो गई ओहारा।" सलूरा ने कहा—"मैं चाहूं तो तेरे इस पारदर्शी शरीर को अभी कैद कर सकता हूं और तुझे भागने का मौका भी नहीं मिलेगा।"

"वहम है तेरा ये कि मेरे पारदर्शी शरीर को तू कैद कर लेगा।" ओहारा गुर्राया।

सलूरा मुस्कराया। ओहारा को देखता रहा।

"कैद कर मुझे।"

"मेरी बात सुनते ही तूने अपने गिर्द ताकतों के साये फैला लिए हैं कि शक्तियां तेरा कुछ न बिगाड़ सकें।"

"तू मेरा मुकाबला नहीं कर सकता सलूरा।"

"ऐसा मत कह। इस वक्त मैं तेरा मुकाबला करने में, अपना वक्त नहीं खराब करना चाहता।" सलूरा ने डुमरा पर नजर मारकर कहा—"मेरे पास कई जरूरी काम करने को रखे हैं।"

"तेरी वजह से डुमरा बच गया, वारों की कड़ी से।" ओहारा क्रोध में था।

"तू गुणी इंसान है ओहारा। ताकतों का साथ छोड़कर शक्तियों की शरण में आ जा।" सलूरा ने कहा।

ओहारा हंस पड़ा।

सलूरा के चेहरे की मुस्कान गहरी हो गई।

"मेरी बात पसंद नहीं आई?"

"सलूरा। तू जानता है कि मैं तेरी बात कभी नहीं मानूंगा। फिर ऐसी बात कहने का फायदा भी क्या? ताकतों और शक्तियों के जीवन में बहुत फर्क होता है। हमारा रहन-सहन तुमसे बहुत अलग है। शक्तियां, ताकतों का जीवन नहीं जी सकतीं। ताकतें, शक्तियों का जीवन नहीं जी सकतीं। हम दुश्मन हैं और दुश्मन ही रहेंगे।"

"तूने तो आज सोच रखा होगा कि डुमरा का अंत यकीनन हो जाएगा।"

"हां। ऐसा होता भी अगर तू बीच में न आता।" ओहारा तड़पकर बोला—"पर इस बार मैं और भी तैयारी करके आऊंगा। ओहारा कभी हारता नहीं। तेरे को डुमरा का अंत करके दिखाऊंगा।"

"ठोरा को मेरे सामने आने को क्यों नहीं कहता?"

"तेरे लिए ठोरा ज्यादा हो जाएगा सलूरा। मैं ही बहुत हूं तेरा मुकाबला करने के लिए। अगर मुझे पता होता कि सलूरा बीच में आ जाएगा तो तेरा भी इंतजाम करके आता। मैं जल्दी लौटूंगा डुमरा।" ओहारा की सुलगती निगाह डुमरा पर जा टिकी—"मैं तेरी जान लेकर ही रहूंगा।"

"ये बता दे कि खुंबरी इस जंगल में कहां रहती है?"

परंतु तभी अपनी जगह से ओहारा का पारदर्शी शरीर गायब हो गया।

दोती और मोरगा ने एक-दूसरे को देखा।

"तू तो बहुत खुश होगी।" मोरगा के स्वर में तीखे भाव थे।
"क्यों?"
"डुमरा जिंदा है। रात उसकी मौत का जश्न नहीं होगा और मोरगा कारू नहीं पिला सकेगी ओहारा को।"
"मुझे दुख है कि डुमरा जिंदा है।"
"ऊपर-ऊपर से कह रही है तू।"
"सच में। दिल से कह रही हूं तेरी कसम।" दोती ने मुंह बनाकर कहा।
"मेरी कसम मत खा। जानती हूं तेरे को। तू बहुत चतुर है। दिल में कुछ, होंठों पर कुछ...।"
"सलूरा हमें ही देख रहा है। इससे पहले कि वो हमें कैद कर ले निकल चलते हैं।" दोती बोली।
पहले दोती फिर मोरगा का पारदर्शी शरीर एकाएक गायब हो गया
डुमरा की निगाह सोमाथ की तलाश में घूमी।
सोमाथ दिखा। वो तीस कदम दूर एक पेड़ के पास खड़ा उसे ही देख रहा था।
"अब सब ठीक है डुमरा।" सलूरा ने कहा।
"तुम्हें यहां देखकर मुझे खुशी हुई सलूरा।" डुमरा ने कहा—"मुझे यकीन नहीं था कि तुम या वजू मुझे बचाने आओगे।"
"क्यों न आते। तुम शक्तियों के लिए कीमती हो।" सलूरा ने गम्भीर स्वर में कहा।
"तुम अन्य किसी बड़ी शक्ति को भी भेज सकते थे।"
"हां। लेकिन मैंने स्वयं ही आना ठीक समझा। क्योंकि ओहारा कमजोर नहीं है। वो भी बड़ी ताकत है।"
"वो फिर तैयारी करके मुझ पर हमला करेगा। मुझे ज्यादा शक्तियां चाहिए।"
"हम भी तो नियमों से बंधे हैं डुमरा। अगर तुमने हमसे पूछकर खुंबरी को पांच सौ सालों का श्राप दिया होता तो हम तेरे को भरपूर शक्तियां सौंप देते। तुम्हारी इसी गलती की वजह से हम खुलकर तुम्हारा साथ नहीं दे सकते। खुंबरी का मामला एक तरह से तुम्हारा व्यक्तिगत हो गया है। परंतु हमारी यही कोशिश होगी कि तुम खतरे में पड़ो तो तुम्हें बचा लें।"
"मेरे लिए इतना ही बहुत...।"
तब तक सोमाथ पास आ गया था।
सलूरा ने सोमाथ को देखते ही डुमरा से कहा।
"तो ये है कृत्रिम इंसान।"

"हां सलूरा।"

"अब मैं जाता हूं। मैं जिस काम के लिए आया था, वो पूरा हो गया।"

"तुमने मेरी जान बचा ली।" डुमरा मुस्कराया।

"तुमने भी तो कई बार शक्तियों को मुसीबत में पड़ने से बचाया है। तुम और शक्तियां मिलने पर ही, हम पूरक हैं।" कहने के साथ ही सलूरा जंगल में एक दिशा की तरफ बढ़ता चला गया।

तभी सोमाथ बोला।

"ये कौन था?"

"बड़ी शक्ति। सलूरा।" डुमरा ने सोमाथ को देखा।

"मुझे तो साधारण-सा इंसान ही लगता है।"

डुमरा ने मुस्कराकर, सलूरा के जाने की दिशा में देखा।

परंतु सलूरा कहीं भी नहीं दिखा। एकाएक वो गायब हो गया था।

"तुम तो उस पत्थर के नीचे गड्ढे में दबे थे।" सोमाथ ने पूछा—"फि यहां कैसे पहुंच गए?"

"सलूरा ने बचाया।"

"कैसे?"

"जमीन में रास्ता बनाकर।" कहते हुए डुमरा ने कुछ दूर नजर आते सुरंग जैसे गड्ढे की तरफ इशारा किया।

सोमाथ उस तरफ बढ़ गया।

"डुमरा।" तोखा की आवाज कानों में पड़ी—"मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा कि हम बच गए हैं। मैं तो ये ही सोच रहा था कि हमारी जान गई। वहां से हम बच भी तो नहीं सकते थे। भला हो सलूरा का कि उसने बचा लिया।"

"मुझे यकीन था कि शक्तियां मुझे बचाने जरूर आएंगी।"

"सलूरा कहीं आता-जाता नहीं। लेकिन तुम्हें बचाने आ गया।"

सोमाथ वापस आकर बोला।

"वो जगह सलूरा ने अकेले तैयार की है?"

"हां।"

"परंतु ये तो कई लोगों का काम लगता है। वो तो अकेला था। अकेला इंसान इतनी जल्दी कैसे ये सब...।"

"सलूरा बड़ी शक्ति है। वो ऐसे हैरानी से भरे काम कर सकता है।" डुमरा ने कहा।

"वो सुरंग यह थी जो नीचे तक जा रही है। तुम इसी रास्ते से बाहर निकले।"

"हां। अब मेरी बात सुनो। यहां मुझे कोई नया खतरा आ सकता है। इसलिए इस जगह से दूर चले जाना है ठीक रहेगा। आओ यहां से चलें। किसी ठीक जगह पर कुछ देर आराम करूंगा।"

"मैं भी ये ही कहने वाला था कि इस जगह से दूर निकल जाना चाहिए।" तोखा की आवाज कानों में पड़ी।

"चलो।" सोमाथ ने सिर हिलाया।

दोनों तेजी से एक दिशा की तरफ चल पड़े।

"मैं अभी तक हैरान हूं कि इतना बड़ा पत्थर आसमान से आकर तु पर गिरा।" सोमाथ बोला।

"बड़ी ताकतों के लिए ये काम कर जाना, मामूली बात होती है।"

"तुमने मुझे अपने से दूर करके, तब अच्छा किया था। नहीं तो पत्थर मेरी मशीन कुचल देता।"

वे तेजी से आगे बढ़ते रहे। पेड़ों से छनकर धूप जमीन पर पड़ रही थी।

▭ ▭

काफी देर तक लम्बा रास्ता तय करने के बाद डुमरा ने सोमाथ से कहा।

"मैं कुछ देर आराम करूंगा।"

"जानता हूं इंसान, मशीन से कमजोर होता है। मैं जरा भी नहीं थका सोमाथ बोला।

"पर मैं थक गया हूं। गड्ढे में फंसे रहना। फिर तंग रास्ते में सरककर बाहर आना। फिर ओहारा के वार होना।" कहते हुए डुमरा एक छायादार पेड़ के नीचे जा बैठा—"मुझे आराम की जरूरत है।"

"तुम्हारे कपड़े गंदे हो चुके हैं।"

"कोई बात नहीं।" डुमरा की निगाह दूर तक शांत पड़े जंगल में दौड़ी।

"तुम्हारे पास खाने को भी कुछ नहीं है। तुम्हारा खाने का थैला तो पत्थर के नीचे दब गया था।"

डुमरा ने कुछ नहीं कहा।

"तुम्हें भूख लगी होगी। जंगल में तो फलदार वृक्ष भी नहीं हैं।"

"मुझे भूख नहीं लगी। ये सूखा जंगल है। यहां फल वाले पेड़ नहीं हैं।" डुमरा ने कहा।

"भूख लगेगी तो क्या करोगे?"

"तुम मेरी फिक्र मत करो। मैं भूखा रह लूंगा।" कहने के साथ डुमरा घास पर लेट गया।

सोमाथ कुछ पल खड़ा रहा फिर आसपास ही टहलने लगा।

डुमरा ने आंखें बंद कर लीं।

"डुमरा।" तोखा की धीमी आवाज उसके कान में पड़ी—"भूखे पेट तुम कब तक रह सकोगे?"

"पता नहीं।" डुमरा ने कहा।

"ओहारा ने जबर्दस्त वारों की कड़ी तुम पर चलाई। ये तो अच्छा र कि तुम बच गए।"

"वो वक्त मुझे याद न दिलाओ।"

"ओहारा चुप नहीं बैठने वाला। वो फिर आएगा।"

"बड़ी शक्तियां मेरे साथ हैं। खुंबरी की ताकतें मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। अब ये भी एहसास होने लगा है कि खुंबरी का ठिकाना ढूंढ़ा नहीं जा सकता। वो बहुत सुरक्षित जगह रह रही है। ये जंगल भी बहुत बड़ा है। मुझे तो अब उन सबकी चिंता होने लगी है, जो खुंबरी की कैद में फंसे हैं।" डुमरा ने कहा।

"तुम हारी हुई बात कह रहे हो।"

"मैं सच कह रहा हूं तोखा। शायद मैं खुंबरी तक न पहुंच सकूं।"

"हिम्मत क्यों हारते हो, कोशिश जारी रखो। उधर खुंबरी भी खुश हालात में नहीं होगी। होकाक ने उसके ठिकाने के हालात बताए ही हैं कि वहां क्या हो रहा है। इस वक्त खुंबरी उलझी पड़ी होगी।"

"उसके बाद तो होकाक नहीं आया?"

"नहीं।" तोखा के स्वर में सोच के भाव थे—"दोलाम जरूर कुछ करके रहेगा।"

"अगर वो खुंबरी की जान ले ले तो...।"

"दोलाम ने रानी ताशा से वादा किया है कि वह खुंबरी को मारने का मौका उसे देगा और वो सदूर का राज-पाठ दोलाम को दे देगी।"

"रानी ताशा ये नहीं समझती कि खुंबरी को हथियारों के दम पर जीत पाना आसान नहीं।"

"रानी ताशा भी कम नहीं है। वो जबर्दस्त लड़ाका है। फिर वहां बबूसा भी है जिसे धरा कह चुकी है कि वो दोलाम को मार दे तो उसके सब साथी आजाद कर दिए जाएंगे। बबूसा ने ये बात दोलाम से कह दी है।"

"सच में विचित्र हालात हो चुके हैं खुंबरी के ठिकाने के।" डुमरा ने कहा।

"इंतजार करो और देखो कि खुंबरी के ठिकाने पर आने वाले वक्त में क्या होता है।"

"खुंबरी किसी भी हाल में जगमोहन को छोड़कर, दोलाम का हाथ नहीं थामेगी।"

"क्योंकि वो दोलाम को मात्र अपना सेवक समझती है। वो दोलाम से प्यार करने वाली नहीं। जबकि ताकतों ने दोलाम को अपने परिवार में शामिल कर लिया है। दोलाम ताकतों का बड़ा ओहदेदार बन चुका है।"

"पर खुंबरी दोलाम को ऊंचा दर्जा देने को तैयार नहीं।"

"ये ही तो बात...।" कहते-कहते तोखा ठिठका फिर बोला—"को आया है।"

"कौन?" डुमरा ने फौरन कहा।

चंद पल तोखा की आवाज नहीं आई। फिर आई।

"होकाक आया है। तुमसे बात करना चाहता है।"

"आने दो।" वो जरूर कोई नई खबर लाया होगा।"

कुछ क्षणों के बाद होकाक के शब्द डुमरा के कानों में पड़े।

"मैं सीधा खुंबरी के ठिकाने पर से ही आ रहा हूं। सब कुछ वैसा ही है, जो पहले था। तब से खुंबरी अपने रूप (धरा) के साथ ठिकाने से बाहर घूमने निकली हुई है। इसलिए कोई नई बात नहीं हुई उस ठिकाने पर।"

"सब कैद में हैं?" डुमरा ने पूछा।

"हां, पहले की तरह।"

"बबूसा क्या कर रहा है?"

"वो देर से खाने वाले कमरे की कुर्सी पर बैठा है। जगमोहन अपने कमरे में है। दोलाम अपने कमरे में सोचों में है। वो जरूर कोई चाल सोच रहा है खुंबरी के खिलाफ। उसने एक बार भी बाहर आकर बबूसा से बात नहीं की।"

"बबूसा, खुंबरी को मारने की सोच रहा है?"

"खयाल तो उसका ये ही है। तभी तो उसने धरा की कही बात दोलाम को बता दी कि धरा उसे कह रही थी कि दोलाम को मार दे। तभी से दोलाम अपने कमरे में, सोचों में उलझा है।"

"जगमोहन ने बबूसा से क्या बात की?"

"अभी तो कुछ नहीं। खुंबरी और धरा के बाहर जाने पर, सब कुछ शांत-सा दिख रहा है, ठिकाने पर। पर कुछ भी शांत नहीं है। हर किसी को मन में चालें सूझ रही हैं।" होकाक की आवाज कानों में पड़ी।

डुमरा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"जगमोहन ने।" होकाक बोला—"खुंबरी से कहा था कि वो स्वयं बबूसा से बात करेगा। परंतु अभी तक की नहीं।"

"मुझे समझ नहीं आता कि जगमोहन खुंबरी के प्यार में क्यों पड़ गया?" डुमरा बोला।

"तभी तो खुंबरी के करीब पहुंच सका है वो।"

"फिर उसे चाहिए कि खुंबरी को मार दे।"

"जगमोहन ऐसा कभी नहीं करेगा। वो सच में खुंबरी से प्यार करता है। खुंबरी का अहित नहीं देख सकता।"

"जगमोहन और खुंबरी के प्यार का अंत क्या होगा?"

"ये बात तो मैं नहीं जानता।"

"बबूसा किस बात का इंतजार कर रहा है। वो ही खुंबरी की जान ले ले।"

"मेरे खयाल में बबूसा को इस बात का इंतजार है कि दोलाम कुछ करे। उसे विश्वास है कि दोलाम जल्दी कुछ करेगा।"

"इस विश्वास की वजह?"

"अगर दोलाम ने कुछ न किया तो खुंबरी ने दोलाम की जान ले लेनी है। ये बात दोलाम जानता है।"

"बहुत उलझन है खुंबरी के ठिकाने पर।"

"बहुत ज्यादा। मुझे तो वहां के हालातों को देखकर मजा आ रहा है। बहुत दिलचस्प हो रहा है उधर।"

"मुझे खुंबरी की मौत की खबर दे।"

"ऐसा होगा तो खबर दूंगा।"

"तूने कहा कि खुंबरी अपने रूप धरा के साथ ठिकाने के बाहर घूमने निकली हुई है।"

"बहुत देर से। मेरे खयाल से घूमना तो बहाना है वो आपस में दोलाम को मारने का विचार कर रही होंगी। खुंबरी चाहती है कि दोलाम नाम की मुसीबत तुरंत उसकी नजरों से दूर हो जाए। वो दोलाम पर जल्दी वार करेगी।"

"ये बता कि खुंबरी और धरा इस वक्त कहां घूम रही हैं जंगल में?"

"आते समय मुझे तो दोनों जंगल में नहीं दिखीं।"

"होकाक तू कोई भी काम की नहीं बता रहा।"

सब बातें काम की ही तो बता रहा हूं। तुझे खुंबरी के ठिकाने का सारा हाल बता दिया। ये छोटी बात तो नहीं। तू चाहता है कि मैं सीधा तेरे को खुंबरी के पास पहुंचा दूं तो ये करना अभी मुमकिन नहीं।"

डुमरा ने कुछ नहीं कहा।

"वैसे भी खुंबरी अगर तेरे सामने पड़ गई तो तू क्या करेगा। वो फौरन 'बटाका' थाम कर सुरक्षित हो जाएगी।"

"वो सुरक्षित नहीं हो सकेगी।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं

ऐसा वार तैयार करके लाया हूं कि खुंबरी के सुरक्षित होने पर भी, मेरा वार उस पर असर कर देगा।"

"ओह, तो तुमने अपने वार में शक्तियों के कण मिला लिए हैं। हैरानी है कि शक्तियों के कण तुम्हें कहां से मिले?"

"कुछ कण मुझे मिल गए थे। मैंने उन्हें सैकड़ों बरसों से संभाल रखा था।" डुमरा ने बताया।

"बड़ी शक्तियों के ये बात पता है?"

"उससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने अपनी मेहनत से शक्तियों के कण हासिल किए थे।"

"इसका मतलब खुंबरी तेरे सामने पड़ गई तो वो बचने वाली नहीं।" होकाक के शब्द कानों में पड़े।

"अब कोई काम की बात कहने को हो तो तभी आना।" डुमरा बोला।

होकाक की आवाज नहीं आई।

डुमरा ने लेटे ही लेटे गर्दन घुमाकर सोमाथ को देखा, जो कुछ दूरी पर टहल रहा था।

तभी तोखा की आवाज कानों में पड़ी।

"मैं सब सुन रहा था। होकाक ने कोई काम की बात नहीं बताई।"

"खुंबरी और धरा जंगल में घूम रही हैं। इतना बड़ा जंगल है। ये पता लगाना आसान भी तो नहीं कि वो कहां पर हैं।"

"मैं तो ओहारा के बारे में सोच रहा हूं कि वो तुम पर नए वार की तैयारी कर रहा होगा। वो जल्दी कुछ करेगा डुमरा।"

"अभी मुझे आराम करने दे।" डुमरा ने कहा और पुनः आंखें बंद कर लीं।

फिर तोखा की आवाज भी कानों में न पड़ी।

▭ ▭

खुंबरी और धरा को उस ठिकाने से बाहर निकले बहुत देर हो चुकी थी। वो दोनों जंगल में पेड़ों की छांवों के नीचे टहलती रहीं। बातें करती रहीं। उनकी बातों का केंद्र दोलाम ही था। कभी-कभार बातें बबूसा की तरफ मुड़ जातीं। इन्हीं बातों में डूबी तब तक टहलती रही, जब तक कि थकान न होने लगी। फिर धरा ने कहा।

"चल वापस चलते हैं।"

"अभी मन नहीं है वापस जाने का।" खुंबरी ने कहा—"मैं दोलाम के बारे में ही सोच रही हूं कि जब तक उससे छुटकारा नहीं मिलता, मुझे चैन नहीं मिलेगा। कोई उत्तम विचार भी तो नहीं आ रहा मन में।"

"क्या पता अब तक जगमोहन ने बबूसा से बात कर ली हो और बबूसा ने दोलाम को मार भी दिया हो।"

"ऐसा हुआ होता तो ताकतें मुझे जरूर इस बात की खबर दे देतीं।"

"आ उधर छांव में बैठते हैं।" धरा एक फैले पेड़ की छांव की तरफ बढ़ती कह उठी।

दोनों पेड़ की छांव में जा बैठीं। हर तरफ शांति थी और धूप की लकीरें जमीन से टकरातीं नजर आ रही थीं। चारों तरफ गहरे पेड़ों का फैलाव देखना भला लग रहा था।

"तेरे को पता है, हम अपने ठिकाने से बहुत दूर निकल आई हैं।" धरा बोली।

"तो क्या फर्क पड़ता है।"

"डुमरा इसी जंगल में भटकता हमें ढूंढ़ रहा है। वो दिख गया तो?"

"मेरे पास बटाका है।"

"वो तो मेरे पास भी है।" धरा ने गले में लटक रहे बटाका को छुआ।

"हमारी ऐसी किस्मत कहां कि डुमरा दिख जाए। वो दिख गया तो उसका अंत कर दूंगी।"

"ओहारा ने आज डुमरा पर वार करना था। इतना दिन बीत गया। अभी तक डुमरा के मरने की खबर क्यों नहीं आई। तू आराम से क्यों बैठी है। ओहारा से पूछ तो कि वो डुमरा को मारता क्यों नहीं?"

"ओहारा खुद ही बता देगा।"

"पर तेरा भी तो पूछना बनता है।"

खुंबरी ने गले में पड़ा बटाका थामा और ओहारा को पुकारा।

परंतु जवाब में कोई आवाज उसके कानों में न पड़ी।

खुंबरी के माथे पर बल उभरे और इस बार तेज स्वर में ओहारा को पुकार लगाई।

"हुक्म महान खुंबरी।" अगले ही पल दोती की आवाज कानों में पड़ी।

"मैंने तुझे नहीं, ओहारा को पुकारा है।"

"ओहारा ने ही मुझे भेजा है। इस वक्त ओहारा बहुत ज्यादा व्यस्त है, डुमरा पर वारों की कड़ी तैयार करने में।"

"तो अभी तक उसकी तैयारी ही चल रही है।" खुंबरी की आवाज में गुस्सा आ गया—"डुमरा पर वार नहीं किया अभी तक।"

"वार हो चुके हैं महान खुंबरी। कुछ देर पहले की ही बात है।" दोती की आवाज कानों में पड़ रही थी—"ओहारा अब तक सफल हो चुका होता। डुमरा मर चुका होता अगर सलूरा, डुमरा को बचाने न आ गया होता।"

"सलूरा? वो बड़ी शक्ति?" खुंबरी के होंठों से निकला।
"वो ही। उसने ओहारा के जानलेवा वारों से डुमरा को बचा लिया।"
"पूरी बात कह।"
दोती की आवाज खुंबरी के कानों में पड़ने लगी।
धरा भी कान लगाए सब सुन रही थी।
दोती की बात पूरी होते ही खुंबरी सख्त स्वर में कह उठी।
"मेरे पास तो खबर थी कि बड़ी शक्तियां, इस बार डुमरा का साथ नहीं दे रहीं।"
"ये सब कहने की बातें थीं।" दोती की आवाज कानों में पड़ी—"सलूरा ने ओहारा का सारा काम बिगाड़ दिया। अब ओहारा बड़ी शक्तियों से टकराने वाले वारों की कड़ी तैयार करने में व्यस्त है कि इस बार सलूरा या कोई बड़ी शक्ति डुमरा को बचाने को सामने आती है तो उसे करारा जवाब दिया जा सके।"
खुंबरी के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।
"डुमरा के साथ कृत्रिम मानव सोमाथ भी तो था?" धरा ने पूछा।
"वो हमें कोई नुकसान नहीं पहुंच सकता। ताकतों के वार भी उस पर सफल नहीं हो सकते।"
"ठोरा को कहूं डुमरा को मारने के लिए?" खुंबरी बोली।
"ये काम ओहारा ही कर देगा। ठोरा को तकलीफ देने की क्या जरूरत है।" दोती की आवाज कानों में पड़ी—"इस बार ओहारा काफी बड़ी तैयारी कर रहा है। मैं उसका हाथ बंटा रही हूं। डुमरा को बचाने बड़ी शक्ति भी इस बार सामने आई तो उसे भी कोई तकलीफ भुगतनी होगी। ओहारा इस बार तो सफल होगा ही।"
"डुमरा जंगल में कहां है?" धरा ने पूछा।
"इस बारे में अभी वक्त नहीं जानने का। ओहारा मुझे पुकार रहा है। मेरे बिना उसका कोई काम रुका रहा होगा। जाऊं?"
"जा।"
उसके बाद दोती की आवाज नहीं आई।
"ये तो बुरा हुआ ओहारा के वारों से डुमरा बच गया।" खुंबरी बोली। चेहरे पर सोच थी।
"सलूरा जो बीच में आ गया।" धरा ने चिढ़कर कहा।
"डुमरा ज्यादा देर तक बचे रहने वाला नहीं। तू मुझे बता दोलाम से कैसे पीछा छुड़ाऊं?"

जगमोहन कमरे से बाहर निकला और आगे बढ़ गया। चेहरा सोचों से भरा हुआ था। वो कुछ सुस्त लग रहा था क्योंकि देर तक पलंग पर आंखें बंद किए लेटा रहा था। खुंबरी से कहा था कि अगर मन किया तो वो भी बाहर आ जाएगा परंतु उसका मन नहीं किया था बाहर जाने का। सिर में दोलाम ही नाचता रहा। उसे लग रहा था कि उसकी और खुंबरी की अच्छी पट रही थी लेकिन दोलाम की हरकतों ने जैसे उनके प्यार को छिन्न-भिन्न कर दिया था। उसे देवराज चौहान की भी चिंता थी कि खुंबरी ने उसे कैद में रखा हुआ है। वो चाहता था कि देवराज चौहान और बाकी सब कैद से आजाद हो जाएं। इस बारे में खुंबरी पर दबाव डालना भी ठीक नहीं था कि वो सबको आजाद कर दे। देवराज चौहान की कैद को लेकर मन में चैन नहीं था। वो किसी मुनासिब वक्त का इंतजार कर रहा था कि तब खुंबरी से कह सके कि वो सबको कैद से आजाद कर दे। अब खुंबरी और धरा चाहती थीं कि वो बबूसा से बात करे।

बबूसा से कहे कि वो दोलाम को खत्म कर दे।

दोलाम का अंत वो भी चाहता था। परंतु मन में शंका थी कि बबूसा ऐसा करने के लिए मान जाएगा। वो जानता था कि बबूसा अपने मन की करता है। वो जिद्दी है।"

लेकिन अपनी तरफ से बबूसा को तैयार करने की कोशिश अवश्य करना चाहता था।

जगमोहन उस जगह पहुंचा जहां खाने का टेबल था।

बबूसा वहीं कुर्सी पर बैठा था। आहट पाकर उसने सिर घुमाकर जगमोहन को देखा।

"आओ जगमोहन।" बबूसा बरबस ही मुस्करा पड़ा—"तुम तो खुंबरी के सरताज बन गए हो।"

जगमोहन बबूसा के पास ही कुर्सी पर बैठता बोला।

"कैसे हो बबूसा?"

"मैं ठीक हूं। तुम्हारी वजह से कैद से निकल आया। पर ये जगह भी मुझे कैद जैसी ही लगती है।"

"ऐसा मत कहो। तुम आजाद हो।"

जवाब में बबूसा मुस्कराया।

"दोलाम कहां है?" जगमोहन ने आसपास नजरें घुमाईं।

"अपने कमरे में होगा। देर से वो मेरे पास तो आया नहीं।"

"दोलाम मुझे पसंद नहीं करता। सही कहा न मैंने।"

"क्या पता।" बबूसा ने लापरवाही से कहा।

"तुम्हें तो सब पता होगा। दोलाम से तुम्हारी बात तो होती है।"

बबूसा ने जगमोहन को देखा और शांत स्वर में कह उठा।

"तुम मुझसे क्या जानना चाहते हो?"

"तुम्हें सब पता है कि यहां क्या चल रहा है।"

"जानता हूं।"

"हम साथी हैं बबूसा। तुम्हें मेरा काम करना चाहिए। मेरी परेशानी कम करनी चाहिए।"

"मैं तुम्हें राजा देव की वजह से जानता हूं।" बबूसा बोला।

"तो?"

"राजा देव कैद में हैं और तुम मजे से खुंबरी के साथ रह रहे हो। इससे स्पष्ट हो गया कि हम साथी नहीं हैं।"

"साथी हैं, हम तो...।"

"हममें जो रिश्ते का आधार है, यानी कि राजा देव, वो कैद में हैं। तुमने उन्हें आजाद नहीं कराया।"

"देवराज चौहान को आजाद कराने में समस्या आ रही है। वो खुंबरी के लिए मन में वैर रखता है। न भी रखता हो। परंतु वो मुंह से नहीं कह रहा कि खुंबरी को उसने माफ किया। ये ही बात...।"

"तुम खुंबरी से कहकर राजा देव को आजाद करा सकते हो।"

"नहीं करा सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि खुंबरी और मेरे बीच ये बात तय है कि हम दोनों एक-दूसरे के कामों में दखल नहीं देंगे। खुंबरी बुरी नहीं है बबूसा। वो बहुत अच्छी है। मैंने अभी तक खुंबरी में कोई बुराई नहीं देखी।"

"तो अब तुम्हें राजा देव से ज्यादा खुंबरी भाने लगी।" बबूसा मुस्कराया—"अब तो खुंबरी ही तुम्हारे सिर पर चढ़कर बोल रही है। औरत में इतना भी जादू नहीं होता कि आदमी के सिर पर जा बैठे। ऐसा होता है तो समझो आदमी की कमजोरी है।"

"तुम मेरी मजबूरी समझो कि...।"

"हम यहां क्यों आए थे?"

जगमोहन ने बबूसा को देखा।

"हम इस जंगल की तरफ क्या करने आए थे?" बबूसा ने पुनः पूछा।

जगमोहन बेचैन दिखा।

"हम यहां राजा देव और रानी ताशा का बदला लेने आए थे कि खुंबरी

ने अपने स्वार्थ की खातिर राजा देव और रानी ताशा को अलग कर दिया। इस काम में हमने डुमरा की सहायता भी ली। परंतु यहां पहुंचकर तुमने क्या किया? जिसे मारने आए थे उसी से प्यार करने लगे। ये तो शर्म वाली बात हो गई।"

"तुम गलत कह रहे हो बबूसा।"

"क्या गलत है?"

"मैं और खुंबरी सच्चा प्यार करते हैं। मैंने ऐसा नहीं सोचा था। बस हो गया।"

"ये बात तो समझ में नहीं आई।" बबूसा मुस्करा पड़ा।

"मैं तुमसे सहायता की आशा लेकर आया हूं बबूसा।"

"तुम्हें भला मेरी सहायता की जरूरत क्या पड़ गई?"

"जरूरत है। तुम मेरी समस्या को आसानी से दूर कर सकते हो।"

"करो।"

"मेरी खातिर दोलाम को मार दो।"

बबूसा खुलकर मुस्कराया।

"तुम ऐसा करोगे तो देवराज चौहान और बाकी सबको खुंबरी कैद से आजाद कर देगी। तुम सबको यहां से जाने देगी।" जगमोहन का चेहरा और हाव-भाव बेचैनी से भरे हुए थे। नजरें बबूसा पर थीं—"तुम सोमारा को भूल गए। वो भी कैद में है और खुंबरी उन सबकी जान लेने का विचार कर रही है। अगर तुमने दोलाम की जान ले ली तो सब ठीक हो जाएगा। सब आजाद हो जाएंगे। मैं भी जिस समस्या में घिरा हूं, वहां से निकल जाऊंगा।"

"तुम्हारा क्या खयाल है कि मैं तुम्हारी बात मान जाऊंगा?"

"मेरे खयाल में नहीं मानोगे।" जगमोहन गम्भीर था।

"फिर कहा क्यों?"

"इसी में हम सबका देवराज चौहान, रानी ताशा, मोना चौधरी, सोमारा और नगीना भाभी का भला है।"

"तुम्हें इनकी इतनी चिंता नहीं है जितनी कि खुंबरी की है।"

"मैं समझा नहीं।"

"तुम्हें धरा ने मेरे पास भेजा है।"

जगमोहन बबूसा को देखने लगा।

"धरा मेरे पास आई थी कि मैं दोलाम को मार दूं। ये बात तुम्हें जरूर पता होगी।"

"मालूम है।"

"धरा को ठीक से कोई जवाब नहीं मिला तो अब उसने तुम्हें भेज दिया।

तुम और धरा खुंबरी के इशारे पर काम कर रहे हो। तुम्हें राजा देव की नहीं, खुंबरी की चिंता है।" बबूसा का स्वर शांत था—"अपनी चिंता है। तुम्हारे और खुंबरी के बीच दोलाम अपनी टांग फंसा रहा है। तुम परेशान हो रहे हो कि दोलाम रास्ते से हट जाए।"

"सच कहा तुमने। परंतु मुझे देवराज चौहान और सबकी भी चिंता है।"

बबूसा ने जगमोहन को घूरा।

"तुम मुझे बेवकूफ समझते हो जगमोहन।"

"क्या मतलब?"

"तुम मेरे हाथों दोलाम की जान लेना चाहते हो। जबकि मैं खुंबरी की जान लेने का ख्वाहिशमंद हूं।"

जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं। होंठ भिंच गए।

"गुस्सा आ गया।"

"बात को समझो बबूसा। दोलाम को मार दो।"

"तुम्हारे लिए ये काम मामूली है। तुम ही क्यों नहीं मार देते उसे।"

"मैं ऐसा ही करता, परंतु खुंबरी ने रोक दिया।"

"वजह भी मैं जानता हूं। ताकतों ने दोलाम की सेवा से प्रभावित होकर, उसे अपने परिवार में शामिल कर लिया है। ऐसे में कोई दोलाम की जान लेता है तो ताकतें उसे नहीं छोड़ेंगी। इसलिए खुंबरी ने तुम्हें ये काम करने से रोका और कहा कि बबूसा को तैयार करो। बाद में ताकतों ने बबूसा को मार दिया तो खुंबरी को क्या फर्क पड़ता है।"

"तुम्हें ताकतें कुछ नहीं कहेंगी। मैं खुंबरी से कहकर, तुम्हें ताकतों से बचा लूंगा।"

"खुंबरी खुद ही क्यों नहीं मार देती दोलाम को। दोलाम को मारना जरा भी कठिन नहीं है उसके लिए।"

"उसकी कोई मजबूरी है कि वो ऐसा नहीं कर रही।"

"मतलब कि अब तुम्हें इस काम के लिए मैं ही नजर आया हूं।" बबूसा मुस्कराया।

"समझा करो बबूसा। राजा देव और बाकी सब कैद से छूट जाएंगे।"

"मेरे से ये आशा मत रखो कि मैं दोलाम की जान लूंगा। खुंबरी की जान लेने को कहते तो शायद...।"

"तुम खुंबरी का बुरा करने की सोचोगे भी नहीं।" जगमोहन सख्त स्वर में कह उठा।

"तकलीफ हुई?" बबूसा हौले से हंसा।

"तुम्हारे विचार खुंबरी को पता लग गए तो वो तुम्हें फिर कैद में डाल देगी।"

"मतलब कि खुंबरी ने तुम्हें खिलौना बना रखा है। खुंबरी पर तुम्हारा इतना भी बस नहीं कि उन सबको कैद से छुड़ाने को कहो और वो तुम्हारी बात मान ले। तुम खुंबरी के लिए जरा भी महत्त्व नहीं रखते। प्यार-प्यार ज्यादा दिन नहीं चलता जगमोहन। एक-दूसरे को समझना जरूरी होता है। तुम खुंबरी पर फिदा हो और खुंबरी तुम्हारे साथियों को कैद में रखे हुए है। ये बात तो मुझे समझ में नहीं आई। अब तुम खुंबरी के पिट्ठू बनकर मेरे पास आ गए।"

जगमोहन होंठ भींचे बबूसा को देखने लगा। आंखों में बेचैनी आ गई थी।

"बबूसा कभी भी किसी के दबाव में कोई काम नहीं करता। मैं वो ही करता हूं जो मुझे बेहतर लगता है। महापंडित ने मेरा ये जन्म कराते समय मेरे में राजा देव जैसी ताकत और उनके ही गुण डाले थे। इसलिए तुम बबूसा को अपनी बातों में फंसा ही नहीं सकते। मैं दोलाम के साथ हूं और खुंबरी के खिलाफ हूं।"

"सतर्क रहना।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम्हारे ये विचार खुंबरी के कानों तक न पहुंचें।"

बबूसा चुप रहा।

"और खुंबरी का बुरा करने की सोच कर, अपने को खतरे में मत डालना। ये खुंबरी का ठिकाना है। पलक झपकते ही खुंबरी के हुक्म पर तुम्हारी जान ताकतें ले लेंगी। अपने को संभाल के रखो।" जगमोहन कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"तुम सोचो कि तुम क्या कर रहे हो। खुंबरी ताकतों की मालिक है। ताकतें बुरी हैं और वो ही बुराई खुंबरी में भी समा चुकी है, जो इस वक्त, खुंबरी की खूबसूरती की वजह से तुम्हें नजर नहीं आ...।"

"गलत बात मत कहो बबूसा।" जगमोहन होंठ भींचकर कह उठा।

"ये सच है। अगर खुंबरी वास्तव में तुमसे प्यार करती है तो तुम्हारे एक बार कहने पर ही राजा देव और सबको आजाद कर देगी। वो ऐसा नहीं करती तो समझ लेना, तुम दोनों में प्यार नहीं, जिस्म की चाहत भर है।" बबूसा बोला।

"तो तुम दोलाम की जान नहीं लोगे?"

"कभी नहीं।"

जगमोहन तेज-तेज कदम उठाता वापस चला गया।

बबूसा चेहरे पर गम्भीरता लिए वहीं बैठा रहा कि तभी एक कमरे से दोलाम निकला।

बबूसा ने उसे देखा तो नजरें उस पर ही ठहर गईं।

दोलाम बेहद शांत नजर आ रहा था। उसने एक निगाह उस रास्ते पर मारी, जिस तरफ जगमोहन गया था। वो नजर नहीं आया। दोलाम आगे बढ़ा और बबूसा के पास आ गया।

"तूने सब सुना?" बबूसा ने पूछा।

दोलाम ने सहमति से सिर हिला दिया।

"मुझे नहीं मालूम था कि तू बातें सुन रहा है।" बबूसा ने गहरी सांस ली।

"तू सच में मुझे नहीं मारेगा?" दोलाम स्थिर-सा बोला।

"हम दोस्तों की तरह हैं। तूने मेरा कोई नुकसान नहीं किया।" बबूसा ने कहा।

दोलाम ने सिर हिलाया।

"लेकिन तेरी खैर नहीं लगती। खुंबरी तेरे को जल्दी ही रास्ते से हटा देने का इरादा रखती है। इससे पहले कि खुंबरी तेरी जान ले ले। तेरे को ही कुछ कर देना चाहिए।" बबूसा ने दोलाम को देखा।

"मैं करूंगा। अब मैं ही करूंगा।" दोलाम ने दृढ़ स्वर में कहा—"जब तक खुंबरी जिंदा है, मैं ताकतों का मालिक नहीं बन सकता। मुझे खुंबरी के शरीर में कोई दिलचस्पी नहीं है। इस वक्त तो दिलचस्पी खुंबरी के मर जाने में है। जब तक वो जिंदा है मेरे काम नहीं बनेंगे और अब तो ये डर और बढ़ गया है कि कहीं खुंबरी ही पहले मेरी जान न ले ले।"

"जगमोहन से सतर्क रहना। परंतु जगमोहन की जान मत ले लेना।" बबूसा ने कहा।

"मुझे सिर्फ खुंबरी ही नजर आ रही है।"

▭ ▭

"धरा।" एकाएक खुंबरी सोच भरे स्वर में कह उठी—"तू दोलाम को मार सकती है।"

"मैं?" पेड़ की छांव में बैठी धरा ने फौरन खुंबरी को देखा।

"हां तू। तू ये काम कर सकती है। दोलाम को मारने के तेरे पास आसान मौके...।"

"दोलाम को ताकतों ने परिवार में शामिल कर लिया...।"

"तो उससे क्या फर्क पड़ता है। क्या तेरे को ताकतों का डर है?"

धरा कुछ बेचैन हुई।

"कह दे।"
"ताकतों को ये कभी भी अच्छा नहीं लगेगा कि मैंने दोलाम की जान ली। परिवार में झगड़ा...।"
"ताकतें मुझे कह चुकी हैं कि वो इस मामले में नहीं आएंगी। ये मामला हम ही निबटाएं।" खुंबरी ने कहा।
"क्या मैं दोलाम को मार पाऊंगी?"
"मैं तेरे को हथियार दूंगी।" खुंबरी की आंखें चमक रही थीं।
"ये काम तू क्यों नहीं करती?" धरा बोली।
"मेरे को दोलाम मौका नहीं देगा हमला करने का। मुझे देखते ही वो सतर्क हो जाएगा। परंतु उसे तेरे से डर नहीं है। तू एकाएक उस पर वार कर सकती है।" खुंबरी ने कहा—"मुझे पूरा विश्वास है कि इस वक्त दोलाम भी ऐसा ही कुछ सोच रहा होगा कि मुझ पर वार कर सके। दोलाम हालातों को पूरी तरह समझ रहा है। उसने जानबूझकर ये झगड़ा खड़ा किया है। वो जगमोहन को पसंद नहीं करता और अगर दोलाम मुझे मारने में कामयाब रहा तो यकीनन वो ही ताकतों का मालिक बन जाएगा। इसलिए वो मुझे मार देने की जोरदार कोशिश करेगा।"
"ये बात तो है। पर क्या पता मुझे कुछ करने की जरूरत ही न पड़े। बबूसा ही दोलाम को मार दे।"
"तेरा मतलब कि जगमोहन ने बबूसा को इस काम के लिए राजी कर लिया होगा?"
"सम्भव है, ऐसा हो गया हो और जब हम वापस पहुंचें, दोलाम मर चुका हो।"
"चल, वापस चलते हैं।" खुंबरी उठ खड़ी हुई—"देखते हैं कि ठिकाने पर कुछ हुआ है कि नहीं। अगर दोलाम जिंदा है तो आज रात तू दोलाम को मारेगी। मैं तुझे बेहतरीन तलवार दूंगी।"
धरा भी उठी और एक दिशा की तरफ बढ़ी तो खुंबरी बोली।
"इधर से नहीं, इधर से चलते हैं। यहां से रास्ता छोटा पड़ेगा।"
दोनों तेजी से आगे बढ़ गईं।
"कैदियों के बारे में क्या सोचा है?" धरा ने पूछा।
"उन्हें मार दूंगी कि वो कभी मेरे रास्ते में न आ सकें।" खुंबरी ने सख्त स्वर में कहा।
"जगमोहन उनकी मौत नहीं चाहेगा।"
"उसकी तुम फिक्र मत करो।" खुंबरी हंस पड़ी—"वो तो मेरे प्यार के शिकंजे में फंसकर सब कुछ भूल चुका है। अब मैं जल्दी से ठिकाने

पर पहुंचकर देखना चाहती हूं कि दोलाम जिंदा है या बबूसा ने उसे मार दिया।"

दोनों तेजी से घने पेड़ों के बीच में से आगे बढ़ती जा रही थीं। धूप छनकर पेड़ों के बीच में से लकीरों की भांति जमीन से टकरा रही थी। हवा नहीं बह रही थी परंतु पेड़ों की छांव में गर्मी भी नहीं लग रही थी। दोनों के चेहरों पर सोचों के भाव उभरे पड़े थे। खुंबरी कुछ बेचैन दिख रही थी। वो जानती थी कि जब तक दोलाम जिंदा है, उसे चैन नहीं मिलेगा। जैसे हो इस काम को वो पूरा कर देना चाहती थी। इन्हीं विचारों में उलझी, तेजी से कदम बढ़ाती खुंबरी ने यूं ही नजरें घुमाईं जंगल में।

अगले ही पल थम से रुक गई।

धरा भी ठिठकी और बोली।

"रुकी क्यों?" पूछते हुए उसने खुंबरी के चेहरे पर निगाह मारी।

आंखें सिकोड़े खुंबरी एक दिशा की तरफ देखे जा रही थी।

धरा की निगाह भी उसी तरफ घूम गई।

कुछ पल खामोशी से बीते कि धरा के होंठों से निकला।

"वो तो सोमाथ है।"

"जानती हूं।" खुंबरी बोली—"पृथ्वी ग्रह से सदूर तक आने का, तेरे दिमाग का सारा विवरण मेरे दिमाग में भी मौजूद है। उस पर नजर पड़ते ही मैं समझ गई थी कि वह कृत्रिम इंसान सोमाथ है।"

"उस पर ताकतों का वार नहीं चल सकता।" धरा ने कहा।

"मैं कुछ और सोच रही हूं।"

"क्या?"

"दोती ने बताया था कि ओहारा के वारों के समय, डुमरा के साथ सोमाथ भी था। तो क्या ये सम्भव है कि अब भी दोनों एक साथ हों। डुमरा भी सोमाथ के करीब हो।" खुंबरी ने धरा को देखा।

धरा फौरन कह उठी।

"पेड़ की ओट में हो जा। वो भी हमें देख सकता है।"

दोनों तुरंत पेड़ की ओट में हो गईं।

खुंबरी की आंखों में तीव्र चमक उभरी हुई थी।

"सम्भव है कि डुमरा और सोमाथ साथ ही हों।" कहते हुए धरा के होंठ भिंच गए।

दोनों की नजरें मिलीं।

"आ, पास से देखते हैं।" खुंबरी सरगोशी के से स्वर में बोली।

"पास जाने में खतरा है।" धरा ने कहा।

"डुमरा को तो मैं पलक झपकते ही संभाल लूंगी। मेरे पास बटाका...।"

"ज्यादा खतरा सोमाथ से है। उस पर ताकतों का असर नहीं होता और वो इतना ताकतवर है कि हम हाथ-पांवों से उससे बराबरी नहीं कर सकते। सोमाथ हमारे लिए मुसीबत बन सकता है।" धरा ने विचार भरे स्वर में कहा।

"हम दो हैं। इस वक्त जो ताकत मुझमें है वो ही तेरे में है। हम दोनों सोमाथ से भिड़ सकती हैं।" खुंबरी बोली।

"तुम्हें सोमाथ की ताकत का एहसास नहीं है। तभी तू ऐसी बातें कर रही है।"

"समझ गई। पता तो मुझे भी है कि सोमाथ का मुकाबला करना नामुमकिन है।" खुंबरी ने पेड़ के तने से दूर, सोमाथ की तरफ झांका। वो एक छोटे-से दायरे में टहलता दिख रहा था।

"मुझे तो वो अकेला ही लगता है।" धरा कह उठी।

"पास चलकर देखते हैं। दबे पांव जाएंगे। इस तरह कि सोमाथ को हमारे करीब आने का पता न लगे।"

"सोच ले खुंबरी। जल्दी मत कर। हमें सोमाथ से खतरा भी आ सकता है।"

"तू यहीं रह। मैं वहां होकर आती हूं।"

"डरपोक नहीं हूं। मैं भी साथ चलूंगी।" धरा ने कहा।

फिर खुंबरी और धरा घने पेड़ों के तनों की ओट लेती दूर दिखते सोमाथ की तरफ बढ़ने लगी।

बीच-बीच में पूरी तरह किसी तने की ओट लेकर रुक जाती थीं।

पुनः आगे बढ़तीं।

ये सिलसिला कुछ देर तक चला और खुंबरी-धरा उस जगह के पास जा पहुंची जहां सोमाथ टहल रहा था। तभी दोनों का दिल 'धक' से थम-सा गया।

डुमरा पर दोनों की निगाह पड़ गई थी।

डुमरा पेड़ के नीचे आंखें बंद किए, नींद लेने वाले अंदाज में लेटा था।

"डुमरा है वो।" धरा फुसफुसाई।

"पहचान चुकी हूं उसे।" खुंबरी ने धीमे स्वर में कहा। उसकी आंखों की चमक बढ़ गई थी—"ये तो मुझे बहुत ही अच्छा मौका मिल रहा है डुमरा की जान लेने का। इससे पहले कि वो सावधान हो, ताकतें खामोशी से उस पर वार कर देंगी। डुमरा सोमाथ की मौजूदगी की वजह से, निश्चिंत-सा नींद में डूबा पड़ा है।"

धरा की गम्भीर निगाह सोमाथ पर थीं। बोली।

"डुमरा को तो हम संभाल लेंगी। वो बचने वाला नहीं। पर सोमाथ का क्या करें?"

खुंबरी की नजर भी सोमाथ पर जा टिकीं।

"पर मुझे सोमाथ की चिंता इतनी नहीं है जितनी कि डुमरा से चिंता है।" धीमे स्वर में खुंबरी गुर्रा उठी—"डुमरा ने मेरे साथ बहुत बुरा किया था। मुझे श्राप दे दिया था। जिसकी वजह से मुझे पांच सौ सालों के लिए सदूर को छोड़कर पृथ्वी ग्रह पर जाना पड़ा और वहीं जन्म लेने लगी। मेरा शरीर सदूर पर दोलाम की देखरेख में बेजान-सा पड़ा रहा। अगर मुझे ताकतों और दोलाम का सहारा न होता तो मेरा शरीर सड़कर खत्म हो गया होता। उस वक्त डुमरा ने अपनी ताकत दिखाई थी। उसे तब मौका मिल गया था, परंतु आज चुपके से मुझे मौका मिल रहा है डुमरा को खत्म करने का।"

"बात वहीं की वहीं है कि सोमाथ से कैसे निबटे?" धरा ने पुनः कहा।

"मैं ठोरा से बात करती हूं।" खुंबरी के चेहरे पर खतरनाक भाव मचल रहे थे—"मैं उससे सलाह लूंगी।"

"ठोरा को बुलाएगी?"

"इस मौके पर ठोरा को न बुलाया तो ठोरा का क्या फायदा।" खुंबरी ने उसी पल बटाका थामकर धीमे-से पुकारा—"ठोरा।"

अगले ही पल उसके कानों में आवाज पड़ी।

"हुक्म महान खुंबरी।"

खुंबरी और धरा अब पूरी तरह पेड़ के मोटे तने की ओट में हो गईं थीं।

"डुमरा मेरे सामने है ठोरा। उसकी जान ली जा सकती है।" खुंबरी बोली।

"आसानी से। वो लापरवाह है जैसे कि कभी तुम लापरवाह थीं और डुमरा ने तुम्हें श्राप दे दिया था। डुमरा की जान लेना बहुत आसान है। हुक्म हो तो मैं डुमरा की मौत का कुछ इंतजाम...।"

"तुम कुछ नहीं करोगे ठोरा।" खुंबरी ने सख्त स्वर में कहा।

"क्यों?"

"डुमरा को मैं अपने हाथों से मारूंगी तो मुझे बहुत चैन मिलेगा।"

"कोई खास हथियार दूं?"

"हथियार तो पलक झपकते ही मेरे हाथों में दिखने लगेंगे। इस वक्त असली समस्या सोमाथ की है।"

"वो कृत्रिम इंसान?"

"वो ही। उस पर हमारी ताकतों का वार नहीं चल पाएगा। वो ताकतों

से पूरी तरह सुरक्षित है, क्योंकि वह महापंडित की बनाई इंसानी मशीन है। वो काफी ताकत रखता है और हम उसका मुकाबला नहीं कर सकतीं। वो रानी ताशा के हक में काम करता है। रानी ताशा मुझे दुश्मन मानती है कि कभी मैंने उसे और राजा देव को अलग कर दिया था। ऐसे में सोमाथ मुझे देखेगा तो अवश्य मुझे मार देना चाहेगा, जबकि डुमरा पर वार करने के लिए मुझे आगे जाना होगा। तुम कहो, मैं क्या करूं?"

"कृत्रिम इंसान के बारे में मैं महान खुंबरी को कोई राय नहीं दे सकता।" ठोरा की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम उसे कुछ नहीं कर सकते?"

"कृत्रिम इंसान पर ताकतों के वार नहीं चल सकते। परंतु मैं एक बात अवश्य कहूंगा कि इस वक्त तुम डुमरा को मारने का विचार छोड़ दो। मैं आगे के वक्त में देखने की कोशिश कर रहा हूं पर हर तरफ अंधेरा ही कायम है।"

"तुम्हें आगे के वक्त में अंधेरा क्यों दिख रहा है ठोरा?"

"मैं नहीं जानता। ऐसा कम ही होता है। शायद कुछ ठीक नहीं होने वाला, तभी अंधेरा कायम है। मेरी राय है कि तुम डुमरा को अभी मत मारो। शायद ये वक्त ठीक नहीं...।"

"तो तुम चाहते हो कि खुंबरी, सबसे बड़े दुश्मन को मारने का मौका छोड़ दे। असम्भव ठोरा। ये नहीं हो सकता।"

"मुझे इस वक्त का भविष्य नहीं दिख रहा, इसलिए...।"

"तुम सोमाथ का कोई अहित नहीं कर सकते?"

"नहीं महान खुंबरी। ये मेरे बस से बाहर की बात है।" ठोरा की मध्यम आवाज कानों में पड़ी—"इंसान रूपी मशीनों पर ताकतें असर नहीं...।"

"तुम जाओ ठोरा।" खुंबरी ने आदेश भरे सख्त स्वर में कहा।

ठोरा की आवाज दोबारा नहीं आई।

खुंबरी और धरा की नजरें मिलीं। जहां धरा गम्भीर थी वहीं खुंबरी की आंखों में खतरनाक चमक लहरा रही थी।

"इंतजार कर।" खुंबरी शब्दों को चबाकर कह उठी।

"क्या मतलब?"

"मौके का इंतजार कर कि डुमरा पर हम जानलेवा वार कर सकें।"

"परंतु सोमाथ?"

"वही तो कह रही हूं कि इंतजार कर, सोमाथ नाम का ये कृत्रिम इंसान टहलते हुए इधर-उधर जाएगा तो हमें डुमरा की जान लेने का मौका मिल जाएगा। वार करके निकल जाने के लिए हमें कुछ पल ही तो चाहिए। वो आसानी से मिल जाएंगे।"

डुमरा की पेड़ की छांव तले झपकी लग गई थी। उस वक्त वो थका हुआ महसूस कर रहा था। वो नहीं जानता था कि कितनी देर झपकी में रहा। तब तोखा की सतर्क आवाज डुमरा के कानों में पड़ी।

"डुमरा।" लेकिन डुमरा पर उसके पुकारने का कोई असर नहीं हुआ।

"डुमरा। डुमरा, उठ जा। आंखें खोल।" तोखा की मध्यम-सी आवाज पुनः डुमरा के कानों से टकराई।

डुमरा थोड़ा-सा हिला और पुनः झपकी में डूब गया।

"उठ जा डुमरा। मुझे खतरा लग रहा है।" तोखा के इन शब्दों पर डुमरा की झपकी टूटी।

"क्या है?" मिचमिचाकर डुमरा ने थोड़ी-सी आंखें खोलीं।

"मैं खतरा महसूस कर रहा हूं। ताकतों की बू पास ही से आ रही है।" तोखा ने कहा।

डुमरा ने पूरी आंखें खोलीं। आसपास देखा।

सोमाथ को टहलते देखा। सब ठीक तो था।

"कुछ देर आराम कर लेने दे तोखा।" डुमरा पुनः आंखें बंद करता कह उठा—"थकान-सी हो गई...।"

"उठकर बैठ जा। ताकतों की बू मैं पास ही में महसूस कर रहा हूं। सम्भव है ओहारा कोई नया वार करने आ गया हो।"

डुमरा उठ बैठा। पुनः आस-पास हर तरफ देखा।

ऐसा कुछ नहीं दिखा कि तोखा की बात को सही कहता।

"मुझे तो कोई नजर नहीं आ रहा।" डुमरा बोला।

"तो क्या तुझे मेरी शक्ति पर शक है कि मैंने तुझसे गलत कहा।" तोखा के शब्दों से नाराजगी झलक रही थी।

"पर कुछ दिखे तो?"

"मुझे करीब ही किसी ताकत के होने का एहसास मिल रहा है। ताकतों की बू महसूस कर लेने का मुझे पुराना अनुभव है। तेरे को अच्छी तरह पता है कि पूरा यकीन होने पर ही मैं ऐसी बात तुझसे कहता हूं।"

डुमरा ने कुछ कदमों दूर सोमाथ से कहा।

"तुम्हें यहां कोई दिखा?"

"नहीं। यहां तो हम दोनों ही हैं।" सोमाथ ने ठिठककर जवाब दिया—"तुमने ये क्यों पूछा?"

"मुझे एहसास हो रहा है कि जैसे ताकतें यहां पास ही में कहीं हों।"

सोमाथ ने अपनी खोजी निगाह हर तरफ घुमाई।

▭ ▭

डुमरा और सोमाथ के शब्द, खुंबरी और धरा के कानों में पड़ रहे थे। दोनों की सतर्क निगाहें मिलीं।

"डुमरा को कैसे पता चल गया कि हम पास में हैं?" धरा फुसफुसाई।

"शक्तियां ताकतों की गंध पा लेती हैं। तभी तो डुमरा को हमारे पास होने का एहसास हो रहा है।" खुंबरी बोली।

"इस वक्त हमें सतर्क रहना होगा।"

"हम मोटे तने की ओट में हैं। वो हमें नहीं देख सकते।" खुंबरी ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

▭ ▭

"मुझे तो सब ठीक नजर आ रहा है। यहां सिर्फ हम ही हैं।" सोमाथ बोला।

"फिर मुझे क्यों लग रहा है कि ताकतें पास ही में हैं।" कहते हुए डुमरा उठ खड़ा हुआ।

"तुम इस कृत्रिम इंसान से क्या पूछ रहे हो।" तोखा की धीमी आवाज में झल्लाहट भर आई थी—"कहां मैं और कहां महापंडित का बनाया ये कृत्रिम इंसान। मेरी शक्ति पर तुम अविश्वास कर रहे हो।"

"मैं ऐसा सोच भी नहीं सकता।"

"तो फिर मेरा भरोसा क्यों नहीं कर रहे कि ताकतें पास ही में हैं। मैंने उनकी गंध को हवा में पाया है। महसूस किया है।"

"कुछ दिखे भी।" डुमरा की गम्भीर नजर जंगल में दूर-दूर तक जाने लगीं।

कई पल बीत गए। तोखा की पुनः आवाज नहीं आई। एकाएक डुमरा को महसूस हुआ जैसे कंधे पर अंजाना-सा बोझ कम हो गया हो। तोखा वहां से कहीं चला गया हो। डुमरा को इस प्रकार तोखा के जाने पर हैरानी हुई। तोखा कभी भी बिना बताए नहीं जाता था। लेकिन इस बार वो खामोशी से चला गया था। तोखा की इस हरकत से एकाएक डुमरा को खतरे का एहसास होने लगा। मन-ही-मन वो सतर्क हो उठा।

तभी सोमाथ वहां पहुंचकर बोला।

"तुम्हें ताकतों के पास होने का एहसास हो रहा है?"

"हां।" डुमरा गम्भीर था।

"लेकिन यहां तो कोई भी नजर नहीं आ रहा।" सोमाथ की निगाह घने पेड़ों पर भी गई।

"ये ही तो हैरानी है कि कुछ नजर क्यों नहीं आ रहा। ओहारा

फिर वार करने आया होगा। इस बार उसकी तैयारी जबर्दस्त होगी। हैरानी है कि इतनी जल्दी तैयारी करके वो कैसे मेरे पास लौट सकता...।"

"मुझे अफसोस है कि ताकतों और शक्तियों के झगड़े में मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता।"

"मैं तुम्हारी मजबूरी समझता...।" कहते-कहते डुमरा चुप हो गया।

उसी पल तोखा के पुनः कंधे पर आ बैठने का एहसास हुआ।

सोमाथ ने डुमरा को देखा कि वो अचानक चुप क्यों हो गया?

"डुमरा।" तोखा की धीमी किंतु तेज भाव की आवाज आई—"खुंबरी और उसका रूप धरा यहां आ पहुंची है।"

"क्या?" डुमरा चिहुंक उठा।

सोमाथ समझ गया कि डुमरा किसी शक्ति से बात कर रहा है।

"खुंबरी और धरा बाईं तरफ, बीस कदमों की दूरी पर पेड़ के तने के पीछे छिपी खड़ी हैं।"

डुमरा की निगाह उस तरफ घूमी।

▭ ▭

खुंबरी ने फौरन अपना सिर तने की ओट में खींच लिया।

"क्या हुआ?" धरा ने कहा।

"डुमरा को हमारी मौजूदगी का पता चल गया है। वो इसी तरफ वाले पेड़ों के तनों को देखे जा रहा है।"

"भला उसे कैसे पता चला?"

"उसकी सहायक शक्ति उसके पास होगी। उसने ही हमें देख लिया होगा।"

"ओह। ये तो बुरा हुआ।" धरा चिंतित स्वर में कह उठी।

"तू डर गई?" खुंबरी क्रूर स्वर में कह उठी।

"तेरे को पता है कि मैं डरने वाली नहीं। पर मेरी चिंता सोमाथ के लिए है।"

"सोमाथ को ज्यादा हवा मत दे। हम डुमरा पर वार करके भाग जाएंगी। सोमाथ हमारे बराबर नहीं दौड़ सकता।"

"क्या पता। मैंने सोमाथ को दौड़ते हुए कभी नहीं देखा।"

"वो कृत्रिम इंसान है। उसकी भी अपनी सीमाएं होंगी।" खुंबरी ने कठोर स्वर में कहा और हाथ आगे करके होंठों-ही-होंठों में कुछ बड़बड़ाई कि उसी पल चमकती तलवार उसके हाथ में थमी नजर आने लगी। साढ़े चार फुट पतली और लम्बी तलवार। जिसकी धार बहुत पैनी महसूस हो

रही थी। 'मूठ' की जगह, कीमती धातु से बनाई गई थी कि उस पर जब हाथ टिके तो आसानी से हट न सके।

"ओह।" धरा तलवार को देखते ही कह उठी—"ये तो ताकतों वाली खास तलवार है।"

"हां।" खुंबरी जहरीले अंदाज में मुस्करा पड़ी—"ये हाथ में हो तो दुश्मन से हार जाने का मतलब ही नहीं, क्योंकि ताकतें भी डुमरा पर वार करने में मेरी सहायता...।"

खुंबरी के शब्द अधूरे रह गए।

तने के दूसरी तरफ से कुछ आहटें उभरी थीं।

"कोई हमारे पास आ गया है।" धरा कहर भरे ढंग से मुस्कराई तो उसका निचला होंठ टेढ़ा-सा दिखने लगा—"सोचती क्या है। चल वार कर और अपने दुश्मन का खेल खत्म कर दे।"

अगले ही पल खुंबरी और धरा फुर्ती से पेड़ के तने की ओट से बाहर निकल आईं। सामने देखते ही दोनों की आंखों में शोले उछालें मारने लगे।

आठ कदमों के फासले पर डुमरा खड़ा था। उसके हाथ में हल्के गुलाबी रंग की दो फुट लम्बी तलवार थी। तलवार का फल, मूठ, सबकुछ गुलाबीपन लिए हुए था। उससे चार कदम पीछे सोमाथ खड़ा था।

डुमरा और खुंबरी की नजरें मिलीं।

▭ ▭

डुमरा कई पलों तक पेड़ों के तनों को देखता रहा था।

उसे कुछ भी नहीं दिखा।

डुमरा की नजरों का पीछा करते सोमाथ ने भी उस तरफ देखा।

"मुझे तो सिर्फ पेड़ों के तने दिख रहे हैं।" डुमरा ने कहा—"तुम किस तने की बात कर रहे हो।"

"सबसे मोटे तने को देखो।" तोखा के शब्द कानों में पड़े।

"मुझे मोटे तने दो ही नजर आ रहे...।"

"पहले वाला मोटा तना छोड़ दो। आगे वाला मोटे तने को देखो, जो कि करीब तीस कदमों की दूरी पर है। उसी तने के पीछे खुंबरी और धरा छिपी, तुम पर वार करने के लिए मौके की तलाश में हैं। मैंने उनकी बातें सुनी हैं। वो तुमसे नहीं सोमाथ से हिचक रही हैं कि सोमाथ पर ताकतों वाले वार का असर नहीं होगा और अपनी ताकत से वो सोमाथ का मुकाबला कर नहीं सकती। सोमाथ तुम्हारे साथ न होता तो तुम पर वार हो चुका होता। उस वक्त तुम झपकी ले रहे थे और खुंबरी के पास बेहतरीन मौका था तुम पर वार करने का।"

"तो सोमाथ ने अनजाने में मेरी सहायता करके मेरी जान बचा ली।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम्हारे पास शक्तियों के कण वाला वार है न? जो तुमने मुझसे कहा था।"

"हां।"

"तो खुंबरी को जान से मारने का बेहतरीन मौका है तुम्हारे पास। आगे बढ़ो और खुंबरी को खत्म कर दो।" तोखा के धीमे शब्द डुमरा के कानों से टकराए—"दोनों घूमते-घूमते इस तरफ आ निकलीं और तुम्हें देखकर रुक गईं।"

"इसका मतलब खुंबरी का ठिकाना पास ही कहीं है।"

"ये मैं नहीं जानता।"

डुमरा ने उसी पल अपनी दांई हथेली खोलकर आगे फैलाई और कुछ बुदबुदा उठा।

अगले ही पल उसके हाथ में दो फुट लम्बी गुलाबी तलवार दिखने लगी।

ये होता पाकर सोमाथ के होंठ सिकुड़े।

"ये ही शक्तियों के कण हथियार हैं?" तोखा ने पूछा।

"हां। अगर दुश्मन सामने हो तो उसका नाम लेकर छोड़ देने पर, तलवार खुद ही आगे जाकर उसकी जान ले लेगी।"

"खूब। अब खुंबरी की खैर नहीं।"

डुमरा ने सोमाथ को देखा।

सोमाथ की नजरें जैसे डुमरा से पूछ रही हों कि क्या बात है?

"उस पेड़ के तने के पीछे खुंबरी और धरा छिपी हुई हैं। आओ और खुंबरी की जान जाते देखो। तुम्हें कुछ भी करने की जरूरत नहीं, क्योंकि मेरे पास शक्तियों के कण वाला हथियार है। इस हथियार के सामने खुंबरी की ताकतें बेजान पड़ जाएंगी। इस वक्त का मुझे कब से इंतजार था।" कहने के साथ डुमरा उस गुलाबी तलवार को थामे, पेड़ों के तनों के पास से निकलते, उस आगे वाले मोटे तने की तरफ बढ़ने लगा। वो इस तरह चल रहा था कि कदमों की आवाज न उठे। नजरें उसी मोटे तने पर थीं।

सोमाथ उसके पीछे चल पड़ा।

वे आगे बढ़ते हुए उस तने के पास पहुंचने वाले थे कि एकाएक डुमरा थम गया। मात्र पांच कदमों का फासला रह गया था कि एकाएक उसी तने की ओट से खुंबरी और धरा को बाहर निकलते देखा।

सब कुछ बहुत तेजी से हुआ था।

डुमरा और खुंबरी की नजरें मिलीं।

डुमरा खुंबरी के हाथ में दबी तलवार का एहसास पा चुका था। वो ये भी जानता था कि ऐसे मौके पर खुंबरी के हाथ में सामान्य तलवार नहीं, खास ताकतों वाली तलवार रही होगी। डुमरा अब खुंबरी को और मौका देने को तैयार नहीं था। उसने पांच कदमों के फासले से ही गुलाबी तलवार वाला हाथ सीधा किया और खुंबरी का नाम होंठों से लेते हुए हथेली को उसी पल खोल दिया।

हाथ से छूटते ही गुलाबी तलवार नीचे गिरने की अपेक्षा तेजी से खुंबरी की तरफ लपकी। पांच कदमों का फासला था। मात्र दो पल ही लगने थे तलवार के खुंबरी तक पहुंचने में।

इन्हीं दो पलों में ये सब हुआ।

तलवार डुमरा के हाथ से छूटकर ज्योंही हवा में आगे खुंबरी की तरफ बढ़ी तो पल के हजारहवें हिस्से में खुंबरी तुरंत भांप गई कि तलवार में कुछ खास है। इससे पहले कि तलवार खुंबरी तक पहुंच पाती, खुंबरी ने डेढ़ कदम दूर खड़ी धरा की बांह पकड़ी और तीव्र झटका देकर उसे अपने सामने खींच लिया।

धरा लड़खड़ाती हुई खुंबरी के आगे आ पहुंची।

धरा की समझ में न आया कि खुंबरी क्या कर रही है। वो ठीक से समझ भी नहीं सकी कि क्या होने वाला है कि तभी वो गुलाबी तलवार धरा की छाती के आर-पार होती चली गई।

धरा के होंठों से चीख निकल गई।

अगर खुंबरी धरा को खींचकर अपने सामने न करती तो गुलाबी तलवार स्वयं उसके सीने के आर-पार हो जानी थी कि उसने अपनी मौत धरा के हवाले कर दी थी।

ये सब मात्र दो पलों में ही घट गया था।

इसके साथ ही खुंबरी का चेहरा क्रोध से धधक उठा था।

धरा की टांगें मुड़ती चली गईं और छाती में धंसी तलवार थामे वो नीचे जा गिरी।

"अब तू जिंदा नहीं बचेगा डुमरा।" खुंबरी चीखी और तलवार थामे डुमरा पर झपटी।

तभी सोमाथ पीछे से आगे आया और डुमरा को धक्का देते हुए खुंबरी की तलवार थामने की चेष्टा में खुंबरी से जा टकराया। क्रोध में पागल हुई खुंबरी से जब सोमाथ टकराया तो खुंबरी को तीव्र झटका लगा और वो दो कदम पीछे को जा गिरी। इससे पहले कि वो संभल पाती, सोमाथ ने उसके हाथ में दबी तलवार पर पांव रख दिया।

ऐसा होते ही खुंबरी तलवार न उठा पाई।
खुंबरी ने दांत किटकिटाकर सोमाथ को देखा।
सोमाथ मुस्करा रहा था। उसे ही देख रहा था।
"इसे खत्म कर दे सोमाथ।" पीछे से डुमरा ने कहा।
सोमाथ हाथ आगे बढ़ाकर खुंबरी को पकड़ने को हुआ।
खुंबरी की तलवार सोमाथ के पांवों के नीचे दबी थी। अगर सोमाथ कृत्रिम इंसान न होता तो तलवार पर पांव रखते ही उसने उछलकर दूर जा गिरना था। परंतु तलवार में मौजूद ताकतों ने उस पर कोई असर नहीं किया था। ये बात खुंबरी अच्छी तरह समझ चुकी थी। अब एकाएक डुमरा उसके दिमाग से निकल गया था और खतरे के रूप में सोमाथ सामने था। सोमाथ से बचना था उसने। डुमरा ने तो उससे कह दिया था कि उसे खत्म कर दे।
इससे पहले कि सोमाथ खुंबरी को पकड़ पाता—
खुंबरी ने तलवार की मूठ छोड़ी और लुढ़कती हुई तीन कदम दूर हुई फिर बेहद फुर्ती के साथ खड़ी हुई और एक दिशा में भाग निकली।
"उसे पकड़ो सोमाथ और खत्म कर दो।" डुमरा ने गुस्से से कहा।
उसी पल सोमाथ खुंबरी के पीछे भागता चला गया।
डुमरा ने नीचे पड़ी धरा को देखा और उसके पास आ बैठा। उसका सिर उठाकर अपने घुटने पर रख लिया। धरा पीड़ा से कराह रही थी। उसका चेहरा लाल हो चुका था। कठिनता से आंखें खोलकर उसने डुमरा को देखा।
डुमरा की गम्भीर निगाह धरा पर ही थी।
"धोखा...।" धरा के होंठों से कांपता स्वर निकला।
"खुंबरी ने अपनी मौत, तेरे को दे दी।" डुमरा ने कहा।
"उ...उसने गलत किया। मेरी जान...।"
"वो खुंबरी है। सिर्फ अपने लिए जीती है। ताकतों के गरूर में वो बहुत बुरी बन चुकी है। तुम तो उसका ही रूप हो। परंतु तुमने कभी भी खुंबरी का मन पढ़ने की कोशिश नहीं की। अपने को बचाने के लिए उसने तुम्हारी जान ले ली।"
"मुझे बचा लो डुमरा। मैं हमेशा तुम्हारी सेवा करूंगी।" धरा कराहते हुए बोली—"ओह, मेरा दम घुट रहा है। सांसें अटक रही हैं। मुझे क्या हो रहा है। तुम—तुम...।"
"तुम्हारी जान जा रही है।" डुमरा गम्भीर स्वर में बोला।
"मुझे बचा...।"

"नहीं बचा सकता। शक्तियों के कण वाली ये तलवार है। इसका वार जिस पर हो जाए, वो नहीं बच सकता। मैंने तो खुंबरी की जान लेने के लिए ये वार किया था, परंतु उसने तुम्हें सामने खींच लिया।"

"खुंबरी बुरी, है उसने मुझे धोखा...।" तभी धरा की गर्दन एक तरफ को हो गई। उसकी जान निकल गई थी। आंखें खुली पड़ी थीं। वो खुंबरी के विश्वासघात का शिकार हो गई थी।

डुमरा कुछ पल धरा के मृत चेहरे को देखता रहा फिर उसका सिर घुटने से नीचे रख दिया। उठ खड़ा हुआ। जंगल में हर तरफ गम्भीर नजरों से देखा। खुंबरी और सोमाथ कहीं भी नहीं दिखे।

"खुंबरी ने चालाकी से धरा को अपने सामने खींच लिया था कि वो बच जाए।" तोखा के शब्द कानों में पड़े—"वो भांप गई थी कि तुम्हारी गुलाबी तलवार में जरूर कोई खास बात है। खुंबरी बहुत शातिर है।"

"बेशक वो शातिर है।" डुमरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"लेकिन खुंबरी की ताकतें सोमाथ पर असर नहीं कर सकेंगी। देखना तो ये है कि क्या खुंबरी सोमाथ से बच पाती है।"

▭ ▭

खुंबरी तूफानी गति से दौड़े जा रही थी। उसकी सांस तेजी से चल रही थी। हर तरफ पेड़ ही पेड़ नजर आ रहे थे। पेड़ों से छन कर धूप की पतली-मोटी लकीरें जमीन पर पड़ रही थीं। चेहरे पर पसीना बहने लगा था। वो पीछे आते सोमाथ को देख चुकी थी और उससे पीछा छुड़ा लेना चाहती थी।

वो जानती थी कि सोमाथ जैसे कृत्रिम इंसान से मुकाबला नहीं कर सकती। वो ताकतवर है और उसकी ताकतें उस पर नहीं चल सकतीं।

पूरी शक्ति से दौड़ रही थी खुंबरी।

पीछे भी कम ही देख रही थी कि पीछे देखने के फेर में उसके दौड़ने की रफ्तार कम न हो जाए। इस वक्त डुमरा या धरा उसे याद नहीं आ रही थीं। याद था तो सिर्फ सोमाथ।

दौड़ते-दौड़ते उसने गले में पड़ा बटाका थामा और हांफते स्वर में पुकारा।

"ओहारा।"

"हुक्म महान खुंबरी।"

"मैं खतरे में हूं...। मैं...।"

"जानता हूं।" ओहारा की आवाज दौड़ती खुंबरी के कानों में पड़ी, जैसे ओहारा उसके कान के पास मौजूद हो।

खुंबरी के दौड़ने की रफ्तार में कमी नहीं आई थी बातों के दौरान।

"मुझे बचाने के लिए कुछ करो।" खुंबरी चीखी।

"सोमाथ से मैं नहीं बचा सकता। उस पर ताकतों का कोई वार नहीं चलेगा।"

"उसे मेरे पीछे आने से रोको।"

"ये भी सम्भव नहीं।" ओहारा के शब्द कानों में पड़े।

"तो क्या तुम मुझे बचाने के लिए कुछ नहीं कर सकते?" खुंबरी गुस्से में भरी पड़ी थी।

"तुमने ठोरा की बात नहीं मानी। ठोरा ने तुमसे कहा था कि डुमरा से मत उलझो। ठोरा को आगे का वक्त नजर नहीं आ रहा था। तुम्हें ठोरा की बात मान लेनी चाहिए थी। परंतु तुमने अपने मन की, की।"

"मैं डुमरा को मार देना चाहती थी।"

"लेकिन अब तुम मुसीबत में पड़ गईं।"

"मुझे बचाओ ओहारा। सोमाथ पर कोई असफल वार ही कर दो कि मेरे पीछे आने से भटक जाए।"

"ऐसी कोशिश मैं करके देखता हूं।"

"जल्दी करो, वो मेरे पीछे आ रहा है।" खुंबरी ने चीखकर कहा और बटाका छोड़कर तेजी से भागती रही।

▭ ▭

सोमाथ, खुंबरी के पीछे भाग रहा था। खुंबरी कभी उसे दिखाई दे जाती तो कभी पेड़ के तनों की ओट में होकर नजर आना बंद हो जाती थी। ज्यादा तेज भागने में सोमाथ को समस्या थी। वो कृत्रिम इंसान था। धातु से बनी उसकी कृत्रिम टांगें भी एक हद तक ही तेजी से दौड़ सकती थीं। महापंडित ने उसका निर्माण दौड़ने के लिए नहीं किया था। अब दौड़ना पड़ रहा था तो एक हद से ज्यादा तेज नहीं दौड़ पा रहा था। परंतु खुंबरी का पीछा वो नहीं छोड़ना चाहता था। उसे पता था कि अगर एक बार खुंबरी हाथ लग गई तो वो बचने वाली नहीं।

सोमाथ को खुंबरी के पीछे दौड़ते-दौड़ते कुछ देर हो चुकी थी। अभी तक खुंबरी उसकी निगाहों में थी। वो जानता था कि एक बार खुंबरी जंगल में नजरों से ओझल हो गई तो फिर नहीं मिलने वाली। सोमाथ ने और तेज दौड़ने की चेष्टा की। इस वक्त वो लगभग खुंबरी की रफ्तार के बराबर ही दौड़ रहा था।

तभी सोमाथ ने अपने साथ दोती को दौड़ते पाया।

लेकिन सोमाथ ने अपनी दौड़ कम नहीं होने दी।

"कृत्रिम इंसान।" दोती साथ में दौड़ते कह उठी—"तुम तो बढ़िया दौड़ लेते हो।"

सोमाथ ने जवाब नहीं दिया।

"जानते हो मैं तुम्हारे साथ क्यों दौड़ रही हूं।"

"मुझे सोमाथ कहो। मेरा नाम कृत्रिम इंसान नहीं है।" दौड़ते हुए सोमाथ शांत स्वर में बोला।

"ठीक है। अब मैं तुम्हें सोमाथ ही कहूंगी।" दोती बोली—"मैं तुम्हारे साथ इसलिए दौड़ रही हूं कि हम मिलकर खुंबरी को पकड़ सकें। ये मौका अच्छा है। तुम पर खुंबरी की ताकतें असर नहीं कर सकतीं। मैं वैसे ही खुंबरी से बहुत परेशान हूं। उससे आजाद होना चाहती हूं। तुम खुंबरी को मार दो तो बहुत अच्छा हो जाए।"

दौड़ते-दौड़ते सोमाथ मुस्कराया।

"तुम थोड़ा और तेज दौड़ो तो खुंबरी को पकड़ लोगे।"

"मैं इससे तेज नहीं दौड़ सकता।"

"ऐसा क्यों? मैं तो दौड़ सकती हूं।"

"तुम चली जाओ यहां से। मैं जानता हूं कि तुम मेरा ध्यान बंटा आई हो।"

"मैं ऐसा क्यों करूंगी?"

"खुंबरी को बचाने के लिए। लेकिन मैं उसे छोड़ने वाला नहीं।" दौड़ते हुए सोमाथ ने शांत स्वर में कहा। कृत्रिम मानव होने की वजह से भागने से उसकी सांस नहीं फूल रही थी। वो शांत लग रहा था।

"तुम्हें मेरे पर भरोसा नहीं।"

"मैं जानता हूं तुम असल में क्या हो। मुझे बेवकूफ नहीं बना सकतीं।"

"मेरी बात पर तुम्हें विश्वास कर लेना चाहिए। मैं खुंबरी की दुश्मन... ।"

उसी पल सोमाथ के साथ टोमाथ दौड़ता दिखने लगा। (टोमाथ के बारे में जानने के लिए पढ़ें अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा और सोमाथ'**।)

"तुम क्यों आए हो टोमाथ?" दोती मुंह टेढ़ा करके कह उठी।

"मैं सोमाथ को बताने आया हूं कि तुम खुंबरी की दुश्मन नहीं हो। दुश्मन तो मैं हूं खुंबरी का।"

"झूठे।"

"सोमाथ।" साथ में दौड़ता टोमाथ बोला—"दोती की बातों का जरा भी भरोसा मत करना। ये झूठी है और खुंबरी के लिए काम कर रही है।

ओहारा की हर बात मानती है। खुंबरी का असली दुश्मन तो मैं हूं। मैं तुम्हारे साथ खुंबरी को पकड़ूंगा।"

"तुम खुंबरी की सेवा में रहते हो।" दोती ने कहा।

"वो तो मजबूरी है। मैं दिल से खुंबरी की सेवा नहीं करता। परंतु तुम दिल से करती हो। डुमरा पर वारों की कड़ी चलाने में तुमने पूरी तरह ओहारा का साथ दिया। मैंने कितनी बार कहा है कि डुमरा की जान मत लो। वो अच्छा इंसान है।"

"कब कहा तूने—तू तो...।"

"ओहारा से कहा था। तब तू पास में नहीं थी। ओहारा से पूछ लेना टोमाथ बोला।

"इसकी बातों में मत फंसना सोमाथ।" दोती ने कहा—"ये बहुत झूठा है।"

"मैं तुम दोनों के बारे में खूब अच्छी तरह जानता हूं।" दौड़ते हुए सोमाथ ने कहा।

"देखा।" टोमाथ बोला—"ये जानता है कि मैं सच कह रहा हूं।"

"इसने ये नहीं कहा। इसने कहा है कि ये हमारी बेईमानी को जानता है।" दोती ने बात स्पष्ट की।

"मेरी नहीं तुम्हारी बेईमानी को। इसे पता है कि टोमाथ बेईमान नहीं है।"

तभी उनके साथ मूसी दौड़ती दिखने लगी। मूसी से भी आप **'बबूसा और सोमाथ'** उपन्यास में मिल चुके हैं। उसे देखते ही दोती बोल पड़ी।

"लो, अब मूसी भी आ गई।"

"क्यों न आऊंगी। तुम दोनों सोमाथ का दिमाग खराब करने पर लगे हो। ये कृत्रिम इंसान हुआ तो क्या हुआ, सब बातों को समझता है। मैं सोमाथ की तरफ से कहती हूं कि तुम दोनों यहां से चली जाओ। सोमाथ मेरे साथ रहकर खुंबरी को पकड़ लेगा। अब तो मुझे मौका मिला है खुंबरी से बदला लेने का।"

दौड़ते-दौड़ते सोमाथ मूसी की बात पर मुस्करा पड़ा।

"अपनी औकात तो देख। तू क्या बदला लेगी। खुंबरी तो तेरे को फूंक मारकर उड़ा देगी।"

"सोमाथ खुंबरी की जान ले लेगा। बहुत जुल्म किए हैं खुंबरी ने मुझ पर।"

"जुल्म?" दोती ने व्यंग से कहा—"तू तो हमेशा अपने को संवार-संवार के रखती है। किसको दिखाती है अपना रूप?"

"ओहारा की नजरों में चढ़ने की कोशिश कर रही हूं।"

"ओहारा मेरा है।" दोती ने चिढ़कर कहा।

"ओहारा के माथे पर दोती का नाम नहीं लिखा। ओहारा अब मुझे पसंद करने लगा है। उसने कई बार एकांत में मुझे बुलाया। मुझसे बातें कीं। तुम देखना एक दिन मेरा नाम अपने माथे पर लिख लेगा।"

"जा-जा, तेरी औकात ही क्या है।" दोती ने तीखे स्वर में कहा—"ओहारा सिर्फ मुझे...।"

"तुम दोनों ओहारा के पीछे क्यों लड़ रही हो।" उसी पल मोरगा की आवाज उभरी। सबने मोरगा को साथ दौड़ते पाया—"ओहारा तुम दोनों में से किसी का नहीं है। मैं अभी ओहारा के पास से ही आ रही हूं।"

"तुम ओहारा से मिलकर आई हो?" दोती बोली।

"हां। उसने मुझे स्पष्ट तौर पर कहा है कि वो दोती से पीछा छुड़ा लेगा और जब भी जश्न होगा वो मेरे हाथ से कारू पीएगा। रात भी मेरे साथ रहेगा। वो मुझे बहुत चाहने लगा है।" मोरगा बोली।

"मैं जानती हूं तू ऐसी बातें फेंकने में माहिर है।" मूसी ने तीखे स्वर में कहा—"ओहारा तेरे को जरा भी नहीं चाहता। एकांत में वो मेरे को मिलता है। मेरे को अपने दिल का हाल बताता है। मैं ही उसकी खास हूं।"

"इसका मतलब वो तेरे और मेरे से, दोनों से ही प्यार करता है।" मोरगा बोली।

"तुम दोनों बकवास कर रही हो।" दोती ने नाराजगी से कहा—"ओहारा सिर्फ मुझे चाहता है। तुम दोनों के बारे में मैंने उसे कभी कुछ कहते नहीं सुना। मैं ओहारा की चहेती सेविका हूं।"

"तू इसी भ्रम में पड़ी रह।" मूसी ने हंसकर कहा—"सच्चाई तो हम ही जानती हैं। क्यों मोरगा।"

मोरगा जवाब में हंस पड़ी।

सोमाथ बराबर उसी रफ्तार से दौड़े जा रहा था। थकान नाम की उसमें कोई बात नहीं थी। क्योंकि वो महापंडित का बनाया हुआ कृत्रिम इंसान था। उसकी हिम्मत उसकी बैटरी थी। जो उसे चलाती थी। इन सबकी बातों का मतलब वो बखूबी समझ रहा था। ये उसे उलझा कर उसे खुंबरी के पीछे जाने से भटकाना चाहती थीं। जबकि सोमाथ को आगे, दूर खुंबरी रह-रहकर तनों के बीच में दौड़ती दिखाई दे जाती थी।

"तुम सब चले जाओ मेरे पास से।" सोमाथ बोला—"मैं तुम्हारी चालों में आकर फंसने वाला नहीं। तुम सब खुंबरी को बचाना चाहते हो और मैं उसे नहीं छोड़ने वाला।" बेशक खुंबरी सोमाथ से कुछ तेज भाग रही थी परंतु सोमाथ के कृत्रिम शरीर में इस वक्त जो सबसे खास बात सामने आ रही थी, वो ये थी कि सोमाथ को थकान का एहसास नहीं था, जबकि खुंबरी...।"

▭ ▭

खुंबरी की सांसें दौड़ते-दौड़ते उखड़ने लगी थीं। एकसार दौड़े जा रही थी वो। सीना उठ बैठ रहा था। चेहरा और कपड़े पसीने से भीग चुके थे टांगों में थकान का कम्पन होने लगा था। इस वक्त भागते समय मुंह खोले सांसें ले रही थी। अब उसकी दौड़ने की रफ्तार में कुछ कमी आ गई थी। बालों की लटें चेहरे पर आकर बिखरने लगी थीं। गालों से चिपक रही थी। वो रुकना चाहती थी, ठहरना चाहती थी। उखड़ी सांसों को ठीक करना चाहती थी परंतु पीछे एक ही रफ्तार से दौड़ता आता सोमाथ उसे भागते रहने पर मजबूर कर रहा था।

खुंबरी ने दौड़ते-हांफते बटाका थामकर ओहारा को पुकारा।

"सुन ओहारा।" वो थकी-सी पड़ी थी।

"हुक्म महान खुंबरी।" ओहारा की आवाज उसके कानों में पड़ी।

"मैं क्या करूं। थक गई हूं। और दौड़ा नहीं जा रहा।" मुंह खोले हांफते खुंबरी कह उठी।

"इस वक्त कई ताकतें उस कृत्रिम इंसान के पास, उसे भटकाने के प्रयत्न में लगी हैं।"

"सोमाथ पर कोई ऐसा वार कर कि कुछ देर के लिए वो उलझ जाए। मेरे लिए इतना वक्त ही बहुत होगा।"

"मैं एक छोटा-सा वार सोमाथ पर करने वाला हूं कि उसका भागना कुछ देर के लिए थम जाएगा।"

"जल्दी कर। अब मुझसे और नहीं दौड़ा जाता।"

ओहारा की आवाज नहीं आई।

खुंबरी ने दौड़ते-दौड़ते पीछे गर्दन घुमाकर देखा।

सोमाथ को कुछ दूर, पीछे दौड़ते आते देखा। उसके साथ दोती, मोरगा, मूसी और टोमाथ को भी देखा। खुंबरी ने हिम्मत इकट्ठी की और एक बार फिर तेजी से दौड़ने लगी। परंतु वो महसूस कर रही थी कि अब ज्यादा देर नहीं दौड़ पाएगी। उसे कुछ आराम की जरूर है, परंतु पीछे आता सोमाथ उसे दौड़ते रहने पर मजबूर कर रहा था।

“और तेज भाग सोमाथ।” दोती बोली—“खुंबरी मुझे यहां से नजर आ रही है। आज छोड़ना नहीं है उसे।”

सोमाथ उसी रफ्तार से भागता रहा।

मूसी, मोरगा और टोमाथ भी साथ-साथ भाग रहे थे। ये जुदा बात थी कि वो स्वयं शरीर के साथ मौजूद नहीं थे। उनके अक्स ही थे जो कि पूर्ण मनुष्य जैसे लग रहे थे।

“तुम तीनों ओहारा के पीछे क्यों पड़ी रहती हो।” टोमाथ बोला—“तीनों ही सुंदर हो। मेरा हाथ थाम लो।”

“मैं तो ओहारा की सेवा में हूं।” दोती बोली।

“मैं भी।” मोरगा ने कहा।

“मैं तो सच में हूं।” मूसी कह उठी।

“तो क्या मैं झूठी हूं।” मोरगा ने तुनककर कहा।

“मैंने तो अपने बारे में कहा है।” मूसी मुस्कराकर बोली।

“मेरा हाथ कौन थामेगा?”

“जब तू बड़ी ताकत बन जाएगा तो मैं तेरे पास आ जाऊंगी।” मूसी ने कहा।

“तुम्हें तो अभी आ...।”

इसी पल रास्ते में आने वाला एक घना पेड़, तने से ऐसे कट गया जैसे किसी ने मशीन से काटा हो और वो भरभराकर सोमाथ के ऊपर गिरने लगा। पेड़ों के पत्तों की छन-छन सुनकर सोमाथ ने बाईं तरफ तुरंत गर्दन घुमाई तो पेड़ को अपने ऊपर आते देखकर, उसी पल जोरों से दौड़ पड़ा

चंद पलों पहले ही सोमाथ वहां से निकल चुका था, जहां पेड़ गिरा।

सोमाथ ने आगे देखा।

काफी आगे पेड़ों के तनों के बीच में से खुंबरी भागती दिखी।

सोमाथ खुंबरी की तरफ भागता रहा।

तभी मोरगा, दोती, टोमाथ और मूसी पहले की तरह उसके साथ दौड़ते दिखने लगे।

“तुम तो बच गए सोमाथ।” टोमाथ बोला—“पेड़ तुम्हारे ऊपर गिर जाता तो तुम्हारी मशीन टूट-फूट जाती।”

सोमाथ उसी तरह भागता रहा।

“ये पेड़ भी जरूर खुंबरी ने ही गिराया होगा।” मूसी ने कहा—“वो नहीं चाहती कि तुम उसके पीछे आओ।”

“मैं तो थक गई हूं।” दोती ने सोमाथ को देखा—“कुछ रुककर आराम

कर लें। बेचारी खुंबरी भी कब से दौड़ रही है। उसे भी तो दम भरने का वक्त चाहिए। थोड़ा-सा रुक जाते हैं।"

सोमाथ दौड़ता रहा।

"दोती की बातों में मत आना।" मोरगा कह उठी—"ये तुम्हें भटकाना चाहती है।"

"मैं जानता हूं कि तुम सबको ही मेरी चिंता है।" भागते-भागते सोमाथ ने कहा।

"क्यों न होगी।" मूसी ने मुस्कराकर कहा—"आखिर तुम हमारे लिए खुंबरी को मारने जा रहे हो।"

"सोमाथ सिर्फ मेरी बात मानता है। मैंने ही पहले कहा था कि खुंबरी को मारे।" दोती बोली।

"मैंने भी तो कहा था।" मूसी ने कहा—"सोमाथ से पूछ लो। व सोमाथ तुम ही...।"

तभी एक फैला हुआ पेड़ जमीन के पास से इस तरह कट गया जैसे उसे मशीन से पलक झपकते ही काट दिया हो। तने से कटते ही पेड़ उसी दिशा में गिरा, जिधर से सोमाथ भागा जा रहा था।

इस बार सोमाथ बच न सका।

पेड़ सोमाथ के ऊपर आ गिरा। लेकिन कुछ इस तरह गिरा कि वो सिर्फ पेड़ों की छोटी-छोटी टहनियों में उलझ गया। कोई मोटा तना उस पर नहीं गिरा। सोमाथ संभला। किसी तरह अपने ऊपर से छोटी-छोटी टहनियों और पत्तों को हटाकर खड़ा हुआ और आगे भागती खुंबरी की तरफ देखा।

परंतु खुंबरी दिखाई नहीं दी।

सोमाथ ने जल्दी से गिरे-फैले पेड़ को पार किया और पुनः उस तरफ दौड़ने लगा जिस तरफ खुंबरी को दौड़ते देखा था। उसक माथे पर बल आ गए थे। वो जानता था कि पेड़ गिराने की हरकत जानबूझकर ताकतों ने ही की है कि वो रुकावट में फंसे और खुंबरी उसके हाथों से बच निकले।

▭ ▭

खुंबरी की सांसें भागते हुए टूट चुकी थीं। टांगें जवाब देती जा रही थीं। भागने की हिम्मत जैसे खत्म हो चुकी थी। टांगों को घसीटते हुए वो भाग रही थी कि ओहारा की आवाज उसके कानों में पड़ी।

"महान खुंबरी।"

"ओ-हा-रा-।" खुंबरी टूटती सांसों, से हांफते कह उठी।

"सोमाथ के भागने में रुकावट डाल दी है। जैसा तुम चाहती थीं।" ओहारा के शब्द कानों में पड़े।

"कह तो ऐसे रहे हो जैसे तुम जानते हो कि खुंबरी कहां पर है।" दोती ने मुंह बनाया।

"मालूम है मुझे कि खुंबरी कहां पर है।"

"तो बता क्यों नहीं देता।"

"मैं नहीं बताऊंगा।" टोमाथ ने हाथ हिलाया।

"ये क्या बात हुई कि तुझे पता है पर बताएगा नहीं।"

"औरतें झूठ बोलती हैं, पर मैं झूठ नहीं बोलता। मुझे पता है, पर बताऊंगा नहीं।"

"जा-जा।" दोती ने मुंह बनाया—"पता हो तो बताए न।"

सोमाथ की निगाह हर तरफ घूम रही थी।

"मर्द तो यूं ही फेंकते हैं।" मोरगा हंसकर कह उठी।

"तेरा मतलब कि मैं झूठा हूं।" टोमाथ ने नाराजगी से कहा।

"पूरी तरह।" मूसी बोली—"खुंबरी कहां है, पता होता तो सोमाथ को बता न देता।"

"मुझे कुछ नहीं जानना।" सोमाथ ने शांत निगाहों से सबके अक्सों को देखा—"तुम लोग जाओ।"

"जाओ। हम तो तुम्हारी सहायता करने की कोशिश कर रहे...।"

"तुम सब क्या हो। मैं अच्छी तरह जानता हूं। खुंबरी की ताकतें ही...।"

कहते-कहते सोमाथ उसी पल चुप हो गया।

उसके हाथ की उल्टी तरफ पानी की बूंद आ गिरी थी।

उसने फौरन हाथ ऊपर करके उल्टी हथेली पर पड़ी पानी की बूंद को देखा जो कि तब तक बिखर चुकी थी। सोमाथ की आंखें सिकुड़ गईं। वो लम्बे पलों तक गीली हुई हथेली को देखता रहा।

"आज मुझे सुबह से ही जुकाम हो रहा है। पानी बह रहा है।" टोमाथ सोमाथ की हरकत को समझता कह उठा—"अगर मैं शरीर के साथ यहां मौजूद होता तो तुम्हारा हाथ साफ कर देता।"

"छी।" दोती कह उठी—"टोमाथ कितना गंदा है। इसका नाक बहकर सोमाथ के हाथ पर जा गिरा।

"मैं तो नहाकर आई हूं।" मूसी ने फौरन कहा।

एकाएक सोमाथ मुस्कराया और चेहरा उठाकर ऊपर के घने पेड़ तरफ देखा।

कुछ भी नजर नहीं आया।

घने पेड़ की पत्तियां ही दिखीं।

"लगता है इसका फल खाने का मन हो रहा है।" मूसी कह उठी।

"कृत्रिम इंसान फल नहीं खाते। कुछ भी नहीं खाते।" मोरगा बोली—"ये तो सांसें भी नहीं लेता।"

"अच्छा। फिर ये चलता-फिरता कैसे है।"

"क्या पता महापंडित ने इसे कैसे बनाया है।"

"सोमाथ।" दोती बोली—"फल वाला पेड़ देखना है तो मेरे साथ आओ। वो पेड़ उस तरफ है।"

सोमाथ को घने पेड़ के ऊपर कुछ नहीं दिखा।

उसने चेहरा नीचे किया तो दोती ने पुनः कहा।

"फल वाले पेड़ के पास ले चलूं तुम्हें?"

उसी पल सोमाथ की नाक पर पानी की एक और बूंद गिरी।

सोमाथ ने नाक साफ करते पुनः तुरंत ही ऊपर पेड़ की तरफ देखा। देखता रहा।

"लगता है मुझे जुकाम ज्यादा हो गया है।"

सोमाथ ने ऊपर देखना छोड़ा और चारों के अक्सों पर निगाह मारी।

"खुंबरी इस पेड़ पर है।" सोमाथ ने शांत स्वर में कहा।

"लो सुनो।" दोती हंसकर कह उठी—"कहता है खुंबरी इस पेड़ पर चढ़ी बैठी है। ये तो पागल कृत्रिम इंसान है।"

सोमाथ ने मुस्कराकर पुनः ऊपर, पेड़ की तरफ देखा फिर पेड़ के मोटे तने पर उसकी नजर टिक गई। वो विचार कर रहा था कि किस तरह वो पेड़ पर चढ़ेगा। एक मोटी-सी डाल कुछ ऊपर थी। सोमाथ ने उसी पल उछाल भरी और उस मोटी डाल को थाम लिया।

"ये तो सच में पागल हो गया है।" मूसी जल्दी से बोली।

"ऐसा मत कर। खुंबरी भला पेड़ पर क्या करेगी।" मोरगा ने कहा—"मैं तेरे को खुंबरी के ठिकाने पर ले चलती हूं।"

"उसे तसल्ली कर लेने दो।" टोमाथ ने कहा—"पेड़ पर चढ़कर खुद-ब-खुद ही नीचे आ जाएगा।"

"ये कृत्रिम इंसान है। इसकी मशीनरी टूट-फूट गई तो तब क्या होगा।"

"हमें क्या।" मूसी ने जवाब दिया—"हमारा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

सोमाथ ने अन्य डाल को थामा और इसी प्रकार तने के ऊपर पहुंच गया। यहां मोटी, मोटी शाखाएं हर दिशा में गईं, फैली हुई थीं। जिन पर छोटी टहनियां और बड़े-बड़े पत्ते लगे थे। पत्तों को झुण्डों की वजह से ही, वो घना हुआ था। नीचे से ऊपर देखने पर पत्ते छाए नजर आते थे।

सोमाथ और ऊपर चढ़ने लगा।

"बेवकूफ नीचे आ जा।" दोती बोली।

"मैं इसकी टांग पकड़कर नीचे खींच लेता हूं।" टोमाथ ने कहा।

"तेरा शरीर तो तेरे साथ है नहीं।" अब मोरगा के स्वर में चिंता दिखने लगी थी—"टांगें कैसे खींचेगा?"

दोती और मूसी भी बेचैन दिखीं।

"हमारे पास कितनी ताकतें हैं, पर इस पर हम काबू नहीं पा सकते।" टोमाथ व्याकुल-सा कह उठा।

"क्या करें, इस कृत्रिम इंसान पर ताकतों का बस नहीं चलता। वास्तव वाला इंसान होता तो अब तक इसकी गर्दन तोड़ दी होती।" दोती ने कहा—"मैंने एक बार इस पर वार करके देखा है, पर कोई फायदा नहीं हुआ।"

सोमाथ पेड़ के नीचे के पायदान से कुछ और ऊपर पहुंचा तो एका उसकी आंखों में चमक आ गई। एक मोटी डाल पर उसे औरत का एक पांव और कपड़ा दिखा। सोमाथ जानता था कि इतना दौड़ का खुंबरी थक चुकी है और उस पर जो बूंदें गिरी थीं, वो खुंबरी के पसीने की बूंदें थीं।

उसी पल खुंबरी की तरफ से जोरदार हलचल हुई।

खुंबरी के पहले ही पता था कि सोमाथ पेड़ पर आ चुका है। परंतु वो इस खयाल में थी कि हो सकता है, वो न देख पाए और पेड़ से उतर जाए। लेकिन पत्तों के बीच में से उसने सोमाथ को अपनी तरफ देखते और मुस्कराते देखा तो तुरंत समझ गई कि सोमाथ की नजर उसके पांव पर है। अब खुंबरी ने रुकना ठीक नहीं समझा। जिस खतरे से बचने के लिए वो भाग रही थी, वो पास आ चुका था। खुंबरी ने पहले ही सोच रखा था कि जरूरत पड़ी तो किस तरफ उसने भागना है। उसने फौरन नीचे की एक मोटी डाल पर छलांग लगाई और उसी पल सामने की झूलती मोटी डाल को पकड़कर नीचे झूली और डाल छोड़ दी।

खुंबरी के पांव जमीन पर पड़े वह जोरों से लड़खड़ाई और संभली।

उसके पीछे-पीछे ही सोमाथ भी जमीन पर आ पहुंचा।

खुंबरी होंठ भींचे दौड़ पड़ी।

सोमाथ उसके पीछे दौड़ा।

दोती, मूसी, मोरगा, टोमाथ और सोमाथ के संग दौड़ने लगे। दोती कह उठी।

"ये तुम क्या कर रहे हो। वो महान खुंबरी है। ताकतों की मालकिन है। उसका ओहदा सबसे बड़ा है। तुम उसकी जान लेने की सोच रहे हो। हम महान खुंबरी पर आंच नहीं आने देंगी। टोमाथ...।"

"हां।"
"इस कृत्रिम इंसान के सिर पर बड़ा-सा पत्थर मार दो।"
"अभी मारता हूं।"
सोमाथ, खुंबरी के पीछे दौड़ता रहा। इस बार वो बहुत तेज दौड़ रहा था। फासला लगातार कम होता जा रहा था। उधर खुंबरी की सांसें जरूर संयत हुई थीं परंतु वो थकी पड़ी थी और तेज न दौड़ पा रही थी।
टोमाथ की तरफ से कोई वार नहीं हुआ। सोमाथ के सिर पर पत्थ नहीं लगा। क्योंकि टोमाथ अक्स के रूप में यहां मौजूद था और पत्थर नहीं फेंक सकता था।
सोमाथ तेजी से दौड़ता खुंबरी के पास जा पहुंचा था। दौड़ने में वो थक नहीं रहा था। मशीनी शरीर होने की वजह से खुंबरी को पकड़ने में उसे बहुत असानी हो रही थी। एकाएक सोमाथ ने हाथ आगे बढ़ाया, जो कि खुंबरी के कंधे पर पड़ा तो उसने हाथ को तीव्रता से झटका दिया।
थकी-सी खुंबरी जोरों से लड़खड़ाई और जमीन पर लुढ़कती चली गई। पास ही के तने से टकराई और रुक गई। उसकी सांसें बहुत तेज चल रही थीं। दौड़ने की वजह से चेहरा लाल हुआ पड़ा था। बालों की लटें चेहरे पर आ रही थीं। पेड़ के तने के पास पड़े उसने तिरछी निगाहों से सोमाथ को देखा।
सोमाथ उसके सामने, चार कदमों के फासले पर खड़ा था। उसे दोती, टोमाथ, मोरगा और मूसी घेरे खड़े थे। चारों की बेचैन परेशान दिख रहे थे।
"इसने तो महान खुंबरी को पकड़ लिया।" मूसी कह उठी।
"समझ में नहीं आता कि इसे कैसे संभाला जाए।"
"कोई तो रास्ता होगा।"
"ये समझदार है।" टोमाथ बोला—"ये महान खुंबरी को कुछ नहीं कहेगा।"
"हम शरीर के साथ यहां होते तो महान खुंबरी को जरूर बचा लेते।"
खुंबरी सीधी हुई और पेड़ के तने से टेक लगाकर बैठ गई। उसकी छातियां तेज सांसें लेने की वजह से उठ-बैठ रही थीं। इस हाल में भी वो इंतहाई खूबसूरत लग रही थी।
"तुम सच में कमाल के हो सोमाथ।" खुंबरी बोली—"इतना दौड़ने पर भी थके नहीं।"
सोमाथ शांत निगाहों से खुंबरी को देखता बोला।
"मैं तुम्हारी जान निकालने वाला हूं अब।"

"तुम सच में बहुत अच्छे हो। मैं तुम्हें जगमोहन की जगह स्वीकार करना चाहती हूं। तुमने मेरा दिल जीत लिया। वरना मुझे पकड़ लेना आसान काम नहीं है। मेरे राजा बनोगे?" खुंबरी मुस्करा पड़ी थी।

"मैं कृत्रिम इंसान हूं खुंबरी। मुझमें प्यार जैसा कुछ नहीं है। भावनाएं जरूर हैं। तुम्हारे लिए मुझे कोई दुख नहीं है कि मैं तुम्हारी जान निकालने जा रहा हूं। क्योंकि तुम इसी लायक हो।"

"क्या मैं बुरी हूं?"

"बहुत बुरी।" सोमाथ का स्वर शांत था—"सुना था पर देख भी लिया।"

"क्या देखा?"

"धरा के साथ तुमने जो किया, वो देखकर तो मैं सन्न रह गया। तुमने अपने ही रूप को मौत के मुंह में भेज दिया। एक पल भी नहीं सोचा और...।"

"तब मेरे पास बेकार की बातें सोचने के लिए पल नहीं थे। सोचती तो मैं मारी जाती।" खुंबरी ने मुस्कराकर कहा—"गुलाबी तलवार को देखते ही मैं समझ गई थी कि वो तलवार कुछ खास होगी। खास थी न वो?"

"मैं नहीं जानता।"

"हर कोई पहले अपने को बचाता है। मैंने भी ऐसा ही किया। धरा की मौत का मुझे दुख है। वो मेरा ही रूप था। परंतु उसे मैंने नहीं डुमरा ने मारा है। वो मुझ पर वार करने की पूरी तैयारी करके आया था। पर वो मेरे हाथों से बच गया।"

"तुम्हारे बुरेपन को मैंने आज अपनी आंखों से देखा है। अब तुम मरोगी।"

कहकर सोमाथ आगे बढ़ने को हुआ कि खुंबरी ने तुरंत कहा।

"रुको। रुको। जल्दी मत करो। मैं तुम्हारे कब्जे में हूं। तुम अब मुझे भागने नहीं दोगे। जब भी चाहो मेरी जान ले सकते हो। मेरी ताकतें तुम जैसे कृत्रिम इंसान पर असर नहीं करेंगी। ऐसे में इस वक्त मैं साधारण युवती हूं। मेरे सामने कोई सामान्य इंसान होता तो उसे समझा लेती, परंतु सोच रही हूं कि तुमसे कैसे बात करूं?"

दोती, मूसी, टोमाथ, मोरगा—के अक्स खामोश खड़े थे। सुन रहे थे।

"तुम मुझसे क्या बात कर सकती हो? कुछ भी नहीं।"

"मुझसे तुम्हें कोई फायदा मिल सकता है तो कहो, मैं सब कुछ तुम्हें दूंगी। मेरी जान लेकर तुम्हें क्या मिलेगा?"

"ऐसी बातें करके तुम अपनी मौत को टाल नहीं सकतीं। मैं कृत्रिम इंसान हूं और तुम्हारी बातों में नहीं फंसूंगा।" कहने के साथ ही सोमाथ तुरंत आगे बढ़ा। खुंबरी के पास पहुंचा...।

इससे पहले कि सोमाथ आगे कुछ कर पाता...।

खुंबरी ने फुर्ती से पास आ पहुंचे सोमाथ की दोनों पिंडलियां थामीं और पूरी ताकत से झटका दिया। सोमाथ के पांव उखड़ गए। वो 'धड़ाम' से कुल्हों के बल जमीन पर जा गिरा। कुछ चटखने की भी आवाज उभरी। इसी के साथ ही खुंबरी उछलकर खड़ी हुई और भाग खड़ी हुई।

इस बार खुंबरी ने तेज दौड़ने में अपनी पूरी जान लगा दी थी।

अभी पंद्रह कदम ही उठाए होंगे कि पीछे से दोती की तेज आवाज सुनाई दी।

"रुक जाओ। महान खुंबरी।"

दोती के इस तरह पुकारने पर खुंबरी चौंकी। उसने गर्दन घुमाकर पीछे देखा।

सोमाथ पीछे आता नहीं दिखा।

पीछे उन चारों को खड़े देखा।

खुंबरी ठिठक गई।

उसी पल नीचे पड़े सोमाथ पर उसकी निगाह पड़ी। वो शांत पड़ा था नीचे।

खुंबरी की आंखें सिकुड़ीं।

उसने सावधानी से वापस आना शुरू किया।

"चिंता की कोई बात नहीं महान खुंबरी।" टोमाथ बोला—"इसे कुछ हो गया है।"

"बहुत जोरों से कुल्हों के बल गिरा था।" मूसी ने कहा—"मशीनरी टूट-फूट गई होगी।"

"मैंने तो कुछ चटखने की आवाज भी सुनी थी।" मोरगा ने कहा

खुंबरी पास आ पहुंची।

सोमाथ को देखा।

जिस प्रकार वो गिरा था, उसी तरह वो पड़ा हुआ था। उसकी आंखें खुली हुई थीं। खुंबरी ने महसूस किया कि कुल्हों की तरफ से वो कुछ ज्यादा उठा हुआ है।

"इसकी मशीन खराब हो गई लगती है।" दोती ने कहा—"कुछ टूटने की आवाज भी आई थी।"

खुंबरी ने होंठ भींचे, सोमाथ को छुआ। फिर उसे करवट दिलाकर पेट के बल लिटा दिया तो देखा दाईं तरफ वाला कुल्हा कुछ ज्यादा ही ऊपर उठा हुआ है।

"इसे क्या हुआ?" खुंबरी कह उठी।

"हम शरीर नहीं लाए। आप ही देखें महान खुंबरी।" मोरगा बोली।

खुंबरी ने सोमाथ की पहनी पैंट उतारी तो कुल्हे देखे। दाईं तरफ वाला कुल्हा किसी ढक्कन की तरह था जो कि बाहर को आकर खुल-सा गया था, साथ ही चार इंच चौड़ी-लम्बी बैटरी जैसी कोई चीज बाहर को आकर झलक रही थी। ये सब सोमाथ के जबर्दस्त ढंग से गिरने की वजह से हुआ था। जिस पर ताकतें असर नहीं कर सकती थीं। जिसका मुकाबला करना कठिन था। वो अचानक ही शांत पड़ गया था क्योंकि जो बैटरी उसे चलाती थी वो निकल गई थी। बैटरी कुल्हे वाले हिस्से में फिट थी।

"मुसीबत टली।" दोती बोली—"इस पर तो ताकतें भी असर न कर पा रही थीं।"

खुंबरी सीधी खड़ी होते कह उठी।

"मैं जा रही हूं।"

"आप कहें तो डुमरा के पास जाएं?" दोती ने पूछा।

"मेरे पास करने को बहुत काम बाकी है।" खुंबरी की आंखों के सामने दोलाम उभरा—"डुमरा बच गया। इसका मुझे दुख है। खुशी भी है कि इस कृत्रिम इंसान से मैं बच गई। तुम ओहारा से कह दो कि डुमरा की जान जल्दी निकाल दे।"

"जी महान खुंबरी?"

खुंबरी पल्टी और जंगल में एक दिशा की तरफ चलने लगी। वो थकी हुई थी। इसलिए मध्यम गति से चल रही थी। धरा के साथ जो हुआ, उसका उसे अफसोस था, लेकिन उस वक्त खुद को बचने के लिए कोई और रास्ता भी नहीं था। उस एक-एक पल में जो सूझा,धरा को अपने आगे खींच लिया कि वार वो सह ले। धरा के साथ उसका मन लगा हुआ था। दोलाम की वजह से धरा के साथ की उसे जरूरत भी थी। लेकिन अब धरा वापस नहीं आ सकती थी। डुमरा ने एक और चोट दे दी थी उसे। खुंबरी को लगा जैसे हर तरफ से परेशानियों ने उसे घेर लिया।

▭ ▭

खुंबरी ने अपने ठिकाने में प्रवेश किया। पसीने से वो भीगी-सी लग रही थी। शाम होने वाली थी। सूर्य की रोशनी तीखी थी। लम्बा रास्ता पैदल चलकर आना पड़ा था उसे। ऊपर से साथ में धरा के न होने का एहसास भी सता रहा था। जब गई थी तो धरा साथ में थी, परंतु वापसी पर वो धरा को खो चुकी थी। वो उसका अपना ही रूप था जिसने पृथ्वी पर जन्म लिया था और सदूर पर पहुंचकर अपनी जान के सहारे, उसके बेजान शरीर में जान डाली थी। उस तक पहुंचने में धरा ने बहुत मेहनत

की थी। धरा के साथ उसका दिल भी खूब लग रहा था, परंतु डुमरा के वार ने सब कुछ बिगाड़ दिया था। वार से बचने की खातिर उसने धरा को अपने सामने खींच लिया था।

लेकिन खुंबरी का मन कह रहा था कि उसने ठीक किया। धरा को जीने की इतनी जरूरत नहीं थी जितनी कि उसे थी। उसका जिंदा रहना, धरा के जीने से ज्यादा महत्त्व रखता था। ठिकाने का लम्बा रास्ता पार करके जब वो खाने के टेबल वाली जगह में पहुंची तो बबूसा को वहां टहलते पाया, जो कि खुंबरी को देखते ही ठिठक गया था।

"क्या हुआ?" बबूसा उसे देखते ही बोला—"तुम कुछ परेशान लग रही हो। थकी-सी भी...।"

"दोलाम।" खुंबरी ने ऊंचे स्वर में पुकारा।

बबूसा ने गहरी निगाहों से खुंबरी को देखा।

बेचैन थी खुंबरी।

दोलाम भीतर के कमरे से बाहर निकला और खुंबरी को देखने लगा।

"जानते हो दोलाम, बाहर क्या हुआ।" खुंबरी उसे देखते ही बोली—"डुमरा से सामना हो गया।"

दोलाम के शरीर में तनाव पैदा होता दिखा।

"डुमरा ने मुझ पर घातक वार किया। जो कि बेहद खास था। गुलाबी तलवार और...।"

"धरा कहां है?" दोलाम ने एकाएक पूछा।

"वो डुमरा के वार का शिकार हो गई।" खुंबरी गुर्रा उठी।

"ओह।" दोलाम ने चेहरा हिलाया।

"डुमरा की ये हिम्मत कि वो हमारे ठिकाने के पास आकर, हम पर वार करे और धरा की जान ले ले। डुमरा को जिंदा नहीं बचना चाहिए। मैं ठोरा से कहने जा रही हूं कि वो डुमरा पर जानलेवा वार कर दे।

दोलाम खामोश रहा।

"मैं डुमरा से बचकर भागी तो सोमाथ, वो कृत्रिम इंसान मेरे पीछे आने लगा। उस पर ताकतों के वार नहीं चलते। मैं बेहद कठिनाई से उससे जान बचा सकी और सोमाथ की मशीन खराब हो गई। वो अब बेकार हो गया है।"

"सोमाथ बेकार हो गया है।" बबूसा कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"उसकी मशीन में खराबी आ गई है। मैंने उसे धक्का दिया था।" खुंबरी ने दोलाम को देखा—"मुझे बहुत दुख है कि मैंने धरा को खो दिया है। मैं बहुत बेचैन हुई पड़ी हूं उसे खोकर।"

"धरा नहीं रही।" बबूसा ने गहरी सांस ली—"मुझे तो विश्वास नहीं आ रहा।"

"तुम कुछ कहो दोलाम।" खुंबरी झल्लाकर बोली—"पहले तुम मेरा पूरा साथ देते थे।"

"पहले की बात और थी महान खुंबरी।" दोलाम शांत स्वर में कह उठा।

"क्या मतलब?"

"इस वक्त हममें समस्या खड़ी है। तुम बहुत व्याकुल हो। परेशान तभी वो समस्या भूल गई और...।"

"वो हमारी समस्या है। भीतर का मामला है। परंतु मैं तुमसे डुमरा की बात कर रही हूं कि उसके वार से धरा की जान चली गई।" खुंबरी ने तेज स्वर में कहा—"तुम्हें मेरी बात सुनकर डुमरा के बारे में कुछ फौरन करना चाहिए।"

"जरूर कुछ करता। अगर तुमने मेरी बात मान ली होती। अब हममें कुछ भी ठीक नहीं है।"

"तुम मेरा हुक्म मानने से मना कर रहे हो।"

"मैं इस वक्त सिर्फ अपनी समस्या में उलझा हुआ हूं। जगमोहन का हाथ थामकर तुमने मेरा बहुत दिल दुखाया है। अभी तक मैं सामान्य नहीं हो पाया। डुमरा की समस्या तुम्हारी है। तुम ताकतों की मालिक हो। डुमरा को सबक सिखा सकती हो।"

"ऐसे मौके पर तुम अच्छी सलाह देते हो। इसलिए मैं तुम्हारे पास आई।"

"अब मैं तुम्हारा साथ नहीं दे सकता महान खुंबरी।" दोलाम ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्यों?"

"वजह तुम्हें मालूम ही है।"

"तुम्हारा सपना कभी भी पूरा नहीं हो सकेगा दोलाम।" खुंबरी कठोर स्वर में कह उठी—"खुंबरी अपने मन की मालिक खुद है। जो मुझे अच्छा लगेगा, उसी का हाथ थामूंगी। मैंने तुम्हारे बारे में कभी सोचा ही नहीं।"

"इसी बात का तो मुझे दुख है महान खुंबरी कि तुम्हारी नजरों में मेरी कोई अहमियत नहीं।"

खुंबरी ने सुलगती नजरों से दोलाम को देखा फिर पलटकर आगे बढ़ गई।

चंद कदमों के फासले पर खड़े बबूसा को भी नहीं देखा।

कदम आगे बढ़ाते खुंबरी बटाका थामकर ओहारा को पुकारने लगी।

ओहारा फौरन हाजिर हो गया।

"हुक्म महान खुंबरी।" ओहारा की आवाज उसके कानों में पड़ी—"मैंने सब कुछ देखा जो वहां हुआ था। तुमने बहुत अच्छा किया जो डुमरा के वार के सामने धरा को खींच लिया। वो डुमरा का खास वार था तुम्हारे लिए। उस गुलाबी तलवार में शक्तियों के पवित्र कण थे, जिसकी वजह से उस वार से बच पाना आसान नहीं था। खुंबरी का नाम लेकर डुमरा ने शक्तियों के कण वाली तलवार को छोड़ा था। उस तलवार ने तुम्हारी जान लेनी ही थी परंतु धरा तुम्हारा ही रूप थी। इसी वजह से शक्तियों के कण वाली तलवार ने उसकी जान ले ली। धरा को तलवार के सामने करके तुमने बहुत अच्छा किया, नहीं तो तुम्हारी जान चली जाती।"

"मैं डुमरा की मौत जल्दी चाहती हूं ओहारा।" कदम आगे बढ़ाते खुंबरी गुर्रा उठी।

"क्यों नहीं महान खुंबरी। इस बार मैं जबर्दस्त वारों की कड़ी तैयार कर रहा हूं। कोई बड़ी शक्ति डुमरा को बचाने आ गई तो तब भी डुमरा नहीं बच सकेगा। यकीन है कि कल तक डुमरा पर वार कर दूंगा।"

"कल तक? तो आज की रात का लम्बा इंतजार मुझे अभी और करना होगा।"

"वारों की कड़ी तैयार करने में कुछ तो वक्त लगता ही है।"

"जल्दी करो ओहारा।"

"कल डुमरा का जीवन खत्म हो जाएगा।"

"दोलाम भी मेरे लिए परेशानी खड़ी कर रहा है ओहारा।" खुंब दांत पीसकर बोली।

"इस बारे में मैं कुछ नहीं कर सकता। ठोरा ने दोलाम को कबका सदस्य के रूप में परिवार में शामिल कर लिया है। अब वो मात्र सेवक नहीं रहा। ठोरा का कहना है कि ये अब खुंबरी और दोलाम का व्यक्तिगत मामला है और मेरा मानना है कि परिवार के सदस्यों के बीच झगड़ा नहीं होना चाहिए। तुम जगमोहन को छोड़कर दोलाम का हाथ क्यों नहीं थाम लेती। दोलाम ने दिल से हमेशा तुम्हारी सेवा की है। पांच सौ सालों तक तुम्हारे शरीर को संभाले रखा। नुकसान नहीं होने दिया। तुम्हारे शरीर को...।"

"बस ओहारा। मुझे तुम्हारी सलाह नहीं चाहिए। मैं जगमोहन को नहीं छोड़ सकती।"

"क्योंकि तुम उससे प्यार करती हो।"

"ये सच है।"

"प्यार कुछ नहीं होता। होता है तो प्यार के कई पायदान होते हैं। पहला

पायदान जिस्म की चाहत होती है और इस वक्त तुम पहले पायदान पर हो। ये सिर्फ शुरुआत है। प्यार का मतलब समझने के लिए तुम्हें कई पायदान पार करने होंगे। लम्बा वक्त लगेगा। तब तुम प्यार का असली मतलब समझ पाओगी। लेकिन दोलाम तुम्हारे लिए इस कारण बेहतर है कि वो हमेशा तुम्हारे हक में काम करेगा। जगमोहन से तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा।"

"मैं दोलाम को सिर्फ अपना सेवक मानती हूं।"

"महान खुंबरी। तुम्हारी जो दुनिया है उसमें जगमोहन नहीं समा सकता। तुम...।"

"इन बातों को रहने दो ओहारा। तुम डुमरा को खत्म करो। दोलाम से कैसे निबटना है मैं देख लूंगी।"

"मैं तो सिर्फ इतना चाहता था कि तुममें और दोलाम में झगड़ा न हो। परिवार के सदस्यों में झगड़ा कैसा।"

"ठोरा कहता है कि ये मेरा व्यक्तिगत मामला है।" खुंबरी ने चुभते स्वर में कहा।

"हां।"

"तो इसे मेरा व्यक्तिगत मामला ही रहने दो। तुम सिर्फ अपना काम पूरा करो।" कहने के साथ ही खुंबरी ने बटाका छोड़ा और आगे बढ़ती गई। चेहरे पर गुस्से के कठोर भाव नजर आ रहे थे।

उसके बाद ओहारा की आवाज नहीं आई।

खुंबरी ने अपने कमरे में प्रवेश किया तो जगमोहन को टहलते पाया।

खुंबरी को देखते ही जगमोहन ठिठककर कह उठा।

"तुम आ गईं खुंबरी।" इसके साथ ही वो आगे बढ़ा और खुंबरी को बांहों में भर लिया—"तुम पास नहीं होतीं तो मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।" उसने खुंबरी का माथा चूमा।

खुंबरी ने उसकी बांहें अपनी कमर से अलग कीं और कुर्सी पर जा बैठा।

"क्या हुआ?" उसका चेहरा देखते ही जगमोहन के होंठों से निकला।

"जंगल में डुमरा से टकराव हो गया।" खुंबरी होंठ भींचे कह उठी—"डुमरा ने ऐसा वार किया कि धरा नहीं बच सकी।"

"ओह।" जगमोहन हक्का-बक्का रह गया।

"मैं कठिनता से जान बचाकर निकल सकी हूं। सोमाथ भी वहीं था, वो मुझे मार देना चाहता था। परंतु उसकी मशीनरी खराब हो गई और उसकी हरकतें रुक गईं। तब कहीं मैं बच सकी।"

जगमोहन व्याकुल-सा, गम्भीर-सा कुर्सी पर बैठ गया नजरें खुंबरी पर थीं।

"ओहारा ने डुमरा की जान लेने की चेष्टा की। उस पर जबर्दस्त वार किए थे, लेकिन बड़ी शक्ति ने आकर डुमरा को बचा लिया। वरना ओहारा न बच पाता। आज सब कुछ बुरा हुआ।" खुंबरी क्रोध में सुलग रही थी।

"तुम मेरी बात मान क्यों नहीं लेतीं खुंबरी।" जगमोहन कह उठा।

"क्या?" खुंबरी ने जगमोहन को देखा।

"ये सब छोड़कर मेरे साथ पृथ्वी पर चलो। वहां हम बहुत खुश रहेंगे।"

"ये सम्भव नहीं।" खुंबरी ने अपना सख्त चेहरा इंकार में हिलाया—"मैं तुमसे पहले भी कह चुकी हूं कि ताकतों से मुझे प्यार है। मुझे आदत पड़ गई है कि ताकतों के साथ जीने की। उनके बिना मैं नहीं रह सकती।"

"तुम्हारे और मेरे बीच ताकतों की जरूरत नहीं रही। हम दोनों, एक-दूसरे के लिए पूरक हैं।"

"तुम अपनी जगह हो जगमोहन और ताकतों का साथ अपनी जगह है।"

"मुझे डर है कि तुम्हें कुछ हो न जाए।"

"मुझे कुछ नहीं होगा।" खुंबरी कठोर अंदाज में मुस्कराई—"आज डुमरा से जो सामना हो गया, वो मेरी ही गलती थी कि मैं और धरा घूमते हुए दूर निकल गई थीं। शायद डुमरा मेरे हाथों मारा जाता। परंतु सोमाथ की वजह से मुझे भागना पड़ा डुमरा को छोड़कर। सोमाथ पर ताकतों का असर नहीं होता था और...।"

"तुम मेरी बात को गम्भीरता से नहीं सोचती कि पृथ्वी पर चलते हैं।"

"पृथ्वी पर कुछ नहीं रखा। मैं तुम्हें यहीं रखूंगी। अपने पास। धीरे-धीरे तुम भी ताकतों को पसंद करने लगोगे।"

"लेकिन मैं तुम्हें पृथ्वी पर ले जाना चाहता हूं।"

"ऐसा कभी नहीं होगा जगमोहन। मेरी दुनिया सदूर पर ही बसती है।"

"अगर मैं पृथ्वी पर जाना चाहूं तो?"

"मैं तुम्हें कभी भी नहीं जाने दूंगी। तुम यहीं पर मेरे पास रहोगे।"

"तो तुम मुझे पृथ्वी पर जाने से रोकोगी?"

"हर हाल में।" खुंबरी ने दृढ़ स्वर में कहा—"हम दोनों को एक साथ ही रहना है।"

"एक साथ ही रहना है तो पृथ्वी ग्रह पर क्यों नहीं रह सकते।" जगमोहन की निगाह खुंबरी पर थी।

"क्योंकि खुंबरी सदूर पर रहना चाहती है। मुझे सदूर ग्रह से प्यार है।"

जगमोहन, एकटक खुंबरी को देखने लगा।

"मैं इस वक्त बहुत परेशान...।"

"खुंबरी।" एकाएक जगमोहन बोला—"मैं सदूर पर नहीं रहना चाहता। तुम चाहो तो मेरे साथ पृथ्वी पर चल सकती हो।"

खुंबरी की नजरें जगमोहन की तरफ उठीं।

जगमोहन गम्भीर निगाहों से उसे देख रहा था।

"मैं समझी नहीं। तुम क्या कहना चाहते हो?" खुंबरी बोली।

"यही कि मुझे सदूर अच्छा नहीं लगता। पृथ्वी अच्छी लगती है। वापस जाऊंगा।" जगमोहन गम्भीर दिखा।

"मुझे छोड़कर?"

"अगर तुम मेरे साथ नहीं चली तो मजबूरी होगी हमारा जुदा हो जाना।"

खुंबरी की आंखें सिकुड़ीं।

"तुम मुझे छोड़कर जाने की बात कर रहे हो। क्या तुम मुझसे प्यार नहीं करते।" खुंबरी अजीब-से स्वर में बोली।

"मैं तुमसे प्यार करता हूं। तभी तो तुम्हें अपने साथ पृथ्वी ग्रह पर ले जाना चाहता...।"

"तुमने सुना नहीं जगमोहन। मैंने अभी-अभी कहा था कि तुम सदूर पर ही रहोगे। मैं तुम्हें पृथ्वी ग्रह पर वापस नहीं जाने दूंगी। मैं तुमसे प्यार करती हूं। तुम्हें दूर क्यों जाने दूंगी।" खुंबरी ने तेज स्वर में कहा।

"प्यार मैं भी तुम्हें करता हूं परंतु मेरी दुनिया पृथ्वी पर बसती है।"

"खुंबरी की दुनिया सदूर ग्रह पर है। इसलिए तुम यहीं रहोगे। मेरे साथ।" इस बार खुंबरी के लहजे में आदेश जैसे भाव थे।

"तो तुम जबर्दस्ती मुझे सदूर पर रोक के रखोगी?" जगमोहन की आंखें सिकुड़ गईं।

खुंबरी कुछ पल जगमोहन को देखती रही फिर कह उठी।

"तुम्हें अपने साथियों की चिंता है। कम-से-कम देवराज चौहान, नगीना और मोना चौधरी की तो चिंता होगी।"

"मुझे उन सबकी चिंता है।"

"तो दोबारा तुमने पृथ्वी पर जाने की बात की तो मैं उसी वक्त उन सबकी जान ले लूंगी।" खुंबरी मुस्कराई।

जगमोहन की आंखों में मौत के सर्द भाव आ ठहरे।

खुंबरी का असली रूप उसे दिखने लगा था।

खुंबरी उसे ही देखे जा रही थी।

एकाएक जगमोहन मुस्कराया और प्यार भरे स्वर में कह उठा।

"मैं तुमसे प्यार करता हूं खुंबरी। तुमसे अलग होने की तो सोच भी

नहीं सकता। ये कहकर कि मैं पृथ्वी पर वापस जाऊंगा, तुम्हारा दिल टटोल रहा था कि तुम मुझसे कितना प्यार करती हो।"

खुंबरी हंसकर कह उठी।

"खुंबरी जगमोहन को बहुत प्यार करती है। इतना कि मैं तुम्हें हमेशा अपने पास रखूंगी।"

जगमोहन खुंबरी को देखता बेहद प्यार से मुस्कराया। फिर बोला।

"मेरे साथियों को कुछ मत कहना।"

"तुम भी पृथ्वी पर जाने के बारे में फिर मत कहना।" खुंबरी ने कहा। एकाएक वो परेशान-सी दिखने लगी—"धरा का न होना, मुझे बहुत व्याकुल कर रहा है। मुझे विश्वास नहीं होता कि उसकी जान चली गई है।"

"उसकी कमी मुझे भी तकलीफ दे रही है।" जगमोहन बोला।

"तुमने बबूसा से बात की कि वो दोलाम को मार दे?" खुंबरी ने उसे देखा।

"बात की, परंतु वो नहीं मानता दोलाम को मारने के लिए।" जगमोहन ने बेहद सामान्य स्वर में कहा।

"क्या कहता है?" खुंबरी गुर्रा उठी।

"कहता है उसकी दोलाम से कोई दुश्मनी नहीं है कि उसे मारे।"

"तुमने उसे कहा नहीं कि इस बात को मानकर, वो सबको कैद से आजाद करा लेगा।"

"कहा था। लेकिन उसने इंकार कर दिया।"

"अब या तो मैं बबूसा को वापस कैद में डालूंगी या उसकी जान लूंगी।" खुंबरी ने दांत पीसकर कहा।

"ऐसा मत करना। जल्दबाजी मत दिखाओ।" जगमोहन मुस्कराया।

"तो क्या तुम्हें अभी भी आशा है कि बबूसा मानेगा?"

"मैं उससे फिर बात करूंगा। वो जरूर मान जाएगा। मेरे खयाल में उसे मेरी बात समझ में आ रही है कि दोलाम की जान लेकर वो सबको कैद से आजाद करा लेगा। मैंने बातों के दौरान उसे सोचते पाया था।"

"लेकिन अब मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। अगर धरा जिंदा रहती तो आज रात दोलाम को उसने मार देना था। धरा के साथ मेरी ये बात तय हो गई थी। परंतु अब कोई और इंतजाम...।"

"इतनी जल्दी क्यों है दोलाम की जान लेने की?"

"इससे भी ज्यादा जल्दी है जगमोहन।" खुंबरी ने शब्दों को चबाते हुए कहा—"दोलाम की हरकत ने मुझे परेशान कर रखा है। अब वो मेरे किसी काम का नहीं रहा। मैं उसकी सूरत भी नहीं देखना चाहती। ये तभी

हो सकता है जब दोलाम की जान चली जाए। दूसरी तरफ डुमरा ने मुझे परेशान कर रखा है। मैं दोलाम को मारकर अपनी परेशानी कम करना चाहती हूं।" कहते हुए खुंबरी की नजर जगमोहन पर जा टिकी, फिर सिर आगे करके बोली—"तुम सब कुछ ठीक कर सकते हो।"

"मैं?" जगमोहन ने खुंबरी की आंखों में झांका वो उसकी बात को भांप गया था।

"हां तुम जगमोहन। तुम आसानी से दोलाम को मार सकते हो।"

"ये बात मैंने तुमसे पहले कही थी, पर तुमने कहा था कि मैंने दोलाम को मारा तो ताकतें मेरी जान ले लेंगी कि मैंने उनके परिवार के सदस्य को क्यों मारा। ये काम करने से तुमने मुझे रोक दिया था।" जगमोहन इस नए हालातों को सब समझ रहा था।

"तुम तो जानते हो कि ताकतें मेरे अधीन हैं।" खुंबरी मुस्कराई।

"तो?"

"ताकतों को मैं संभाल लूंगी। तुम दोलाम को खत्म कर दो। जब तक वो जिंदा है खतरा मेरे सिर पर रहेगा। मुझे लगता है कि दोलाम को खुंबरी नहीं चाहिए। इस बहाने वो ताकतों का मालिक बनना चाहता है। ये तभी होगा, जब मैं मर जाऊंगी। तब दोलाम पलक झपकते ही ताकतों का मालिक बन जाएगा। ताकतें भी उसे स्वीकार कर लेंगी। उसे मार दो जगमोहन।"

जगमोहन कुर्सी पर बैठा, खुंबरी की आंखों में झांकता सोच रहा था कि इस औरत के प्यार के रंग कितने ज्यादा हैं, ये उसे अब पता चल रहा था। उससे प्यार करने का दम भरती है और उसे सदूर पर ही, अपने पास रखना चाहती है स्वयं उसके साथ पृथ्वी पर नहीं जाना चाहती, अलबत्ता उसके जबर्दस्ती पृथ्वी पर जाने की स्थिति में, ये उसे कैद भी कर सकती है। यानी कि उसे अब पृथ्वी पर नहीं जाने देगी, क्योंकि खुंबरी उससे प्यार का दम भरती है। अगर वो पृथ्वी ग्रह पर जाने की जिद करता है तो उसके साथियों की जान ले लेने की धमकी, पहले से ही दे दी है। यानी कि उसे अपना मजदूर बनाकर, उससे प्यार करना चाहती है। खुंबरी पहले ही कह चुकी है कि ताकतों ने दोलाम को परिवार के सदस्य के रूप में मान लिया है ऐसे में कोई दोलाम की जान लेता है तो ताकतें उसे नहीं छोड़ेंगी। परंतु अब दोलाम की मौत के लालच ने इसका दिमाग इतना हिला दिया है कि झूठ बोलकर, उसके हाथों दोलाम को मरवा देना चाहती है कि ताकतों से उसे बचा लेगी। स्पष्ट था कि खुंबरी मात्र स्वयं के लिए है। वो खु जब मुसीबत में पड़ती है तो मुसीबत से निकलने के लिए किसी को भी चारा बना सकती है, जैसे कि अब उसके हाथों दोलाम को खत्म करवा देना

चाहती है। परंतु इससे खुंबरी को हासिल क्या होगा। दोलाम भी हाथ से जाएगा और उसे भी ताकतें खत्म कर देंगी। उस स्थिति में खुंबरी उसे ताकतों से नहीं बचा सकेगी। ये बात खुंबरी पहले ही स्वीकार कर चुकी है।

"क्या सोच रहे हो जगमोहन?" खुंबरी ने प्यार से पूछा।

जगमोहन को डुमरा के शब्द याद आने लगे कि खुंबरी बुरी है। ताकतों के संग रहकर वो बुरी हो चुकी है। उसकी ताकत बुराई ही है। खुंबरी कभी भी अच्छी नहीं हो सकती।

"जगमोहन।" खुंबरी ने पुनः पुकारा।

जगमोहन सोचों से बाहर निकला।

"तुम कहां गुम हो गए थे। मैं तुम्हें पुकार रही हूं।" खुंबरी ने हौले-से हंसकर कहा।

"मैं? मैं दोलाम के बारे में सोच रहा था कि उसे कैसे मारूं?" जगमोहन बोला।

"आज रात ही दोलाम को मार दो।" खुंबरी उत्साह भरे स्वर में कह उठी।

"पूरी कोशिश करूंगा।"

"दोलाम हमारे प्यार का दुश्मन बना...।"

"मैंने दोलाम को मारा और ताकतों ने मुझे मार दिया तो...?"

"मैं तुम्हें ताकतों से बचा लूंगी। ताकतें मेरे इशारे पर ठहर जाएंगी।"

जगमोहन कहना चाहता था कि ताकतों के अपने नियम हैं। वो अपने परिवार के सदस्य के हत्यारे को कभी नहीं छोड़ेंगी। परंतु कहा नहीं, बल्कि मुस्कराकर खुंबरी को देखा।

"मुझे तुम पर भरोसा है कि तुम ताकतों से मुझे बचा लोगी।" जगमोहन बोला।

"मैं तुमसे प्यार करती हूं जगमोहन। खुंबरी ने पहली बार किसी से प्यार किया है।" खुंबरी ने जगमोहन का हाथ पकड़ लिया—"आज रात दोलाम को मार देना। उसकी वजह से मैं बहुत परेशान हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि दोलाम मुझे मारकर खुद ताकतों का मालिक बन जाना चाहता है। उसे सबक सिखा दो उसकी जान लेकर।"

"मैं ऐसा ही करूंगा।"

"ओह, मेरे प्यारे जगमोहन। तुम्हें पाकर मैं धन्य हो गई।" कहते हुए खुंबरी ने जगमोहन का हाथ चूमा।

जगमोहन मुस्कराकर खुंबरी को देखता रहा।

"मैं नहाना चाहती हूं। तुम भी मेरे साथ चलो—हम दोनों...।"

"मुझे अकेला छोड़ दो। मैं दोलाम के बारे में सोचना चाहता हूं।" जगमोहन एकाएक गम्भीर हो गया।

"ये ठीक है। मैं भी चाहती हूं कि तुम दोलाम को जल्दी-से-जल्दी खत्म कर दो।" कुर्सी से उठते खुंबरी ने कहा—"आज रात ही दोलाम को मार देना। उधर कल ओहारा डुमरा को मार देगा। मेरी परेशानियां दूर हो जाएंगी। उसके बाद मैं सदूर की रानी बनकर आराम की जिंदगी बिताऊंगी।" दो पल ठिठककर बोला—"और तुम सदूर के राजा बनोगे।"

जगमोहन ने शांत भाव में सिर हिलाया।

"मैं नहाकर आती हूं फिर एक साथ खोनम पीएंगे।" कहने के साथ ही खुंबरी ने उसका गाल चूमा और बाहर निकलती चली गई।

खुंबरी अब उस तरफ बढ़ रही थी जहां नहाने के लिए पानी का कुंड था।

तभी उसे कानों के पास किसी के मौजूद होने का एहसास हुआ तो बटाका थामकर बोली।

"कौन है?"

"मैं हूं खुंबरी। अमाली। कई दिनों से तूने मेरे से बात नहीं की तो मैं खुद ही आ गई।" अमाली की आवाज कानों पड़ी।

खुंबरी रास्तों को तय करते आगे बढ़ी जा रही थी।

"क्या है?"

"तेरे को तो पता ही है कि मैं आने वाले वक्त का भविष्य बताती हूं पर तूने पहले ही मुझे कह रखा है कि तुम्हारे प्यार के भविष्य में न झांकूं कि तुम्हारे और जगमोहन के प्यार का अंत कैसा होगा।"

खुंबरी के चेहरे पर व्यंग भरी मुस्कान उभर आई।

"तू मुझे क्या भविष्य बताएगी। मेरे से जान ले।" खुंबरी ने हंसकर कहा।

"बता तो?"

"जगमोहन दोलाम को मारेगा और ताकतें जगमोहन को खत्म कर देंगी।" खुंबरी का स्वर जहरीला हो गया।

"तो अब तेरे को जगमोहन से प्यार नहीं रहा?"

"खुंबरी के लिए ताकतों का मालिक बने रहना बड़ी बात है। जबकि दोलाम, मुझे मारकर ताकतों का मालिक बन जाना चाहता है। इसलिए दोलाम से निबटना जरूरी हो गया है। जगमोहन जैसे पुरुष का क्या है। ऐसे पुरुष बहुत मिल जाएंगे। परंतु मैं अपने हाथों ताकतों को नहीं गंवाना

चाहती। सब ठीक रहे तो ही प्यार अच्छा लगता है। खुंबरी को प्यार करने वाले पुरुषों की कमी नहीं है। प्यार करना अच्छा लगता है, लेकिन इतना भी अच्छा नहीं है कि ताकतों से दूर हो जाऊं। जगमोहन मुझे पृथ्वी पर ले जाना चाहता है। बहुत जल्द वो ये भी कहेगा कि मैं उसके साथियों को आजाद कर दूं। स्पष्ट है कि हममें तनाव खड़ा होने वाला है तो क्यों न जगमोहन को दोलाम के खिलाफ इस्तेमाल कर लूं। मुझे ताकतों की परवाह है, जगमोहन की नहीं।"

कुछ पलों बाद अमाली का गम्भीर स्वर कानों में पड़ा।

"तू हां कहे तो मैं तेरे और जगमोहन के प्यार का अंत पहले ही देख लूं?"

"मेरे प्यार का अंत दोलाम और जगमोहन की मौत के साथ होने वाला है अमाली।" खुंबरी ने व्यंग से कहा—"खुंबरी का जीवन अपने लिए है और ताकतों के लिए है। कुछ दिन अवश्य मेरा दिमाग खराब हो गया था जगमोहन के लिए परंतु अब समझ गई हूं कि जगमोहन मेरा जीवन साथी नहीं बन सकता। शायद कोई भी नहीं बन सकता क्योंकि मुझे ऐसा जीवन जीने की आदत पड़ गई है, जिसमें साथी की जरूरत नहीं होती। शरीर की आग ठंडी करने का जब मन हो तो किसी भी पुरुष को थाम लो। सब एक जैसे ही होते हैं।"

"मेरे खयाल से दोलाम के साथ तुम्हारी जिंदगी चल सकती है।"

"वो मेरी नजरों में सिर्फ सेवक है। बेशक ताकतों ने उसे परिवार में शामिल कर लिया है, परंतु मेरे लिए वो सेवक से ज्यादा अहमियत नहीं रखता। दोलाम कभी भी मेरे शरीर को प्यार नहीं कर सकता मैं खुंबरी हूं। ताकतों की मालिक और दोलाम सिर्फ मेरा सेवक है लेकिन अब दोलाम मुझे पसंद नहीं। मेरा सेवक होते हुए उसने ये कैसे सोच लिया कि मैं उससे प्यार करने लगूंगी। उसके मन में कुछ और है। वो ताकतों का मालिक बनना चाहता है मुझे मार कर। पर खुंबरी से जीत पाना आसान भी तो नहीं। अब दोलाम अपनी जान गंवा देगा।"

"मैं फिर कहती हूं एक बार मुझे अपने और जगमोहन के प्यार के भविष्य में झांक लेने दे।"

"वो मैंने तेरे को पहले ही बता दिया है। मेरे और जगमोहन के प्यार का अंत शायद आज रात ही हो जाए। जगमोहन दोलाम की जान लेगा और ताकतें जगमोहन की जान ले लेगीं। तू जा अब।" इसके साथ ही खुंबरी ने बटाका छोड़ दिया।

□ □

आने वाले खतरे को जगमोहन पूरी तरह भांप चुका था। खुंबरी के मन में पूरी तरह क्या है ये तो वो नहीं जान सका था परंतु इतना तो समझ चुका था कि खुंबरी उसके द्वारा अपना मतलब निकालना चाहती है। उसके हाथो दोलाम को खत्म करवा कर, ताकतों द्वारा उसे भी खत्म करवा देना चाहती है। वो सिर्फ अपने मतलब के लिए जी रही है। उसे सिर्फ स्वयं से, स्वयं की बेहतरी से मतलब था। कम-से-कम वो खुंबरी के काबिल नहीं है। ऐसा भी कह सकते हैं कि या खुंबरी उसके काबिल नहीं। ये जोड़ी कभी भी नहीं बन सकती थी। कितनी तेजी से दोनों प्यार की सीढ़ियां चढ़े थे लेकिन सीढ़ियों की समाप्ति पर छत कहीं भी नहीं थी। अब सिर्फ वापसी का रास्ता ही बचा था। खुंबरी अपना मतलब निकालना। चाहती थी। अपने बिगड़े काम संवारना चाहती थी। उसे लेकर खुंबरी में जो प्यार का तूफान उठा था, वो खत्म हो गया था। स्वयं उसके मन में भी एकाएक तब प्यार झाग की तरह बैठ गया था जब उसे खुंबरी ने कहा कि वो उसे सदूर पर ही रखेगी। बेशक जबर्दस्ती ही सही या उसे धमकाकर कि अगर सदूर जाने का इरादा किया तो उसके साथियों की जान ले लेगी।

जगमोहन को लग रहा था जैसे सपने से बाहर निकला हो।

खुंबरी का प्यार बिल्कुल सपने जैसा ही रहा था। आंख खुली और सब कुछ खत्म। लेकिन जगमोहन का दिल नहीं टूटा था। जाने क्यों उसे महसूस हो रहा था कि ये तो होना ही था। खुंबरी दिखने में जितनी उजली थी, भीतर से उतनी ही काली थी। उसे ताकतों से प्यार था। अपने से मतलब था। प्यार उसके लिए जरूरी चीज नहीं था।

जगमोहन कमरे से निकलकर, खाने वाले कमरे में पहुंचा।

बबूसा वहां नहीं था। ढूंढ़ने पर एक कमरे में बबूसा मिल गया। वो पलंग पर लेटा था और उसे देखते ही उठ बैठा। उलझन आ गई उसके चेहरे पर कि जगमोहन उसके पास क्यों आया है।

"मैंने खुंबरी को छोड़ दिया बबूसा।" जगमोहन शांत-गम्भीर स्वर बोला।

"छोड़ दिया?" बबूसा के होंठों से निकला—"या खुंबरी ने तुम्हें छोड़ा?"

"दोनों तरफ से एक साथ ही ये हुआ शायद।"

"क्यों?" बबूसा की आंखें सिकुड़ीं।

"खुंबरी को मेरे से ज्यादा ताकतों से प्यार है और मुझे भी समझ आ गया कि खुंबरी मेरे लिए नहीं बनी।"

लम्बे पलों तक बबूसा, जगमोहन को देखता रहा फिर बोला।

"तुम मेरे साथ कोई चाल तो नहीं चल रहे?"

"नहीं बबूसा।" जगमोहन ने व्याकुल स्वर में कहा—"मैंने कहा है, वो ही सच है।"

"मुझे समझ नहीं आ रहा कि अब तुमसे क्या कहूं? खुंबरी कहां है?"

"वो नहाने गई है।"

"उसे पता है कि तुमने उसे छोड़ दिया है।"

"अभी नहीं।"

"हुआ क्या?"

"तुम्हारे जानने लायक सिर्फ इतना ही है कि खुंबरी ने मुझे कहा कि मैं दोलाम को मार दूं। जबकि पहले उसने मुझे ये कहकर ऐसा करने को मना कर दिया था कि तुमने दोलाम को मारा तो ताकतें तुम्हें खत्म कर देंगी।"

"तो खुंबरी को अब तुम्हारी परवाह नहीं।"

"खुंबरी ने कहा कि वो मुझे ताकतों से बचा लेगी। पर ये बात मुझे सही नहीं लगती।"

तभी दरवाजे की तरफ से दोलाम की आवाज आई।

"तुम मुझे मारो तो खुंबरी तुम्हें ताकतों से नहीं बचा सकती।"

दोनों की निगाह घूमी।

दरवाजे पर दोलाम खड़ा जगमोहन को देख रहा था।

जगमोहन जाने क्यों सतर्क हो उठा।

"दोलाम और जगमोहन एक-दूसरे को देखते रहे।

"ताकतों के परिवार के सदस्य की कोई जान ले तो ताकतें उसे नहीं छोड़ेंगी।" दोलाम ने गम्भीर स्वर में कहा—"खुंबरी तुम्हें गलत राह पर डालना चाहती है। मैं उसकी आदतों से पुराना वाकिफ हूं। उसे सिर्फ ताकतों की परवाह है। अपने कामों की परवाह है। मैं तो पहले से ही हैरान था कि खुंबरी तुम पर कैसे मर मिटी।"

"तुम जानते थे कि ऐसा होगा?" जगमोहन ने पूछा।

"मैं इतना ही जानता था कि ये सब ज्यादा नहीं चलेगा।" दोलाम बरबस ही मुस्करा पड़ा—"इसी कारण मैंने जल्दी दिखाई और खुंबरी को प्यार करने का दावा करने लगा, जबकि मैं पहले से ही जानता था कि खुंबरी नहीं मानेगी। मुझे इस बात की परवाह भी नहीं थी। इस बहाने मैं खुंबरी को रास्ते से हटाकर, खुद ताकतों का मालिक बन जाना चाहता हूं। मेरा भरोसा करो। मैं खुंबरी की तरह बुरा नहीं बनूंगा। मैं सदूर का राजा बनना चाहता हूं।"

"तुम ये बात मुझसे क्यों कह रहे हो?"

"इसलिए कि मेरी सहायता करो और खुंबरी को आने वाली रात में अपने में उलझाए रखो। सम्भव है आज रात खुंबरी के जीवन की आखिरी रात हो। मैंने सब कुछ सोच लिया है कि क्या करना है।"

"तुम खुंबरी की जान लेने जा रहे हो?"

"हां।"

"कैसे?"

"ये नहीं बताऊंगा। आज रात को तुम खुद ही जान जाओगे कि मैंने कौन-सा हथियार इस्तेमाल किया।"

बबूसा ने बेचैनी से पहलू बदला।

"खुंबरी चाहती है कि आज रात मैं तुम्हें मार दूं।" जगमोहन बोला।

"ये तो अच्छी बात है। तुम खुंबरी को इसी बहाने उलझाए रखो। अपना वार कर जाऊंगा।" दोलाम ने कहा।

"तुम बताओगे नहीं कि किस तरह खुंबरी पर वार करोगे रात को।"

"इस बात को राज ही रहने दो।" दोलाम मुस्कराया।

"तुम्हारा वार सफल होगा?"

"सफल होने की पूरी आशा है।"

"खुंबरी के मरते ही तुम ताकतों के मालिक बन जाओगे।"

"ताकतें अपने मालिक के तौर पर मुझे स्वीकार कर लेंगी।"

"फिर तुम भी खुंबरी की तरह बुरे बन जाओगे।"

"कभी नहीं।" दोलाम ने दृढ़ स्वर में कहा—"मेरी मंजिल सिर्फ सदूर का राजा बनना है। मैं आराम से अपना जीवन व्यतीत करना चाहता हूं। राजा बन जाने पर मैं ताकतों को अपने से अलग कर दूंगा।"

"क्यों?"

"मैं अब साधारण जीवन जीना चाहता हूं और ताकतों के रहते ऐसा नहीं हो सकता। ताकतें मेरे पास रहेंगी और मैं खुंबरी की तरह हर वक्त परेशान और क्रोध में नहीं रहना चाहता। स्वस्थ जीवन जीना चाहता हूं।"

"तब तो मैं तुमसे कहूंगा कि ताकतों को डुमरा के हवाले कर देना।"

"सदूर का राजा बन जाने के बाद मैं ऐसा ही करूंगा।" दोलाम ने सामान्य स्वर में कहा।

जगमोहन ने बबूसा को देखा।

बबूसा व्याकुल था।

"क्या ये विश्वास के काबिल है?" जगमोहन ने बबूसा से पूछा।

बबूसा ने दोलाम को देखा फिर जगमोहन की तरफ सहमति से सिर हिलाकर कहा।

"तुम इस पर विश्वास कर सकते हो। मुझे इसमें कोई बुराई नहीं दिखी। अपने तौर पर सतर्क जरूर रहो।"

जगमोहन ने दोलाम को देखकर कहा।

"मैं खुंबरी को व्यस्त रखूंगा रात को। तुम अपना वार कर देना।"

"कहीं फिर से खुंबरी के लिए तुम्हारे मन में प्यार तो नहीं उछल पड़ेगा और तुम खुंबरी से मेरी बात कह दो।"

"ऐसा कभी नहीं होगा।" जगमोहन मुस्कराया—"तुम खुंबरी पर कब वार करोगे? जब वो कमरे के भीतर होगी तब या बाहर...।"

"ये बात तुम क्यों पूछ रहे हो?" दोलाम ने पूछा।

"मैं तुम्हारा वार आसान करना चाहता हूं अगर तुम मुझे अपनी योजना बता दो तो तुम्हारे लिए बेहतर होगा।"

दोलाम के चेहरे पर सोच के भाव उभरे फिर कह उठा।

"खुंबरी पर वार कमरे से बाहर होगा। क्या तुम उसे रात को, कि बहाने से कमरे के बाहर भेज सकते हो?"

"कोशिश करूंगा।"

"ऐसा कर सको तो अच्छा होगा। जब खुंबरी को बाहर भेजोगे तो बाहर घात लगी होगी। काम आसान हो जाएगा।"

जगमोहन ने दोलाम को देखकर सिर हिलाया और बाहर निकल गया।

उसी पल बबूसा उठा और दोलाम से कह उठा।

"तुम रानी ताशा के हाथों, खुंबरी की जान लेना चाहते हो।"

"तभी रानी ताशा सदूर का राज्य मेरे हवाले करेगी।" दोलाम बोला।

"तुम रानी ताशा को खतरे में डाल रहे हो।"

"रानी ताशा बच्ची नहीं है। वो बेहतरीन योद्धा है। वो एक ही वार में खुंबरी को खत्म कर देगी। मैं रानी ताशा को बेहतरीन तलवार दूंगा। वो जरूर कामयाब रहेगी।" दोलाम ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"इससे तो बेहतर है ये काम तुम राजा देव के हवाले कर दो। राजा देव ये काम बढ़िया ढंग से...।"

"रानी ताशा की इच्छा है कि वो स्वयं खुंबरी की जान लें। ये बात मैं अच्छी तरह महसूस कर चुका हूं।"

तभी जगमोहन कमरे के दरवाजे पर दिखा।

"तो तुम रानी ताशा के हाथों खुंबरी को खत्म करवाना चाहते हो।"

बबूसा और दोलाम ने तुरंत जगमोहन को देखा।

"तो तुमने सब सुन लिया।"

"जवाब दो मेरी बात का।"

"रानी ताशा की ये ही इच्छा है। उनकी इच्छा पूरी करूंगा तो वो मुझे सदूर का राज्य दे देंगी।" दोलाम कह उठा।

जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"तुम्हें धरा के बारे में बता दूं कि वो अपनी मौत नहीं मरी।" दोलाम बोला—"ताकतों ने मुझे बताया कि डुमरा ने शक्तियों के कण से बनी तलवार का वार खुंबरी पर किया था और उसी वक्त वार से बचने के लिए खुंबरी ने धरा को अपने सामने खींच लिया और तलवार धरा के सीने में जा लगी। खुंबरी ने अपनी मौत, धरा के ऊपर डाल दी।"

"ओह।" जगमोहन के होंठ सिकुड़े—"ये खबर मेरे लिए नई है।"

"मैं जानता हूं कि खुंबरी को सिर्फ अपनी परवाह है।" दोलाम कहा—"वो सिर्फ अपने लिए ही जीती है। अपना पेट पहले भरती है और बाद में दूसरे के बारे में सोचती है।"

"रात को।" जगमोहन बोला—"जैसे भी हो, मैं खुंबरी को कमरे से बाहर जरूर भेजूंगा।" जगमोहन की आंखों में दृढ़ता झलक रही थी। अब चेहरा शांत था, क्योंकि वो किसी निश्चय पर पहुंच चुका था—"लेकिन तुम रानी ताशा को कैसे कैद से निकालोगे? वहां तो ताकतें पहरा दे रही हैं।"

"मेरे लिए किसी को वहां से निकाल लाना कोई समस्या नहीं है।" दोलाम ने कहा।

"ऐसा है तो तुम सबको वहां से बाहर ले आओ। सब मिलकर खुंबरी पर हमला...।"

"मैं सिर्फ रानी ताशा को ही वहां से बाहर निकालूंगा। मुझे यकीन है कि रानी ताशा जब घात लगाकर खुंबरी पर तलवार से हमला करेगी तो खुंबरी के बच जाने का सवाल ही नहीं उठता।" दोलाम ने गम्भीर स्वर में कहा।

जगमोहन ने दोलाम को देखा और सिर हिलाकर कह उठा।

"तुम्हारी मर्जी। पर सोचो कि अगर रानी ताशा के हमले से खुंबरी बच गई तो तब क्या स्थिति होगी। तब...।"

"जब मुझे पता हो कि काम हो जाएगा तो मैं आगे की बात नहीं सोचता।" दोलाम ने शब्दों को चबाकर कहा—"रानी ताशा जबर्दस्त योद्धा है और रानी ताशा का घात लगाकर खुंबरी पर वार करने का मतलब है कि खुंबरी की जान गई।"

□ □

खुंबरी नहाकर आई तो उसने काला लबादा ओढ़ रखा था। सिर के गीले बाल बिखरे हुए थे। इस वक्त उसका रूप और भी निखरा नजर आ रहा था। चाल में मस्ती के भाव थे। उसके खूबसूरत चेहरे पर सोच के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। कमरे में प्रवेश किया तो जगमोहन को कुर्सी पर बैठे पाया।

"नहाकर कुछ आराम मिला है। सोमाथ तो मेरी जान ले लेना चाहता था।" खुंबरी ने मुस्कराकर कहा।

"वो ताकतवर था। तुमने बताया कि उसकी मशीन खराब गई।"

"हां।" खुंबरी गीले बालों को फैलाती कह उठी—"वो मुझे पकड़ने जा रहा था कि मैंने उसकी टांगें खींच लीं। वो कुल्हों के बल जमीन पर धड़ाम से गिरा। उसके बाद उठ नहीं सका। उसके कुल्हे का एक हिस्सा खुल गया। उसके भीतर जो बैटरी लगी थी, जो उसे चलाती थी। वो बाहर निकल आई थी।"

जगमोहन ने सिर हिलाया।

"वो बहुत तेज दौड़ा था मेरे पीछे। मैं भी तेज दौड़ रही थी, परंतु लगातार दौड़ते रहने की वजह से मैं थक गई थी। और वो नहीं थका था। कृत्रिम इंसान कैसे थकता, उसे तो मशीन चला रही थी। इसी कारण वो मेरे से जीत गया था।"

"तुमने हिम्मत करके अपने को बचा लिया।" जगमोहन मुस्कराया।

"मुझे तो विश्वास नहीं आता कि मैं बच गई। वो कृत्रिम इंसान मेरी जान ही ले लेता। इस बात का अफसोस है कि सोमाथ की वजह से डुमरा मेरे हाथों से बच गया। डुमरा का वार धरा को जा लगा था। उसके बाद वो वार करने की स्थिति में नहीं था। जबकि मेरे पास ताकतों वाली खास तलवार थी। मेरे एक वार से ही डुमरा मारा जाता, लेकिन तभी बीच में सोमाथ आ गया। तलवार मेरे हाथ से निकल गई और सोमाथ से बचने के लिए मुझे भागना पड़ा।"

"डुमरा ने तुम पर वार किया था।"

"हां वो। उस खास गुलाबी तलवार ने मुझ पर वार किया था।"

"तो धरा कैसे उस वार के सामने आ गई।"

"मैं तो खुद परेशान हूं कि धरा मेरे और उस गुलाबी तलवार के बीच कैसे आ गई? शायद मुझे बचाने के लिए वो बीच में आई हो। जो भी हो धरा की वजह से मेरी जान बची।" खुंबरी ने कहा।

"मुझे नहीं लगता कि तुम्हें बचाने के लिए धरा अपनी जान गंवा देगी।" जगमोहन बोला।

खुंबरी की नजर जगमोहन पर जा टिकी।

"मुझे बचाने के लिए धरा अपनी जान क्यों नहीं दे सकती।" खुंबरी ने कहा।

"दिल नहीं मानता कि धरा ने ऐसा किया होगा।" जगमोहन का स्वर शांत था।

खुंबरी की नजरों में चुभन के भाव आ गए। वो जगमोहन को ही देखे जा रही थी।

"धरा ने मुझे बचाने की खातिर ही, अपनी जान दे दी।" खुंबरी दृढ़ स्वर में कहा।

जगमोहन ने खुंबरी को देखा। कह नहीं सका कि तुमने धरा को अपने सामने खींच लिया था।

जबकि खुंबरी ने स्पष्ट तौर पर जगमोहन के चेहरे पर अविश्वास के भाव देख लिए थे। एकाएक खुंबरी को लगा कि जगमोहन को सब पता है कि धरा किसी तरह मरी।

"तुम दोलाम से नहीं मिले।" खुंबरी के होंठों से निकला।

खुंबरी जानती थी कि सिर्फ दोलाम ही ताकतों से खुंबरी की मौत का सच पता कर सकता था।

"दोलाम से?" जगमोहन चौंका और तुरंत ही सामान्य हो गया—"मेरा दोलाम से क्या वास्ता।"

परंतु जगमोहन का चौंकना खुंबरी की निगाहों से छिप नहीं सका।

खुंबरी मुस्कराई। जगमोहन भी मुस्कराया।

"हमारी बातों में तुम दोलाम को क्यों बीच में लाई। वो मुझे जरा भी पसंद नहीं है।"

"यूं ही मेरे मुंह से निकल गया।" खुंबरी ने लापरवाही से कहा—"खोनम पीने का मन हो रहा है। दोलाम से कहना बेकार है। वो अब मेरी सेवा नहीं करेगा। मुझे खुद ही खोनम बनाना होगा।"

"तुम रहने दो। मैं खोनम बना लाता हूं।" जगमोहन कुर्सी से उठते हुए बोला।

"तुम बनाओगे?" खुंबरी हंसी।

"क्यों नहीं। तुम्हारे लिए खोनम बनाकर मुझे खुशी होगी।" जगमोहन भी हौले से हंसा। दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"सुनो।" खुंबरी ने एकाएक शांत स्वर में कहा।

जगमोहन ठिठककर खुंबरी की तरफ पलटा।

"तुम्हारा विचार पक्का है न कि तुम रात को दोलाम को मार दोगे?"

"जरूर।" जगमोहन ने सिर हिलाया—"मेरी पूरी कोशिश होगी कि दोलाम खत्म हो जाए। दोलाम को मारकर मैं तुम्हें परेशानियों से मुक्त कर देना चाहता हूं। रात मैं दोलाम को मारने की पूरी चेष्टा करूंगा।" जगमोहन बाहर निकल गया।

खुंबरी कुछ पल दरवाजे को देखती रही फिर बड़बड़ा उठी।

'तुम्हारे मन में जरूर कुछ चल रहा है जगमोहन। परंतु मुझे तुम्हारी परवाह नहीं है। तुम दोलाम की जान लोगे और ताकतें तुम्हारी जान ले लेंगी। खुंबरी को मर्द के प्यार की कोई कमी नहीं होगी। सदूर पर एक से बढ़कर एक मर्द हैं सब मर्द एक जैसे होते हैं जगमोहन में जो है, वो दूसरे मर्दों में भी है। किसी एक मर्द के लिए मुझे मुसीबतों में फंसना पसंद नहीं। मैं आजाद और खुश रहना चाहती हूं।"

▭ ▭

रात हो चुकी थी। ठिकाने पर मशालें रोशन हो चुकी थीं।

खुंबरी, जगमोहन और बबूसा ने रोज की तरह खाना खाया। खाने दौरान उनमें ज्यादा बातें नहीं हुईं। दोलाम तब पास ही टहलता रहा था। खाने के बाद जगमोहन और खुंबरी अपने कमरे में चले गए। दोलाम ने बर्तन समेटकर, बगल के खाने वाले कमरे में रख दिए।

"तुम नहीं खाओगे?" बबूसा ने पूछा।

"आज भूख नहीं है।" दोलाम मुस्करा पड़ा।

बबूसा ने गहरी निगाहों से दोलाम को देखा।

दोलाम अभी भी मुस्करा रहा था।

"आज रात का तुम्हारा प्रोग्राम पक्का है?" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

दोलाम ने सहमति से सिर हिला दिया।

"तुम रानी ताशा को खतरे में डाल रहे हो।"

"ये रानी ताशा का फैसला है।"

"खुंबरी को मारने के लिए वो क्रोध में है। इस कारण ऐसा फैसला...।"

"इन बातों को रहने दो।"

"अभी भी वक्त है, बेहतर होगा कि तुम राजा देव को इस्तेमाल करो इस काम में।"

"मेरा मतलब सिर्फ रानी ताशा से ही है।"

"मान लो रानी ताशा ने खुंबरी की जान ले ली। तब रानी ताशा का क्या होगा। ताकतें क्रोध में रानी ताशा की जान ले लेंगी।"

"ऐसा सम्भव है। परंतु मेरी कोशिश होगी कि मैं ऐसा न होने दूं।" दोलाम बोला—"रानी ताशा का जिंदा रहना मेरी जरूरत है, क्योंकि रानी ताशा ने कहे के मुताबिक सदूर का राज्य मेरे हवाले करना है। ऐसे में मेरी पूरी कोशिश होगी कि रानी ताशा को ताकतों से बचा लूं।"

"शायद तुम नहीं बचा सकोगे।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"शायद बचा भी लूं। क्योंकि खुंबरी के न रहने के बाद मैं ही ताकतों का मालिक बनूंगा। इसलिए ताकतें मेरी बात को जरूर मानेगी कि वो रानी ताशा को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए तब तक तो ना पहुंचाए जब तक वो सदूर का राज्य मेरे हवाले नहीं कर देती।" दोलाम ने सिर हिलाकर कहा।

"तुम्हें इस बात पर पूरा भरोसा है?"

"पूरा नहीं है।"

"मतलब कि ताकतें रानी ताशा की जान भी ले सकती हैं।"

"मैं इस बात को रोकने की चेष्टा करूंगा।" दोलाम बोला।

"रानी ताशा मेरे पास होती तो मैं उसे समझाता कि वो ऐसा न करे। मैं अभी रानी ताशा के पास होकर आता हूं।"

"अब वक्त नहीं रहा दोस्त।" दोलाम मुस्कराया—"अब मेरे काम का समय शुरू होने जा रहा है।"

बबूसा ने फौरन दोलाम को देखा।

"तुम अब शांत रहोगे। ऐसा कुछ नहीं करोगे कि मेरी योजना पर कोई फर्क पड़े। इस रात में मैं खुंबरी की जान ले लेना चाहता हूं, वो भी मेरी जान लेने के लिए तैयारी जरूर कर रही होगी। रानी ताशा की तुम फिक्र मत करो। तुमसे ज्यादा मुझे रानी ताशा की जरूरत है कि मैं सदूर का राजा बन सकूं रानी ताशा के माध्यम से।"

▭ ▭

रात कुछ और गहरी हो चुकी थी। दोलाम मशालों के प्रकाश से आगे निकल आया था और उस रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ा जा रहा था। हाथ में रास्ता देखने के लिए छोटी-सी मशाल थाम रखी थी। उस मशाल की रोशनी में उसका चेहरा चमक रहा था, जहां गम्भीरता और कुछ-कुछ व्याकुलता दिखाई दे रही थी।

इसी प्रकार उसने पंद्रह मिनट तक लम्बा रास्ता तय किया और वहां जा पहुंचा जहां वो सब कैद थे। हाथ में दबी मशाल उसने बाहर ही दीवार में लगे कुंडे में फंसा दी थी। दोलाम कमरे में प्रवेश कर गया।

भीतर पर्याप्त रोशनी थी।

सोमारा के अलावा सब लेटे हुए थे। आहट पाकर सोमारा ने दोलाम को देखा।

दोलाम ठिठक गया।

"बबूसा कैसा है?" सोमारा ने तुरंत पूछा।

"अच्छा है। अभी उससे ही बात करके आ रहा हूं।" दोलाम ने कहा।

आवाजें सुनकर मोना चौधरी और नगीना उठ बैठे।

देवराज चौहान ने आंखें खोलकर दोलाम को देखा।

रानी ताशा की शायद आंख लग चुकी थी।

"जगमोहन कैसा है?" देवराज चौहान ने लेटे ही लेटे पूछा।

"बिल्कुल ठीक है। अब उसे अक्ल आ गई है और वो खुंबरी का अंत देखने की इच्छा रखता है।"

"क्या?" देवराज चौहान उठ बैठा—"ये बदलाव जगमोहन में कैसे आया?"

"खुंबरी के असली रूप का कुछ हिस्सा उसके सामने जरूर आया है, जो उसने ऐसा सोचा।"

"तुम्हें ठीक से वजह नहीं मालूम।"

"मैं इन बातों में नहीं पड़ना चाहता।"

"क्या जगमोहन स्वयं खुंबरी को मारने की सोच रहा है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"अभी तक तो ऐसा नहीं लगता।" दोलाम ने रानी ताशा को सोये देखा—"मैं रानी ताशा के पास आया हूं।"

नगीना ने तुरंत रानी ताशा को नींद से उठाकर कहा।

"दोलाम तुमसे मिलने आया है।"

रानी ताशा फौरन उठ बैठी। दोलाम को देखा।

दोलाम मुस्कराया फिर कह उठा।

"मैं तुमसे बात करने आया हूं।"

रानी ताशा फौरन उठी और दोलाम के पास पहुंच गई।

"कहो।" रानी ताशा की खोज भरी निगाह दोलाम के चेहरे पर टिक चुकी थी।

दोलाम रानी ताशा को कमरे के कोने की तरफ, दूसरो से दूर ले गया और बोला।

"रानी ताशा।" दोलाम धीमे स्वर में बोला—"मैं तुम्हें मौका देने जा रहा हूं कि तुम खुंबरी की जान स्वयं ले सको।"

"अभी?" रानी ताशा के होंठ भिंच गए।

दोलाम ने सहमति से सिर हिलाया।

"तो चलो।" रानी ताशा के होंठों से दबी-दबी-सी गुर्राहट निकली—"मुझे अभी खुंबरी के पास ले चलो।"

"अपना वादा याद है?"

"कि तुम्हें सदूर का राजा बना दूं।" रानी ताशा ने दृढ़ स्वर में कहा—"मैं अपने वादे पर कायम हूं।"

"मुझे यकीन है कि बाद में भी तुम अपना वादा याद रखोगी।"

"वहम में मत पड़ो। मैंने जो वादा किया है, उसे पूरा करूंगी।" रानी ताशा ने शब्दों को चबाकर कहा।

"मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि तुम खुंबरी की जान लेने में सफल रहोगी।"

"जरूर सफल रहूंगी।" रानी ताशा गुर्रा उठी—"ढाई सौ साल पहले खुंबरी ने अपने लालच की खातिर मुझे मेरे राजा देव से अलग कर दिया था। कुछ इस तरह कि इल्जाम मेरे सिर पर आया कि मैंने राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवा दिया है। मैं एक ऐसे गुनाह के पश्चाताप की आग में जलती रही, जिसका मैं स्वयं शिकार हो चुकी थी। उसके बाद मैं देव को कभी भी वापस नहीं पा सकी। आज देव मेरे पास है परंतु वो अपनी पृथ्वी ग्रह वाली पत्नी नगीना का है, मेरा नहीं। खुंबरी को अपने हाथों से मारूंगी तो कम-से-कम दिल में इतना तो चैन रहेगा कि अपने साथ हुई नाइंसाफी का कुछ तो बदला ले लिया खुंबरी से।"

"मेरी वजह से तुम्हारा बदला पूरा होगा।"

"अवश्य दोलाम और इसकी कीमत मैं तुम्हें सदूर का राज्य देकर चुकाऊंगी।"

"तुम्हें अभी मेरे साथ चलना होगा।"

"मैं इन सबसे इस बारे में कुछ बता सकती हूं?" रानी ताशा ने कुछ दूर बैठे सबकी तरफ देखकर कहा।

दोलाम के चेहरे पर सोच के भाव उभरे फिर बोला।

"कह दो। परंतु हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है। हमें जल्दी वहां पहुंचना है।"

रानी ताशा सबके पास पहुंची।

सबकी निगाह रानी ताशा पर ही थी। चेहरे पर उभरे खतरनाक भावों को सब देख चुके थे।

"मैं खुंबरी को मारने जा रही हूं।" रानी ताशा शब्दों को चबाकर कह उठी।

"खुंबरी को?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"दोलाम मुझे ऐसा करने का मौका दे रहा है।"

"क्यों?"

"क्योंकि बदले में मैं इसे सदूर का राज्य दे दूंगी। ये राजा बन जाएगा।"

"ये तुम क्या पागलपन कर रही हो।" नगीना ने तेज स्वर में कहा।

"पागलपन?" रानी ताशा ने नगीना को देखा—"तुम इसे जरूर पागलपन जैसा काम कह सकती हो क्योंकि देव तेरे पास है। अगर देव इस वक्त मेरा होता तो, मैं ये पागलपन कभी भी नहीं करती। सब कुछ भुला देती।"

"लेकिन ताशा तुम सदूर का राज्य...।" सोमारा ने कहना चाहा।

"खुंबरी मेरे हाथों मारी जाए, मेरे लिए इससे बड़ी और क्या बात होगी। सदूर पर राज करने का मुझे लालच नहीं है। ढाई सौ साल के बाद आज मुझे मौका मिला है खुंबरी से बदला लेने का।"

"खुंबरी कम नहीं है।" मोना चौधरी ने कहा—"हालात पलट सकते हैं।"

"मैं खुंबरी की जान ले लूंगी। मेरा पागलपन मुझे जीत देगा।"

"तुम अपने को भारी खतरे में डालने जा रही हो।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं अपने लिए ऐसा नहीं सोचती।"

देवराज चौहान ने दोलाम से कहा।

"मैं भी ताशा के साथ जाऊंगा।"

"सिर्फ रानी ताशा को ले जाऊंगा मैं और तुम लोग ज्यादा फिक्र मत करो। खुंबरी से मुकाबला करने वाले हालात पैदा नहीं होंगे, रानी ताशा के लिए। घात लगाकर खुंबरी पर हमला किया जाएगा और खुंबरी को आभास भी नहीं होगा और उसकी जान चली जाएगी। सब ठीक है। रानी ताशा जल्दी सबके पास लौट आएगी।" दोलाम बोला।

"हमले में तुम भी रानी ताशा का साथ दोगे?" मोना चौधरी ने पूछा।

"रानी ताशा चाहती है कि वो स्वयं खुंबरी की जान ले। इसलिए मैं इसमें रानी ताशा का साथ नहीं दे रहा।"

"रानी ताशा कहे तो तुम साथ दोगे?"

"जरूर दूंगा। क्योंकि खुंबरी से मेरी दुश्मनी भी शुरू हो चुकी है।"

"तुम्हें दोलाम का साथ ले लेना चाहिए ताशा।" सोमारा ने कहा।

रानी ताशा, दोलाम की तरफ पलटकर बोली।

"चलो दोलाम। मैं जल्दी से ये काम पूरा कर देना चाहती हूं।" स्वर में दृढ़ता थी।

"मेरा हाथ थामो।" दोलाम ने अपना हाथ बढ़ाकर कहा।

रानी ताशा ने दोलाम का हाथ थाम लिया।

"आओ।" रानी ताशा का हाथ थामे दोलाम, उस दरवाजे जैसे रास्ते की तरफ बढ़ गया।

सब देखते रहे।

देखते-ही-देखते दोनों दरवाजे जैसे रास्ते से बाहर निकल गए। कोई रुकावट नहीं आई। भीतर की रोशनी बाहर आ रही थी। दोलाम ने आगे बढ़कर कुंडे में फंसी मशाल निकालकर हाथ में ली और रानी ताशा से कह उठा।

"मेरे साथ-साथ चलो।"

दोनों उस रास्ते पर वापस, मशाल की रोशनी में चल पड़े।

"मुझे एक बेहतर तलवार की जरूरत पड़ेगी।" रानी ताशा ने सख्त स्वर में कहा।

"वो मैं दूंगा।"

"इस वक्त तो खुंबरी अपने कमरे में होगी। क्या मुझे उसके कमरे में प्रवेश करना होगा, उसकी जान लेने के लिए?"

"जगमोहन, जो कि खुंबरी का खास बना हुआ है, उसका मन खुंबरी से उखड़ गया...।"

"वजह?" रानी ताशा के होंठों से निकला।

"जगमोहन कहता है कि उसने पहले खुंबरी से कहा कि वो दोलाम के मार देता है, तब खुंबरी ने कहा कि वो ऐसा न करे। उसने दोलाम को मारा तो ताकतें उसे मार देंगी, क्योंकि दोलाम ताकतों के परिवार का सदस्य बन चुका है। परंतु आज शाम खुंबरी ने स्वयं ही कहा जगमोहन से कि वो दोलाम को मार दे। वो उसे ताकतों से बचा लेगी। ये बात खुंबरी ने झूठ कही थी और जगमोहन इस बात को भांप गया कि अब खुंबरी को उसकी परवाह नहीं है। ये ही वजह रही कि खुंबरी से उसका मन खट्टा हो गया और वो खुंबरी को मारने के लिए मुझसे आ मिला।"

"तो खुंबरी ने जगमोहन से झूठ कहा था कि वो उसे ताकतों [illegible] बचा लेगी।"

"हां। झूठ ही कहा था।"

"तो अब...?"

"अब जगमोहन रात को किसी पहर खुंबरी को किसी बहाने कमरे से

बाहर निकालेगा और बाहर तुम तलवार के साथ घात लगाए मौजूद होगी और एक ही वार में खुंबरी की जान ले लोगी।"

"ऐसा ही होगा।" रानी ताशा सख्त स्वर में कह उठी।

दोनों मशाल की रोशनी में आगे बढ़ते जा रहे थे।

"क्या पता जगमोहन का मन बदल जाए और वो तुम्हारी चाल के बारे में खुंबरी को सब बता दे।" रानी ताशा ने कहा।

"मैंने बबूसा से इस बारे में बात की थी। बबूसा कहता है कि जगमोहन पर भरोसा किया जा सकता है।"

"पर मुझे जगमोहन पर भरोसा नहीं रहा। वो खुंबरी को मारने आया था और उसका बन बैठा।"

"अच्छा हुआ जो ऐसा हुआ। वरना मुझे खुंबरी के खिलाफ जाने का मौका नहीं मिलता।"

"तुम्हारा ध्येय क्या है?"

"ताकतों का मालिक बनना।"

"ये तुमने पहले ही सोच रखा था कि...।"

"नहीं। मैंने कुछ नहीं सोचा था। मैं तो खुंबरी की सेवा में लगा था। सब ठीक चल रहा था, लेकिन जब खुंबरी और जगमोहन से प्यार हुआ तो मेरा मन खुंबरी से खराब हो गया। पांच सौ सालों तक मैंने तरह-तरह की दवाएं लगाकर खुंबरी के शरीर को ताजा बनाए रखा। बहुत मेहनत की मैंने। और वापस आकर खुंबरी ने अपना शरीर प्राप्त कर लिया और जिस शरीर की मैं सेवा करता रहा, उस शरीर को जगमोहन के हवाले कर दिया। जबकि मेरा हक बनता था खुंबरी के शरीर को प्यार करने का। ठोरा ने भी ये ही कहा कि तुम्हारा हक बनता है। खुंबरी को चाहिए था कि मुझे प्यार करने का आमंत्रण देती। परंतु उसने पृथ्वी के मनुष्य को अपना शरीर सौंपना बेहतर समझा। ये ही गलती अब खुंबरी को ले डूब रही है। जब मेरे मन में ये सोचें दौड़ रही थीं और मैंने खुंबरी से विद्रोह करके उसका शरीर पाने की बात रख दी तो तभी मेरे मन में आया कि उसका शरीर पाने की इच्छा रखने से बेहतर है कि मैं ही ताकतों का मालिक बन जाऊं। बस यहीं से मैंने अपनी सोचों को कार्यरूप देना शुरू कर दिया। तभी तुमसे बात हो गई। जब मुझे ये पता लगा कि तुम स्वयं खुंबरी की जान लेने में दिलचस्पी रखती हो तो मैंने सदूर का राजा बनने की शर्त तुम्हारे सामने रख दी। तुम्हें अब जो मौका मिलने जा रहा है, वो कोई आसान मौका नहीं है खुंबरी को देख पाना भी तुम्हारे लिए कठिन है।"

"मैं जानती हूं और इसके बदले तुम्हें सदूर का राज्य दूंगी। परंतु मैं तुमसे खुश नहीं हूं।"

"क्यों?"

"तुम ताकतों के मालिक बनने के बाद खुंबरी की तरह सदूर के लोगों को तकलीफ दोगे और...।"

"मैं ऐसा नहीं करूंगा। भरोसा रखो। मैं शांति से जीवन जीना चाहता हूं। सदूर पर राजा बनते ही मैं ताकतों को छोड़ दूंगा। मैं खुंबरी की तरह पवित्र शक्तियों से दुश्मनी नहीं लूंगा।" दोलाम ने सामान्य स्वर में कहा।

"ताकतें तुम्हें अपने से दूर जाने देंगी?" रानी ताशा ने पूछा।

"ताकतें इस बारे में कुछ नहीं कर सकतीं। एक खास मंत्र बोलना होता है कि ताकतों से पीछा छूट जाएगा। मैं उस मंत्र का पता लगा लूंगा। ताकतें ही मुझे उस मंत्र के बारे में बताएंगी, जब मैं उनका मालिक बन जाऊंगा।"

"बबूसा इन सब बातों के बारे में जानता है?"

"हां। वो मेरा दोस्त बन गया है और सब जानता है।"

दोनों के कदम उठ रहे थे।

"हम पहुंचने वाले हैं।" दोलाम धीमे स्वर में कह उठा।

"एक बात का जवाब मुझे और दे दो।" रानी ताशा बोली।

"कहो।"

"जगमोहन तुम्हें मारता है तो ताकतें उसे मार देंगी। परंतु अब मैं खुंबरी की जान लेने जा रही हूं तो ताकतें मुझे मार देंगी। क्योंकि मैंने उनके मालिक को मारा। ये सच है न?"

"पूरी तरह सच है। लेकिन मैं तुम्हें बचाने की पूरी कोशिश करूंगा। अगर तुम मर गईं तो मैं सदूर का राजा नहीं बन पाऊंगा। मेरे पास एक रास्ता है तुम्हें बचाने का।" दोलाम ने गम्भीर स्वर में कहा—"खुंबरी की मौत के बाद ताकतों को यकीन है कि दोलाम उनका मालिक बन जाएगा। ये ही वजह है कि ताकतें खुंबरी की होने वाली मौत को लेकर परेशान नहीं हैं। ताकतों को मालिक की इच्छा होती है, तभी उनका वजूद कायम रहता है।"

"ताकतें जानती हैं कि इस वक्त क्या होने जा रहा है।"

"सब खबर रहती है ताकतों को। परंतु वो दखल नहीं देतीं। यूं भी ताकतों ने कह रखा है कि ये दोलाम और खुंबरी का व्यक्तिगत मामला है। अब वो इस मामले के बीच में नहीं आएंगी।"

"तुम बता रहे थे कि मुझे बाद में ताकतों से बचा पाओगे कि नहीं।" रानी ताशा फिर उसी बात पर आ गई।

"हां। जब तुम खुंबरी की जान ले लोगी, तो तब मैं ताकतों से कहूंगा

कि तुम्हें कुछ न कहे, तभी मैं उनका मालिक बनूंगा। मेरी ये बात ताकतें मान जाएंगी और तुम्हें कुछ नहीं कहेंगी। ताकतों को मालिक की जरूरत होती है। ऐसे में वो मजबूर हैं मेरी बात मानने के लिए। अब खामोश हो जाओ। हम आ पहुंचे हैं। मशालों वाला रास्ता शुरू हो गया था। दोलाम ने हाथ में दबी मशाल दीवार के कुंडे में फंसा दी। वो दबे पांव आगे बढ़ते रहे।

"इस वक्त खुंबरी कहां है?" रानी ताशा ने दांत भींचे पूछा।

"अपने कमरे में। जगमोहन के साथ। तुम्हें घबराहट तो नहीं हो रही?" दोलाम ने दबे स्वर में पूछा।

"देव ने जब मुझे युद्ध कला सिखाई थी तो उसके बाद मुझे [illegible] लगना भी बंद हो गया था।" रानी ताशा ने उसी लहजे में कहा।

"अब दबे पांव मेरे पीछे आती रहो।" दोलाम बोला।

▭ ▭

"तुम बहुत अच्छे हो जगमोहन।" खुंबरी खिलखिलाकर हंसी और जगमोहन के गले लग गई। उसके एक हाथ में कारू (शराब) का गिलास था। वो मदमस्त दिखाई दे रही थी। कारू पीने की वजह से उसका चेहरा गुलाबी हो गया था और आंखों की कशिश बढ़ गई। रात के इस वक्त वो और भी खूबसूरत लग रही थी शरीर पर वो ही काला गाऊन जैसा कपड़ा लपेट रखा था जिसमें वो और भी आकर्षक लग रही थी।

जगमोहन के साथ वो बेड पर बैठी थी। मशाल का प्रकाश वहां फैला था। माहौल बेहद रोमांटिक था अगर प्यार करने वालों का दिल साफ हो। परंतु यहां न तो जगमोहन का दिल साफ था न ही खुंबरी का। फिर भी दोनों मुस्करा रहे थे। एक-दूसरे को खुश दिखा रहे थे। देखने वाला तो इसे रोमांटिक माहौल ही कहता।

"मैंने कितनी अच्छी किस्मत पाई है कि मुझे तुम जैसा प्यारा इंसान मिला।" खुंबरी ने जगमोहन का गाल चूमा—"तुम्हारे बिना मेरा दिल नहीं लगता। हर समय तुम्हारे बारे में ही सोचती हूं।"

"मैं भी तुम्हारे ही खयालों में गुम रहता हूं।"

"ओह, हमारा प्यार कितना अच्छा है। जब तुम्हारे साथ बंद कमरे में होती हूं तो दुनिया भूल जाती हूं। मुझे कुछ भी याद नहीं रहता सिवाय तुम्हारे। मैं तुम्हें सदूर का राजा बना दूंगी।"

जगमोहन ने मुस्कराकर प्यार भरी निगाहों से खुंबरी को देखा।

"तुम कारू क्यों नहीं पीते?" खुंबरी ने गिलास से कारू का घूंट भरा।

"मैं शराब कभी भी नहीं पीता।"

"शराब?"

"पृथ्वी पर कारू को शराब ही कहते हैं।"

"तुम्हें पीना शुरू कर देनी चाहिए। हर राजा पीता है कारू। कारू तो राजा की शान होती है।"

"मैं कभी नहीं पी सकूंगा। मुझे इस तरह के नशे की आदत नहीं है।"

खुंबरी आगे सरकी और जगमोहन के आगोश में सिमट आई।

जगमोहन ने उसे बांहों में भर लिया।

"मैं अच्छी हूं न?" खुंबरी के स्वर से अब कारू का नशा झलकने लगा था।

"बहुत।" जगमोहन ने प्यार से उसके गाल पर हाथ फेरा—"तुम बहुत अच्छी हो खुंबरी।"

"मैं ताकतों को हुक्म देती हूं कि हमारा प्यार इसी तरह सलामत रहे।" खुंबरी ने पुनः उसका गाल चूमा।

जवाब में जगमोहन ने भी उसका गाल चूमा।

"आज रात तुम मेरी सारी समस्या खत्म कर दोगे।" खुंबरी बोली।

"समस्या?" समझते हुए भी जगमोहन ने कहा।

"मेरी समस्या दोलाम है।"

"इसी रात में मैं दोलाम को मार दूंगा।" जगमोहन बोला।

"मैं जानती हूं तुम मुझे किसी समस्या में फंसे नहीं देख सकते। हममें कितना ज्यादा प्यार है।"

"मैं अपनी खुंबरी के बिना नहीं रह सकता।"

"मैं भी। मैं तो तुम्हारे बिना मर ही जाऊंगी जगमोहन।" उससे लिपटती खुंबरी कह उठी।

"तुम्हारी कारू छलक जाएगी।" जगमोहन बोला।

खुंबरी ने एक ही सांस में कारू का गिलास खाली किया और एक तरफ लुढ़का दिया।

"आज तुम दोलाम को मार दोगे। उधर ओहारा कल डुमरा पर ऐसा जबर्दस्त वार करने वाला है कि वो बच नहीं सकेगा। मेरी सारी समस्याएं अब दूर हो जाएंगी। डुमरा को मौत देने के लिए ही मैं रुकी हुई थी, वरना अब तक तो मैंने सदूर की रानी बन जाना था। मैंने सोच रखा था कि पहला काम डुमरा को खत्म करने का करूंगी।"

"मैं तुम्हें खुश देखना चाहता हूं। तुम कहो तो डुमरा को मैं ही मार दूंगा।"

"सच जगमोहन।" खुंबरी जगमोहन से लिपट गई।

"पूरा सच। तुम्हारे लिए तो मैं कुछ भी कर सकता हूं।" जगमोहन के स्वर में प्यार के भाव थे।

"मेरी एक और बात मानोगे?" उसके आगोश में सिमटी खुंबरी बोली।
"कहकर तो देखो।"
"तुम्हारे साथी, जो कैद में हैं या बबूसा। ये सब अब मुझे अच्छे नहीं लगते। कभी-कभी तो सोचती हूं कि बेमलब ही इन्हें कैद में रखा हुआ है।" खुंबरी ने कहा।
जगमोहन मन-ही-मन सतर्क हो गया।
"तो क्या इन्हें आजाद करने का विचार कर रही हो?" जगमोहन बोला।
"क्या तुम्हें इनसे प्यार है?"
"मुझे तो सिर्फ तुमसे प्यार है।" जगमोहन ने सतर्क भाव से खुंबरी का सिर चूमा।
"मैं इन सबकी जान ले लेना चाहती हूं।"
जगमोहन के चेहरे पर जहरीली मुस्कान उभरी। उसे पहले ही आभास था कि खुंबरी ऐसा ही कुछ कहेगी। चूंकि खुंबरी उसकी गोद में सिमटी थी, इसलिए उसके चेहरे के भाव नहीं देख सकी थी।
"मैं तुम्हें खुश देखना चाहता हूं। तुम जो भी करो, पर खुश रहो।"
उसी पल खुंबरी उसके आगोश से निकलकर सीधी हो बैठी।
"मैं उन सबकी जान ले लूं। तुम्हें कोई एतराज नहीं?" खुंबरी ने मदहोश भरी निगाहों से जगमोहन को देखा।
"मुझे क्यों एतराज होगा।" जगमोहन ने प्यार भरे स्वर में कहा—"तुम उन सबकी जान ले रही हो। मेरी तो नहीं। जबसे मुझे तुमसे प्यार हुआ है उसके बाद तो मुझे उन सबका खयाल ही नहीं आता।"
"ओह जगमोहन। मैं बयान नहीं कर सकती तुम कितने अच्छे हो। खुंबरी फिर जगमोहन से लिपट गई—"मैं तुम्हें हर वक्त प्यार करते रहना चाहती हूं। अब तो एक पल भी तुमसे दूर नहीं जा पाऊंगी।"
"मुझे धरा की याद आ गई।" जगमोहन बोला—"वो न मरती तो कितना अच्छा रहता।"
"सच में। वो जिंदा रहती तो मेरे कई काम आती। पर उसने मरना था। डुमरा का वार बड़ा जबर्दस्त था।"
"कैसे मरी धरा?"
"तुम्हें बता तो चुकी हूं।" खुंबरी ने पुनः सीधा होकर जगमोहन को देखा।
"जाने क्यों धरा की मौत का मुझे यकीन नहीं आ रहा।"
खुंबरी नशे भरी निगाहों से जगमोहन को देखने लगी।
"क्या देख रही हो?" जगमोहन बोला।

"तुम मेरे से बार-बार धरा की मौत का जिक्र क्यों करते हो?" खुंबरी बोली।

"धरा की मौत का मुझे दुख है।"

"मुझे भी दुख है। पर मैं प्यार के इस वक्त को, इन बातों की वजह से खराब नहीं करना चाहती। तुम्हें प्यार की जरूरत है। मुझे भी तुम्हारा प्यार चाहिए।" कहने के साथ ही खुंबरी ने अपने शरीर पर डाल रखा काला लबादा हटा दिया। उसका खूबसूरत संगमरमरी शरीर चमकने लगा। इन बातों में पड़ने का जगमोहन का कोई मन नहीं था। परंतु उसके बहाना बनाने से पहले ही खुंबरी उस पर आ बिछी।

▭ ▭

रात गहरी होने लगी थी।

खुंबरी बेड पर टांगें और बांहें फैलाए पस्त-सी पड़ी थी। ऊपर वो ही काला लबादा ओढ़ रखा था जो कि आधे-अधूरे शरीर पर ही आ रहा था, बाकी का शरीर जैसे चमक रहा था मशाल के प्रकाश में। चेहरे पर राहत के भाव थे। देर तक उसने और जगमोहन ने प्यार किया था। तब वो जैसे एक-दूसरे में खो गए थे। सिर्फ प्यार करने का ही होश था। कारू का असर खुंबरी के चेहरे पर से काफी हद तक उतर चुका था। उसने मोटी और बड़ी आंखों से जगमोहन को देखा।

जगमोहन कपड़े पहन चुका था और सोचों में डूबा बेड पर ही बैठा था।

"जगमोहन।" खुंबरी ने प्यार से कहा और हाथ बढ़ाकर, जगमोहन का हाथ थाम लिया।

जगमोहन ने मुस्कराकर उसे देखा।

"मेरे से प्यार करना कैसा लगा?" खुंबरी ने मस्त स्वर में कहा।

"बहुत अच्छा।" जगमोहन ने भी अपने स्वर में मस्ती भर ली थी।

"जानते हो, आज ज्यादा अच्छा क्यों लगा?"

"क्यों?"

"आज मैंने बहुत ही ज्यादा मन से तुम्हें प्यार किया है। क्योंकि तु अब दोलाम की जान लेने वाले हो।"

जगमोहन मन-ही-मन मुस्कराया कि खुंबरी का मतलब है, हमारा आखिरी प्यार था। अभी तुम दोलाम को मारोगे और ताकतें तुम्हें खत्म कर देंगी। कैसे जहरीले अंदाज में खुंबरी अपना मतलब निकाल लेना चाहती है।

"तुमसे प्यार करना तो मुझे हमेशा ही अच्छा लगा।" जगमोहन ने कहा।

"मैं बच्चा पैदा करूं तो तुम्हें कैसा लगेगा जगमोहन?" एकाएक खुंबरी ने कहा।

जगमोहन समझ गया कि खुंबरी उसे बातों के जाल में पूरी तरह फंसा लेना चाहती है।

"अगर बच्चा मेरा होगा तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।"

"क्यों नहीं। तुम ही तो बच्चे के पिता होगे। तुम्हारे अलावा मेरे करीब है ही कौन। कुछ ही दिनों में मैं सदूर की रानी बन जाऊंगा और तुम राजा। फिर हम अपना बच्चा तैयार करेंगे। कितना मजा आएगा।" खुंबरी खुश हो उठी।

जगमोहन ने प्यार से उसके हाथ को थपथपाया। बोला।

"इतने प्यार से भरी बातें तुमने कभी नहीं कीं।"

"आज का वक्त खास है। तुम मेरे लिए दोलाम की जान लेने वाले हो। मेरी समस्या दूर कर रहे हो। दोलाम बहुत चालबाजी से काम ले रहा है। उसे मेरे शरीर की चाहत नहीं है, वो मुझे मारकर ताकतों का अकेला मालिक बन जाना चाहता है।"

"दोलाम ने ऐसा कहा?"

"बेशक नहीं कहा, परंतु उसके मन की इतनी-सी बात तो मैं भी समझ सकती हूं। ताकतों ने उसे परिवार में शामिल कर लिया है। इस बात का फायदा वो खूब उठा रहा है। लेकिन आज रात सब ठीक हो जाएगा। खुंबरी ने गम्भीर स्वर में कहते एकाएक जगमोहन को देखा—"रात काफी बीत चुकी है। दोलाम गहरी नींद में होगा। उसे मारने के लिए ये वक्त अच्छा है जगमोहन। ये काम पूरा करके आओ। उसके बाद हम एक बार फिर प्यार करेंगे। दोलाम से पीछा छूट जाने की खुशी में मैं और कारू पीऊंगी। इतनी मस्त हो जाऊंगी कि मुझे कुछ होश ही न रहेगा। जाकर जल्दी से दोलाम की जान ले लो।"

जगमोहन ने अपने सामने लेटी खतरनाक शय को देखा।

"जाओ भी। जल्दी वापस आकर मुझे बताओ कि तुमने दोलाम जान ले ली।"

"तुम भी साथ चलो।" जगमोहन ने प्यार से कहा।

"मैं?"

"हां। मुझे बाहर का एक चक्कर लगाना होगा। बबूसा और दोलाम को देखना होगा कि वो किस स्थिति में हैं। ऐसा न हो कि बबूसा जाग रहा हो या फिर दोलाम ही जाग रहा हो। ये सब देखने के बाद ही मैं दोलाम को मार सकूंगा।"

"लेकिन मेरी क्या जरूरत है—तुम तो...।"

"जब दोलाम को मारना होगा तो तुम वापस कमरे में आ जाना। मैं

चाहता हूं चक्कर लगाने के लिए तुम मेरे साथ चलो। तुमने मुझे तलवार भी नहीं दी कि जिससे दोलाम की जान लूंगा।" जगमोहन ने कहा।

"तलवार मैं तुम्हें अभी दे...।"

"अभी नहीं। चक्कर लगाते समय हाथ खाली होने चाहिए। अब उठो भी।"

"तो तुम मुझे जरूर तकलीफ दोगे साथ चलने की।" खुंबरी ने हंसकर कहा।

"तुम्हारे बिना मेरा दिल जो नहीं लगता।" जगमोहन हंसा।

खुंबरी बेड से नीचे उतरी और काले लबादे को सही से अपने शरीर के गिर्द लपेटकर बांधा और मस्त निगाहों से जगमोहन को देखा। जगमोहन उस पर फिदा होने वाले अंदाज में कह उठा।

"तुम बहुत अच्छी हो।"

"आओ। बाहर चलते हैं। तुम नजर मार लो कि दोलाम और बबूसा क्या कर रहे हैं।"

दोनों दरवाजे की तरफ बढ़े। एक-दूसरे का हाथ थाम लिया।

"दोलाम हमें हाथ थामे देखेगा तो और भी जल जाएगा।" खुंबरी कह उठी।

"उसकी जिंदगी कुछ ही देर में खत्म होने जा रही है।"

दरवाजा खोला और दोनों बाहर निकल आए।

हर तरफ गहरी खामोशी छाई हुई थी।

वे उस तरफ बढ़ गए जिधर खाने वाला कमरा था।

"दोलाम और बबूसा अपने-अपने कमरों में गहरी नींद में होंगे।" खुंबरी ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"तुम मेरे बच्चे की मां बनोगी न?" जगमोहन की आवाज में प्यार भरा था।

"जरूर। तुम्हारे बच्चे को जन्म देकर मुझे खुशी होगी। मैं सोच रही हूं कि क्यों न आज रात ही तुम्हारे उन कैदी साथियों को भी खत्म कर दूं। उन्हें कैद में रखने का मतलब ही क्या है।"

"जैसा तुम्हारा मन करे। दोलाम को खत्म करने के बाद, उन सबको भी खत्म कर दूंगा।"

"उन्हें खत्म करने के लिए तुम्हें कष्ट उठाने की जरूरत नहीं है, मेरे एक इशारे पर ताकतें उनकी जान ले लेंगी।"

"ये तो और भी अच्छी बात है।" जगमोहन ने कहा। उसके मन में बेचैनी घर बनाने लगी थी। दोलाम ने उसे कहा था कि रात को वो खुंबरी

के कमरे से बाहर लाए। अब वो खुंबरी को ले आया था, परंतु उसे ऐसा कोई भी आभास नहीं मिल रहा था कि आस-पास या पीछे कोई है।

दोलाम ने कहा था कि वो रानी ताशा को छिपा देगा कि वो घात लगाकर खुंबरी पर हमला कर सके। परंतु ऐसा होता उसे नजर नहीं आ रहा था। इस वक्त वो मशालों वाले रास्ते से निकल रहे थे।

पूरे रास्ते पर मशालों का प्रकाश था। चलते-चलते जगमोहन ने पीछे निगाह मारी।

अगले ही पल उसका दिल जोरों से धड़का।

पीछे कोई था।

जो कि उसके पीछे देखते ही, तुरंत अंधेरे में दुबक गया था। वो कौन था, ये नहीं देख सका था जगमोहन। परंतु कोई था। उसके खयाल से वो रानी ताशा हो सकती है या स्वयं दोलाम।

जगमोहन और खुंबरी एक-दूसरे का हाथ थामे खाने वाले कमरे में पहुंचे।

खाने का टेबल खाली था। कुर्सियों पर कोई भी नहीं बैठा था।

खुंबरी और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"यहां कोई नहीं है।" खुंबरी धीमे स्वर में बोली—"दोलाम और बबूसा गहरी नींद में होंगे कमरों में।"

जगमोहन ने उस तरफ नजर मारी। जिस तरफ से वो आए थे। इस वक्त वहां कोई नहीं दिखा लेकिन जगमोहन जानता था कि उस तरफ कोई है। किसी के होने की झलक उसने स्वयं देखी थी।

"क्या सोच रहे हो?" खुंबरी फुसफुसाकर बोली।

जगमोहन सोच लिया कि अब क्या करना है।

"तलवार कमरे में रखी है?" जगमोहन ने पूछा।

"अभी लो।" खुंबरी ने कहा और बटाका थामकर कुछ बुदबुदाई।

उसी पल खुंबरी के हाथ में तलवार थमी दिखाई देने लगी। उसे जगमोहन की तरफ बढ़ाया।

"ओह। तुम्हें पलक झपकते ही तलवार मिल गई।" कहते हुए जगमोहन ने तलवार थामी।

"ताकतें मेरे हर हुक्म को फौरन पूरा करती हैं।"

"मैं दोलाम की जान लेने जा रहा हूं। तुम वापस कमरे में जाओ। मैं अभी आ जाऊंगा।" जगमोहन ने कहा।

"कहो तो मैं यहीं ठहर जाऊं?" खुंबरी कह उठी।

"नहीं। तुम जाओ कमरे में।" जगमोहन खुंबरी को उसी रास्ते पर

वापस भेजना चाहता था, जहां पर यकीनन खुंबरी की घात में कोई था और मौका मिलते ही उसने खुंबरी को मार देना था।

"दोलाम को छोड़ना मत।" खुंबरी ने जैसे जगमोहन को पकड़ लिया।

"अपने जगमोहन पर भरोसा रखो।"

खुंबरी ने जगमोहन का गाल चूमा और मुस्कराकर पलटते हुए वापस चल दी।

खुशी में खुंबरी जैसे चल न रही हो, उड़ी जा रही हो। कुछ ऐसा ही हाल था इस वक्त खुंबरी का। जगमोहन ने अभी दोलाम को मार देना था और इसकी सजा ताकतों ने जगमोहन की जान लेकर देनी थी। दोलाम और जगमोहन से पीछा छूट जाना था। डुमरा के वार के दौरान जब धरा की जान गई और खुंबरी को सोमाथ से जान बचाने के लिए जब भागना पड़ा था तो तब उसके मस्तिष्क में ये बात आई कि वो बुरे हालातों से घिर चुकी है। एक तरफ डुमरा उसकी जान के पीछे है और दूसरी तरफ दोलाम उसका दुश्मन बन गया है। वजह था जगमोहन। जगमोहन की वजह से उसकी जिंदगी उलझकर रह गई है। समस्याएं बढ़ गईं। दुश्मन बढ़ गए दोलाम जैसा वफादार सेवक हाथ से गंवा दिया। खुंबरी ने इस बारे में गम्भीरता से सोचा कि क्या उसे प्यार की या जगमोहन की जरूरत है?

जवाब ये ही मिला खुद से कि प्यार की जरूरत है परंतु जगमोहन के न रहने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। प्यार किसी भी मर्द से किया जा सकता है। सब एक जैसे होते हैं। जगमोहन का मन पृथ्वी ग्रह पर वापस जाने का है। ये बात जगमोहन कई बार कह चुका था। खुंबरी को महसूस हो रहा था कि जगमोहन के साथ उसकी ज्यादा नहीं चलनेवाली फिर वो जगमोहन के संग क्यों रह रही है। वो तो सिर्फ ताकतों के लिए जीती है। ताकतें उसका जीवन हैं। जगमोहन को साथ-साथ रखने की कोई जरूरत नहीं है। यूं भी खुंबरी के मन में था कि जगमोहन अपने कैदी साथियों की परवाह कर रहा है और उन्हें बचाने की भी चेष्टा करेगा। जो भी हो जगमोहन से एकाएक उसका मन उखड़ गया था और ताकतों के प्रति उसका प्रेम एकाएक बढ़ गया। तभी उसने फैसला कर लिया था कि जगमोहन के हाथों दोलाम की जान लेकर, ताकतों द्वारा जगमोहन भी खत्म हो जाएगा। उधर ओहारा, डुमरा को कल खत्म कर देगा। उसके बाद वो ताकतों के दम पर सदूर की रानी बनेगी और शान से बाकी का जीवन व्यतीत करेगी।

खुंबरी को अब अपने जीवन की आगे की राह बहुत आसान और सीधी लग रही थी। इस बात को जानती थी कि दोलाम को मारकर जगमोहन उसके पास नहीं पहुंच सकेगा। ताकतों के परिवार के सदस्य को मारने का

लिए उसमें खड़ा हुआ जा सके। उसी तरह एक गड्ढे में तलवार सहित रानी ताशा दुबकी हुई थी। रानी ताशा जान चुकी थी कि खुंबरी वापस आ रही है। उसके कदमों की आहटें रानी ताशा सुन रही थी।

और खुंबरी को उस वक्त आश्चर्य का तीव्र झटका लगा, जब रानी ताशा अचानक ही गड्ढे से उछलकर बाहर उसके सामने खड़ी हो गई और तलवार की नोंक उसकी गर्दन पर आ लगी।

खुंबरी चंद पलों के लिए स्तब्ध रह गई। मशाल की सिंदूरी रोशनी में दोनों के चेहरे चमक रहे थे। रानी ताशा के चेहरे पर दुनिया भर के खतरनाक भाव उमड़े पड़े थे। आंखें शोले बरसा रही थीं।

खुंबरी ने अपने को संभाल लेने का भरसक प्रयत्न किया।

"तुम?" रानी ताशा—यहां?" खुंबरी के होंठों से निकला।

"तुमने क्या सोचा था कि हमारा सामना होगा ही नहीं?" रानी ताशा गुर्रा उठी।

खुंबरी की आंखें सिकुड़ीं।

"ओह।" खुंबरी के होंठों से सोच भरा स्वर निकला—"तुम्हें दोलाम ने कैद से निकाला है, शर्त ये होगी कि तुम मुझे मार दो। ये ही बात है न?" खुंबरी घायल शेरनी की तरह दिखने लगी—"दोलाम ने तुम्हें कैद से निकाला है।"

"एक शर्त और भी रखी दोलाम ने।" रानी ताशा गुर्राई।

"वो भी बता।" खुंबरी के दांत भिंच गए।

तलवार की नोंक गर्दन में धंसने से खून बह निकला था। परंतु खुंबरी को इस मामूली बात की इस वक्त परवाह नहीं थी।

"दोलाम ने मुझे मौका दिया है कि मैं तुम्हें अपने हाथों से मार स बदले में दोलाम को मैं सदूर का राज्य दूंगी। अब समझी कुछ।"

"खूब। तो तेरे को भरोसा है कि तू मुझे मार देगी और दोलाम सदूर का राजा बन जाएगा।" खुंबरी ने कठोर स्वर में कहा।

"तेरी मौत तो अब मेरे हाथ में है।" रानी ताशा गुर्राई—"ढाई सौ बरस पहले तूने अपने स्वार्थ की खातिर मुझे मेरे देव से जुदा ही नहीं किया बल्कि मुझ पर ये इल्जाम भी लगवा दिया कि मैंने राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवा दिया है। मैं देव के बिना किस कदर तड़पती रही, ये मैं ही जानती हूं। महापंडित ने मेरे कई जन्म कराए और हर बार ये बात मेरे जेहन में ताजा रखी कि मुझे मेरे देव का इंतजार है। मैंने देव को ढूंढ़ा। पृथ्वी ग्रह पर मेरा देव मुझे मिला भी परंतु वो अब मेरा नहीं, अपनी पृथ्वी की पत्नी नगीना का है। मुझे मेरे देव से ऐसा जुदा किया कि मैं उसे पाकर भी पा

नहीं सकी। तू मेरी सबसे बड़ी गुनहगार है। मैं तेरी जान ले सकी तो मेरे लिए इससे ज्यादा खुशी की क्या बात होगी। अब तू मर खुंबरी और...।"

उसी पल खुंबरी ने अपनी गर्दन जरा-सी पीछे की और फुर्ती से हाथ उठाकर तलवार पर मारा। रानी ताशा के हाथ में दबी तलवार चंद पल के लिए, दाईं तरफ झूल गई कि इसी बीच खुंबरी ने रानी ताशा पर छलांग लगा दी। खुंबरी रानी ताशा से टकराई और रानी ताशा के लिए पीछे को जा गिरी।

रानी ताशा नीचे, खुंबरी ऊपर, ऐसे में रानी ताशा की पीठ जमीन से टकराई। रानी ताशा के होंठों से तेज चीख निकली।

इसी पीड़ा भरे पलों का फायदा उठाकर खुंबरी उसके हाथ में दबी तलवार पर झपट उठी और अगले ही पल तलवार खुंबरी के हाथों में थी और वो उछलकर खड़ी हो गई। रानी ताशा को जब होश आया तो बाजी हाथ से निकल चुकी थी। वो जल्दी से खड़ी हुई कि तभी खुंबरी के हाथ में दबी तलवार उसकी गर्दन में आर-पार धंसती चली गई।

रानी ताशा की आंखें फैल गईं। दोनों हाथ गले में फंसी तलवार पर जा पहुंचे। कई पलों तक वो स्थिर-सी ऐसे ही खड़ी रही फिर पीठ के बल पीछे को जा गिरी। खुंबरी के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी। वो आगे बढ़ी और रानी ताशा के मृत शरीर के गले में फंसी तलवार बाहर खींची और पलटकर तेज-तेज कदमों से वापस चल पड़ी। राह में आने वाली मशालों की रोशनी में खुंबरी का खूबसूरत चेहरा, दरिंदगी के भावों के साथ भी खूबसूरत लग रही थी। उसकी आंखें आग उगल रही थी। दोलाम ने रानी ताशा को कैद से निकालकर, उसकी ताकत को ललकारा था। उसके हुक्म में दखल दिया था। उसकी मौत का इंतजाम किया था और ये बात खुंबरी कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।

शीघ्र ही वो खाने की टेबल वाले कमरे में पहुंची।

जगमोहन तलवार थामे वहीं मौजूद था। खुंबरी का रूप देखते ही चौंका। उसके हाथ में दबी खून सनी तलवार देखते ही जगमोहन सन्न रह गया। समझते देर न लगी कि रानी ताशा मारी जा चुकी है।

"दोलाम कहां है?" खुंबरी जगमोहन को देखकर गुर्राई।

"वो कमरे में होगा। मैं उसकी तरफ जा ही रहा...।"

खुंबरी तेजी से आगे बढ़ गई।

जगमोहन समझ गया कि एकाएक हालात बदल गए हैं। खुंबरी बेकाबू हो चुकी है। उसने रानी ताशा को मार दिया है। अब दोलाम को मारने गई है। यकीनन उसके बाद वो उसके साथियों को मारेगी। ये बात वो कह भी

चुकी है। अब जो भी करना होगा, फौरन करना होगा। खुंबरी का इस तरह दोलाम की तरफ जाना स्पष्ट करता है कि वो समझ चुकी है कि दोलाम ही रानी ताशा को वहां तक, उसे मारने लाया।

तलवार थामे जगमोहन उसी पल उधर दौड़ा, जिधर खुंबरी गई थी। उसने छोटी-सी राहदारी को पार किया और एक कमरे में दरवाजे वाले रास्ते से भीतर प्रवेश कर गया।

अगले ही पल थम से ठिठक गया। आंखें कुछ फैल-सी गईं।

खुंबरी के साथ में दबी तलवार सामने खड़े दोलाम की छाती में धंसी और पीठ से नोंक बाहर निकली हुई थी। दोलाम फटी आंखों से हैरानी से खुंबरी को देख रहा था। तलवार की मूठ अभी भी खुंबरी के हाथ में थी। खुंबरी के चेहरे पर बहशी भाव नाच रहे थे। आंखों में क्रूरता बसी हुई थी। इस रूप में भी उसकी खूबसूरती कम नहीं हुई थी। गुलाबी होंठ इस कदर भिंचे हुए थे कि कानों के पास से गालों की हड्डियां बाहर को उमड़-सी रही थीं। अगले ही पल खुंबरी ने तलवार को, दोलाम की छाती से वापस खींच लिया ऐसा होते ही दोलाम के शरीर को जबर्दस्त झटका लगा और उसकी जान निकल गई। आंखें पलट गईं। बेजान-सा वो खुंबरी के ऊपर गिरने लगा कि खुंबरी तुरंत सामने से हट गई। दोलाम का शरीर छाती के बल नीचे गिरा और शांत पड़ा रहा। खुंबरी के होंठों से गुर्राहट निकली। खून से सनी तलवार उसके हाथ में थी।

जगमोहन की एकटक निगाह खुंबरी पर थी।

"ये सब मिले हुए हैं।" खुंबरी ने दांत पीसते हुए गुर्राकर कहा—"दोलाम ने रानी ताशा को कैद से बाहर निकाल दिया कि वो मेरे को मार सके। परंतु मैं रानी ताशा से बच गई और मैंने उसे मार दिया। ये बात बबूसा भी जानता होगा कि दोलाम क्या कर रहा है। परंतु उसने मुझे नहीं बताया तुम्हें बताया?"

"नहीं।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"मैं सबको मार दूंगी।" खुंबरी ने दांत पीसते हुए कहा और तेजी से कमरे से निकलकर, आगे बढ़ गई। खून सनी तलवार हाथ में थी।

"खुंबरी।" जगमोहन उसके पीछे लपका। वो समझ चुका था कि खुंबरी अब बबूसा की जान लेने जा रही है।

लेकिन खुंबरी के कदम तेजी से उठे और कुछ आगे जाकर एक कमरे में प्रवेश कर गई।

सामने ही कुर्सी पर बबूसा बैठा था। खुंबरी के चेहरे का हाल देखा तो सतर्क भाव में उठने लगा कि तभी खुंबरी का तलवार वाला हाथ

उठा...। खुंबरी अब किसी को बचाव का मौका ही नहीं देना चाहती थी। परंतु तलवार वाला हाथ नीचे आने से पहले ही, खच के साथ उसकी गर्दन पर, पीछे से तलवार का वार हुआ और खुंबरी की गर्दन कटकर लटकने लगी। कटे गले से खून बाहर को उबलने लगा। खुंबरी के शरीर के घुटने मुड़े, तलवार वाला हाथ नीचे आ गया। उसी पल खुंबरी का शरीर बैठने के अंदाज में नीचे लुढ़कता चला गया।

गर्दन कटते ही खुंबरी की जान निकल गई थी।

सब कुछ एकाएक शांत पड़ गया था।

बबूसा हैरानी से खुंबरी के मृत शरीर को देख रहा था फिर नजरें उठाकर जगमोहन को देखा जिसके हाथ में खून से सनी तलवार थी। चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी।

"तुमने—तुमने—खुंबरी से मेरी—जान बचाई।" बबूसा के होंठों से निकला।

"ये पागल हो गई थी। सबको मार देना चाहती थी। दोलाम को मार दिया। रानी ताशा ने भी खुंबरी के हाथों अपनी जान गंवा दी। तुम्हें मारने के बाद इसने बाकी सबको मार देना था। मुझे भी जिंदा न छोड़ती।" जगमोहन ने एक-एक शब्द चबाकर कहा—"खुंबरी का व्यवहार एकाएक बहुत बदल गया था। ये सिर्फ अपने बारे में ही सोच रही थी। डुमरा ने सही कहा था कि खुंबरी बुरी है। खुंबरी के करीब रहकर मैंने भी ये बात महसूस कर...।"

जगमोहन शब्द पूरे न कर सका।

तभी उसके कानों मे ठोरा का धीमा स्वर पड़ा।

"तुमने ताकतों की मालिक, महान खुंबरी की जान ली है। दोलाम भी मारा गया। हमारा मालिक अब कोई नहीं रहा। तुम्हारी सजा मौत है, परंतु तुम्हें जीने का मौका मिल सकता है जगमोहन।"

कानों के पास ये शब्द सुनते ही जगमोहन स्तब्ध रह गया। वो फौरन घूमा परंतु कोई नहीं दिखा। जगमोहन की आंखें सिकुड़ गईं। सामने खड़ा बबूसा उसे ही देख रहा था।

"क्या बात है?" बबूसा ने पूछा।

"मेरे कानों के पास कोई बोल रहा है। खुंबरी भी किसी से धीमे स्वर में बातें किया करती...।"

"मैं ठोरा हूं जगमोहन।" उसी अंदाज में शब्द कानों में पड़े।

"ठोरा—कौन ठोरा?"

बबूसा ठोरा का नाम सुनते ही फौरन कह उठा।

"ये सबसे बड़ी ताकत का नाम है। दोलाम इससे बात किया करता था।"

जगमोहन के होंठ भिंच गए फिर बोला।

"क्या कहना चाहते हो ठोरा?"

"तुमने खुंबरी की जान ली है। वो हमारी मालिक थी। ताकतों का वजूद तभी रह सकता है, जब हमारा कोई मालिक हो और हमारी जरूरतों का खयाल रखता रहे। तुम्हारी सजा अब मौत है। परंतु तुम्हें जीने का एक मौका मिल सकता है।"

"कैसे?" जगमोहन के कठोर चेहरे पर गम्भीरता दिखने लगी। वो जानता था कि ठोरा सही कह रहा है।

बबूसा, जगमोहन के शब्दों को स्पष्ट सुन रहा था।

"तुम्हें हम ताकतों का मालिक बनना होगा।" ठोरा की आवाज कानों में पड़ी।

"ताकतों का मालिक—मैं?" जगमोहन चौंका।

"अगर तुम ताकतों का मालिक बनना स्वीकार करते हो तो हम तुम्हारी जान नहीं लेंगे। इंकार करते हो तो अभी तुम्हारी जान ले ली जाएगी। ताकतें इस वक्त बहुत क्रोध में हैं कि तुमने खुंबरी की जान ले ली। उधर दोलाम भी नहीं रहा। अगर तुम ताकतों के मालिक बन जाते हो तो ताकतों का क्रोध खत्म हो जाएगा। ताकतों को अपना मालिक चाहिए।"

जगमोहन का चेहरा सख्त था दिमाग तेजी से दौड़ रहा था।

"जवाब दो। ताकतें तुम्हारे जवाब का इंतजार कर रही हैं।"

"अगर मैं ताकतों का मालिक बनता हूं तो मेरी हर बात मानी जाएगी?"

"क्यों नहीं। हम अपने मालिक का हर हुक्म पूरा करते हैं।" ठोरा का स्वर कानों में पड़ा।

"तो मैं ताकतों का मालिक बनना स्वीकार करता हूं।" जगमोहन एकाएक शांत स्वर में बोला।

"तुम्हारा जवाब सुनकर सारी ताकतों को खुशी हुई।"

"मेरे सब साथी कैदियों को आजाद कर दो।" जगमोहन ने कहा

"आजाद कर दिया।"

"कल ओहारा डुमरा पर हमला करेगा। मैं चाहता हूं डुमरा को कुछ न कहा जाए।"

"ये भी हो गया महान जगमोहन। ठोरा अपने मालिक के हर हुक्म का आदर करता है।"

"मैं तुम ताकतों के बारे में ज्यादा नहीं जानता। मुझे वो सब जानकारी चाहिए, जो खुंबरी के पास थीं।"

"ये काम अभी हो जाएगा। मैं अभी सब जानकारी तुम्हारे दिमाग में डाल दूंगा। अब तुम हमारे मालिक हो। तुम्हें हमारे पास ही रहना होगा। वापस पृथ्वी ग्रह पर जाने की नहीं सोचोगे। तुम ताकतों का भला करोगे, ताकतें तुम्हारा भला करेंगी।"

"मैं ऐसा ही करूंगा। परंतु मुझे तुम्हारे बारे में कुछ भी जानकारी नहीं...।"

"मैं सारी जानकारी तुम्हारे दिमाग में डालने जा रहा हूं। कुछ पलों का इंतजार करो।" ठोरा की आवाज आई।

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"तुम ताकतों के मालिक बनने जा रहे हो?" बबूसा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"मैं ताकतों का मालिक बन गया हूं।" जगमोहन शांत भाव में मुस्कराया।

"तुमने ऐसा क्यों किया?" बबूसा कह उठा।

"ताकतों का मालिक बनना स्वीकार नहीं करता तो खुंबरी की जान लेने की वजह से, ताकतें मेरी जान ले लेतीं।"

"ओह।"

तभी जगमोहन के सिर में सनसनाहट-सी दौड़ी।

कुछ पल ऐसा ही होता रहा फिर सब कुछ शांत हो गया।

परंतु जगमोहन के मस्तिष्क में हर वो जानकारी आ गई थी जो खुंबरी ताकतों के बारे में जानती थी। वो मंत्र भी उसके जेहन में था जिससे ताकतों से छुटकारा पाया जा सकता था। ये ठिकाना उसे ऐसा लगने लगा। जैसे वो बरसों से यहां रहा हो। ताकतों के बारे में सब कुछ अब उसके दिमाग में डाला जा चुका था।

जगमोहन मुस्करा पड़ा।

"अब तो तुम्हें सब पता है महान जगमोहन।" ठोरा के शब्द कानों में पड़े।

"हां। अब मेरे पास ताकतों के बारे में हर जानकारी है।" जगमोहन ने कहा।

"याद रखना महान जगमोहन। तुमने ताकतों के भले की सोचनी है और ताकतें तुम्हारे भले का काम करेंगी।"

"शुक्रिया ठोरा।"

"खुंबरी सदूर की रानी बनना चाहती थी ताकतों के प्रयत्न से वो आसानी से बन जाती। क्या तुम सदूर का राजा बनना चाहोगे। ताकतें तुम्हारी राह की हर मुसीबत को दूर कर देंगी।" ठोरा का स्वर कानों में पड़ा।

"इसका जवाब मैं तुम्हें जल्दी ही दूंगा।" जगमोहन ने मुस्कराकर कहा और तलवार एक तरफ फेंक दी।

"महान जगमोहन। अब तुम हम ताकतों के मालिक हो। जब भी हमें पुकारोगे, हम आ जाएंगे। मैं जल्दी ही तुम्हें बटाका तैयार करके दूंगा ताकि ताकतों से जब तुम बात करना चाहो तो फौरन कर सको।"

"तुमसे बात करके मुझे अच्छा लगा।"

"अब मैं जाता हूं। ताकतें अपने नए मालिक को पाकर खुश हैं। वो नाच रही हैं—झूम रही हैं। मैं उन्हें देख रहा हूं।"

"हमारा साथ खुंबरी से भी लम्बा रहेगा।" जगमोहन बोला।

ठोरा चला गया। जगमोहन, बबूसा से मुस्कराकर बोला।

"अब हम आजाद हैं बबूसा आओ सबको वहां से लेकर आएं।"

"ले—लेकिन तुम तो ताकतों के मालिक बन गए हो।" बबूसा कुछ परेशान था।

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

▭ ▭

देवराज चौहान, नगीना, मोना चौधरी और सोमारा को कैद से निकालकर, जगमोहन और बबूसा वापस आ गए। जाते वक्त रानी ताशा का मृत शरीर रास्ते में पड़ा मिला था। रानी ताशा को मरा पाकर उन्हें बहत दुख हुआ था। रानी ताशा के शरीर को उन्होंने रास्ते के बगल में पड़ने वाले गड्ढे में डाल दिया था। इस वक्त इससे ज्यादा वो कुछ न कर सकते थे। अन्यों को जब रानी ताशा की जान चली जाने का पता चला तो वो बहुत दुखी हुए। सोमारा और देवराज चौहान की आंखें गीली हो गईं। मन बोझिल हो गया। जब उन्हें ये पता लगा कि जगमोहन ताकतों का मालिक बन गया है तो उनका दिमाग जगमोहन की तरफ भटक गया। सबके मन में ये ही बात थी कि अब क्या होगा?

जबकि जगमोहन ने इतना ही कहा कि सब ठीक हो जाएगा।

बाकी बची रात में वे सो गए। नींद आई नहीं आई। सब ऐसे ही रहा।

दिन निकला तो जगमोहन ने ठोरा को पुकारा।

"हुक्म महान जगमोहन।" कानों के पास ठोरा की आवाज उभरी।

"मुझे डुमरा के पास जाना है।" जगमोहन ने कहा।

"डुमरा ताकतों का दुश्मन है। उसे जब पता चलेगा कि तुम ताकतों के नए मालिक हो तो, वो तुम्हें मारने का प्रयत्न करेगा।"

"ऐसा वक्त आते ही मैं डुमरा को मार दूंगा।"

"मैं अभी दोती को भेजता हूं। वो तुम्हें डुमरा के पास पहुंचा देगी।"

फिर ठोरा की आवाज नहीं आई।

"ये तुम डुमरा को मारने की क्या बात कह रहे थे?" देवराज चौहान ने पूछा।

जगमोहन ने देवराज चौहान को चुप रहने का इशारा किया।

तभी वहां दोती का अक्स नजर आने लगा।

"महान जगमोहन की सेवा में दोती हाजिर है। तुम्हें मालिक के रूप में पाकर, ताकतों को खुशी हुई।"

"मुझे डुमरा से मिलना है।"

"आओ महान जगमोहन। मैं तुम्हें डुमरा के पास ले चलती हूं।" दोती बोली।

"तुम सब भी मेरे साथ चलो।" जगमोहन ने सबसे कहा।

सब उस ठिकाने से बाहर आ गए।

आगे-आगे दोती एक दिशा में चल पड़ी।

देवराज चौहान, जगमोहन के पास आकर फुसफुसाया।

"तुम क्या करने वाले हो?"

"ताकतों से छुटकारा पाना है।" जगमोहन का स्वर धीमा था।

"कैसे?"

"बड़ी ताकत ठोरा ने सारी जानकारी मेरे दिमाग में डाल दी है। उस जानकारी में एक ऐसा भी मंत्र है जो ताकतों से छुटकारा पाने के लिए बोला जाए तो ताकतें दूर हो जाती हैं। सदूर आते वक्त धरा ने बताया था कि डुमरा, खुंबरी से चाहता था कि वो उस मंत्र को पढ़कर ताकतों को उसके हवाले कर दे कि डुमरा हमेशा के लिए ताकतों को खत्म कर दे। अब मैं ऐसा ही करने की सोच रहा हूं।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

▭ ▭

डुमरा को होकाक ने खुंबरी के ठिकाने के सारे हालात बता दिए थे कि वहां पर क्या-क्या हुआ। दोलाम मारा गया। खुंबरी मारी गई। रानी ताशा नहीं रही। खुंबरी और दोलाम के मरने की खबर सुनकर डुमरा खुश हो गया था। परंतु रानी ताशा की मौत के बारे में सुनकर उसका मन खराब हुआ। होकाक ने ये भी बता दिया कि वो सब उसके पास ही आ रहे हैं। डुमरा ने सोच भरे अंदाज में सिर हिलाया।

"जगमोहन ताकतों का मालिक बन गया है।" डुमरा बोला—"पर वो मेरे से क्या बात करना चाहता है?"

"उसके मन में कोई खोट नहीं है। उसके आने की वजह मैं नहीं जानता।" होकाक ने कहा।

"वो मेरे पास कब तक पहुंच जाएंगे?"

"जल्दी ही। वे पास में ही हैं।"

"सोमाथ के बारे में तुम्हें कुछ पता है। कल वो खुंबरी की जान लेने उसके पीछे गया था।

"कृत्रिम इंसान की मेरे पास खबर नहीं। वो खुंबरी के ठिकाने पर नहीं पहुंचा।"

होकाक चला गया।

फिर तोखा की आवाज डुमरा के कानों में पड़ी।

"जगमोहन ताकतों का मालिक बनने के बाद तुम्हारे पास क्यों आ रहा है?"

"जगमोहन को ताकतों का मालिक बनने में कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"पर तुम्हारे पास ही क्यों आ रहा है?"

"इसका जवाब जगमोहन ही देगा कि उसके मन में क्या है।" डुमरा ने सोच भरे स्वर में कहा—"खुंबरी और दोलाम के मर जाने से मेरी परेशानियों का अंत हो गया। मेरी समस्या हल हो गई।"

▭ ▭

जगमोहन, देवराज चौहान, बबूसा, नगीना, मोना चौधरी और सोमारा डुमरा के पास आ पहुंचे। डुमरा तो कब से वहीं पर बैठा उनके आने का इंतजार कर रहा था। उनके पास आते ही बोला।

"मैं जानता था कि तुम लोग मेरे पास ही आ रहे हो।" डुमरा कहा—"खुंबरी के ठिकाने के ताजा हालातों के बारे में मुझे पूरी जानकारी है। खुंबरी और दोलाम के अंत से मैं खुश हुआ, परंतु रानी ताशा की मौत का मुझे दुख है।"

जगमोहन ने दोती के अक्स को देखकर कहा।

"तुम जाओ।"

उसी पल दोती का अक्स गायब हो गया।

जगमोहन आगे बढ़ा और डुमरा के पास आकर बोला।

"मैं ताकतों का मालिक बन गया हूं।"

"जानता हूं।" डुमरा ने शांत निगाहों से जगमोहन को देखा।

"ताकतों का मालिक बनना मेरी मजबूरी थी, नहीं तो ठोरा, खुंबरी की जान लेने के जुर्म में मेरी जान ले लेता। अब मैं ताकतों को अपने से अलग करना चाहता हूं। क्या तुम ताकतों को अपने पास रखना पसंद करोगे।"

"मैं उन्हें नष्ट कर दूंगा। परंतु इसके लिए तुम्हें एक खास मंत्र की जरूरत...।"

"वो मेरे पास है।"

"मेरा हाथ थामो और मंत्र बोलना शुरू करो।" डुमरा ने फौरन उसकी तरफ हाथ बढाया।

"उससे क्या होगा।"

"मेरा हाथ थामकर मंत्र बोलोगे तो ताकतों से तुम्हारा पीछा छूट जाएगा और वो मेरे अधिकार में आ जाएंगी। तब मैं उन्हें आसानी से नष्ट कर सकूंगा। मेरा हाथ पकड़ो।" डुमरा ने कहा—"अगर तुमने मेरा हाथ थामे बिना मंत्र पढ़ा तो ताकतों से तुम्हारा पीछा छूट जाएगा लेकिन ताकतें अपने नए मालिक की तलाश में जुट जाएंगी।"

जगमोहन ने डुमरा का हाथ थाम लिया।

उसी पल ठोरा की आवाज जगमोहन के कानों में पड़ी।

"महान जगमोहन। ये क्या कर रहे हो।" ठोरा के स्वर में बेचैनी थी—"तुमने कहा था कि तुम ताकतों का खयाल रखोगे परंतु तुम तो हमें डुमरा के हवाले कर रहे हो कि वो हमें नष्ट कर दे।"

जगमोहन ने मंत्र बोलना शुरू कर दिया।

"ऐसा मत करो महान जगमोहन। अगर तुम हमसे दूर होना चाहते हो तो हो जाओ, पर हमें डुमरा के हाथों नष्ट मत करवाओ।"

जगमोहन मंत्र पढ़ता रहा।

"महान जगमोहन, हमारे साथ ऐसा अन्याय मत करो।" ठोरा, जगमोहन के कान में गुस्से से चीखा—"हमें आजाद रहने दो। हम ताकतें जीना चाहती हैं। हमारी अपनी दुनिया है। हमारा साथ तुम्हें मिला रहेगा तो तुम शिखर पर पहुंच जाओगे। हर तरफ तुम्हारे नाम का डंका बजेगा। तुमने अभी हमें समझा नहीं...।"

जगमोहन मंत्र को पूरा बोलकर थम गया।

ठोरा की आवाज आनी भी बंद हो गई।

डुमरा के चेहरे पर तीव्र चमक उभरी हुई थी। उसने जगमोहन का हाथ अभी थामा हुआ था।

जगमोहन की निगाह डुमरा पर थी।

अन्य सब इन दोनों को ही देख रहे थे।

लम्बे पलों के बाद डुमरा ने जगमोहन का हाथ छोड़ा और खुशी भरे स्वर में कह उठा।

"सब ताकतें शक्तियों के पवित्र रास्ते पर कदम रखते ही नष्ट हो गईं। ठोरा ने थोड़ा-सा जरूर परेशान किया। ठोरा उस पवित्र रास्ते पर कदम नहीं रख रहा था। लेकिन शक्तियों ने उसे घेरकर, उस पवित्र रास्ते पर पटक दिया।"

तीसरे दिन ही बबूसा और सोमारा का ब्याह हो गया। रानी ताशा के न होने से मन में कुछ उदासी थी, परंतु आगे के सब कामों को पूरा करना था। बबूसा चाहता था कि देवराज चौहान सदूर का राजा बनकर रहे और खुद पहले की ही तरह उसकी सेवा करे। संग रहे। पहले वाला वक्त वापस आ जाए। परंतु देवराज चौहान ने बबूसा से स्पष्ट कहा कि उसे वापस अपने ग्रह पृथ्वी पर जाना है उसकी दुनिया वही है। वो रुक नहीं सकता। बबूसा अब क्या कहता। चुप रह गया।

छठे दिन देवराज चौहान ने बबूसा से कहा कि वो सदूर का राजा बनेगा और सोमारा सदूर की रानी बनेगी। बबूसा और सोमारा इस बात के लिए तैयार नहीं थे परंतु वे देवराज चौहान की बात को टाल भी नहीं सकते थे। दो दिन का वक्त जरूर लगा परंतु दोनों को माननी पड़ी देवराज चौहान की बात। जगमोहन, नगीना और मोना चौधरी इस नए ग्रह, सदूर को देखने में व्यस्त रहे। फिर वो दिन भी आ गया, जब बबूसा के सदूर के राजा बनने का ऐलान कर दिया गया। सदूर वाले जानते थे कि राजा देव सदूर पर आए हुए हैं। देवराज चौहान लोगों से, बाजारों इलाकों में घूम-घूमकर मिलता रहता था।

राजा देव खुद बबूसा को सदूर का राजा बना रहे हैं तो सदूर के लोग एतराज क्यों करते? इस फैसले से सब खुश थे। पंद्रहवें दिन बबूसा को सदूर का राजा बनाया गया और सोमारा रानी बनी। इसके लिए महाआयोजन हुआ था। महापंडित भी आया। डुमरा भी आया और जम्बरा के अलावा, सेनापति मोमाथ और सदूर के कई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति आयोजन में शामिल हुए। सदूर के लोगों के लिए खाना खोल दिया गया था, जो कि पांच दिन तक लगातार चलता रहा। किले को रंगीन लाइटों से सजाया गया था कि उसकी खूबसूरती देखते ही बनती थी। ये पांच दिन बहुत चहल-पहल में बीते। फिर दस दिन बाद देवराज चौहान ने बबूसा से पृथ्वी पर जाने की बात कही तो बबूसा की आंखों से आंसू निकल गए। परंतु देवराज चौहान को तो वापस पृथ्वी पर जाना ही था। दिल पर बोझ जरूर था कि रानी ताशा अपने प्यार को ढूंढ़ते, जन्मों गंवाकर, जान भी गंवा चुकी है। रानी ताशा की मौजूदगी की कमी उसे हर वक्त परेशान-सी करती रही थी।

आखिरकार बबूसा ने कहा कि पोपा (अंतरिक्ष यान) में वो खुद उन्हें छोड़ने पृथ्वी पर जाएगा, परंतु देवराज चौहान ने ये कहकर मना कर दिया कि सदूर को संभालने के लिए उसका यहां रहना जरूरी है। वो नया-नया सदूर का राजा बना है। किलोरा उसे पृथ्वी पर छोड़ आएगा। बबूसा का

मन नहीं कर रहा था कि राजा देव सदूर से जाए। वो सदूर का राजा क्या बना, पांवों में जैसे बेड़ियां पड़ गई थीं। वरना वो भी देवराज चौहान के साथ पृथ्वी पर ही चला जाता। बबूसा ने जब अपनी ये इच्छा सामने रखी तो देवराज चौहान ने सदूर की देखभाल करने की बात कहकर, बबूसा को रोक दिया। फिर वो दिन भी आ गया जब देवराज चौहान, नगीना, मोना चौधरी और जगमोहन ने पोपा में बैठकर पृथ्वी के लिए रवाना होना था। बबूसा की हालत बुरी थी। बीती रात वो जरा भी सो नहीं पाया था और जब सब पोपा में सवार हो रहे थे तो फफक पड़ा था बबूसा। पास खड़ी सोमारा के गले लगकर रो पड़ा। राजा देव का इस तरह सदूर से जाना उसे सहन नहीं हो रहा था। वो रोता ही रहा और पोपा ने अंतरिक्ष की उड़ान भरी और देखते ही देखते वो नजरों से ओझल हो गया। पोपा को किलोरा चला रहा था और मंजिल थी पृथ्वी ग्रह।

▭ ▭ ▭

राजा पॉकेट बुक्स की तरफ से अनिल मोहन

के देवराज चौहान सीरीज के 'बबूसा' शृंखला के उपन्यासों पर 1,00,000 रुपयों से अधिक की बम्पर ईनामी प्रतियोगिता

प्रविष्टि फार्म

प्रश्न 1 : बबूसा और धरा पहली बार कहां मिले थे?
उत्तर : ....

प्रश्न 2 : बबूसा जब पहली बार देवराज चौहान से मिला तो उसने क्या कहा?
उत्तर : ....

प्रश्न 3 : डोबू जाति के सरदार ओमारू को किसने मारा और किस हथियार से मारा?
उत्तर : ....

प्रश्न 4 : प्राईवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज, देवराज चौहान से पहली बार किस जगह पर मिला?
उत्तर : ....

प्रश्न 5 : उस सेनापति का नाम का नाम क्या था जिसने राजा देव को रानी ताशा के साथ मिलकर सदूर ग्रह से बाहर फेंका था?
उत्तर : ....

प्रश्न 6 : पोपा को तैयार करने में देवा के सहायक कौन थे?
उत्तर : ....

प्रश्न 7 : धरा की मौत किस खास चीज से हुई थी?
उत्तर : ....

प्रश्न 8 : सोमाथ की बैटरी, उसके शरीर के किस हिस्से में लगी थी?
उत्तर : ....

प्रश्न 9 : खुंबरी से पहले, ताकतों का मालिक कौन था?
उत्तर : ....

प्रश्न 10: खुंबरी अपने जीवन में किस इंसान या किस चीज को सबसे ज्यादा चाहती थी?
उत्तर : ....

दोलाम के मन में इस बात की सुलगन थी कि खुंबरी ने जगमोहन को क्यों अपना शरीर सौंप दिया, जबकि खुंबरी के शरीर की सेवा वो 500 वर्षों तक करता रहा था, खुंबरी के शरीर पर उसका हक है यही सोचकर दोलाम ने अपनी सेवाओं के बदले खुंबरी से उसका शरीर मांग लिया। ऐसा होते ही खुंबरी के दिलोदिमाग में तूफान उठ खड़ा हुआ कि मामूली से सेवक दोलाम ने इतनी बड़ी बात कैसे कह दी। खुंबरी ने दोलाम को खत्म करने के लिए ताकतों को हुक्म दिया परंतु ताकतों ने ये कहकर दोलाम की जान लेने से मना कर दिया कि दोलाम को कब का परिवार में शामिल कर लिया गया है और उसका हक बनता है खुंबरी के शरीर को पाना। लेकिन खुंबरी का चैन उड़ गया। वो दोलाम को मारने के लिए अपनी चालें सोचने लगी।

बबूसा शृंखला की 1,00,000 ईनामी प्रतियोगिता की छठी अंतिम कड़ी!

बबूसा और खुंबरी

देवराज चौहान सीरीज की आगामी नई सनसनीखेज डकैती

डकैती का अलार्म

अगस्त 2013 से सर्वत्र उपलब्ध

ISBN 978-93-324-2106-6
Price : ₹ 60
A.H.W. TIGER SERIES